(४) तुर्की प्रत्यय 'म' (मीमे-तानीस) लगाकर स्त्रीलिंगवाची शब्द बनाते हैं यथा खान से खानम, बेग से बेगम।

(५) अलिफ मकसूरा लगाकर (एक प्रकार से आकारांत बनाकर तथा साथ ही स्वर-व्यंजन में आन्तरिक परिवर्तन कर) पुंलिंग संज्ञा को, स्त्रीलिंग बनाया जाता है जैसे कबीर (बड़ा) से कुबरा (बड़ी), सगीर (छोटा) से सुगरा (छोटी)।

(६) अरबी की वे नाम-धातुएँ जिनके आखीर में अलिफ अथवा आ (आकारांत) हो स्त्रीलिंग होती हैं जैसे इन्तिदा, इन्तिहा, हया, कजा, वफा, रजा, दुआ आदि।

(७) अरबी की वे नामधातुएँ जिनके अन्त में 'त' हो स्त्रीलिंग होती हैं जैसे मुहब्बत, नफरत, हिकमत, कुदरत, दहशत, मुवाफिकत, कयामत, मुखालिफत, मुनासिबत, रहमत आदि।

(८) अरबी की वे नामधातुएँ जो 'तफ़ईल' के वजन पर बने स्त्रीलिंग होती हैं, जैसे तस्वीर, तहरीर, तकरीर, तकदीर, तअलीम, तफसील, तअलीम, तक़सीम, तसवीह, ताकीद आदि।

(९) सामासिक शब्दों का लिंग निर्णय आखिरी शब्द के अनुसार होता है, जैसे आबो हवा, शिकारगाह, तसवीरखाना।

अन्य आवश्यक बातें—(१) जिस शब्द के अन्त में 'बन्द' शब्द आए, वह पुलिङ्ग होता है, जैसे कमरबन्द, सीनाबन्द, शिकारबन्द, इजारबन्द, गुलूबन्द आदि।

(२) जिस शब्द के आखीर में 'आब' शब्द आए वह पुलिङ्ग होता है जैसे सैलाब, तेजाब, सवाब, गुलाब आदि, किन्तु शराब और उसके जितने नाम हैं सब स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

(३) जिस शब्द के अन्त में 'बान' आता है वह अक्सर पुलिङ्ग होता है, जैसे बादबान, सायबान, दीदबान, मेहरबान आदि। आनबान इसका अपवाद है।

(४) जिस शब्द के आखीर में 'दान' आता है, वह पुलिङ्ग होता है, जैसे कलमदान, नमकदान, शमअदान, चिरागदान आदि।

(५) जिस शब्द के आखीर में 'वान' या 'वाँ' हो वह पुलिङ्ग होता है जैसे कारवाँ, पेंचवान, तावान आदि।

प्रकाशक

नागरीप्रचारिणी सभा,

वाराणसी

प्रथम संस्करण

सं २ २६ वि

११ प्रतियाँ

मूल्य पचपन रुपए

मुद्रक

चंद्रप्रकाश प्रेस

लाजपत नगर, वाराणसी।

विश्वविख्यात भाषाविद्

नेशनल प्रोफेसर

डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

को

सादर समर्पित

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा अपनी शास्त्रविज्ञान ग्रथमाला मे भाषा एव शास्त्रविषयक अनुशीलनपरक ग्रथो का प्रकाशन करती आई है। इस ग्रथमाला मे हिंदी व्याकरण, व्यजना और नवीन कविता, हिंदी शब्दानुशासन, रसमीमासा, अर्थतत्त्व की भूमिका, लक्षणा और उसका हिंदी काव्य मे प्रसार एव सूत्रशैली और अपभ्रंश व्याकरण जैसे गभीर ग्रथो का प्रकाशन किया जा चुका है। इस ग्रथमाला मे प्रकाशित होनेवाला यह आठवाँ पुष्प है।

इस ग्रथ मे सुधी लेखक ने प्रथमत उन ऐतिहासिक एव सास्कृतिक सदर्भों एव चेतना का व्यापक परिवेश मे शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिनमे दो या अधिक भाषाओ मे परस्पर आदान-प्रदान होता है तथा भाषाएँ अधिक समृद्ध होकर विकसित होती हैं। फारसी और अग्रेजी के पृथक् प्रभाव खडो मे प्रत्येक के आधार पर ध्वनि, पद, वाक्य एव शब्दगत प्रभावो का वैज्ञानिक पद्धति से विवेचनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक हिंदीके अधिकाश साहित्य के निर्माण एव विकास मे फारसी तथा अग्रेजी का प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्पर्क ढूँढा जा सकता है। फारसी और अग्रेजी के बोलने-सुननेवालो तथा विद्वानो ने हिंदी साहित्य के निर्माण मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही है। भारत के हिंदीभाषी जनसमुदाय के एक शिक्षित वर्ग ने उक्त दोनो भाषाओ का अनेक राजनीतिक एव ऐतिहासिक कारणो से अध्ययन भी किया है। फलस्वरूप जन भाषा एव साहित्यिक भाषा में अनेक विदेशी भाषातत्त्वो ने अपना स्थान बना लिया। आवश्यकता थी उनके सम्यक् विवेचन एव निर्णय की। लेखक ने इस कार्य को आनुशीलनिक निष्ठा के साथ किया है। इस शोधग्रथ से यह ज्ञात होता है कि हिंदी भाषा मे अद्भुत ग्रहणशक्ति है जो इसकी जीवतता एव लोकप्रियता का प्रमाण है। हमारी भाषा विश्व की कतिपय सपन्न भषाओ के गुणो से समृद्ध है। कला और विज्ञान के किसी भी साहित्य की ज्ञानराशि को अभिव्यक्त करने की इसमे पूर्ण सामर्थ्य है। साथ ही साथ किचित हेरफेर एव परिवर्तन से नागरी लिपि मे किसी भी ध्वनि एव उच्चारण को अभिव्यक्त करने

की विलक्षण क्षमता भी है। फारसी एवं अंग्रेजी के भाषा संपृक्त तथा साहित्यगत प्रभावों के अध्ययन का अभाव हिंदी में काफी समय से खटकनेवाला विषय था। भाषागत प्रभावों का अध्ययन करते हुए लेखक ने चिर प्रतीक्षित ग्रंथ की पूर्ति का प्रयास किया है। आशा है—शीघ्र ही 'साहित्यगत प्रभावों' का अनुशीलनपरक ग्रंथ भी प्रस्तुत होगा। लेखक की यह कृति ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक भाषा विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन को निश्चय ही आगे बढ़ायेगी। अपने ढंग की संभवतः प्रथम कृति होने पर भी यह ग्रंथ अपनेआप में पूर्ण है और हिंदी भाषा के अध्ययन को भाषाशास्त्रीय दृष्टि से समझने का प्रयास है। प्रत्येक खंड में उस ग्रंथ की मौलिक सामग्री मिलेगी। हम समझते हैं कि संबद्ध विषय के अध्येताओं को हिंदी भाषा पर फारसी और अंग्रेजी प्रभाव से संबंध रखनेवाली सामग्री जितने विस्तार के साथ एकत्र इस ग्रंथ में मिलेगी उतना अन्यत्र प्राप्त नहीं है। भाषा का ऐतिहासिक अध्ययन वास्तव में बहुत विस्तृत एवं जटिल विषय है जिसकी साहित्यगत मूल्यवान् सामग्री का संकलन तथा अध्ययन अत्यंत श्रमसाध्य और समयसाध्य है। प्रस्तुत ग्रंथ इस दिशा में साहित्यगत अध्ययन एवं अनुसंधान की नवीन दिशा का निर्देशन करता है तथा अनेक अछूती समस्याओं की ओर संकेत करता है।

भाषा की विशिष्ट पुस्तक होने के कारण लिपि संबंधी स्वीकृत मान्यताओं में कुछ नमनीयता की नीति अपनानी पड़ी है ताकि पुस्तक की वैज्ञानिकता बनी रहे। हमारा विश्वास है कि यह महत्व पूर्ण ग्रंथ न केवल भाषाविज्ञान के अध्येताओं के लिये उपयोगी होगा वरन् हिंदी के जिज्ञासु तथा प्रबुद्ध पाठकों के लिए भी चिंतन मनन की प्रेरणा देनेवाला सिद्ध होगा।

करुणापति त्रिपाठी

भाद्र द्वितीया २०२६ वि०। प्रकाशन मंत्री

दृष्टिकोण

किसी समाज विशेष की गत्वर संस्कृति का अध्ययन करने के लिए उसकी भाषा की विविध रूपाकृतियों का आकलन बहुत बड़ा साधन जान पड़ता है। भाषा के माध्यम से समाज अपनी समग्र प्रकृति की मूक कहानी कहता रहता है और कुशल अनुसंधित्सु इस मूक कहानी के स्पंदन को पहचानने की कोशिश करते हैं। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक घात-प्रतिघात में तरंगायित जन-जीवन की वाहिनी जिन-जिन मोड़ों से गुजरी है, जिन-जिन नदी-नालों और अवान्तर धाराओं को समेटती आगे बढ़ी है, उसकी एक सूत्रता में पिरोए गए उन तत्वों की खोज करना अवश्य ही दुस्तर कार्य है।

भाषा-संस्कृति का अध्ययन केवल व्याकरणिक तत्वों को निर्जीव पदार्थों के रूप में गवेषणा का विषय नहीं बनाता, अपितु उनमें प्रतिच्छायित वे प्रभाव और प्रयास ढूँढ़ता है, जिन्होंने किसी भाषा को रूढ़ और मृतकल्प होने से बचाया है और उसे सदा बदलते समाज के अनुरूप ढालकर जीवन्तता दी है। हिन्दुस्तान की संस्कृति प्राक्-ऐतिहासिक रूप से अब तक कितने ही तत्वों के घात-प्रतिघात से गतिशील रही है, इसको रूपायित करने में आर्यों के साथ-साथ अनेक आर्येतर जातियों का समुचित अनुदान रहा है। इस अनुदान के महत्व का अपलाप करने वाला दृष्टिकोण न केवल प्रतिक्रियावादी है, बल्कि विज्ञान-विरुद्ध भी है। मध्ययुग में भारत में इस्लाम के आगमन से और आधुनिक युग के ब्राह्ममुहूर्त में यूरोपीय उपनिवेशवाद के भारत में प्रसार से निस्संदेह भारतीय संस्कृति-धारा को एक नया मोड़ और एक अभिनव गतिशीलता मिली है, इससे क़तई इनकार नहीं किया जा सकता। हिंदी मध्यदेशीय भारतीय संस्कृति की प्रतिच्छाया होने के कारण मध्ययुग और आधुनिक युग की इन ऐतिहासिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्रांतियों का पारदर्शी मुकुर है। इसकी समग्र आधुनिक संघटना अनेक इस्लामी (तुर्की-अरबी-फ़ारसी) और यूरोपीय (पुर्तगाली-फ़ांसीसी अंग्रेज़ी) भाषा-तत्वों को पूरी तरह पचाकर स्फीत और समृद्ध स्वरूप प्राप्त करती है। ध्वनि-संघटना, पद-संघटना और वाक्य-रचना से भी अधिक यह प्रभाव शब्दकोश और मुहावरों में अधिक मुखरित मिलेगा। यह तत्व केवल रूक्ष वैज्ञानिक विवरण का क्षेत्र न होकर समग्र समाज की बदलती मनोवृत्ति, परिवर्तित विचारधारा और गतिशील

रीति-नीति के समाजशास्त्रीय अध्ययन का क्षेत्र है। इस दृष्टि से किसी ऐसी भाषा संस्कृति के जिस पर दो-दो विजातीय भाषा-संस्कृतियों ने अपना अमिट प्रभाव छोड़ा हो, अध्ययन को वर्णनात्मक भाषा-शास्त्र और ऐतिहासिक तुलनात्मक भाषा-समाजशास्त्र (लिंग्विस्टिक सोशियोलोजी) दोनों विधियों का एक साथ स्पर्श करना पड़ेगा जिससे दृष्टिकोण में सम्पूर्ण समन्वयात्मकता का होना भी जरूरी है।

इधर कुछ वर्षों से भाषा के शुद्धीकरण की आवाज कभी धीमी और कभी तेज स्वर में सुनाई पड़ जाती है। यह आवाज संभवतः उन लोगों की है जिनको भाषा संस्कृति की गतिविधि का बिल्कुल अंदाजा नहीं है और जो यह समझते हैं कि भाषा पंडितों और वैयाकरणों द्वारा गढ़ी जाती है। मुझे इस सम्बन्ध में महर्षि पतंजलि का भाषा-पंडितों पर किया गया यह व्यंग्य याद आ जाता है जब उन्होंने कहा था कि जिस तरह घड़े की जरूरत वाला कुम्हार के पास जाकर घड़ा बनाने की मांग कर सकता है, ठीक उसी तरह शब्द के प्रयोग की जरूरत होने पर व्यक्ति वैयाकरण के पास जाकर शब्द का निर्माण करने की मांग करता अटपटा लगेगा क्योंकि भाषा-निर्माण वैयाकरण नहीं करता अपितु जनता ही अनजाने करती है। खेद है कि महर्षि के इस उपदेश-वाक्य के बावजूद शब्दों को गढ़ने के लिए और भाषा के शुद्धीकरण के लिए परिषद्-मंडली की बैठकें होती हैं। मैं समझता हूं कोई भी भाषा तब तक उन्नति नहीं कर सकती जब तक कि उसकी शोषणशक्ति इतनी प्रबल न हो कि वह विजातीय शब्दों को अपने में जज्ब कर एक नए शब्द भंडार की सृष्टि कर सके। अंग्रेजी फ्रांसीसी रूसी इस्पानी अरबी फारसी जैसी अनेक विश्व-भाषाओं ने बिना झिझक दूसरी भाषाओं के शब्दों को पचा लेने का परिचय दिया है। हिंदी को भी राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती से प्रतिष्ठित होने के लिए इस शक्ति का परिचय देना होगा और अगर इसकी समृद्धि के लिए हम कुछ विदेशी शब्दों को हिंदी के सांचे में ढाल लेंगे तो कोई गुनाह नहीं होगा। हिंदी के सांचे में ढालने का मेरा मतलब यह नहीं है कि हिंदी संस्कृत के आधार पर ऐसे शब्द बनाए जो 'अपना मुंह चिढ़ाता दीखे' पद्धति के पारिभाषिक शब्द हों बल्कि हिंदी की निजी व्याकरणिक प्रकृति के अनुरूप ही अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दों का रूपान्तर भर हो। डॉ. तिवारी ने इस सवाल को ठीक इसी व्यावहारिक नुक्ते-नजरिये से हल करने की कोशिश की है, जो अधिक मौजूं जान पड़ता है।

डॉ. तिवारी ने अपने महत्वपूर्ण प्रबन्ध 'हिंदी भाषा पर फारसी और अंग्रेजी का प्रभाव' में फारसी और अंग्रेजी के हिंदी पर प्रभाव की कहानी

कहते हुए समग्र ऐतिहासिक, राजनीतिक और सास्कृतिक परिवेश को मद्दे-नजर रखा है और यह उनके स्वस्थ, प्रगतिशील चितन का प्रतीक है। फलत यह ग्रन्थ महज भाषा की लेबोरेटरीमें किए गए निर्जीव-प्रयोगो की सांख्यिकी नही है, बल्कि हिंदी के माध्यम से अभिव्यजित स्पन्दनशील जनजीवन की लोक-कथा भी बन गया है। शुद्ध वर्णनात्मक पद्धति की दृष्टि से भी अरबी-फारसी और अंग्रेजी ध्वनिग्रामो, पदग्रामो, हिंदी में उनके आदेशो और परिवर्तनो का विवरण तथ्यपरक है, जो लेखक के अद्यतन ज्ञान का सूचक है। वैसे तो डॉ० बाहरी और डॉ० भाटिया ने क्रमश हिंदी पर फारसी और अंग्रेजी के प्रभाव का भाषा-वैज्ञानिक आकलन अपने ढग से प्रस्तुत किया है और इनमें डॉ० तिवारी ने अपने प्रबन्ध में डॉ० बाहरी के ग्रथ का ऋण भी स्वीकार किया है, पर एक साथ दोनों भाषा-सस्कृतियो के प्रभाव को अध्ययन का विषय बनाते हुए डॉ० तिवारी ने हिंदी के इस भाषा-वैज्ञानिक पक्ष को जहाँ एक ओर अखण्डता एव समग्रता दी है, वहाँ दूसरी ओर इसके समाज शास्त्रीय पक्ष को भी रेखाकित किया है। ये दोनो पक्ष डॉ० तिवारी की इस कृति को एक निजी विशिष्टता प्रदान करते हैं, जिससे यह ग्रथ भाषा-वैज्ञानिको के साथ-साथ साहित्यिको और समाजशास्त्रियो के यहाँ भी समानरूप से सम्मान्य हो सकेगा, ऐसी मेरी निश्चित धारणा है।

१-११-६९
बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी
वाराणसी।

भोलाशकर व्यास

● ●

अपनी बात

प्रस्तुत प्रबंध में मेरा उद्देश्य यही था कि फ़ारसी और अंग्रेज़ी के संबंध में हिंदी भाषा का अध्ययन एक-सा हो जाय। विषय के महत्व के सिलसिले में कहा जा सकता है कि भाषा की दृष्टि से हिंदी में जहाँ स्थानीय परम्परा की भाषा-धारा प्रवाहित हो रही है, वहीं, ठीक उसके समानांतर हिंदी के विकास के आरम्भ से अबतक फारसी और अंग्रेज़ी की भाषा-धाराएँ भी प्रवहमान रही हैं। असल में फ़ारसी, अंग्रेज़ी और अपनी निजी परम्परा के कारण हिंदी में भाषा-संगम की स्थिति उत्पन्न हो गई है। यहाँ संरचनात्मक, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक आधारों पर हिंदी-भाषागत विदेशी तत्वों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि यह विषय भाषाविदों की दृष्टि से ऐतिहासिक-तुलनात्मक शाखा से सम्बन्ध रखता है और यही इसकी सीमा भी है, किंतु अध्ययन का समुचित आधार प्रस्तुत करने के लिए प्रत्येक अंग का संक्षिप्त संरचनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, ताकि तुलनात्मक और ऐतिहासिक अध्ययन में स्पृहणीय सहायता मिलती रहे। हिंदी भाषा और साहित्य की दृष्टि से इन तत्वों का सम्यक् व्यावहारिक और ऐतिहासिक अध्ययन अपेक्षित है।

पूरे अध्ययन में आरम्भ से अंत तक एक विशेष ढंग की कठिनाई का अनुभव हुआ। अरबी-फारसी ध्वनियों से हमारा संपर्क यथार्थतः टूट-सा चुका है। उनका ठीक अध्ययन और उनके ब्योरे की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त करने में दिक़्क़त का अनुभव हुआ। पदरचनागत अध्ययन अपने विस्तार के कारण अरबी, फारसी और अंग्रेज़ी की विशद जानकारी एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हिंदी वाक्य-विकास का कोई व्यवस्थित अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। इसलिए फारसी और अंग्रेज़ी वाक्य-संघटना से हिंदी वाक्य-संघटना के संबंध का अध्ययन करने और निष्कर्ष निकालने में मुझे किसी प्रकार की आसानी का अनुभव नहीं हुआ। विभिन्न कोशों की सहायता से अरबी-फारसी शब्दों का अध्ययन अपेक्षाकृत सरल है, किंतु शब्दों के अर्थ-परिवर्तन के अध्ययन की समस्या अत्यंत जटिल है। अंग्रेज़ी शब्दों का अध्ययन और उनका चुनाव अरबी फारसी शब्दों के मुक़ाबले अधिक मुश्किल मालूम पड़ा। फ़ारसी और अंग्रेज़ी मुहावरे तथा हिंदी में उनके अनुवाद की यथार्थता का ठीक निर्णय भी

अपनी बात

प्रस्तुत प्रबंध में मेरा उद्देश्य यही था कि फ़ारसी और अंग्रेज़ी के संबंध में हिंदी भाषा का अध्ययन एक-सा हो जाए। विषय के महत्व के सिलसिले में कहा जा सकता है कि भाषा की दृष्टि से हिंदी में जहाँ स्थानीय परम्परा की भाषा-धारा प्रवाहित हो रही है, वहीं, ठीक उसके समानान्तर हिंदी के विकास के आरम्भ से अबतक फ़ारसी और अंग्रेज़ी की भाषा-धाराएँ भी प्रवहमान रही हैं। असल में फ़ारसी, अंग्रेज़ी और अपनी निजी परम्परा के कारण हिंदी में भाषा संगम की स्थिति उत्पन्न हो गई है। यहाँ संरचनात्मक, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक आधारों पर हिंदी भाषागत विदेशी तत्वों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि यह विषय भाषाविदों की दृष्टि से ऐतिहासिक-तुलनात्मक शाखा से सम्बन्ध रखता है और यही इसकी सीमा भी है, किंतु अध्ययन का सुनिश्चित आधार प्रस्तुत करने के लिए प्रत्येक अंग का संक्षिप्त संरचनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, ताकि तुलनात्मक और ऐतिहासिक अध्ययन में स्पृहणीय सहायता मिलती रहे। हिंदी भाषा और साहित्य की दृष्टि से इन तत्वों का सम्यक् व्यावहारिक और ऐतिहासिक अध्ययन अपेक्षित है।

पूरे अध्ययन में आरम्भ से अंत तक एक विशेष ढंग की कठिनाई का अनुभव हुआ। अरबी-फ़ारसी ध्वनियों से हमारा संपर्क यथार्थतः टूट-सा चुका है। उनका ठीक अध्ययन और उनके ब्योरे की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त करने में दिक़्क़त का अनुभव हुआ। पदरचनागत अध्ययन अपने विस्तार के कारण अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी की विशद जानकारी एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हिंदी वाक्य-विन्यास का कोई व्यवस्थित अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। इसलिए फ़ारसी और अंग्रेज़ी वाक्य-संघटना से हिंदी वाक्य संघटना के संबंध का अध्ययन करने और निष्कर्ष निकालने में मुझे किसी प्रकार की आसानी का अनुभव नहीं हुआ। विभिन्न कोशों की सहायता से अरबी-फ़ारसी शब्दों का अध्ययन अपेक्षाकृत सरल है, किंतु शब्दों के अर्थ-परिवर्तन के अध्ययन की समस्या अत्यंत जटिल है। अंग्रेज़ी शब्दों का अध्ययन और उनका चुनाव अरबी फ़ारसी शब्दों के मुक़ाबले अधिक मुश्किल मालूम पड़ा। फ़ारसी और अंग्रेज़ी मुहावरे तथा हिंदी में उनके अनुवाद की अवस्था का ठीक निर्णय भी

कम कठिन नहीं है। हिंदी में विभिन्न साहित्यकारों और उनकी भाषा में फ़ारसी ग्रंथों की भाषागत-प्रभाव के बारे में जानने की मैंने कोई कोशिश नहीं की है। सुविधा और साधन के अभाव में अनेक बहुमूल्य ग्रंथों का सुलभ न होना भी एक बहुत बड़ी कठिनाई थी। यह उस स्थिति में और भी विकट हो जाती यदि आदरणीय डॉ० भोलाशंकर व्यास ने अपनी लिखी पुस्तकों से मेरी सहायता न की होती।

पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी एवं डॉ० हरदेव बाहरी की फ़ारसी-प्रभाव से सम्बद्ध अंग्रेजी में लिखी हुई पुस्तकों ने फ़ारसी-प्रभाव के अध्ययन में मार्ग-प्रदर्शन किया है। डॉ० बाहरी की पुस्तक 'हिन्दी सेमेन्टिक्स' सहायक हुई। अंग्रेजी के भाषागत-प्रभाव के अध्ययन में इस पद्धति को अपनाने पर भी प्रस्तुत अध्ययन कुछ स्वतंत्र-सा हो गया है। डॉ० उदयनारायण तिवारी की पुस्तक 'हिंदी भाषा का उद्गम और विकास' से अवश्य कुछ सहायता मिली है। इसी प्रकार डॉ० धीरेन्द्र वर्मा की पुस्तक भी सहायक सिद्ध हुई। इसके अतिरिक्त प्रो० डैनियल जोन्स, प्रो० ओटो येस्पर्सन, डॉ० जी० सी० फ़िलॉट, प्रो० ब्लूमफ़ील्ड, एच० ए० ग्लीसन, साइमन पॉटर, जे० वी० स्टालिन, जे० वेन्द्रियेस, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डॉ० बाहरी, डॉ० भोलाशंकर व्यास, राहुल सांकृत्यायन एवं डॉ० रामविलास शर्मा जैसे विद्वानों की पुस्तकें अत्यन्त उपयोगी एवं सहायक रही हैं।

मौलवी अब्दुल मजीद हाशमी एम० ए० (फ़ारसी और उर्दू) का मैं विशेष अनुगृहीत हूँ। उन्होंने फ़ारसी भाषा एवं व्याकरण सम्बन्धी व्यावहारिक कठिनाइयों को सहानुभूति के साथ सुलझाया है। मेरे निर्देशक डॉ० भोलाशंकर व्यास ने इस सम्बन्ध में सभी जटिल विषयों की व्याख्या कर न सिर्फ़ संदर्भ ग्रंथों की कमी पूरी की बल्कि मुझे आगे बढ़ने और उपयुक्त अध्ययन करने का रास्ता भी बताया। किसी उलझी समस्या के अनिर्णय की स्थिति आने पर भाषा, साहित्य और शास्त्र के ज्ञान-संगम डॉ० व्यास के निर्णय को ही मैंने अन्तिम माना है और उसी दिशा में अध्ययन का क्रम आगे बढ़ाया है। उनके व्यक्तिगत निर्देशन एवं अथक प्रयत्न के अभाव में इस प्रबन्ध का यह रूप कदापि न बन पाता। आदरणीय पं० रमापति शुक्ल ने हिंदी-व्याकरण एवं डॉ० राजपति दीक्षित ने सांस्कृतिक संदर्भों की अनेक समस्याओं को सुलझाया है। डॉ० रामकुमार चौबे एम० ए० (२ विषय) ने अनेक बहुमूल्य सुझाव देकर इस विषय में गति प्रदान की है।

यहाँ अरबी, फारसी, तुर्की के लगभग १३५० शब्द और अंग्रेजी के लगभग २१५० शब्द दिए गए हैं। फारसी वर्ग के शब्द हिंदी मे अत्यधिक प्रचलित हैं, और विभिन्न कोशों में सरलतापूर्वक उपलब्ध हैं। इन शब्दो के चुनाव में 'हिंदी शब्दसागर', 'मद्दाह' कृत 'उर्दू-हिन्दी शब्दकोश', प० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी और डॉ० बाहरी की पुस्तको से विशेष सहायता ली गई है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों मे अंग्रेजी शब्दों का चुनाव और उनका अध्ययन बृहत् हिंदीकोश (ज्ञानमडल प्रकाशन), हिंदी शब्दसागर (ना० प्र० स०) तथा डॉ० धीरेन्द्र वर्मा और डॉ० उदयनारायण तिवारी की पुस्तको के अतिरिक्त मैंने व्यक्तिगत स्रोतो से भी किया है। फारसी मुहावरो के अध्ययन में मैंने डॉ० बाहरी की पुस्तक के अतिरिक्त मौलवी अब्दुल मजीद से सहायता ली है। डॉ० ओमप्रकाश गुप्त कृत 'मुहावरा-मीमासा' भी इस दिशा में सहायक पुस्तक थी, जिससे अंग्रेजी-मुहावरो के अध्ययन मे भी सहायता मिली है।

भाषागत अध्ययन के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि फारसी-अंग्रेजी का साहित्यगत अध्ययन भी व्यवस्थित रूप से होना चाहिए। इसी प्रकार के अध्ययन से हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी और दक्खिनी हिंदी के सम्पूर्ण साहित्य का वास्तविक चित्र जनता के सम्मुख हम प्रस्तुत कर सकते हैं। इस क्षेत्र म अनुसधान का रमणीय विशाल क्षेत्र उपेक्षित पडा है, जिस ओर विद्वानो का भी ध्यान जाना चाहिए और शासन का भी। इस प्रसग में डॉ० बाहरी की चिंता का उल्लेख आवश्यक है। उन्होने अपनी पुस्तक 'परसियन इफ्लुएस ऑन् हिंदी' में लिखा है कि हिंदी से फ़ारसी-प्रभाव के चिह्न शीघ्रतापूवक मिट रहे हैं और वर्तमान पीढ़ी में ही उस प्रभाव का सम्यक् मूल्याकन हो जाना चाहिए, जब कि हिंदी और फारसी दोनो जानने वाले विद्वान् सरलतापूर्वक सुलभ हैं। अंग्रेजी-प्रभाव के अध्ययन में अभी ऐसी कठिनाई की आशका नही है। वास्तव में पिछले ८०० वर्षो में आगत फ़ारसी और अंग्रेजी दोनो भाषाओं का प्रभाव महत्वपूर्ण होने के साथ ही दिलचस्प भी है।

आचार्य प० उमाशकर पाडेय, सभा के प्रचार मत्री सुहृद्वर श्री श्रीनाथ सिंह एव सभा की दिल्ली शाखा के सयोजक डॉ० रत्नाकर पाडेय ने इस ग्रथ के प्रकाशन में जो अनुकूल योगदान किया है उसके लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। नागरी प्रचारिणी सभा की कार्य-कारिणी के सदस्य बाबू रामनाथ वर्मा ने प्रकाशन एव मुद्रण मे अनवरत अभिरुचि लेकर तथा इस दुस्तर कार्य को सुगम बनाकर मुझ पर कृपा की है। हिंदी भाषा एव कोश-विज्ञान के उदीयमान नक्षत्र डॉ० बदरीनाथ कपूर ने मुद्रण के समय नित्य अनेक बहुमूल्य

परामर्श देकर तथा विषय को प्रभावशाली बनाने में संशोधन के लिए निमयत् सुझाव देकर उपकृत किया है। विख्यात भाषावैज्ञानिक एवं कोशकार डॉ हरदेव बाहरी ने आवश्यकतानुसार यत्र-तत्र विषयों की काट-छाँट संशोधन एवं वृद्धि का बहुमूल्य सुझाव देकर मेरा मार्ग-निर्देशन किया है। इस दृष्टि से मैं उनकी सेवा के अतिरिक्त व्यक्तिगत अनुभव एवं विचार विमर्श से अधिक लाभान्वित हुआ हूँ। इसे मैं उनका ऋण मानता हूँ। नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधान मंत्री आदरणीय पं. सुधाकर पांडेय (भाई साहब) ने विशेष दिलचस्पी लेकर इस ग्रन्थ के प्रकाशन को तत्परता दी फलस्वरूप इसका प्रकाशन समय से कुछ पहले संभव हो सका। साथ ही विषय वस्तु को पूर्ण संतुलित एवं आवश्यक सामग्रियों से परिपूर्ण बनाने का भी उन्होंने निरन्तर परामर्श दिया जिसका यथाशक्ति मैंने निर्वाह भी किया है। प्रेसों की असुविधा होने पर भी उन्होंने इस ग्रन्थ का प्रकाशन अपेक्षाकृत अल्प समय में कराया है। उनके प्रति मैं सदा आभार प्रकट करता हूँ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पी-एच्. डी. की उपाधि के लिए यह प्रबंध सन् १९६४ में लिखा गया। इसे पूरा करने में कुल ढाई वर्ष लगे यद्यपि मैं पाँच वर्ष का समय देना चाहता था। पूरा समय देने से भाषा के कुछ-तत्वों का साहित्यगत प्रायोगिक अध्ययन भी पूरा हो जाता लेकिन तब यह अध्ययन ऐसी तीन जिल्दों में पूरा होता। फलतः उक्त योजना को त्याग देना पड़ा क्योंकि यह अध्ययन समय श्रम एवं धन सापेक्ष है और स्वतंत्र क्षेत्र का विषय भी। इसे 'हिन्दी साहित्य पर फ़ारसी-अरबी का प्रभाव' के साथ संबद्ध किया जा सकता है। इस कार्य को या तो नागरीप्रचारिणी सभा या भारत-सरकार अपने हाथ में सकती है। सरकार के सम्मुख ऐसी योजना विचाराधीन है या नहीं कुछ कहना कठिन है। ना. प्र. स. ने इस प्रबंध को प्रकाशित कर जहाँ मुझे गौरवान्वित किया वहीं एक महत्वपूर्ण दिशा में कदम भी बढ़ाया है। सभा के अधिकारी निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

अनेक कठिनाइयों के कारण मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि सामान्यतः हिन्दी प्रेस-टैक्नीक के वैज्ञानिक विकास में अभी दस वर्ष भी कम है। फिर भी जनप्रकाश प्रेस से मुझे हर सुलभ सहायता मिली अस्तु व्यवस्थापक एवं सभी प्रेस-कर्मचारियों को उनकी निष्ठा और मेहनत के लिए हार्दिक धन्यवाद।

७–११–१९६६
डी ५२/११ लक्ष्मीकुंड
वाराणसी।

मोहन लाल तिवारी

हिंदी भाषा पर फ़ारसी और अंग्रेज़ी का प्रभाव

अनुक्रम

● ●

हिंदी भाषा पर फ़ारसी और अंग्रेज़ी का प्रभाव

क—सामान्य भूमिका

१. भाषा के विकास में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रभाव—

भाषा वह सामाजिक तत्व है जो समाज के संपूर्ण जीवन काल में कार्यरत रहती है। समाज के उद्भव और विकास के साथ इसका उद्भव और विकास होता है। 'भाषा सामान्यतः' 'जीवित प्राणी' की तरह मानी जाती है, हम भाषाओं के 'जीवन', नई भाषाओं के 'जन्म' और पुरानी भाषाओं के 'मरण' के बारे में सुनते हैं और इसका निहितार्थ यही है कि भाषा पशु या पौधे के समान एक जीवित वस्तु है, यद्यपि इस तथ्य की प्रतीति स्पष्ट नहीं की जाती।[1] भाषा के जीवन और मरण की कल्पना समाजनिरपेक्ष प्रकृति में नहीं की जा सकती। क्योंकि समाज से परे किसी भाषा का अस्तित्व हो ही नहीं सकता। किसी भाषा का सम्यक् अध्ययन जनता के इतिहास, आर्थिक विकास एवं उसके जीवन पर पड़ने वाले सांस्कृतिक प्रभाव के आलोक में ही संभव है।

भाषा विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सबल माध्यम है। यह मनुष्य की एक चिरंतन आवश्यकता है। चेतना और चिंतन की विविध क्रियाओं की अभिव्यक्ति की इकाई पद या भाषा है। यूनानी विचारकों ने चिंतन की शक्ति के आधार पर ही पशुओं और मनुष्यों में अन्तर स्थापित किया था।[2] पशु अपने विभिन्न संवेगों की अभिव्यक्ति, आदि मानव की भांति

१—'लैंग्वेज इज फ्रीक्वेन्टली स्पोकेन ऑफ् ऐज ए 'लिविंग' आर्गेनिज्म, वी हीयर ऑफ् दी 'लाइफ' ऑफ् लैंग्वेज, ऑफ् दी 'बर्थ' ऑफ् निव् लैंग्वेजेज एंड ऑफ् दी 'डेथ' ऑफ् ओल्ड लैंग्वेजेज'—पृष्ठ ७—लैंग्वेज—ओतो येस्पर्सन।

२—एलीमेंट्स ऑफ् दा साइंस ऑफ् लैंग्वेज—पृष्ठ २—आइ० जे० एस० तारापुरवाला।

धारण कर लेते हैं, किन्तु भाषा की शक्ति से वे वंचित होते हैं। प्रारंभिक अवस्था में यही भारत की पिछड़ी जातियों एवं राजधानी दिल्ली अथवा शिक्षा के उच्च केन्द्रों के संचालकों में इसी प्रकार का मानदण्डभाषागत गुणात्मक अन्तर विद्यमान है। उन्नत भाषा मनुष्य की एक सामाजिक आवश्यकता है। इसके बिना प्रकृति की शक्तियों के विरुद्ध मानवीय संघर्ष को दिशा नहीं दी जा सकती जीवन में भौतिक या आध्यात्मिक मूल्यों का सृजन नहीं हो सकता और समाज की उत्पादनक्षमता भी सुनिश्चित नहीं की जा सकती। जिस समाज या राष्ट्र के लोग एक दूसरे की भाषा नहीं समझते वह या तो छिन्न-भिन्न हो जाता है या बिखर जाता है। इसलिए जहाँ भाषा समाज सापेक्ष वस्तु है वहीं समाज के सुसंगठन के लिए एक अनिवार्य तत्त्व भी। कार्य व्यक्तिगत होते हैं किंतु इसके विवेचन का तात्पर्य यह है कि आदतों में सादृश्य के आधार पर व्यक्ति समाज का अंग होता है और भलीभाँति परिभाषित सामाजिक चरित्र उसकी मानव परंपराओं का एक समूह रखता है।[1] यही कारण है कि जब भिन्न भाषाभाषी देशों का विदेशी व्यक्ति विभिन्न अभिरुचियों के साथ एकत्र होते हैं तो एकाधिक भाषाओं में से एक को वे अवश्य ही अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बना लेते हैं। किन्तु स्वीकृत प्रमुख भाषा में कोई मौलिक अन्तर नहीं पड़ता। समाज के बाह्य ढाँचे में स्वल्प या अधिक परिवर्तन से भाषा में सामान्यतः कोषगत एवं कभी-कभी पदरचनागत नया विकास हो जाता है। वास्तव में भाषा का स्वरूप पहले से रूढ़ियों से निर्धारित एवं व्याकरण के नियमों से सुनिश्चित रहता है, किंतु नई भाषा या भाषाओं जैसे अरबी फ़ारसी और तुर्की के सम्पर्क या समाज के ऊपरी ढाँचे में परिवर्तन से भाषा में विकास की संभावना बढ़ जाती है। इस नए विकास को पल्लवन ने प्रमुख भाषा के नीचे एक उप-पर्व माना है। किंतु उप-पर्व का सिद्धान्त अपने-आप में पूर्ण सफलता के अभाव के कारण कोई स्वतंत्र सिद्धान्त नहीं हो सका है। समाज के ऊपरी ढाँचे में परिवर्तन से भाषा के शब्द उसी क्रम के अनुसार नहीं बदलते। कुछ पुरानी बातें छूट जाती हैं और नई बातों का विकास हो

१—'ए लैंग्वेज एज एन् डीम टू दी बर्न् पर्टिकुलर केस ऑफ् ह्यूमेन सिस्टम ऑफ् ए बेस रिफ्लेक्स सोशल बिहेवियर'—पृ० ८—लैंग्वेज बाई जेस्पर्सन।

२—वही पृ० २१।

जाता है। "वर्तमान शब्दकोश में उन नये शब्दों की वृद्धि हो जाती है जो सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन से, उत्पादन, संस्कृति एवं विज्ञान इत्यादि के विकास के कारण बढ़ जाते हैं, यद्यपि पुराने पड़ गए शब्दों की एक अच्छी संख्या समाप्त हो जाती है और शब्दकोश में नये शब्द पर्याप्त संख्या में बढ़ जाते हैं।"[1]

समाज के ढाँचे में महान् ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन उपस्थित हो जाने पर भी भाषा के ढाँचे में कोई मौलिक अन्तर उपस्थित नहीं होता। ऐतिहासिक समाजवादी क्रांति हो जाने के पश्चात् सोवियत् संघ में समाज का ऊपरी ढाँचा ध्वस्त हो गया, "इसके बावजूद रूसी भाषा मूलतः वही रही जो यह अक्टूबर क्रांति से पूर्व थी।"[2] रूसी भाषा के शब्दकोष में अवश्य अभिवृद्धि हुई। इसमें अनेक नए शब्दों की वृद्धि हो गई, जिनका विकास नए समाजवादी उत्पादन के उद्भव, नए शासन, नई समाजवादी संस्कृति, नए सामाजिक संबंध एवं नैतिकता और अन्त में टेक्नालाजी और विज्ञान की स्थापना तथा उन्नति से संभव हुआ था, अनेक शब्दों एवं अभिव्यक्तियों का अर्थ बदल गया, और उनका नया अर्थ प्रचलित हो गया, जबकि पुराने पड़ गए अनेक शब्द समाप्त होगए। स्टालिन ने लिखा है कि आधुनिक रूसी अपने ढाँचे में १०० वर्ष पूर्व पुश्किन की भाषा से नाममात्र का फर्क रखती है। उन्नत भाषाओं में ऐतिहासिक घटना-चक्रों से लड़ने की बड़ी प्रबल शक्ति होती है। बहुत समय तक तुर्की भाषा ने बालकन प्रदेश [पूर्वी-दक्षिणी यूरोप] की भाषाओं को दबा रखा था। इनमें सामान्य परिवर्तन भी हुआ और तुर्की के अनेक शब्द इन भाषाओं में घुस पड़े, किंतु कालान्तर में बालकन भाषाएं पुनरुज्जीवित हुईं क्योंकि उनका व्याकरण एवं मूल शब्द भंडार सुरक्षित था। समाज में क्रांतियों या क्रांतिकारी परिवर्तनों की भांति भाषा में कोई विस्फोट या क्रांति नहीं हुआ करती। फलस्वरूप अकस्मात नई भाषा की उत्पत्ति नहीं होती। भाषाओं के 'जन्म' और 'मरण' को मानते हुए भी येस्पर्सन ने इसका कारण बताया है कि "यह स्पष्ट है कि एक कुत्ते या वृक्ष की भांति किसी भाषा का पृथक् अस्तित्व नहीं होता, किंतु यह वास्तव में जीवित प्राणियों के कार्यकलापों के

१—मार्क्सिज्म एंड प्राब्लेम्स ऑफ् लिंग्विस्टिक्स—पृ० ३३—जे० स्टालिन।

२—'बट इन्स्पाइट ऑफ् दिस दी रशियन लैंग्वेज हैज रेमेंड बेसिकली व्हाट इट वाज बीफोर दी अक्टूबर रेवोल्यूशन'—वही पृ० ८।

सिवाय और कुछ भी नहीं है।" ऐतिहासिक परिस्थितियों में भाषाओं का क्रमिक विकास होता है। फ्रांसीसी भाषा वैज्ञानिक लाफोर्ग के इस मत का कि फ्रांस में १७८९ और १७९४ के बीच क्रांति के कारण एकाएक भाषा संबंधी क्रांति हो गई, खंडन करते हुए स्टालिन ने लिखा है कि "उस समय फ्रांस में भाषा संबंधी कोई भी क्रांति नहीं हुई थी।"[२] वास्तव में क्रांति के बावजूद बिना किसी मौलिक परिवर्तन के फ्रांसीसी भाषा के व्याकरणिक नियम और मूल शब्द भंडार ज्यों के त्यों सुरक्षित रहे और आज भी हैं। कमालपाशा के उग्र आदेशों के कारण तुर्की में कुछ अस्वाभाविक परिवर्तन उपस्थित हो गये। इस कठिनाई से अवगत होने के पश्चात् तुर्कों में भी पुरानी तुर्की को अपनाने का प्रयत्न आरंभ हुआ। "तुर्की में भी इस बात के प्रयत्न होते रहे हैं कि उत्तर काल के विकास के बिना ही मूल तुर्की को तुर्की देश की भाषा बनाई जाय।"[३] इसका यह तात्पर्य नहीं कि एक भाषा दूसरी भाषाओं से प्रभावित नहीं होती अथवा अन्य भाषातत्व स्वीकार नहीं करती। खुद संस्कृत जैसी देवभाषा में अन्य भाषा तत्व विद्यमान हैं। "ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में प्राप्त प्राचीन भारतीय आर्यभाषा में आस्ट्रोएशियाटिक उपभाषा के शब्द ग्रहण किए गये थे।"[४] तब भी संस्कृत भाषा का स्वरूप मूल आधार और उसके मूलशब्द यथावत् बने रहे। महान् ऐतिहासिक कारणों के उपस्थित होने पर भी भाषा में मौलिक परिवर्तन न होने का प्रमुख कारण यह है कि एक भाषा दूसरी भाषा से सर्वनाम, परसर्ग, संयोजक, सहायक क्रियाओं जैसे 'रिक्त शब्द' की अपेक्षा संज्ञा, विशेषण और भावात्मक क्रियाओं जैसे 'पूर्ण' शब्द को ही ग्रहण करने की ओर अधिक प्रवृत्त होती है।[५]

१—लैंग्वेज—पृ० ७ भा० जेस्पर्सन।
२—मार्क्सिज्म एंड प्राब्लम्स आफ् लिंग्विस्टिक्स पृ० १०—जे० स्तालिन।
३—इन ऑर्डर टु रेफर बैक दीज एलीमेंट्स टु सम ऑफ दी ओरिजिनल थर्ड्या लैंग्वेज बिहाइंड दी एक्सेन्ट्स ऑफ् दी लैटर स्ट्रेटम ऑफ दी लैंग्वेज ऑफ् इन्डो। पृ० १०—दी प्राब्लम् ऑफ् हिन्दुस्तानी—डॉ० ताराचन्द।
४—एफिनिटी आफ् इन्डियन लैंग्वेजेज—पृ० ११ (एस एम कत्रे)—पब्लिकेशन डिवीजन मिनिस्ट्री आफ् इन्फार्मेशन एंड ब्राडकास्टिंग गवर्नमेंट आफ इन्डिया १९५ ।
५—लैंग्वेज—पृ० २११—ओ० जेस्पर्सन।

पिछले लगभग ९०० वर्षों में हिंदी का संपर्क दो प्रकार के इतिहास प्रसिद्ध आक्रामकों से स्थापित हुआ, जिसके कारण भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक ढांचे में कल्पनातीत परिवर्तन उपस्थित होगया। हिंदी भाषा के विकास एवं उसके स्वरूप पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। बाह्य आक्रमण की ऐतिहासिक घटना और आक्राता या विजेता के भाषा संबंधी चुनाव का पराजित देश की भाषा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हिंदी में फारसी और अंग्रेजी के अनेक भाषातत्व एवं पूर्णशब्द विद्यमान हैं, जिन्हें हिंदी की संघटना से पृथक् नहीं किया जा सकता। साथ ही हिंदी के प्रसार में भी विदेशियों ने कुछ न कुछ योग अवश्य दिया है। उत्तर-पश्चिम से आने वाले फारसी भाषा भाषी मुसलमान विजेताओं और दक्षिण-पूर्व से आने वाले अंग्रेजी भाषा भाषी अंग्रेज विजेताओं द्वारा आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति के केन्द्रीकरण के फलस्वरूप स्थानीय जनता से व्यवहार स्थापित करने के निमित्त यहाँ की बोली को अपनाया गया। मुसलमान आक्रामकों ने दिल्ली के आस पास की बोली को यहाँ के लोगों से संपर्क स्थापित करने के लिए अपना लिया और यही बोली आगे चलकर 'उर्दू' या 'शाही लश्कर की जबान' कहलाई, यद्यपि इसका प्रसार इस नामकरण से भी बहुत पहले दक्खिन तक हो चुका था, जिसका प्रमाण 'दक्खिनी' का प्रचुर साहित्य है। इसी तरह ईस्ट इंडिया कंपनी के मातहत काम करने वाले अंग्रेज हाकिमों और ईसाई धर्म प्रचारक पादरियों ने भी इसी दिल्ली की बोली खड़ी बोली-को अपनाया और इसका प्रसार कलकत्ता तक हो गया।

किसी देश या समाज का अभिजातवर्ग किसी भाषा के भाग्य का निर्णायक न होने पर भी, उस भाषा के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण कृत्रिम अवरोध उपस्थित कर देता है। अभिजात वर्ग की कोई अलग से वर्गभाषा नहीं होती। स्थानीय जनभाषा से किसी प्रकार का अंतर ही पर्याप्त है। इंगलैंड का अभिजात वर्ग शताब्दियों तक फ्रांसीसी बोलता रहा, जबकि अंग्रेज जनता अंग्रेजी बोलती रही। दूसरे यह फ्रांसीसी खुद में कोई वर्ग भाषा न थी, बल्कि फ्रांसीसी जनता की सामान्य भाषा थी।[1] कालान्तर में फ्रांसीसी मिट गई और उसका स्थान अंग्रेजी ने ले लिया, जिसमें फ्रांसीसी के अनेक भाषातत्व ग्रहण किए जा चुके थे। यही स्थिति फ्रांसीसी और रूसी

१—मार्क्सिज्म एंड प्राब्लम्स ऑफ् लिंग्विस्टिक्स—पृष्ठ २३— जे स्टालिन।

के संबंध में भी थी। बादशाहों के दिनों में रूसी अभिजातवर्ग की भाषा फ्रेंच थी। रूसी भाषा दासों और गँवारों की भाषा समझी जाती थी जिसमें लिखना बोलना सभ्य और शिक्षित आदमी की शान के खिलाफ था। बहुत से साहित्यकार यह मान बैठे थे कि साहित्यों की इस जबान में उनके महान भाव और ऊँचे विचार प्रकट ही नहीं किए जा सकते। कालान्तर में रूस से फ्रांसीसी मिट गई किंतु फ्रांसीसी भाषा के अनेक भावात्मक शब्द रह गए। यही स्थिति भारत में फारसी की भी है। किसी वर्ग में प्रचलित स्वतंत्र भाषा के रूप में फारसी का अस्तित्व नहीं रह गया है। वह पूर्णतः विदेशी भाषा है किंतु उसकी कई ध्वनियाँ हजारों शब्द एवं अनेक मुहावरे हिंदी में ग्रहण किए जा चुके हैं जिनसे हिंदी अधिक शक्तिसम्पन्न हुई है। इसी प्रकार अपने 'पूर्व' शब्दों के निक्षेप से अंग्रेजी ने भी हिंदी को सम्पन्न बनाया है।

मुसलिम शासन काल में देश में एक प्रकार से भाषा-समन्वय की स्थिति उपस्थित हो गई थी जिसके फलस्वरूप हिंदी पर मुसलमानी प्रभाव व्यावहारिक भाषा में पड़ा और जो इसके शब्दभंडार, व्याकरण, अलंकार, छंदशास्त्र और शैली में देखा जा सकता है जो हिंदी के लिए सच है वही मराठी और बंगला तथा उससे भी अधिक पंजाबी और सिंधी के लिये भी सच है। विजेताओं द्वारा देश में अरबी, फारसी और तुर्की भाषाएँ लाई गईं। अरबी मुख्यतः धर्म एवं कानून की भाषा थी। तुर्की विदेशियों के एक वर्ग में बोलचाल में बनी रही जिसका कोई महत्वपूर्ण साहित्य नहीं था। दूसरे तुर्कों ने फारसी को खूब अपनाया था तथा भारत में फारसी के प्रचार में उन्होंने मुख्य रूप से हाथ बँटाया। उत्तर-पूर्व ईरान एवं अफगानिस्तान में बस कर तुर्कों का सांस्कृतिक दृष्टि से फारसीकरण हो गया था। उन्होंने फारसी बोलने वाले ताजिकों पर शासन भी किया था और तुर्क तथा ताजिक दोनों ने भारत में

१—भाषा साहित्य और संस्कृति—पृष्ठ १५—डॉ. रामविलास शर्मा।

२—मुस्लिम इन्फ्लुएन्स अपॉन हिंदी पेनिट्रेटेड डीप ऐंड इज सीन इन इट्स वोकेबुलरी ग्रामर, मेटाफर प्रोसोडी स्टाइल, ऐंड व्हाट इज ट्रू आफ् हिंदी इज ट्रू ऑफ् मराठी एंड बंगाली एंड मोर सो ऑफ् पंजाबी एंड सिंधी। पृ. १४—इन्फ्लुएन्स ऑफ् इस्लाम ऑन इंडियन कल्चर।
—डॉ. ताराचन्द।

फारसी फैलाने में हिस्सा लिया।" यहाँ फारसी राजदरबार की भाषा थी। सरकारी कार्यों के अतिरिक्त बादशाह तथा शाहजादा, अफसर तथा सिपाही, व्यापारी तथा फकीर जैसे विभिन्न मुसलिम वर्गों में यह सामाजिक आदान-प्रदान का माध्यम थी।[२] भारत मे फारसी का अच्छा साहित्य भी लिखा गया। लेखकों मे पहला उल्लेखनीय नाम अमीर खुसरो का है।[३] और यहाँ के देशी तथा विदेशी फारसी लेखकों ने न केवल फारसी साहित्य को सम्पन्न बनाया, बल्कि वे मुसलिम शासकों के आश्रय में फारसी की सेवा में फारस देश के लेखकों से भी प्रतिद्वन्दिता करने लगे। फारसी के सपर्क का भारतीय जीवन पर पड़ा प्रभाव हिंदी साहित्य मे स्पष्टत दृष्टिगोचर होता है। भारत मे बसे तथा भारतीय समाज को प्रत्यक्षत प्रभावित करने वाले विभिन्न वर्ग एव पेशे के विदेशियों द्वारा फारस की सस्कृति एव विचार-धारा का प्रसार जनता तक हुआ।[४] चूंकि विदेशियों एव स्थानीय जनता के बीच बोलचाल का माध्यम हिंदी थी, इसलिए फारसी के भाषागत अनेक प्रभाव हिंदी मे प्रकट हुए। जैसा कि प० किशोरीदास वाजपेयी ने सकेत किया है, उससे यह स्पष्ट है कि 'फारसी-अरबी का इतना प्रभाव हिंदी पर पड़ गया था कि अब तक उसकी गध गई नहीं है और मेरे जैसे 'सस्कृत पडित' की कलम से भी, अब तक वैसे शब्द निकलते रहते हैं, यद्यपि मैं उर्दू-फारसी का 'अलिफ-बे' भी नहीं जानता।'[५] कालान्तर में इसी गुण का अंग्रेजी प्रभाव भी हिंदी पर पड़ा।

विभिन्न जातियों के समागम के कारण भारतीय सस्कृति एक समन्वित सस्कृति हो गई है। इस सस्कृति की धारा मे विभिन्न समय के एव विभिन्न सम्प्रदायों के विश्वास, रीति-रिवाज, उपासना, प्रथा, कला, धर्म और दर्शन

१—ओरिजिन एड डेवेलपमेंट ऑफ् बेंगाली लैंग्वेज—पृ० २०२—डॉ० एस के चटर्जी।

२—दी प्राब्लम ऑफ् हिन्दुस्तानी—पृ० ४४—डॉ० ताराचन्द।

३—दी कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ् इडिया—वाल्यूम ३—पृ० १३५—लेखक कर्नल सर वूल्जेली हेग।

४—परसियन इन्फ्लुएस ऑन हिंदी—पृ० ७६—डॉ० हरदेव बाहरी।

५—हिन्दी शब्दानुशासन—पृष्ठ ४२।

का मिले हैं। भारतीय संस्कृति के वर्ग-चरित्र को स्पष्ट करते हुए डा० ताराचन्द ने लिखा है कि भारतीय समाज में सदैव उच्च एवं निम्न दो वर्ग रहे हैं। प्रथम वर्ग संख्या में कम रहने पर भी उन्नत धर्म व मानसिक विचार और संस्थाओं का स्वामी रहा है। द्वितीय वर्ग सामान्य जनता का था जिसका देश के सांस्कृतिक विकास में बहुत मामूली हाथ रहा है। भारतीय संस्कृति में प्रथम वर्ग ने बुद्धिजीवियों एवं सामंतों को तथा दूसरे वर्ग ने सामान्यजन को उत्पन्न किया है। किन्तु संस्कृति का वर्ग चरित्र होने पर भी भारत में इन दो वर्गों की भाषा कभी अलग-अलग या दो नहीं थी। किसी भी राष्ट्र में दो भिन्न वर्ग संभव हैं लेकिन दो भिन्न वर्गभाषाएँ संभव नहीं हैं। संस्कृति समाजवादी या पूँजीवादी हो सकती है किन्तु विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम भाषा सदैव जनता के लिए एक ही होती है।[3]

मुसलमानों के आगमन के समय देश में पृथक्तावादी सामंती संस्कृति का बोलबाला था जिसने भारत को अनेक टुकड़ों में बाँट रखा था। जनतांत्रिक संस्कृति के प्रतिनिधि इस्लाम के धक्के को भारतीय समाज बर्दाश्त न कर सका। मुसलमानों के यहाँ व्यवस्थित हो जाने के पश्चात् नई ज़िन्दगी की तलाश में एक नई समन्वयात्मक संस्कृति का निर्माण आरंभ हुआ जो न तो पूर्णतः हिंदू संस्कृति थी और न पूर्णतः मुस्लिम संस्कृति। वास्तव में यह हिंदू-मुस्लिम संस्कृति थी। धर्म, कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में केवल मुस्लिम तत्व ही नहीं ग्रहण किए गये वरन् हिंदू संस्कृति और उसकी

१—इस प्रसंग में टैगोर की 'भारततीर्थ' कविता उल्लेखनीय है—

हेथाय आर्य हेथा अनार्य हेथाय द्राविड़ चीन
शक-हूण-दल पाठान-मोगल एक देहे होलो लीन।
पश्चिम आजि खुलियाछे द्वार सेथा होते सबे आने उपहार,
दिबे आर निबे मिलाबे मिलिबे जाबे ना फिरे—
एइ भारतेर महामानवेर सागर तीरे।

२—इन्फ्लुएन्स ऑफ् इस्लाम आन इंडियन कल्चर—इन्ट्रोडक्शन—पृ० ९—डॉ० ताराचन्द।

३—मार्क्सिज्म एंड प्राब्लम्स ऑफ् लिंग्विस्टिक्स—पृ० २७—जे० स्टालिन।

४—इन्फ्लुएंस आफ् इस्लाम ऑन इंडियन कल्चर—पृ० ११७—डा० ताराचंद।

विचारधारा में भी कुछ परिवर्तन आ गया। हिंदू राजे-राजवाड़ा या समाज के प्रथम वर्ग ने मुसलमानी प्रभाव को जल्दी स्वीकार किया। थोड़े ही दिनों के पश्चात हिंदू और मुसलिम राजदरबारों का अंतर भी मिट गया। इस्लामी संस्कृति का स्पष्ट दर्शन 'रीति-रिवाजों, घरेलू जीवन की अन्दरूनी बातों, संगीत, वेश-भूषा के फैशन, खान-पान, शादी-ब्याह के उत्सव, त्योहार एवं मेले के समारोह, राजदरबारों के तौर-तरीके, मराठे, राजपूतों और सिख राजाओं के व्यवहारों में किया जा सकता है।'[१] साहित्य के क्षेत्र में भी हिंदी को मुसलमानों की पर्याप्त देन है। जिस प्रकार पठान युग में खुसरो, कबीर और जायसी आदि मुसलिम कवियों ने हिंदी साहित्य की रचना की थी, 'वैसे ही मुगल काल में रसखान, आलम, जमाल, रसलीन, कादिर, मुबारिक, रहीम और ताज ने हिंदी की बहुत अच्छी सेवा की। दारा शिकोह तो हिंदी, संस्कृत और हिंदुत्व के पक्षपाती होने के कारण मुसलमानों में काफी बदनाम थे।'[२] अकबर द्वारा स्थापित रोटी-बेटी के संबंध ने इस समन्वय को और बढ़ाया। इस समन्वय का हिंदी भाषा पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। भाषा में नए शब्दकोश एवं अभिव्यक्तियों की वृद्धि हुई। 'एशिया के पश्चिमी जगत का सारा सांस्कृतिक वैभव, सारी साहित्यिक शैलियाँ, सारी भाषा संबंधी रीतियाँ इस देश को मिलीं और उसकी संस्कृति और साहित्य समृद्धि हुए।'[३]

ईरान पर आक्रमण करने वाले अरबों ने भी वहाँ के रहन-सहन की सुखमय जीवन-पद्धति को स्वीकार कर लिया था। दूसरी ओर ज्ञान के क्षेत्र में अरबों का 'निजी भी बहुत कुछ था, और अलबरूनी ने तो सिद्ध कर दिया है कि इन सब दिशाओं में मुसलिम वैज्ञानिकों का ज्ञान हिंदुओं से किसी मात्रा या प्रसंग में कम नहीं है। हिंदुओं ने इसे समझा और तत्काल उन्होंने विज्ञान के वे सारे सिद्धांत उनसे ले लिए जो उन्हें नए जान पड़े।'[४] ईरानियों और अरबों की मिली-जुली संस्कृति से साहस, अनुसंधान, सौंदर्य एवं कला की प्रेरणा नए रूप में विभिन्न देशों को प्राप्त

१—वही—पृष्ठ १४२।

२—संस्कृति के चार अध्याय—पृष्ठ ३३८—दिनकर।

३—हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग १—पृ० ७३८—ना० प्र० स०।

४—वही—पृ० ७२७।

हुए। फारसी भाषा इन सबका एकमात्र माध्यम थी जिसका एशिया में दूर-दूर तक प्रचार हो चुका था। फारसी भाषा के महत्व के बारे में पंडित नेहरू ने लिखा है कि 'यूरोप में फ्रांसीसी भाषा की तरह फारसी भी एशिया के विस्तृत क्षेत्र में सभ्य लोगों की भाषा बन गई। ईरानी कला और संस्कृति का पश्चिम में कुस्तुनतुनिया से लेकर (पूर्व में) गोबी के मरुस्थल तक प्रसार हो गया।[1] भारतीय समाज एवं हिंदी भाषा ने भी फारसी के बहुविध प्रभावों को उदारतापूर्वक अंगीकार किया।

२ ऐतिहासिक भूमिका

इस्लाम के आविर्भाव के पूर्व से ही अरबों और पारसियों का भारत से व्यापारिक संबंध स्थापित हो चुका था। अरबों की चार बस्तियाँ मलाबार तट, कम्बात और सुपारा अर्थात् दक्षिण-पश्चिम भारत में कायम हो चुकी थीं। इस्लाम के उदय एवं अरबों के एकीकरण के उपरांत उनमें विश्वविजय की सामूहिक भावना का उदय हुआ। शाम और ईरान को पराक्रांत कर इस्लामी करण किया गया। तुर्कों और ताजिकों के नेतृत्व में उत्तर से मुसलमानों की सेना भारत की देहली पर आ पहुँची। दूसरी ओर मुसलिम अरबों का भारत में पहला युद्ध सिंध के राजा दाहिर से ७१२ ई० में हुआ था। सिर्फ तीन दिन के युद्ध में खलीफा के अफसर मोहम्मद इब्न[2] कासिम ने सिंध में विजय प्राप्त की। यहीं से भारत में विजयी मुसलमानों के अपने धर्म का प्रचार करने और शासन करने के कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ।

इस घटना के उपरांत भारत की राजनीतिक स्थिति दिनोदिन बिगड़ती चली गई। शक्तिशाली केन्द्रीय शासन का अंतिम हिंदू राजा हर्ष था। इस दृष्टि से पृथ्वीराज केवल एक केन्द्रीय सामंत माना जा सकता है ऐसे राजाओं का नित्यकर्म परस्पर युद्ध और अपमान था। 'प्रत्येक राजा को प्रत्येक दूसरे राजा से कुछ न कुछ शिकायत थी। कोई भी चार राजे एक राजा का साथ देने को तैयार नहीं थे।'[3] राजा और प्रजा शासक और शासित का उस

१—दी डिस्कवरी ऑफ् इंडिया—पृ० १६ —जवाहरलाल नेहरू
२—'इब्न' का अर्थ पुत्र या बेटा होता है। कुछ लेखक 'इब्न' की जगह बिन' का भी प्रयोग करते हैं।
३—मध्यकालीन भारत—पृ० ५—म्यूसी लेमप्ल। हिन्दी संस्करण-दिल्ली।
४—संस्कृति के चार अध्याय—पृष्ठ २ ४—दिनकर।

जमाने में अच्छा संबंध नहीं था। लेनपूल ने इस संबंध को अत्यन्त यथार्थवादी ढंग से अभिव्यक्त किया है। मुहम्मद इब्न कासिम की सिंध विजय के उपरांत, 'कई देशी जातियों के लोग घण्टे बजाते, ढोल पीटते और नाचते हुए' विजेताओं का स्वागत करने आए। हिंदू राजाओं ने इन लोगों का बहुत शोषण किया था और इसलिए जाट, मेड़ और अन्य जातियाँ आक्रमणकारियों के पक्ष में थीं।[१] राजप्रसादों एवं देवमंदिरों के भीतर की स्थिति और भी असंतोषजनक थी। देश का सामंतशाही समाज विलास में लिप्त था। 'साहित्य और इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब मुसलमान सेनाएँ दुर्गों के द्वार को तोड़ रही थीं तो परमर्दि नग्न स्त्रियों का नाच देख रहा था, लक्ष्मण सेन मातंगी से खेल रहा था, पृथ्वीराज नींद में ऊंघ रहा था और हरिराज नर्तकियों और वेश्याओं पर कोश खाली कर रहा था। गुजरात के चार हजार मंदिरों में बीस हजार से ज्यादा देवदासियाँ थीं। जो कुछ मंदिरों के अंदर होता था वही उनकी बाहरी दीवारों पर चित्रित किया जाता था।'[२]

जैन, बौद्ध एवं हिन्दू धर्म का आपसी संघर्ष उग्र था। दक्षिण में विशेष रूप से नव-हिंदू धर्म (नियो हिंदुइज्म) बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म से संघर्ष रत था। ऐसे समय में इस्लाम अपनी सरल धार्मिक पद्धति से प्रकट हुआ, जबकि जनता भी कोई नई चीज चाहती थी।[३] साहित्य के क्षेत्र में यह संस्कृत साहित्य के ह्रास का युग था। स्थानीय भाषाओं के साहित्य में वीरोपासना, आश्रयदाताओं की विलासिता एवं विभिन्न मतवाद का प्रचार आरंभ हो गया था। शस्त्रविद्या, रणकौशल और सैनिक संगठन में हर प्रकार की गिरावट ही भारतीय युद्ध-प्रणाली की विशेषता बन गई थी। रणक्षेत्र में राजा या सामंत का स्थान लेने वाला कोई नहीं होता था, क्योंकि सामंत की मौत और उसके पश्चात् की व्यवस्था की बात सोचना या तो अशुभ था या दुस्साहस। सामन्तों के गिरते ही हजारों-लाखों की सेना भाग खड़ी होती थी और आक्रामकों को महलों से प्राप्त रत्न, मोती, मणियों और

१—मध्यकालीन भारत—पृष्ठ ६।

२—नागरी प्रचारिणी पत्रिका—मालवीय शती विशेषांक, सं० २०१८ वि०। पृष्ठ ४४९—बुद्धप्रकाश।

३—इन्फ्लुएंस ऑफ् इस्लाम आन इण्डियन कल्चर—पृष्ठ ३४—डॉ० ताराचन्द।

बड़े-बड़े लाल-हीरे तथा जवाहरातों की प्रदर्शनी होती थी। गजनवी के हमले के बाद सोमनाथ के सम्बन्ध में 'सारी दुनिया भारत की अपार धनराशि देखने चल पड़ी' और यहाँ से पकड़े गए गुलामों की हालत यह थी कि उन्हें फारस के बाजारों में बहुत ही मामूली दाम देकर खरीदा जा सकता था।

भारत में मुसलमानों ने न केवल युद्ध किया और धर्मप्रचार किया बल्कि अपनी कला, संस्कृति, साहित्य एवं भाषा का भी प्रचार किया। मुसलमानों के संपर्क के फलस्वरूप भारतीय जीवन एवं इतिहास में एक बड़ी क्रांति उपस्थित हुई। सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन की कुल मात्रा इतनी अधिक थी कि उसमें वास्तव में एक 'नवयुग का प्रारंभ' होने लगा। प्रथमकाल[3] में इस्लाम का भारत के दक्षिण में शान्तिपूर्वक और सिंध तथा उत्तरपश्चिम में शक्तिपूर्वक प्रवेश प्रारंभ हुआ एवं द्वितीय काल में व्यवहारतः समस्त भारतीय प्रायद्वीप में वह प्रधान शक्ति बन गया।

बाहरी शक्तियों से संपर्क के समय देश एक विचित्र अंधविश्वास के चक्कर में आ फँसा था। गौओं को पवित्र मानने और नीचा दिखाने के लिए धर्मशास्त्र में ब्राह्मणों ने विदेश-यात्रा वर्जित कर दी थी। बाहर जाने वाला व्यक्ति धर्मच्युत होने लगा। भारतीय समाज हर तरह से संकुचित होकर कूप-मंडूक हो गया था।

४ मुसलमानी आक्रमण

विभिन्न जातियों से भारत का लगातार संपर्क रहा है। कुछ लोग भारत में सैनिक आक्रमकों के रूप में जैसे असीरियाइ, हखामनीय पारसीक, यूनानी सिकन्दर और उसके उत्तराधिकारी शकों के समान विभिन्न ईरानी जाति दक्षिण भारत में आए, यूनानी व्यापारी गुर्जर एवं हूण जैसी तुर्की

१—मध्यकालीन भारत—पृष्ठ १५

२—वही—पृष्ठ १७।

३—डा. ताराचन्द ने मध्यकालीन इतिहास को दो भागों में बाँटा है—(१) पूर्व मध्यकाल वीं से ११ वीं ई. सन् तक, (२) उत्तरमध्यकाल ११ वीं से १८ वीं ई. सन् तक।

४—वही—पृष्ठ —भूमिका।

५—संस्कृति के चार अध्याय—पृष्ठ १८—दिनकर।

जाति, मुसलमान अरब, तुर्क एव इरानी, इसाइ, अबीसीनियाई व्यापारी, और अन्त मे यूरोप की आधुनिक इसाइ जाति, जो भारत मे आधुनिक युग मे आइ, यथा पुर्तगाली, अग्रेज, डच, फ्रांसीसी।[1] मुसलमान भारत म एक अवसर पर या एक ही रास्ते नहीं आए। व पहले मलाबार तट पर, पुन सिंध में तथा अतत. पजाब म पहुँचे। ९७६ इ० मे गजनी का शासक बनने वाले सुबुक्तगीन ने पजाब के राजा जयपाल को दो बार हराया। हिंदुओ न सुबुक्तगीन को कर स्वरूप कुछ धन दिया और विदेशियो क लिए भारत आने का मार्ग प्रशस्त होगया। उसक पुत्र महमूद गजनवी [९९७ १०३०] ने सत्रह बार आक्रमण एव सैकड़ो मील तक कत्लेआम कर उत्तर-पश्चिम भारत को गगातट तक रौंद डाला। सबसे बड़ी बात यह हुइ कि पजाब मे सतलज नदी तक मुसलमानो का राज्य स्थापित हो गया। इतिहास में पहली बार हिंदी-प्रदेश स फारसी बोलने वाले शासको की राज्यसीमा आ मिली। तिलक जैसे हिंदू सिपहसालारो ने भी मुसलमानो को सहयोग दिया।[3] इससे प्रकट होता ह कि "हिंदुओ और तुर्कों की आपस मे घुल-मिल जाने की प्रक्रिया बहुत काफी आगे बढ चुकी थी।"[4]

लगभग सौ वर्षों के पश्चात् अलाउद्दीन-हुसेन 'जहासोज'—दुनिया मे आग लगाने वाला—ने गजनी-शासन को उखाड़ फेका और गौर शासन की स्थापना की। गजनीवश की कब्रें खोद डाली गइ और शाही हड्डिय कुत्तो क सामने डाल दी गइ।[5] इसी गोर वश का मुइजुद्दीन अर्थात् मुहम्मद गोरी ११७३-७४ मे महमूद गजनवी के सारे गुणों से सम्पन्न होकर गजनी की गद्दी पर बैठा। भारत मे तीस वर्षों तक जो काम महमूद ने किया था वही काम इसने भी तीस वर्ष तक किया। गोरी के भारत अभियान की एक विशेषता यह भी थी कि इसे हिंदुओं के अतिरिक्त सिंध और पजाब के मुसलमानों से भी युद्ध करना पड़ा। मुसलमान शत्रुओ से खाला

१—एफिनिटी ऑफ् इडियन लैंग्वेजेज—पृ० २५—(यस के चैटर्जी)।

२—दी कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ् इंडिया—वाल्यूम ३—पृष्ठ स० २६—ले० कर्नल सर वूल्जेली हेग।

३—वही पृष्ठ ३०।

४— मध्यकालीन भारत-पृष्ठ ३०-लेनपूल।

५—वही पृष्ठ ३४।

होकर उसने पृथ्वीराज से पहली टक्कर ली जिसमें बुरी तरह हारा और मरते-मरते बचा। अगले वर्ष ११९२ ई० में उसने सफलता-पूर्वक इस बेइज्ज़ती का बदला चुकाया। युद्ध में हिंदू हारे और 'पृथ्वीराज घोड़े पर चढ़कर भाग खड़ा हुआ लेकिन सिरसुती [सरस्वती] में पकड़ कर जहन्नुम भेज दिया गया।' मुहम्मद के योग्य उत्तराधिकारी कुतुबुद्दीन ऐबक और उसके सेनापति बख्तियार खिलजी ने बिहार और बंगाल तक को आसानी से मुसलिम राज्य में शामिल कर लिया। १२०६ ई० में गोरी की मौत के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में स्वतंत्र मुसलिम राज्य [गुलाम वंश] की स्थापना की और यह ऐसा शासक हुआ "जो किसी बाहरी राजधानी से नहीं बल्कि स्वयं भारत में रह कर राज्य करता था।

देशी राजे-रजवाड़ों की पराजय बड़ी आकस्मिक और आश्चर्यजनक थी। डा० ताराचन्द ने लिखा है कि "यदि मुसलमान सेनापति विवरण लिखने के अभ्यस्त होते यदि वे अपने विवरण का उद्देश्य रखते तो जूलियस सीज़र की विजयी घोषणा से भी ज्यादा लिखते—वे आए, उन्होंने देखा और जीत लिया।" विजय के उपरान्त उन्होंने देश में बड़ा जुल्म ढहाया। मुसलमानों की विजय अत्याचार, विध्वंस और निर्मम रक्तपात की एक करुण कहानी है। गांव के गांव फूंक दिए गए, सैकड़ों मील तक कत्ले-आम किया गया, फसलें, बाजार और धनधान्य से संपन्न मंदिर तथा राजप्रासाद बियाबान हो गए। "असंख्य स्त्रियों और बच्चों को पकड़-पकड़ कर कच्चे चमड़े के कोड़ों से बुरी तरह मारा गया। गायों को मारकर उनका खून और मांस कुओं में भर दिया गया जिससे बाल-बच्चे प्यास से तड़प कर मरने लगे। लोगों का भय और दुःख अवर्णनीय था। सेनाओं के साथ साथ

१—दी कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ् इंडिया—वाल्यूम ३—पृ० ७

२—मध्यकालीन भारत—पृष्ठ १—लेनपूल।

३—वही—पृष्ठ १।

४— "इफ दी मुस्लिम जनरल्स वेयर एट आल इन दी हैबिट आफ् राइटिंग डिस्पैचेज एण्ड हैड मोस्ट ए मोटो फॉर देयर रिपोर्ट्स देय माइट हैव इन वर्स दैन जूल दी विक्टोरियस एनाउन्समेंट आफ् जूलियस सीज़र —देय केम देय सा एंड देय कान्कर्ड। पृष्ठ—१११— इन्फ्लुएन्स ऑफ् इस्लाम आन इंडियन कल्चर—डॉ० ताराचन्द।

पूरा कारागार चलता था और बंदियों को जबरन मुसलमान बनाया जाता था।"[1]

अभी भारत का दक्षिणी प्रदेश मुसलमानों के अधिकार में नहीं आया था। दिल्ली-विजय से सारा भारत पराजित नहीं हुआ। "चोल-वंश दक्खिन में अब भी शक्तिशाली था और दूसरी खुद-मुख्तार रियासतें भी थीं। अफगानों को दक्खिन हिंदुस्तान के ज्यादातर हिस्से में अपनी हुकूमत फैलाने में और भी डेढ सदी लग गई।"[2] लेकिन दिल्ली में नए शासन की स्थापना एक महत्वपूर्ण बात थी और नई व्यवस्था का यह एक प्रतीक था।

मुसलमानों के भारत-आगमन से "यह स्पष्ट है कि जब और जहां वे आए, उन्हें देशी जनों के सम्पर्क में आना पड़ा और फलस्वरूप एक अन्तर-सामुदायिक वर्नाक्युलर का आविर्भाव हुआ।"[3] मुसलमानों के संपर्क में सिंध में भी एक भाषा का विकास हो रहा था, किंतु यह उर्दू नहीं थी। यह आधुनिक सिंधी भाषा का पूर्वरूप था, जो मूलतः आर्य-भाषा है, किंतु अरबी से प्रभावित है।[4]

४-दिल्ली सल्तनत

पठान सुल्तानों ने दिल्ली के तख्त पर कुल ३२० वर्षों तक शासन किया। शासन धर्म-प्रधान था और शासक सही माने में निरंकुश थे। वे अपने नाम से ही सिक्के निकालते थे और खुतबा पढवाते थे, यद्यपि इल्तुतमिश, मुहम्मद तुगलक और फीरोज तुगलक की भांति कुछ बादशाहों ने अपनी स्थिति दृढ करने के लिए खलीफाओं की सहायता ली थी।[5] सरकार का ढांचा सैनिकतंत्र का था, जिसमें केवल मुसलमान शामिल थे।

गुलाम सुल्तानों में बलबन बहुत खौफनाक था। हिंदी का मशहूर कवि 'तूतिए-हिंद' अमीर खुसरो इसी के जमाने में पैदा हुआ था। बलबन शान शौकत वाला आदमी था। वह हमेशा सभ्य और तहजीब-पसंद व्यक्तियों से बातचीत करता था।[6]

१—नागरी प्रचारिणी पत्रिका—मालवीय शती विशेषांक पृ०-०४१।

२—हिन्दुस्तान की कहानी—पृष्ठ २८८—जवाहर लाल नेहरू। अनु० रामचन्द्र टंडन।

३—हिन्दुस्तानी फोनेटिक्स—पृ० १५—डॉ० यस जी एम कादरी।

४—वही पृष्ठ १७।

५—मध्य युग का संक्षिप्त इतिहास—पृष्ठ २३२—डॉ० ईश्वरी प्रसाद।

६—मध्यकालीन भारत—पृष्ठ ६०—लेनपूल।

बलबन के पश्चात् अलाउद्दीन का शासन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसने दक्खिन-फतह का अधूरा काम पूरा किया और दक्खिन में रामेश्वर तक जा पहुँचा। अशिक्षित अलाउद्दीन बहुत ही महत्वाकांक्षी था। वह कभी पैगम्बर बनना चाहता था तो कभी सिकन्दर और कभी नए कुतुब मीनार का निर्माता। हिंदुओं का दमन करने में वह औरंगजेब का पूर्वज था। काजी ने अलाउद्दीन से हिंदुओं का कर्तव्य समझाया था कि जब सरकारी अफसर उनके मुँह में धूल फेंकता है या थूकता है तो उन्हें अपना मुँह और ज्यादा खोल देना चाहिए।[1] मुहम्मद तुगलक एक वीर सेनापति था। सिंहासन पर बैठने वाले निरंकुश राजाओं में वह एक था। उसमें विभिन्न गुण-दोषों का परस्पर इतना अधिक मिश्रण था कि उसे विरोधाभास का सम्मिश्रण कहा जाता है।[2] १४१४ ई॰ तुगलक वंश की समाप्ति के बाद मुलतान के शासक खिज्रखाँ ने सैयदवंश के और १४५१ ई॰ में लाहौर और सरहिंद के सूबेदार बहलोल लोदी ने लोदी वंश के शासन की क्रमशः स्थापना की। १५२६ ई॰ बाबर के आगमन तक देश में लोदी वंश की सल्तनत कायम रही।

जिस तरह सभी गुलाब के कांटे एक तरह के होते हैं उसी तरह सभी सुल्तानों के काम एक तरह के थे मूर्तिपूजा का नाश, मस्जिद में स्वीकृत प्रत्येक विधान से भिन्न प्रत्येक प्रथा का नाश तथा मुस्लिमेतर जनता का धर्म-परिवर्तन कराना ही आदर्श मुसलमानी राज्य के कर्तव्य समझे जाते थे।[3] जबकि वास्तव में इस्लाम का उद्देश्य ऐसा नहीं था। इस्लाम के अनुसार 'पूर्व और पश्चिम में मुँह फेरना सदाचार नहीं है। सदाचार यह है जो अल्लाह और कयामत और फरिश्ता और कुरान और पैगम्बरों में विश्वास करें जो खुदा की मुहब्बत के लिए यतीमों, गरीबों मुसाफिरों और फकीरों तथा कैदियों की मुक्ति के लिए अपनी दौलत खर्च करें और जो निमाज अदा करें और जकात दें करें और जिसने शरीअत को मंजूर किया उसे कबूल करें और जो मुसीबत और दिक्कत और जुल्म के जमाने में तसल्ली रखें। वे सदाचारी हैं जो खुदा से डरें।'[4]

१—वही पृष्ठ ७१।

२—दी कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ् इंडिया वोल्यूम ३—पृष्ठ १६६।

३—मध्ययुग का इतिहास—पृष्ठ १११—डॉ॰ ईश्वरी प्रसाद।

४—लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ् परशिया—पृ॰ १९१—ब्राउन।

पूरे सुल्तान युग में शायद ही किसी सुल्तान ने एक सच्चे अनुयायी के रूप में इस्लाम की शिक्षाओं का पालन किया हो। बलबन ने हिंदुओं को सर नहीं उठाने दिया और अलाउद्दीन ने उन्हें ग़रीब बनाकर छोड़ दिया। हिंदुओं की स्त्रियाँ मुसलमानों के घरों में सेवा कार्य करती थीं। फिरोज तुग़लक के बाद हिंदुओं ने अपनी शक्ति फिर स्थापित कर ली तो 'सिकंदर लोदी ने उनका सिर उत्पीडन किया।'[१] हिंदुओं का जीवन गुलामों से अच्छा नहीं था।

कला कौशल के क्षेत्र में जहाँ पुरानी कला का ह्रास हुआ वहीं मुसलमानी कला एक विशेष ढंग से विकसित हुई। देश में ईरानी और अरबी ढंग की मस्जिदें बनने लगीं और आगे चलकर हिंदू और मुसलिम कलाओं का एकीकरण हो गया। अनेक भवन, मीनारें, दरवाजे तथा मकबरे इसी प्रकार की मिश्रित कला के नमूने हैं। नए ढंग की बस्तियाँ और नगर बनाए गए। विभिन्न जातियों की पृथकता कम हो गई। "श्रमिकों, कारीगरों और चाण्डालों के लिये नए नगरों के द्वार खोल दिए गए। नगरों के परकोटे निरंतर सरकते और बढ़ते रहे और इनके भीतर ऊँच और नीच सब प्रकार के लोगों ने अपने घर बनाए और वे एक दूसरे के साथ बिना किसी सामाजिक भेदभाव के रहने लगे।"[२] नए मुसलमानी नगरों की योजनाओं ने पृथक्तावादी हिंदू विचारधारा पर प्रहार किया। विदेशी और धर्मपरिवर्तित मुसलमान खुद नगरों और गाँवों में एक साथ रहने लगे। मुसलमानों के "खानदान पूरी तौर पर हिंदुस्तानी हो गए, और उनकी जड़ें हिंदुस्तान में फैलीं, उन्होंने हिंदुस्तान को अपना घर समझा और बाकी दुनिया को विदेश माना।"[३] इससे भी हिंदुओं का पृथक्तावादी दृष्टिकोण बदला। हिंदू मुसलमानों में शादियाँ सामान्य बात नहीं थीं, तब भी होती थीं। दक्खिन में यह संबंध उत्तर की अपेक्षा कुछ आगे था। सहजीवन के फलस्वरूप खाना कपड़ा और रहन, सहन में अनेक तरह के फर्क

१—मध्ययुग का इतिहास—पृ० २४०—डा० ईश्वरीप्रसाद।

२—नागरीप्रचारिणी पत्रिका, मालवीय शती विशेषांक (२०१८)—पृ० ४२८—बुद्धप्रकाश।

३—हिंदुस्तान की कहानी—पृ० २६३—जवाहरलाल नेहरू।

आ गए। संगीत और साहित्य में भी इस प्रकार का समन्वय उपस्थित हो गया। "फारसी जबान सरकारी दरबार की जबान बन गई और बहुत से फारसी शब्द आम इस्तेमाल में आने लगे। साथ ही साथ एक आम जबान को भी तरक्की दी गई। दक्खिन की भाँति उत्तर में जौनपुर रियासत हिंदू मुसलमानों के लिये कला और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र थी। अपने को विदेशी समझनेवाले मुसलमानों ने भी फारसी के अलावा देशी जबान और तहजीब को स्वीकार किया।

इस काल की एक विचित्र विशेषता यह भी है मुसलिम समुदाय में एक अंतर्विरोध आरंभ हो गया था। सुल्तान अमीर और मुल्ले एक रीति नीति निर्धारित करते थे जबकि सूफी संत और कवि एक भिन्न रीति नीति। मुल्लों के सिद्धांत को जनता ने भय और घृणा से तथा सूफियों के सिद्धांत को प्रेम से स्वागत किया। सूफियों की इज्जत खिलजी काल में खूब बढ़ गई थी और इनका प्रभाव हिंदुओं और मुसलमानों पर यथेष्ट रूप से छा गया था। सूफियों के इस प्रभाव से सुल्तान लोग घबराने भी लगे थे। सूफियों में धर्म की संकीर्णता का अभाव था। परस्पर बँटी हुई हिंदू मुसलिम जनता को सूफियों ने एक करने की कोशिश की। मुसलमान हिंदुओं की रामकहानी सुनने को तैयार होने लगे और हिंदू मुसलमानों की दास्ताने हमजा।"[१] खुसरो ऐसे ही महापुरुष कवि थे जिन्होंने राजा से रंक तक सभी वर्गों को प्रभावित किया। खुसरो ने ब्रजभाषा या हिंदू मुसलमान की सामान्य भाषा के साहित्य को आगे बढ़ाया। खुसरो के पूर्वज तुर्की के रहनेवाले थे। चंगेज खाँ के आक्रमण से उन लोगों ने भारत में शरण ली थी। पटियाली में १२५३ ई० में खुसरो का जन्म हुआ था। ये बलबन और अलाउद्दीन के दरबारी कवि थे किंतु बाद में शेख निजामुद्दीन औलिया के शिष्य हो गए। ये फारसी के भी ऊँचे दर्जे के कवि थे। उनके जमाने में हिंदुओं ने शासन की भाषा फारसी का अध्ययन आरंभ किया जिसमें खुसरो ने अपने

१—वही—पृ० १९४।

२—संस्कृति के चार अध्याय—पृ० १२१—दिनकर।

३—वही—पृ० १२४।

४—कैंब्रिज हिस्ट्री ऑफ् इंडिया—वाल्यूम ३ पृ० १९५।

'खालिकबारी' से सहायता पहुँचाई।[1] वे दो भाषा, दो जाति और दो सुल्तानों के बीच जीवन भर कड़ी बने रहे।

खड़ी बोली का क्षेत्र मुसलमानों के शासन का मुख्य केंद्र था। "स्वभावतः खड़ी बोली में उनके संपर्क से काफी परिवर्तन हुआ।"[2] नई ध्वनियों एवं नए शब्दों का आगमन हुआ। नई विशेषताओं के साथ खड़ी बोली के विकास का आरंभ हुआ। दक्षिणविजय के पश्चात् खड़ी बोली मुसलिम कर्मचारियों, सिपाहियों, धर्मप्रचारकों एवं सूफी संतों के साथ दक्षिणियों के संपर्क में पहुँची। दक्खिन के लिये फारसी बिल्कुल अपरिचित भाषा थी। खड़ी बोली वहाँ व्यापक रूप से अपनाई गई। ख्वाजा बंदा नेवाज गेसूदराज़ ने खड़ी बोली हिंदी का प्रथम प्रामाणिक ग्रंथ प्रस्तुत किया। खुसरो बंदानेवाज से प्राचीन है, किंतु प्रमाण के अभाव में राहुल जी लिखते हैं कि 'इस प्रकार खड़ी हिंदी के सर्वप्रथम कवि यही दक्खिनी कवि थे'।[3] इन कवियों का फारसी पर पूरा अधिकार था किंतु इन्होंने खुसरो के दिखाए मार्ग का अनुसरण किया और 'उत्तर भारत की इस बोलचाल की भाषा में साहित्य का सृजन पहले पहल विदेशियों ने किया। यह बात स्वाभाविक थी'।[4]

भाषा और साहित्य की उन्नति की दृष्टि से सुल्तानयुग विशेष अनुकूल नहीं था क्योंकि यह संघर्ष, रक्तपात, युद्ध, विद्रोह, क्रांति, आंतरिक कलह, संदेह, भय, धर्मोन्माद, भ्रष्टाचार, अत्याचार और हिंसा का युग था।"[5] उत्तर भारत में लिखी गई इस युग की प्रामाणिक साहित्यिक कृतियाँ बहुत कम उपलब्ध हैं। इसलिये भाषागत प्रभाव का ठीक मूल्यांकन कठिन है। शिक्षा का प्रचार भी कम हो गया था। मुहम्मद तुग़लक के बारे में डा० बाहरी ने लिखा है कि "संभवतः वह पहला और अकेला सुल्तान था, जिसने अनेक विद्यालयों की स्थापना की, किंतु इनमें हिंदुओं का प्रवेश वर्जित था।"[6] साधारण हिंदू अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिसाब किताब

१— परसियन इन्फ्लुएंस ऑन हिंदी—पृ० २७—अंबिकाप्रसाद वाजपेयी।
२—दी प्राब्लेम ऑफ हिंदुस्तानी—पृ० २८—डॉ० ताराचंद।
३—दक्खिनी हिंदी काव्यधारा—दो शब्द—पृ० ५—राहुल सांकृत्यायन।
४—दक्खिनी हिंदी—पृ० १७—डा० बाबूराम सक्सेना।
५—परसियन इन्फ्लुएंस ऑन हिंदी—पृ० ४—डॉ० हरदेव बाहरी।
६—वही—पृ० ५।

अपनी भाषा में लिखना जारी रखा। जनता से संबंधित सभी सरकारी अभिलेख हिंदी में लिखे जाते थे। फ़ारसी दरबार, हरम, फ़ौजी छावनी और ऊँचे पदों तक सीमित थी, किन्तु यह किसी भी तुर्क, अफ़गान या पठान सुल्तान की मातृभाषा नहीं थी। वे या तो तुर्की बोलते थे या पश्तो लेकिन सभी परदेसियों में माध्यम भाषा फ़ारसी थी। फ़ारसी सरल मधुर और समृद्ध भाषा थी। फ़ारसी की लोकप्रियता का एक कारण और था कि फ़ारसी भाषाभाषी तुर्कों या पठानों से संख्या में कम होने पर भी प्रमुख पदों के अधिकारी थे। समाज में उच्च या सुसंस्कृत वर्ग फ़ारसी भाषियों का था। इनमें विद्वान् कवि विधिवेत्ता सैनिक धर्मप्रचारक इंजीनियर तथा विभिन्न पेशों के लोग मौजूद थे। मूल फ़ारस निवासी अपेक्षाकृत सभ्य और सहिष्णु थे। फ़ारसी सूफ़ी संतों का भी इस दिशा में प्रभाव पड़ा। भारत में आई फ़ारसी में अरबी, तुर्की, ईरानी और भारतीय भाषाओं के शब्दों का मेल हो गया था। स्वभावतः यह सभी विदेशियों के लिये बोधगम्य बन गई थी।[1] प्रशासन एवं नौकरी, न्यायालय तथा सूफ़ी संतों की भाषा होने के कारण यह स्थानीय जनता में भी लोकप्रिय हो गई। अनेक सूफ़ी संतों ने देश में स्थान स्थान पर अपने तसव्वुफ़ (सूफ़ी दर्शन) के साथ फ़ारसी का भी प्रचार किया था। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती गोरी के आक्रमण के २५ वर्ष पूर्व ही अजमेर में आकर बस गए थे। इसी प्रकार गुलामयुग में निज़ामुद्दीन औलिया दिल्ली में और सालार मसूद गाज़ी (गाज़ी मियाँ) बहराइच में आकर ठहरे और अपने धर्म के साथ भाषा का प्रचार किया। बदायूँ सूफ़ी संतों का एक केंद्र बन गया था। वहाँ के रहनेवाले कवि अमीर खुसरो खुद एक सूफ़ी संत थे। जायस, डलमऊ (रायबरेली) जौनपुर बाराबंकी, लखनऊ और आसपास भी सूफ़ियों के गढ़ थे।[2] ये सभी क्षेत्र हिंदी प्रदेश में थे। फलस्वरूप सूफ़ी संतों ने हिंदी क्षेत्र में फ़ारसी को लोकप्रिय बनाया। इस प्रकार हिंदी को बहुत निकट से प्रभावित करने का फ़ारसी को मौका मिला।

फ़ारसी का पहला प्रभाव इस रूप में स्वीकार करना चाहिए कि पुरानी या मध्यकालीन भाषाओं का प्रवेश देश में मुसलमानों के आते ही समाप्त

१—वही पृ ९।
२—वही—पृ ७।

हो गया और उनका स्थान नव्य भारतीय आर्यभाषा या हिंदी ने ले लिया। यदि भारत पर तुर्की मुसलमानी विजय न हुई होती तो जान पडता है, भारतीय आर्य देशी भाषाओं का उनके जन्म के पश्चात् भी गभीर साहित्यिक विषयों के लिये प्रयोग कुछ देर से होता। भारत मे भाषा का इतिहास इस बात को सूचित करता है कि जनता की रुचि हमेशा से नवीन वस्तुओ की ओर न होकर कुछ प्रौढ या पुरातन तत्वों की तरफ रही है।[1]

५---मुगल साम्राज्य

'सन् ११९३ ई० से लेकर १५२६ ई० तक दिल्ली के राज्य सिहासन पर जो ३५ सुलतान बैठे, उनमें से १९ सुलतानों की हत्या हिंदू नहीं, मुस्लिम दुश्मनों के हाथों हुई थी।'[2] इसी प्रकार दिल्ली सल्तनत का अत हिंदुओं ने नहीं, मुसलमानों ने ही किया। १५२६ ई० में बाबर ने दिल्ली के निकट पानीपत का युद्ध जीता। पानीपत की विजय से विशाल मुगल साम्राज्य की नींव पडी जिसे ऐश्वर्य, शक्ति और सस्कृति में मुस्लिम ससार को सर्वोच्च पद प्राप्त हुआ और जो रोमन साम्राज्य की भी बराबरी का दावा करने योग्य हो सका।[3] उसने राणा सग्राम सिंह को आसानी से हराकर हिंदुओं को पस्तहिम्मत कर दिया। उसके बेटे हुमायूँ को अनेक मुसीबतों का सामना करना पडा, जिसमें पलायन या हिजरत भी शामिल है, किंतु अंततोगत्वा अपने बाप के झडे को ऊँचा रखने में वह सफल हुआ। अकबर ने १५५६ ई० में जिस मुगल शासनसूत्र को अपने हाथ में लिया वह आगे के ३०० वर्षो तक मुगलों के हाथ में बना रहा जबकि १८५८ ई० में अतिम मुगल सम्राट् बहादुरशाह 'ज़फर' ने उस शासनछत्र को अंग्रेज़ों के हवाले कर दिया।

अकबर ने हिंदुस्तान की गद्दी क्या पाई थी मानो काँटों का ताज पहना था। "अकबर ने कूटनीति के अपने परिपक्व अनुभव के बावजूद भी अपनी मृत्यु तक पर्यन्त एक वर्ष भी कभी चैन से न काटा।"[4] हिंदू और मुसलमान

१—भारतीय आर्यभाषा और हिंदी-पृ० १९६—डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या।
२—सस्कृति के चार अध्याय —पृ० ३३७—दिनकर।
३—मुग़ल साम्राज्य का उत्थान और पतन—पृ० २९—डा० रामप्रसाद त्रिपाठी।
४—मध्यकालीन भारत—पृ० १५३—लेनपूल।

दोनों उसके शत्रु थे। इसलिये अपने विशाल साम्राज्य को उसने हिंदू-मुसलमान दोनों के कंधों पर समान रूप से टिका रखा था। जहाँगीर और शाहजहाँ का शासन कला और संस्कृति के विकास तथा शान शौकत एवं विलासिता का शासन था, जिसमें कभी कभी धार्मिक मतभेद उग्र हो जाया करता था। शाहजहाँ धार्मिक मामलों में असहिष्णु था। १६३२ में शाहजहाँ ने अनेक हिंदू मंदिरों को जो पिछले शासन में खासकर बनारस में, बनाए गए थे तोड़ने का आदेश दे दिया और अनेक तोड़ डाले गए।[1] औरंगजेब मानों अकबर के सभी कामों पर पानी फेरने के लिये ही पैदा हुआ था। साम्राज्य का विघटन उसके जीवनकाल में ही आरंभ हो गया था जो सर्वनाश होने तक कभी रुक न सका। औरंगजेब को ऐसी आदत से इतनी नफरत थी कि "वह मूर्तिपूजा बर्दाश्त कर सकता था मगर नाच गाना नहीं।"[2] दिल्ली में उसके नाम पर 'खुतबा' पढ़े जाने के फौरन बाद उसने दरबारियों मुसाहबों और कलाकारों को राजद्रोह में उतार दिया, जिसमें क्रम-क्रम से मुगलशक्ति नष्ट हो गई।

औरंगजेब के बाद आगे के १५ वर्ष तक [illegible] मुगल शासकों के ही हाथ था किंतु भारत का असली राजनीतिक रंगमंच दिल्ली के अलावा महाराष्ट्र और बंगाल में प्रथम हो गया था जहाँ देशी और विदेशी दो प्रकार की शक्तियाँ प्रयत्नशील थीं जिनमें यूरोपवासी दिल्ली को हस्तगत करने में सफल हुए।

अंग्रेज जब भारत में आए तो "हिंदुस्तानी संस्कृति बहुत प्राचीन और थकी हुई थी। अरब ईरान की मिली जुली संस्कृति की खुमारी भी अब भी उतर चुकी थी और उसका पुराना जीवट का भाव और मानसिक साहस जिसके लिये अरबवाले मशहूर थे अब न दिखते थे।" ऐसी स्थिति में यह संभव नहीं था कि किसी एक ही संस्कृति का विकास होता। भारत में विकसित होनेवाली मिली जुली संस्कृति के विकास का अधिक श्रेय मुगलों को है। वास्तुकला संगीत साहित्य भाषा सब में एक मिलीजुली नवीनता की छाप लग गई। ऐसा

१—कैंब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया—वाल्यूम ४—पृ० २१७।

२—मध्यकालीन भारत—पृ० २११—सेनगुप्त।

३ हिंदुस्तान की कहानी—पृ० २१५—जवाहरलाल नेहरू।

लगता है, उस जमाने की विशेषता ही मेलजोल की थी। राणा प्रताप तथा औरंगजेब का रास्ता अलगाव का था। जमाने ने इनका साथ नहीं दिया। शिवाजी समन्वयवादी नीतियों के उदार अनुसरणकर्ता थे। अकबर ने ऐसी नीति को अत्यंत सुंदर ढंग से आरंभ किया था। वह जमीन से ज्यादा लोगों के दिलों और दिमागों पर फतह हासिल करना चाहता था। इसी का परिणाम है कि उसने एक नया मिला जुला धर्म "दीन इलाही" चलाने की कोशिश की। "कितने विस्मय की बात है कि जब फ्रांस में कैथोलिक लोग प्रोटेस्टेंटों को जिंदा जला रहे थे, जब इंग्लैंड में (एलिजाबेथ के इंग्लैंड में) प्रोटेस्टेंट लोग कैथोलिकों से फ्रांस का बदला दुगुने बल से चुका रहे थे और जब इनक्विजिशन के मारे स्पेन में यहूदियों का बुरा हाल था, तब भारतवर्ष में अकबर हिंदुओं पर किए गए मुस्लिम अत्याचारों के निशान को दूध और अमृत से धो रहा था।'[1] सुल्तान युग के धार्मिक अंतर्विरोध की भाँति मुगल काल में भी धार्मिक अंतर्विरोध आरंभ हो गया था। उलेमा लोग अकबर और अबुलफजल के खिलाफ थे। अकबर का चंदन और टीका लगाना उनकी सहनशक्ति के बाहर था। "इतिहासकार बदायूनी ने लिखा है कि अबुलफजल संसार को नास्तिकता के जहर से जला रहा है।"[2] दाराशिकोह इस अंतर्विरोध की सबसे बड़ी कीमत था। दिनकर जी ने लिखा है कि जिस दिन दाराशिकोह मारा गया, उस दिन "हलाहल जीता और अमृत हार गया।" हिंदू मुसलमानों की एकता का संबंध सूत्र इसी दिन से कमज़ोर पड़ गया।

देश में नीचे का शासनप्रबंध और आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। हद दर्जे की गरीबी थी। कहीं न कहीं हर साल अकाल पड़ता था। अमीरी और दौलत के केंद्र हिंदू-मुस्लिम सामंतो और बादशाह के दरबार थे तथा गरीबी का केंद्र समस्त जनता, जिसे आए दिन लूटा जाता था। सर टामस रो अपने विवरण में भारतवासियों की दीनता का वर्णन करता है। वह लिखता है कि "बड़े छोटों को लूटते हैं और बादशाह सबको लूटता है।"[3] बहुधा गरीबी और बेकारी के कारण "किसानों के बीबी बच्चे बिकने लगे और सब तरह

१-संस्कृति के चार अध्याय-पृ० ३६१-दिनकर।

२-वही-पृ० ३८६।

३-मध्ययुग का संक्षिप्त इतिहास - पृ० ४६८-डा० ईश्वरीप्रसाद।

की गड़बड़ी मचने लगी।[1] उस समय भारत में जो कुछ हो रहा था सब ईश्वर की इच्छा और प्रेरणा से। धर्म और भक्ति के प्रचारकों ने उन्हें बता दिया था कि अमीर ग़रीब सब ईश्वर की संतान हैं।

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि मुग़लकाल में विकसित होने वाली समन्वयात्मक संस्कृति का बीजारोपण दिल्ली सल्तनत के ज़माने में ही हो चुका था जिसका लगातार संघर्ष एवं प्रतिकूल वातावरण के कारण समुचित विकास न हो सका। 'मुग़लों से पूर्व सुल्तानों के दरबार में पंडितों की उपस्थिति महत्त्वपूर्ण है। फ़ीरोज़ के बारे में कहा जाता है कि उसने संस्कृत ग्रंथों का फ़ारसी में अनुवाद कराया। बंगाल का जलालुद्दीन बृहस्पति का आश्रयदाता था जिन्हें उसने 'रायमुकुट' की उपाधि दे रखी थी। उन्हें उसने एक हाथी और मोती का कंठमाल पुरस्कार दिया था। शेरशाह के यहाँ सुखानंद, टोडरमल, [illegible] और सरस्वतीप्रक्रिया" के रचयिता चंद्रकीर्ति नौकरी करते थे।'[2] इसी प्रकार अकबर ने अनेक विद्वानों को आश्रय दे रखा था यथा विट्ठल, कृष्णदास, गंगाधर, नृसिंह, भानुचंद्र, सिद्धचंद्र, नारायण भट्ट, नीलकंठ और कालिदास। गोविंद शर्मा और कवि कर्णपूर जहाँगीर के तथा विश्वनाथ और पंडितराज जगन्नाथ शाहजहाँ के राज्याश्रित साहित्यकार थे। जहाँगीर खुद फ़ारसी में कविता लिखता था और फ़ारसी कवियों का आश्रयदाता था।[3] यही स्थिति शाहजहाँ की भी थी। उसने ग्वालियर के सुंदरदास को "महाकवि राय" की उपाधि दे रखी थी। साथ ही अबुल तालिब "कलीम" जैसे ऊँचे दर्जे के फ़ारसी कवि भी उसके दरबार में थे।[4] 'साहित्य में उस देशभाषा (वर्नाक्यूलर) का विकास *महत्त्वपूर्ण है जिससे शाहजहाँ परिचित था।"*[5]

मुसलमानों द्वारा हिंदी — रहीम जैसे लोग संस्कृत में भी लिखते थे — और हिंदुओं द्वारा फ़ारसी में लिखना मुग़ल काल की विशेषता है। "मुग़लों के ज़माने में बहुत से हिंदुओं ने दरबार की भाषा फ़ारसी में किताबें लिखीं।

१ – मध्यकालीन भारत पृ० १७ — [illegible]।
२— दी प्राब्लेम आफ़ हिंदुस्तानी — पृ० १ — डॉ० ताराचंद।
३— दी कैंब्रिज हिस्ट्री आफ़ इंडिया — वाल्यूम ४ — पृ० १८।
४— वही — पृ० १२।
५— पर्शियन इन्फ़्लुएंस ऑन हिंदी — पृ० ११ — अंबिकाप्रसाद वाजपेयी।

इनमें से कुछ अपने ढग की किताबों में चोटी की रचनाएँ मानी जाती हैं। साथ ही साथ मुसलिम आलिमों ने सस्कृत से पुस्तकों के फारसी में तर्जुमे किए और हिंदी में भी किताबें लिखीं।"[1] मुगल शासनकाल में फारसी और हिंदी साहित्य को राज्य का समान सरक्षण प्राप्त था। मुगलवश का पहला बादशाह बाबर खुद तुर्की का एक अच्छा कवि तथा लेखक था और अतिम बादशाह बहादुरशाह "जफर" उर्दू कविता का ऊँचे दर्जे का शौक़ीन था। अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, मुअज्जम, जहाँदार शाह, मुहम्मदशाह "रगीला," अहमदशाह, आलमगीर द्वितीय और शाहआलम भी कवि थे, जिनमें कुछ तो ऊंचे दर्जे के कवि थे। इसी प्रकार दक्खिनी रियासतों के मुसलिम शासक भी कवि थे, जिनमें मुहम्मद कुल्ली कुतुब, अकबर का समकालीन, ऊँचे दर्जे का कवि था।[2] अनेक हिंदी कवियों का मुगल दरबार से सबंध रहा है, जैसे रहीम खाँ खान-ए-खानान, गग, नरहरि, बीरबल, पुहकर, केशव मिश्र सुदर, बाबा लालदास, चद्रभान, देव, घनानद, आलम तथा त्रिपाठी बधु। मुगल दरबार फारसी कवियों से भी भरा रहता था। "स्वाभाविक है कि जब वे ही व्यक्ति फारसी और हिंदी में कविता लिखते थे अथवा जब हिंदी कवि देशी और विदेशी फारसी कवियों के प्रत्यक्ष सपर्क में थे, तो भाषाओं का परस्पर प्रभाव अनिवार्य था।"[3] यह वह समय था जब भारत में फारस की अपेक्षा अधिक उत्साह के साथ फारसी पढ़ी और समझी जाती थी। डाक्टर बाहरी ने लिखा है कि अकबर के समय से २०० वर्ष बाद तक गुण और मात्रा दोनों दृष्टियों से फारसी साहित्य में भारत अग्रणी रहा। यही कारण है कि जब भी विदेशी मुसलिम देशों में राजनैतिक परिवर्तन होता, तो उनके बहुत से निवासी उत्तरी भारत में आ जाते, जहाँ उनके सहधर्मी उनका हृदय से स्वागत करते और भारतीय राजदरबारों में नवागतुकों को ऊँचा पद और समान दिया जाता था। 'विदेशी कवियों और विद्वानों को मुहम्मद शाह के जमाने तक हिंदुस्तानी राजदरबार से ऊँचे वेतन और अच्छे पुरस्कार

१—हिंदुस्तान की कहानी, पृ० ३२६—जवाहरलाल नेहरू।
२—दक्खिनी हिंदी काव्य धारा-पृ० ७६—म० प० राहुल सांकृत्यायन।
३—परसियन इन्फ्लुएन्स ऑन हिंदी—पृ० ८—डॉ० हरदेव बाहरी।

लिए जाते थे ।[1] एक ही स्थान पर फारसी और हिंदी कवियों की उपस्थिति भाषा की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण घटना थी ।

अकबर के अर्थमंत्री एक हिंदू राजा टोडरमल ने भाषा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम उठाया । उनके आदेशानुसार 'राजस्व विभाग की भाषा भी हिन्दी तथा तब तक प्रचलित अन्य भारतीय भाषाओं की जगह फ़ारसी कर दी गई । इस घटना से फारसी को भारतीय जीवन में इतना महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया जैसा पहले कभी भी न था क्योंकि सरकारी नौकरी चाहनेवाले बहुत से हिंदुओं ने भी फ़ारसी का अध्ययन करना आरंभ कर दिया । इसी घटना को लेकर फ़ारसी मिश्रित हिंदी के एक रूप अर्थात् उर्दू का विकास संभव हो सका ।"[2] यद्यपि हिंदी में फारसी शब्दों का आगमन बहुत पहले से आरंभ हो गया था[3] तथापि इस घटना ने फ़ारसी अरबी शब्दों को निम्न वर्ग के जनजीवन के कार्यकलापों में भी पहुँचा दिया । विद्यापति कबीर सूर, तुलसी आदि प्रारंभिक मध्यकालीन कवियों में अरबी फ़ारसी के अनेक शब्दों के पाए जाने का यही कारण है । काव्यरचना या तुकबंदी के लिये भी हिंदी में फ़ारसी शब्दों का प्रयोग होने लगा था । "बंगाल में मुग़लों, अर्थात् १६वीं शती के अंतिम चतुर्थांश से पूर्व फारसी का अधिक प्रभाव नहीं था"[4] यद्यपि वहाँ भी हिंदुओं द्वारा इसका अध्ययन १४वीं शती के आरंभ से ही शुरू हो गया था ।

भाषा के शब्दों में मिश्रण का क्रम बराबर बढ़ता गया फलस्वरूप हिंदी को रेख्ता नाम से संबोधित किया जाने लगा । एक ओर जहाँ दिल्ली के समीप की हिंदुओं की भाषा खड़ी बोली पर फ़ारसी प्रभाव बढ़ रहा था वहीं दूसरी ओर फ़ारसी में हिंदुओं की रुचि भी बढ़ रही थी । मुग़लों की नीति के पीछे मेलजोल को भावना का ही कारण दिखाई पड़ता है 'रेख्ता

१ हिंदुस्तानी फोनेटिक्स—पृ ९४ डॉ कादरी ।

२—भारतीय आर्यभाषा और हिंदी पृ १४६—डा सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ।

३—देखिए, फारसी शब्दकोशगत प्रभाव ।

४—परशियन इन्फ्लुएंस ऑन हिंदी—पृ १४—अंबिकाप्रसाद वाजपेयी ।

५—ओरिजिन एंड डेवलपमेंट ऑफ बंगाली लैंग्वेज—पृ २ २—डॉ सुनीतिकुमार चटर्जी ।

६—वही—पृ २ ४ ।

तो यह कि अठारहवीं शताब्दी से पूर्व हिंदू ही प्राय मुसलमानों के फारसी-शिक्षक बन चुके थे और दूसरा यह कि उत्तर भारत में 'उर्दू' नामक एक नई बोली प्रचलित हो चली थी, जो यदि सुननेवाले हिंदू न होते, तो क़ायम ही न हो पाती।"[1] मुगलों ने जहाँ एक ओर सारे उत्तर भारत को एक किया, वहीं १७वीं शताब्दी मे उनके उत्थानकाल मे 'भारत के लिए आम बोलचाल की एक मिली जुली भाषाशैली का विकास भी हुआ। बाबर के समय तक दो भिन्न विचारोंवाली हिंदू और तुर्क ताजिक जनता बराबर सघर्षरत थी। "१६०५ मे अकबर की मौत तक एक समन्वय का स्वरूप स्पष्ट हो गया, जिसमे से हिंदू मुसलिम सस्कृति का विकास हुआ और हिंदुस्तानी बोली इसका माध्यम बनी।"

भाषा के इस मेल मिलाप का असर यह हुआ कि हिंदुओं मे फारसी जाननेवाला एक वर्ग ही उठ खड़ा हुआ। आगरा अवध के कायस्थों, पजाब, दिल्ली और आगरा के खत्रियों मे मुशियों का एक वशपरपरागत वर्ग बन गया, जिनकी तहज़ीब और सस्कृति पर फारसी का अधिक असर था। "उनका हिंदी पर, विशेषत बोलचाल की हिंदी पर, फारसी के प्रभाव की वृद्धि मे विशेष योगदान है"[3] मुसलमान बादशाहों की नौकरियों में हिंदुओं की सख्या सबसे अधिक अकबर के समय म थी, जो सचमुच में आबादी के अनुपात से बहुत कम थी। आगे चलकर वह घटती गई। अकबर के ४१५ मनसबदारों मे केवल ५१ हिंदू थे। अन्य पदों पर कुल कर्मचारियों की सख्या का १५ प्रतिशत हिंदू थे। सैनिक सेवा में उनकी सख्या और भी कम थी। सरकारी नौकरी में सबसे अधिक सख्या राजपूतों की थी, तब पजाब के खत्रियों की, उसके बाद अग्रवाल, बनियों और कायस्थों की सख्या थी। नूरजहाँ के शासन में यह प्रतिशत और भी कम तथा औरगजेब के समय में बहुत कम हो गया।[4] इसका फल यह हुआ कि कृत्रिम ढग से हिंदी को शासन और शासकों से दूर रखा गया और हिंदी की शब्दावली के फारसीकरण के समझबूझकर प्रयत्न आरभ हुए, जब कि शासन की भाषा फारसी हिंदी पर हावी होती चली गई।

१—मध्यकालीन भारत—पृ० १७१।

२—ओ० डे० बें० लैं०—पृ० २०६—डॉ० चटर्जी।

३—परसियन इन्फ्लुएन्स ऑन हिंदी—पृ० ८—डा० बाहरी।

४—वही—पृ० ६।

बचना और मुश्किल हो गया। उर्दू के माध्यम से फारसी प्रभाव अधिक व्यापक रूप में हिंदी में आ गए।

इसके अतिरिक्त कुछ और भी कारण हैं, जिनसे हिंदी पर फारसी का अधिक प्रभाव पडा[1]—

१—सम्राट् और सूबेदारों के अंतःपुर तथा दरबार में हिंदू महिलाएँ एवं मुसलिम शाहज़ादियाँ स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी भाषा का आदान प्रदान करती थीं, एक दूसरे की भाषा के शब्दों से परिचित होतीं और उन्हें स्वीकार करती थीं।

२–दरबार से बाहर अमीर, फौजी अफसर तथा सिपाही बाज़ारों में फारसी शब्दों को ले जाते थे। दूकानदारों तथा व्यापारियों ने भी, जो क़रीब क़रीब हिंदू ही थे, ग्राहकों को आकर्षित करने के लिये फारसी को सीखना और प्रयोग करना आरंभ किया।

३—विभिन्न हिंदू मुसलिम राज्यों में पत्राचार की भाषा फारसी थी। हिंदू नरेशों में भी पत्राचार का माध्यम फारसी भाषा ही थी। जयसिंह के नाम शिवाजी का ऐतिहासिक पत्र फारसी में ही लिखा गया था।

४—उस समय फारसी अभिजातवर्ग की मुख्य भाषा बन गई थी, जिसके कारण देश के प्रमुख एवं संपन्न वर्ग में फारसी का अधिक प्रचार हो गया।

५—धर्मपरिवर्तन एवं प्रचार के नए केंद्र खुलते गए। कुरान पढ़नेवालों की सख्या बढ़ती गई। इसका नतीजा फारसी के लिए भी अनुकूल हुआ और देश में उसका क्षेत्र बढ़ता गया।

६—विदेशी आक्रामक अपने साथ अनेक नई चीजें और उनके लिये नए शब्द लाए थे। नवीन ढग के विज्ञान, कला कौशल, और वाणिज्य का प्रचलन हुआ। इनसे सबंधित नवीन ढग के फारसी शब्द भी लोकप्रिय हो गए।

७—आरंभ में सुविधा के लिये अंग्रेजों ने भी अपने शासन के क्षेत्रों में फारसी भाषा को स्वीकार किया, जिसके कारण आधुनिक काल में भी कुछ हद तक फारसी भाषा का देशी जनता से संपर्क बना रहा।

१—वही-पृ० ६।

उपर्युक्त परिस्थिति का परिणाम हिंदी में फारसी भाषातत्वों का आगमन और भाषाओं का समन्वय था।

३—यूरोप वासियों से संपर्क तथा ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना

पश्चिम एशिया के माध्यम से भारत यूरोप का व्यापारिक संपर्क प्राचीन काल से चला आ रहा था। सिकंदर के जमाने में भारत और यूरोप रणक्षेत्र में भी मिल चुके थे। व्यापारिक संबंध से अधिक लाभ भारत को होता था। शासन बनते और बिगड़ते थे लेकिन व्यापार पर उसका प्रभाव बहुत कम पड़ता था। धन का प्रवाह भारत की ओर बना रहा। मध्ययुग के नवजागरण ने यूरोप को दुनिया का अग्रणी बना दिया जिससे कालांतर में संसार के धन का प्रवाह यूरोप की ओर मुड़ गया। भारत को यूरोप की तीन शक्तियों—पुर्तगाली फ्रांसीसी और अंग्रेजी—ने अपने कब्जे में भी कर लिया। वास्तव में भारत का असली स्वामी अंग्रेज बना। पर कैसे संभव हुआ? मुगल बादशाहों की सर्वोच्च शक्ति को मुगल सूबेदारों ने तोड़ा। सूबेदारों की ताकत को मराठों ने नष्ट किया। मराठों की शक्ति को अफगानों ने ध्वस्त किया और जब सब एक दूसरे से लड़ने में लगे थे तब अंग्रेज आए और सबको कुचलकर स्वयं बादशाह बन गए। भारत का सामाजिक ढाँचा ऐसा रहा है जिसमें ऊपरी एकता के बावजूद भीतरी विभिन्नता अपने चरम तक पहुँची रही है। यूरोपवासियों के आगमन के समय भारत वही था जो गजनवी और गोरी या बाबर के आगमन के समय रहा। उसका समाज ऐसा था जिसका ढाँचा समाज के सभी सदस्यों के एक दूसरे से विरोध और वैधानिक अलगाव से उत्पन्न एक तरह के संतुलन पर आधारित था।[२] इसके साथ साथ यहाँ विज्ञान एवं अनुसंधान की अवनति तथा विलासिता की अभिवृद्धि और अनेक प्रकार के अंधविश्वासों का बोलबाला हो गया था।

ऐसी परिस्थिति में पुर्तगाल निवासी वास्को-डि-गामा उत्तमाशा अंतरीप होते हुए समुद्र के रास्ते १४९८ ई० में कालीकट आ पहुँचा। इन्हीं दिनों कोलंबस ने अमेरिका का पता लगाया था। १५ ६ ई० में पुर्तगालियों ने

१—हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास भाग—१—पृ० ४१४—ना० प्र० स०।

२—भारत संबंधी लेख—पृ० ८१—कार्ल मार्क्स (पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस दिल्ली)।

३—वही—पृ० ८१।

गोवा पर अपना शासन स्थापित कर लिया। पुर्तगाली पूर्वी एशिया की तरफ भी बढ़े और "१५११ में अल्बुकर्क ने मलाका पर कब्जा करके हिंद सागर में पुर्तगाली समुद्री शक्ति कायम कर ली थी। पच्छिमी तट पर गोआ पुर्तगाल के कब्जे में आ चुका था। इन सब बातों ने अकबर और पुर्तगालियों के बीच कोई सीधा संपर्क नहीं पैदा किया।[1] पुर्तगाली हिंद महासागर से लालसागर तक के अधिकारी बन गए थे। वे समस्त व्यापार का तथा हज करनेवाले तीर्थयात्रियों का नियन्त्रण और प्रबंध करते थे।[2] दामन, दीव भी पुर्तगालियों के कब्जे में आ चुके थे। अकबर के दरबार में भी पुर्तगालियों का आवागमन आरंभ हो गया था। झेलम के मैदान में पोरस और सिकंदर की मुलाकात के बाद यह पहला मौका था कि योरोपियनों ने एक भारतीय राजा के दर्शन किए थे"[3]। भारत में पुर्तगालियों के तीन उद्देश्य थे—उपनिवेश कायम करना, ईसाई धर्म का प्रचार करना, भारतीय व्यापार को अपने हाथ में करना। तीनों में वे आंशिक रूप से सफल रहे।

लगभग १०० वर्ष बाद १५९७ ई० में डच शक्ति का अभ्युदय हुआ और इसके कुछ समय पश्चात् ३१ दिसंबर, १६०० को ईस्ट इण्डिया कंपनी की स्थापना के साथ अंग्रेज भी मैदान में उतरे। डचों ने १६०७ में ही पुर्तगाली एकाधिकार को व्यापार वाणिज्य में भंग कर दिया था। सूरत में अंग्रेजों की फैक्टरी बनते ही भारतीय व्यापार भी पुर्तगालियों के हाथ से निकलकर अंग्रेजों के हाथ आ गया। शीघ्र ही डच ईस्ट इण्डिया कंपनी का ध्यान भारत की ओर से फिरकर पूर्व के द्वीपसमूहों की ओर फिर गया। अपने लिये डचों ने "मसाले का एकाधिकार करने का निश्चय कर लिया था। अस्तु, उनका केंद्र भारत न बनकर पूर्वी समुद्र का द्वीपसमूह बना"[4] किंतु, इस बीच पुर्तगालियों का एकाधिकार तोड़कर डचों ने यूरोप के अन्य देशों का रास्ता साफ कर दिया था।

अंग्रेज भारत में आनेवाली तीसरी यूरोपीय शक्ति थे। "इस बीच इंगलिस्तान की समुद्री ताकत बढ़ और फैल रही थी। यूरोपीयों में

१—भारत की कहानी-पृ० ३१७—जवाहरलाल नेहरू
२—दी कैंब्रिज शार्टर हिस्ट्री ऑफ इंडिया – पृ० ३६७ – जे० एलेन।
३—मध्यकालीन भारत-पृ० १८३—लेनपूल।
४—दी कैंब्रिज शार्टर हिस्ट्री ऑफ इंडिया-पृ० ५०५—जे० एलेन।

सिर्फ पुर्तगालियों को अकबर ने देखा था। उसके बेटे जहाँगीर के ज़माने में अंग्रेजों की जहाजी बेड़े ने हिंद सागर में पुर्तगालियों को हराया और पहले जेम्स का राजदूत सर टामस रो १६१५ में जहाँगीर के दरबार में हाज़िर हुआ। करने उसे कारखाने कायम की इजाज़त मिल गई।[1] सूरत में कारखाना प्रारंभ हुआ और मद्रास की नींव पड़ी। १६४ में शाहजहाँ ने बंगाल में अंग्रेजों को व्यापार करने की आज्ञा दे दी जहाँ पुर्तगाली पहले से व्यापार कर रहे थे। इस प्रकार अंग्रेजों ने पश्चिम दक्षिण और पूर्व भारत से एक साथ अपना संबंध स्थापित कर लिया।

१६६४ ई० में सरकार के संरक्षण में फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी बनी और तीन वर्षों के भीतर ही अफ्रीका में मेडागास्कर पर कब्ज़ा करते हुए फ्रांसीसी लोग भारत आ गए। सूरत में इनकी पहली कोठी बनी, किंतु फ्रांसीसियों का मुख्य केंद्र माही, पांडिचेरी और चंद्रनगर ही बन सका।[2] स्थानीय राजाओं के झगड़ों में फ्रांसीसियों ने ही सबसे पहले हिस्सा लिया। भारतीयों को विदेशी ढंग की फौजी शिक्षा भी सबसे पहले इन्होंने ही दी। पुर्तगाली भारत में सबसे पहले अपना उपनिवेश कायम कर चुके थे। पुर्तगाली देश में अपना स्थायी प्रभाव भी छोड़ जाने में सफल हो सके। उन्होंने अत्यन्त जुल्म के साथ देश में ईसाई धर्म का प्रचार किया। पुर्तगालियों ने भारतीय स्त्रियों से भी विवाह करने की छूट दी। फलस्वरूप वे एक नई जाति भी भारत में छोड़ गए। उनकी सबसे बड़ी देन भारतीय भाषाओं को अनेक पुर्तगाली शब्द हैं। पुर्तगाली भाषा ही सबसे पहले भारत और यूरोप के संबंध का माध्यम बनी। देशी और विदेशी जनता से संपर्क के लिए क्लाइव को भी पुर्तगाली सीखनी पड़ी थी। अवएव वह भी भारतीयों के साथ स्थान-स्थान पर पुर्तगाली में ही बातें करता था। इसी समय पुर्तगाली भाषा के सैकड़ों शब्द भारतीय भाषाओं में प्रवेश पा गए। हिंदी में तो ये शब्द इस प्रकार घुलमिल गए हैं कि उन्हें अब कोई अलग ही नहीं कर सकता।[3] भारत में पहला छापाखाना भी गोआ में ही खुला था जिससे भारत में एक नए ढंग का विकास प्रारंभ हुआ।

१—हिन्दुस्तान की कहानी—पृ० ११—जवाहरलाल नेहरू।
२—एन एडवान्स्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया पृ० ६४—आर० सी० मजूमदार एच० सी० राय चौधरी, काली किंकर दत्त।
३—संस्कृति के चार अध्याय पृ० ५८६—दिनकर।

७—ईस्ट इंडिया कम्पनी

शेक्सपीयर के जमाने में ईस्ट इण्डिया कंपनी भारत आई। सूर और तुलसी का भी यही जमाना था। इस समय भारत में धर्म और मोक्ष के रास्ते सोचे जा रहे थे, जब कि इंगलैंड में नए विज्ञान का विकास आरम्भ हो गया था तथा प्रजातंत्र की लड़ाई जारी थी। '१६६० ई० में, इंगलिस्तान की रायल सोसाइटी कायम हुई, जिसने की विज्ञान को तरक्की देने में इतना हिस्सा लिया है। सौ साल बाद १७६० में कपड़ा बुनने की तेज ढरकी की ईजाद हुई, उसके बाद जल्दी-जल्दी, एक-एक करके, कातने की कल, भाप के इंजन और मशीन के करघे निकले।'[१] अंग्रेजों का अमेरिका में शासन करने का अनुभव भी हो गया था। अंग्रेजों से पूर्व जितने विदेशी आए, वे बहुत जल्द भारतीय बन गए और बाहर से उनका रिश्ता शीघ्र ही टूट गया। अंग्रेजों से भिन्न सभी विदेशियों के भारत में बस जाने का कारण मार्क्स ने यह बताया है कि 'इतिहास के एक शाश्वत नियम के अनुसार बर्बर विजेताओं को उनकी प्रजा की ऊँची सभ्यता ने जीत लिया। अंग्रेज पहले विजेता थे, जिनकी सभ्यता हिन्दुस्तानियों से ऊँची थी।'[२] भारत में कंपनी और अंग्रेजों का उद्देश्य बताते हुए मार्क्स ने लिखा है कि अंग्रेजों ने देशी बस्तियों को उजाड़ कर, देशी उद्योग-धन्धों का नाश करके और देशी समाज के प्रत्येक महान् और गौरवपूर्ण तत्व को धूल में मिलाकर हिन्दुस्तानी सभ्यता को नष्ट कर दिया। 'हिन्दुस्तान में उनके शासन के इतिहास में ध्वंस और विनाश के सिवा शायद ही कुछ और मिले, ध्वंस के खंडहरों के बीच पुनर्निर्माण के कार्य का लगभग कोई चिह्न नहीं दिखाई देता, फिर भी यह काम शुरू हो चुका था।'[३]

अंग्रेज भारत में मुख्यतः व्यापार के उद्देश्य से आए थे, अस्तु आरम्भ में राज्य-स्थापन एवं धर्म-प्रचार की ओर उनका ध्यान नहीं गया। १६९० ई० में अंग्रेजों ने कलकत्ता में फोर्ट-विलियम किले का निर्माण किया। उधर औरंगजेब की मौत के बाद भारत फिर वहीं पहुँच गया, जहाँ पराजय की घड़ी में अपने इतिहास में वह रहता आया था। भारत में चारों ओर अराजकता और लूट-मार की स्थिति पैदा हो गई। नादिरशाह द्वारा दिल्ली में कत्ले-आम और कोहे-नूर का अपहरण, अंग्रेज और फ्रांसीसियों द्वारा हैदराबाद, कर्नाटक

१—हिन्दुस्तान की कहानी—पृ० ३५२—जवाहर लाल नेहरू।
२—भारत सम्बन्धी लेख—पृ० ८४—कार्लमार्क्स।
३—वही—पृ० ८४।

स्थापित किया जो भारतीय इतिहास में कम से कम लूटा गया था। मुर्शिदाबाद लंदन के मुकाबले 'बे-इतिहा मालामाल' था और 'एक खास ध्यान देने की बात यह है कि हिन्दुस्तान के वे हिस्से जो अंग्रेजो के कब्जे मे सबसे ज्यादा अरसे से रहे हैं आज सबसे ज्यादा गरीब हैं।'[१] अंग्रेजो ने केवल व्यापार से ही रुपया नही कमाया, बल्कि और भी तरीको से दौलत की लूटपाट की। पूरी अठारहवी सदी में हिन्दुस्तान से जो दौलत इगलैण्ड आई, वह व्यापार मे बहुत कम प्राप्त हुई थी, क्योकि तब व्यापार का बहुत महत्व नही था। वह अधिकतर हिन्दुस्तान के प्रत्यक्ष शोषण से प्राप्त हुई थी और बेतहाशा लूटमार मचाकर और जबर्दस्ती पैसा छीनकर बटोरी गई थी। भारत सब तरह से गरीब हो गया और तब इगलैंड के 'कारखानेदारो को पता लगा कि हिन्दुस्तान में उनके माल को खपाने की शक्ति और सभी देशो से कम रह गई है।' जो भारत कभी अपने सुन्दर तैयार माल से यूरोप की दौलत खींचा करता था, वह केवल कच्चा माल पैदा करने वाला एक अकालग्रस्त आदिम देश बन गया। 'मुगल युग में कम मात्रा और ऊँची कीमत के तैयार माल या विलासिता के सामान की अपेक्षा वह पूर्ण रूप से कच्चे माल का उत्पादक बन गया।'[२]

८—कम्पनी की धार्मिक और शिक्षा नीति

पुर्तगालियो ने शक्ति, धन और शादी-ब्याह के रिश्ते से भारत मे ईसाइयो की संख्या-वृद्धि की सफल चेष्टा की, किंतु धर्म-प्रचार के पुर्तगाली तरीको ने ही पुर्तगाल वालो का भारत में जमा हुआ सिक्का उखाड दिया। जब अंग्रेजो ने भारत में अपना पैर जमाया तो उनके सामने अकबर, औरंगजेब, शिवाजी और पुर्तगालियो की धार्मिक नीति के परिणाम मौजूद थे। अस्तु कंपनी को ऐसी धार्मिक नीति चलानी थी ताकि धर्मयुद्ध या धर्म प्रचार से राजनीतिक अस्तित्व खतरे मे न पड जाय। अंग्रेजो ने धर्मप्रचार में शक्तिबल का भी प्रयोग किया। 'मद्रास के शासको ने स्पष्ट किया कि इस बात के अनेक विवरण हैं कि देश की जनता को शक्तिबल मे ईसाई धर्म मे बदलने की ब्रिटिश सरकार की मशा थी।'[४] दूसरी ओर 'कलकत्ता में सरकार के लिए १८०७ से १८१३ तक मिशनरी कार्य अत्यन्त परेशानी पैदा करने वाला था और अनेक अवसरो पर डायरेक्टरो से लाइसेंस लिए बिना आनेवाली मिशनरियाँ या तो लौटा दी

१—भारत सम्बन्धी लेख—पृ० ६०—कालमार्क्स।

२—वही—पृ० ६२।

३—फाल ऑफ दी मुगल इम्पायर—पृ० ३४०—सर यदुनाथ सरकार।

४—दी कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया—वाल्यूम ५—पृ० १२३—म० डाडवेल।

गई या ब्रिटिश भारत में उन्हें बसाने की अनुमति नहीं दी गई।[1] एक समय में अंग्रेजों की धर्म-नीति संघर्ष के बावजूद सहिष्णु थी। इसका कारण यह था कि यूरोप इंग्लैंड में वैज्ञानिक और व्यावसायिक क्रांति (१७६० से १८५० के बीच) से धर्म का प्रमुख स्थान छूट गया और पूँजीवादी समाजव्यवस्था का नया प्रजातांत्रिक मानदंड उभर कर सामने आ गया जिसमें प्रमुख धर्म का नहीं अर्थ का होता है। धार्मिक विजय की अपेक्षा राजनीतिक और सांस्कृतिक विजय को अंग्रेजों ने अधिक महत्व दिया जैसा कि मैकाले का मत था कि भारत में ऐसी जाति पैदा की जाय जो रंग और रक्त से भारतीय हो और खानपान, व्यवहार, आचरण तथा समझ से अंग्रेज हो।[2] यह अकबर की नीति से भी आगे की नीति थी किन्तु कारगर थी।

अंग्रेजों ने भारत में सती प्रथा और कन्या बलिदान को रोक कर मानवता के हित के लिए नैतिक उत्थान का काम किया और अपने धर्म तथा दृष्टिकोण की अच्छाई को भारत में फैला दिया। इसके साथ ही अंग्रेज, अमेरिकन और जर्मन संस्थाएँ ईसाई धर्म की पुस्तकें प्रकाशित करने लगीं। हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेश में आगरा, मेरठ, गढ़वाल, बनारस, आजमगढ़, जौनपुर, सहारनपुर, इलाहाबाद तथा फतेहगढ़ में ईसाई धर्म प्रचार के केन्द्र स्थापित हुए, तथा अनेक ईसाई विद्यालय और महाविद्यालय खुल गये।[3]

धर्म प्रचारकों ने शिक्षा को महान् अस्त्र बनाया। मिशनरियों ने नए ढंग के अनेक कालेजों की स्थापना की। सरकार से आगे बढ़कर इन मिशनरियों ने देश में शिक्षा का प्रचार किया। सन् १८५२-५३ में भारत की समस्त सरकारी शिक्षा संस्थाओं में केवल १ छात्र विद्याध्ययन करते थे जबकि मिशनरी संस्थाओं में छात्रों की संख्या तीन लाख से भी अधिक थी। ईसाई बन जाने पर नौकरी में भी सुविधा दी जाती थी और विलायत तक भेजा जाता था। दो सौ साल के अंग्रेजी राज्य में ईसाई धर्म-प्रचारकों ने कोई कसर उठा नहीं रखी। फिर भी सारे भारत में ईसाइयों की संख्या मात्र साठ लाख से अधिक नहीं है और इनमें प्राय सब-के-सब वे ही लोग हैं जो हिन्दुत्व के अन्दर

१—वही—पृ० १२१।

२—'दिस ही सपोजिज गुड मोरल्स ए क्लास ऑफ परसन्स इंडियन इन ब्लड एंड कलर, बट इंग्लिश इन टेस्ट्स इन ओपिनियन्स इन मोरल्स इन इंटेलेक्ट।' पृ० ५१७—दी कैम्ब्रिज शार्टर हिस्ट्री ऑफ इंडिया—जे० एलेन।

३—हिन्दी काव्य पर आंग्ल प्रभाव—पृ० २१—डॉक्टर रवीन्द्रसहाय वर्मा।

४—वही—पृ० २१।

छोटी जातो मे गिने जाते थे।'' अग्रेजी शिक्षा-प्रचार के कारण हिंदुओ मे पुनर्जागरण का आरम्भ हुआ। अनेक आदोलन उठ खडे हुए। ब्रह्मसमाज, आर्य समाज और थियोसोफिकल सोसाइटी के आदोलन प्रमुख हैं। राजा राममोहन राय जैसे प्रमुख प्रगतिशील भारतीयो ने अग्रेजी भाषा के माध्यम द्वारा पाश्चात्य ज्ञान के प्रसार का समर्थन किया। ईसाई मिशनरियो ने अपने धर्मप्रचार के लिए खडी बोली हिंदी को माध्यम बनाया जो समस्त उत्तर भारत में बोली जाती थी। मिशनरियो ने सस्कृत प्रभावित हिंदी को ही चुना जिसमे फारसी-अरबी शब्दो का अनुपात बहुत कम था। इसी भाषा में उनकी पुस्तिकाए और समाचार पत्र निकले। हिंदी को उन्होने वैसे ही अपनाया जैसे सल्तनत और मुगलकाल म सूफियो और अनेक मुसलिम कवियो ने अपनाया था। फलस्वरूप आधुनिक हिंदी गद्य का स्वरूप निखरा और खडी बोली का क्षेत्र व्यापक हुआ। इस प्रकार मिशनरियो ने हिंदी के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान भी किया है।

कपनी की शिक्षानीति ने भारतीय समाज को इसके मूल मे ही झकझोर दिया और भारत को एक साथ नई रोशनी मिली, यद्यपि कपनी का ऐसा उद्देश्य नही था। 'जब मैकाले ने साम्राज्यवाद के लिए अग्रेजी शिक्षा पद्धति थोप दी और पूर्वी पद्धति को परास्त किया, तो उसका उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय जागृति पैदा करना नही, बल्कि इसकी जड की गहराई तक इसे नष्ट कर देना था।'[३] अग्रेजो की योजना के अनुसार भारत को इस शिक्षा-व्यवस्था से हानि कम हुई। भारत में आधुनिक युद्ध का आरम्भ इसी शिक्षा से मानना चाहिए। शेक्सपीयर मिल्टन, शेली, बायरन, मिल लाक वाल्टेयर, रूसो और कार्लमार्क्स के ग्रन्थो के माध्यम से अग्रेजी प्रजातत्र, लोक जागृति एव जनसघर्ष की प्रेरणा भारत में आ पहुँची।

१८३५ तक इलाहाबाद की सधि के अनुसार कचहरी की भाषा फारसी थी। मैकाले ने शाहआलम और क्लाइव की सधि को तोड कर फारसी के स्थान पर उर्दू को कचहरी की भाषा बना दिया। भारतीयो ने, जैसे राममोहन राय इत्यादि ने, इसका स्वागत किया। वे शिक्षा को आधुनिक ढाँचे मे ढालने के लिए चितित थे और वे उसे पुरानी परिपाटी के चगुल से निकालना भी चाहते थे। उन शुरू के दिनो मे भी वे वैज्ञानिक तरीको के पक्ष मे थे, और उन्होंने

१—सस्कृति के चार अध्याय—पृ० ५२७—दिनकर।

२—ररमियन इन्फ्लुअन्स ऑन् हिंदी—पृ० १५—बाहरी।

३—इंडिया टुडे एड टुमारो—पृ० १०८—रजनी पामदत्त।

गवर्नर जनरल को गणित भौतिक विज्ञान रसायन जीव-विज्ञान आदि दूसरी उपयोगी विद्याओं की शिक्षा की जरूरत पर जोर देते हुए लिखा।[१] प्रारम्भ में कम्पनी की नीति पश्चिमी ढंग की शिक्षा पद्धति चलाने की नहीं थी। १८१ के पूर्व कोई अंग्रेजी स्कूल या कालेज नहीं था और सरकारी नीति भी भारतीयों को अंग्रेजी सिखाने के खिलाफ थी। संस्कृत फारसी अरबी के लिए अंग्रेजों ने पहले ही विद्यालय स्थापित कर दिये थे जिनमें १७८१ में स्थापित बनारस का संस्कृत कालेज भी था जो आजकल संस्कृत विश्वविद्यालय में बदल दिया गया है। मैकाले के निश्चय के आधार पर १८५७ में कलकत्ता बम्बई और मद्रास के विश्वविद्यालयों का जन्म प्रारम्भ हुआ। १८८७ में प्रयाग विश्वविद्यालय एक्ट भी पास हुआ। धीरे-धीरे देश में अनेक विश्वविद्यालय और कालेज कायम हुए। सन् १९ ४ के भारत विश्वविद्यालय एक्ट ने विश्वविद्यालयों के कार्यों का विस्तार किया तथा उन्हें अब परीक्षा लेने तथा उपाधि वितरण के अतिरिक्त अध्यापन कार्य के आयोजन का भी आदेश दिया गया।[२] हिन्दुस्तान की सुप्रीम कोर्ट के जज सर विलियम जोन्स ने सन् १७८४ में बंगाल एशियाटिक सोसा-इटी कायम की जो बाद में रायल एशियाटिक सोसाइटी कहलाई।[३] धीरे-धीरे अंग्रेजी-शिक्षा से भारतीयों को लाभ हुआ। नई साहित्यिक और सामाजिक संस्थाओं के लिए आकर्षण पैदा हुआ और प्राचीन अन्धविश्वास तथा अहंकार दूर हुआ। हिन्दुस्तानी जिन्दगी के कुछ पहलुओं और उसकी कुछ रीतियों के खिलाफ विद्रोह हुआ और राजनीतिक सुधार की माँग बढ़ी। अंग्रेजी शिक्षा के फलस्वरूप एक लाभ और हुआ कि जनता की सरकार चलाने के प्रति पुरानी उदासीनता समाप्त हो गई और साधारण व्यक्ति सरकार के कार्यकलापों में दिलचस्पी लेने लग गया। मार्क्स ने लिखा है कि "हिन्दुस्तानियों के बीच में से एक नया वर्ग पैदा हो रहा है जिसे सरकार चलाने के लिए आवश्यक यूरोपीय विज्ञान की जानकारी और ज्ञान प्राप्त हो गया है।[४]

भारत में मुद्रणकला और पत्रकारिता दोनों का प्रादुर्भाव लगभग एक साथ १ में हुआ था। इसी वर्ष भारत का पहला अंग्रेजी समाचारपत्र बंगाल गजट प्रकाशित हुआ था। अंग्रेजों ने देश की समस्त भाषाओं का अध्ययन

१—हिन्दुस्तान की कहानी—पृ ३ ९—जवाहर लाल नेहरू।
२—हिन्दी काव्य पर आंग्ल प्रभाव—पृ २४—डा रवीन्द्र सहाय वर्मा।
३—हिन्दुस्तान की कहानी—पृ ३११—जवाहर लाल नेहरू।
४—वही—पृ ३१३।
५—भारत सम्बन्धी लेख—पृ २।

किया। प्रत्येक भाषा के उन्होंने प्राथमिक व्याकरण लिखे। प्रत्येक भाषा के अक्षरों के उन्होंने टाइप ढलवाए और उसके गद्य को नियमित किया। हिन्दी गद्य के विकास में भी उनकी सहायता स्पष्ट है। दिनकर जी ने लिखा है कि 'ईसाई धर्म-प्रचारकों ने भारत की नई भाषाओं की जो सेवा की, वह भूलने की चीज नहीं।'[1] बंगाल के सिरामपुर मिशन वालों ने और कलकत्ता के फोर्ट विलियम कालेज ने इसमें विशेष सहायता प्रदान की। विशृङ्खल भारत को इसी शिक्षा ने एक राष्ट्र के रूप में सूत्रबद्ध किया। समस्त देशी भाषाओं को नए साहित्य के निर्माण की प्रेरणा भी दी। यूरोप में सन् १८५८ तक अनेक प्रकार की वैज्ञानिक, औद्योगिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्रांतियों ने उसका रूप सर्वथा बदल दिया था।[2] यूरोप में विज्ञान, साहित्य, कला, राजनीति, प्रशासन, सरकारों का संगठन, जनजीवन का निर्माण सब पर नई क्रांति का प्रभाव पड़ा। अंग्रेजी के माध्यम से भारत को वह सब विरासत में मिला।[3]

६—फोर्ट विलियम कालेज

लार्ड वेलेजली के जमाने में सन् १८०० ई० में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना हुई। इसका उद्देश्य कम्पनी के यूरोपीय कर्मचारियों को भारतीय भाषाओं, इतिहास तथा हिन्दू मुस्लिम कानून की शिक्षा देना था।[4] इसके प्रथम प्रिंसिपल जान गिलक्राइस्ट थे, जो फारसी और अरबी के पण्डित थे। संस्कृत और हिंदी की अपेक्षा अरबी-फारसी और उर्दू को अधिक महत्त्व देना उनकी नीति थी। फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के ठीक बाद मराठों का पतन भी आरम्भ हो गया और १८१८ ई० तक वे इतिहास से लुप्त हो गए।[5] अस्तु १९ वीं शती के आरम्भ में समस्त हिंदी भाषा-भाषी प्रदेश अंग्रेजी राज्य के अन्तर्गत आ गए। अंग्रेजी और हिंदी के रिश्ते निकट से स्थापित होने की स्थिति उत्पन्न हो गई।

कम्पनी के कलकत्ता स्थित इस कालेज में ही हिंदी-उर्दू गद्य लिखने का कार्य व्यवस्थित रूप से आरम्भ हुआ। इस कालेज में अंग्रेज अधिकारियों तथा कर्मचारियों को देशी भाषाएँ सिखाने के अतिरिक्त उर्दू और हिंदी के गद्य

१—संस्कृति के चार अध्याय—पृ० ८९५—दिनकर।
२—हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास—प्रथम भाग—पृ० ७३५—ना० प्र० स०।
३—वही—पृ० ७३५।
४—हिन्दी काव्य पर आंग्ल-प्रभाव—पृ० २०—डॉ० रवीन्द्रसहाय वर्मा।
५—एन एडवान्स्ड हिस्ट्री ऑफ इन्डिया—पृ० ७०९—मजूमदार, चौधरी, दत्त।

साहित्य के निर्माण का भी प्रबन्ध किया गया था।[1] डॉ गिलक्राइस्ट ने लल्लूलाल सदल मिश्र और मीर अम्मन और बहादुरअली हुसैनी हैदरबख्श हैदरी काज़िम अली जवान मज़हर अली खाँ विला निहालचन्द लाहौरी अफ़सोस जैसे लेखकों और विद्वानों को इस कालेज में इकट्ठा किया और फ़ारसी तथा ब्रजभाषा से अनुवाद के काम में लगाया। जिस भाषा को काम के लिए चुना गया उसके साथ लिपि स्वर और शैली की समस्या उभर कर सामने आई।[2] डॉ गिलक्राइस्ट का झुकाव उर्दू की तरफ़ अधिक था। उन्होंने उत्तर प्रदेश में लखनऊ, फैजाबाद बनारस और दिल्ली में घूमकर उर्दू की योग्यता प्राप्त की और वहीं उन्होंने तत्कालीन हिंदी लिखने की मिश्नरियों की नीति का परित्याग किया। उन्होंने उर्दू-हिंदी कोश भाषाशास्त्र तथा लिपि के मसले पर नए रूप से सोचना और लिखना शुरू किया। इन विषयों पर डॉ गिलक्राइस्ट ने पहले किसी ने कुछ नहीं लिखा।[3] डॉ गिलक्राइस्ट की प्रेरणा से हिन्दू-मुसलमान दोनों जातियों के लेखकों ने अलग अलग ढंग से नई कृतियाँ प्रस्तुत की। इनके प्रोत्साहन से उर्दू गद्य के दो प्रारम्भ के ग्रन्थ मीर अम्मन का 'बाग़ो-बहार' (पूर्णतया प्रकाशित १ ४) तथा हाफ़िज़ुद्दीन अहमद का 'ख़िरद अफ़रोज़' (१८ ३-१८१५) लिखे गए। साथ ही नागरी हिंदी में भी दो गद्यग्रन्थों लल्लूलाल के 'प्रेमसागर' (१८ ३) एवं सदल मिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' (१ ३) की रचना हुई।

जिस प्रकार हिंदी और उर्दू के व्यवस्थित गद्य साहित्य का विकास फोर्ट विलियम कालेज से हुआ उसी प्रकार दोनों भाषाओं या शैलियों का अलगाव और विवाद की राजनीति का प्रारम्भ भी यहीं से व्यवस्थित रूप से हुआ। डॉ गिलक्राइस्ट के अनुसार हिंदुस्तानी की तीन शैलियाँ थी (१) हाई कोर्ट या फ़ारसी की शैली (२) मध्यम या वास्तविक हिंदुस्तानी शैली (३) ग्रामीण हिंदी शैली। उन्होंने हिंदी या देवनागरी लिपि को हीन शैली माना। उन्होंने तथा उनके वर्ग के अन्य साम्राज्यवादी लेखकों ने फ़ारसी या रोमन लिपि में ही अपने ग्रन्थ लिखे जिनमें हिंदी शब्दों और पदों की उपेक्षा की नीति बरती गई। उदाहरण के लिए उनकी व्याकरण की रचनाओं में पारिभाषिक शब्दों के लिए इस्म (संज्ञा या नाम नहीं) सिफ़त (विशेषण नहीं) हरफ़ (अव्यय नहीं) जमा (बहुवचन

१—उर्दू भाषा और साहित्य—पृ ६—फ़िराक़।
२—दी प्राब्लम् ऑफ़ हिंदुस्तानी—पृ ७६—डॉ ताराचन्द।
३—उर्दू भाषा और साहित्य—पृ ३—फ़िराक़।
४—भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी—पृ २१३—डॉ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या।

नही) स्वतंत्रता पूर्वक लिखे गए हैं।[1] वास्तव मे उनकी हिंदुस्तानी फारसीनिष्ठ उर्दू है। दूसरी ओर अंग्रेज अधिकारी और कर्मचारी बारम्बार यह शिकायत करते थे कि उर्दू यहाँ की जनता नही समझती किन्तु इस पर ध्यान नही दिया गया। ईसाई धर्म प्रचारकों ने फोर्टविलियम का रास्ता बदल दिया। जब उन्होंने देखा कि नागरी मे लिखी फारसी मिश्रित हिंदी से उनका काम नही चलता है तब वे अपनी पुस्तको में खुलकर संस्कृतनिष्ठ अथवा सार्वहिंदी का प्रयोग करने लगे।[2]

डॉ० गिलक्राइस्ट के प्रयत्नो का ही यह परिणाम है कि उर्दू सरकारी भाषा हो गई और उसमें यह क्षमता आ गई कि प्रचलित फारसी के स्थान पर वह अदालत और सरकार की भाषा मानी गई।[3] डॉ० चाटुर्ज्या ने हिंदी-उर्दू दोनो का आधार एक भारतीय आर्य सार्वजनिक भाषा माना है जिसे 'के-मे-पर-से, इस-उस-जिस-किस एव ना-ता-आ-गा भाषा' कहा जा सकता है। इसका पुराना नाम हिंदी ही है। 'हिन्दुस्तानी' पीछे का बना शब्द है। 'एक विशुद्ध फारसी शब्द के रूप मे उसका मतलब धीरे-धीरे हिन्दी के मुसलमानी रूप उर्दू के सदृश ऐसी भाषा मे लिया जाने लगा जो फारसी एव फारसी-अरबी शब्दावली मे लदी हुई हो, तथा जिसमे हिन्दी एव संस्कृत उपादानो को स्थान यथासंभव नही दिया गया हो।'[4] भाषा भेद के मूल आचार्य डॉ० गिलक्राइस्ट ही हैं। धर्म के आधार पर उन्होने 'हिन्दवी' को शुद्ध हिंदुओ की चीज माना है। उन्होंने उसका प्रयोग भारत की प्राचीन भाषा के लिए किया है, जो मुसलमान आक्रमण के पहले से प्रचलित थी। वह हिंदुस्तानी का मूलाधार है। उनके अनुसार यह हिंदुस्तानी अरबी-फारसी म कुछ ही दिन पहले बनी हुई ऊपर की इमारत ह। अंग्रेजी के लिए जैसे फ्रांसीसी और लैटिन हैं—अंग्रेजी ने उनसे शब्द लिए ह—वैसे ही हिंदुस्तानी के लिए फारसी और अरबी है। अंग्रेजी का मूलाधार जस सक्सन ह, वैस ही हिन्दुस्तानी का आधार 'हिन्दवी' ह। गिलक्राइस्ट ने हिंदुस्तानी शब्द का प्रयोग उर्दू के लिए किया।[5] धर्म और वर्ग के कारण भाषाओ म भेदभाव नही हुआ करता,

१—परसियन इन्फ्लुएन्स आन हिंदी—पृ० १८—बाहरी।
२—संस्कृति के चार अध्याय—पृ० ८६५—दिनकर।
३—उर्दू साहित्य का इतिहास भाग १,—पृ० ३५—डॉ० रामबाबू सक्सेना।
४—भारतीय आर्य भाषा और हिंदी—पृ० १५५—डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या।
५—भाषा और समाज—पृ० ? ४—डा० रामविलास शर्मा।

क्योंकि भारत के गाँवों या कस्बों के मुसलमान अपने-अपने यहाँ की बोली बोलते हैं। 'धर्म के कारण उनमें कोई अलगाव नहीं है, बंगाल का मुसलमान बंगला बोलता और लिखता है, गुजरात का गुजराती, मैसूर का कन्नड़, मद्रास का तमिल और पंजाब का पंजाबी आदि। यहाँ तक कि उसने अपने-अपने सूबे की लिपि भी ग्रहण कर ली है।'[1] किन्तु डॉ. गिलक्राइस्ट ने धर्म का भेद फूँककर एक अप्राकृतिक बात को वास्तविक बनाने की पूरी कोशिश की। फोर्ट विलियम कालेज की उर्दू (हिन्दुस्तानी) हिन्दू—मुसलिम दोनों के लिए दुर्बोध थी जैसे —

'कभी ऐ मुन्तज़र-ए—हक़ीक़त नज़र आ लिबासे-ए-मजाज़ में (अर्थ-वास्तविकता जिसकी राह देख रही है ऐसी तू, कभी तो रूपक का स्वरूप धारण करके मुझे दृष्टिगोचर हो) 'इसके ।१८ या आदमियों की समझ से कोई अर्थ ही नहीं होता।[2] कालान्तर में गाँधी जी के नेतृत्व में कुछ लोगों ने 'हिन्दुस्तानी' को नया नाम बताया और 'संस्कृतनिष्ठ हिन्दी' तथा 'फ़ारसी निष्ठ उर्दू' के बीच मावल देने की असफल कोशिश की और भाषा में एक अवसरवादी अस्वाभाविक भेद पैदा किया जिसका कोई अस्तित्व नहीं है। अंग्रेज़ों का आधिपत्य बढ़ने से तथा अंग्रेज़ी साहित्य और विज्ञान के लोकप्रिय होने से अंग्रेज़ी के शब्द एवं भाषागत अन्य प्रभाव हिन्दी भाषा में स्वीकृत हुए। व्यापार एवं आधुनिक सभ्यता के विकास ने इन भाषा-तत्वों को लोकप्रिय बनाया। अंग्रेज़ी भाषा ने वे शब्द हिन्दी और उर्दू को दिये जिनके स्थान पर कोई दूसरे शब्द न थे और वे शब्द अब इस भाषा के अंग बन गए हैं।

१ १८५७ के बाद ब्रिटिश साम्राज्य और उसका प्रभाव

न था शहर देहली में था एक चमन कहूँ किस तरह का था याँ अमन।
जो ख़िताब था वो मिटा दिया फ़क़त अब तो उजड़ा दयार है।
यही तंग हाल जो सबका है, यह करिश्मा कुदरते-रब का है।
जो बहार थी सो ख़िज़ाँ हुई जो ख़िज़ाँ थी अब बहार है।

—बहादुर शाह 'ज़फ़र'

देश के आर्थिक शोषण पूँजीवादी अर्थतंत्र की स्थापना और देश में साम्राज्यवाद की सुदृढ़ स्थापना ने भारतीय सामाजिक जीवन के ढाँचे को

१—कुछ विचार—पृ. १६ —प्रेमचंद।

२—भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी—पृ. १९ —डॉ. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या।

नष्ट कर दिया। भारत का आर्थिक जीवन ब्रिटेन का मुखापेक्षी हो गया। इतिहास के पुराने सभी आक्रमणों से भिन्न शाही घराने के लोग भी १८५८ में पूर्णतः निर्धन हो गये। 'अनेक शाहजादे और शाहजादियाँ दिल्ली से बाहर दर-ब-दर घूमते फिरते थे। बहादुर शाह की एक बेटी गवैया बेगम ने रोटियों से मुहताज होकर दिल्ली के एक बावरची हुसनी नामक से शादी कर ली। बहादुरशाह की एक दूसरी बेटी फातमा सुल्तान ईसाई पादरियों के जनाने स्कूल में नौकरी करने लगी। जो शाहजादियाँ अपने घरों में बैठकर हजारों रुपये की खैरात करती थीं, वे चन्द महीने के अन्दर दर-ब-दर भीख माँगती दिखाई देने लगीं।''[1]

१८५७ के दमन ने जनता के जीवन के धरातल तक का स्पर्श किया था। क्रांति में अंग्रेजों की भूमिका मध्ययुग के बर्बर अत्याचारियों से कम नहीं थी। 'स्त्रियों पर बलात्कार, बच्चों को छेदना, पूरे गाँव को भूनना—यह सब खेल-मात्र थे, जिनका वर्णन मन्दारिनों ने नहीं, वरन् स्वयं ब्रिटिश अफसरों ने किया था। इस दुखद संकट में भी सोच लेना नितान्त भूल होगी कि सभी क्रूरता सिपाहियों की तरफ से हुई है और सारा 'मानवी दया का दूध' अंग्रेजों की तरफ से बहा है।'[2] इस क्रांति ने जनता में एक नया विश्वास पैदा किया। राजा, सामंत यहाँ तक कि ईश्वर पर से उसकी आस्था डिग गई। 'सन् सत्तावन के संघर्ष के दौर में जनसाधारण में नया आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ। वे देख रहे थे कि जिन प्रतापी ब्रिटिश साम्राज्य के सामने उनके देश के बड़े-बड़े राजे-महाराजे सिर झुकाते थे, उसे कुछ सामन्तों के साथ उन जैसे सिपाही चुनौती दे रहे थे।'[3] इस क्रांति के फलस्वरूप देश वैज्ञानिक सभ्यता की ओर उन्मुख हुआ। भारतीय जन-जीवन एकाएक आधुनिक युग में पदार्पण कर गया।

इसका दूसरा सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि साहित्य दरबारी घेरे से निकलकर बाहरी हवा में आया। जिस समय सन् '५७ की क्रांति आसन्न थी लखनऊ में वाजिदअली शाह और उनके शायरों ने हद कर दी थी। सभी वाजिदअली के साथ आनन्द में डूबे रहते थे। 'उन्होंने दो करोड़ रुपया लगाकर कैसरबाग बनवाया, जिसमें सुरापान और नाच-रंग हुआ करता

१—भारत में अंग्रेजी राज्य (दूसरा भाग)—पृ० १५३७—सुंदर लाल।
२—भारत सम्बन्धी लेख—पृ० १२८—कार्लमार्क्स।
३—सन् सत्तावन की राज्यक्रांति—पृ० ४६६—६७—डॉ० रामविलास शर्मा।

था। गिरफ़्तारी के बाद कलकत्ते के मटियाबुर्ज में भी उसका यह कार्यक्रम चलता रहा।

दिल्ली में 'अकबर' के उस्ताद 'ज़ौक' का कमाल (१७८९–१८५४) अभी-अभी खत्म हुआ था। ग़ालिब के दिनों में दिल्ली के सबसे बड़े शायर मिर्जा ग़ालिब थे जिनकी लेखनी में दर्द ज़रूर था पर साम्राज्यवाद-विरोधी स्वर नहीं था। अभी हिंदी साहित्य में रीतिकाल का युग समाप्त नहीं हुआ था। काव्य की भावनाएँ और मान्यताएँ नहीं बदली थी। सन् १८३१ ई० में अपनी फौज तक फँसाकर सर्दी और गर्मी के सामान इकट्ठा करते रहे, जिसके दो ही वर्ष पश्चात् उर्दू न्यायालय की भाषा बनाई गई। पूरे भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना हो गई पर हिंदी-काव्य में कहीं भी साम्राज्यवाद विरोधी स्वर सुनाई नहीं पड़ा।

सन् १८५७ के बाद 'शिक्षित भारतीयों' का अपने हिंदी समाचार-पत्रों की आवश्यकता अनुभव करना स्वाभाविक था। फलस्वरूप भारतीयों ने अंग्रेजी में अलग समाचारपत्र तथा सामयिक पत्रिकाएँ निकालनी आरंभ कर दी।[1] पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में इस क्षेत्र का काम वास्तव में प्रशंसनीय है। हिंदी के उत्थान और विकास के लिए अनेक संस्थाएँ स्थापित की गईं जैसे—नागरी प्रचारिणी सभा, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रगतिशील लेखक संघ इत्यादि। ये साहित्यिक संस्थाएँ राष्ट्रीय स्तर पर संगठित की गई थी और इन्होंने हिंदी साहित्य और भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।[2] विभिन्न सांस्कृतिक आंदोलनों एवं कांग्रेस जैसी संस्था से भी हिंदी के विकास में पर्याप्त सहायता मिली। साहित्य में विदेशी शासन एवं कुशासन के विरुद्ध स्वर उभरा। साथ ही अन्धविश्वासों, कुरीतियों, धार्मिक पाखंडों, बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, छुआछूत, राजा-नवाबों की विलासप्रियता और अन्य राष्ट्रविरोधी भावनाओं का भी विरोध किया गया। मातृभाषा प्रेम और राष्ट्रप्रेम के दो स्वर सुनाई पड़े। प्रथम भारतेन्दु का 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' और दूसरे तिलक का 'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'।

राजा शिवप्रसाद और लक्ष्मण सिंह के विवाद के पश्चात् भारतेंदु-मंडल ने हिंदी भाषा के विकास के लिए मध्यम पथ अपनाया। भारतेंदु-मंडल की

१—हिंदी काव्य पर आंग्ल-प्रभाव—पृ० २० —डॉ० रवीन्द्र सहाय वर्मा।
२—वही—पृ० २१।

भाषा को जनभाषा कह सकते हैं, जिसमें हिंदी शब्दो के साथ प्रचलित फारसी-अरबी तथा अंग्रेजी शब्दो को स्वीकार किया गया। पत्र-पत्रिकाओ के प्रचार से इस भाषा में और भी निखार आया। विदेशी शासन के लम्बे युग मे अंग्रेजी भाषा के विविध शब्द पर्याप्त सख्या में हिंदी मे आ गए। इसके अतिरिक्त अन्य भाषा-तत्व एव अभिव्यक्तियाँ भी अंग्रेजी से हिंदी मे ऋण ली गइ। 'हिंदी के विदेशी शब्दसमूह में फारसी के बाद अंग्रेजी शब्दो की सख्या सबसे अधिक है।'[१] आधुनिक हिंदी गद्य की भाषा पर भी अंग्रेजी शैली का पूरा प्रभाव पड़ा है।

११ विज्ञान की प्रगति

जब से हिंदी को सविधान-परिषद् और ससद ने भारत की राष्ट्र-भाषा स्वीकार किया है, उसके सामने उच्चतर विज्ञान की शिक्षा का माध्यम एक समस्या बनकर उपस्थित हो गया है। इसके अतिरिक्त देश का द्रुत उद्योगीकरण हो रहा है। शहरो का विकास भी हो रहा है, जिसमे नये बाजार और नये उद्योग तथा कल-कारखानो के केन्द्रो की स्थापना शामिल है। यातायात के साधनों का विकास, देश मे उनका उत्पादन, युद्ध-विज्ञान की उन्नति, राकेट या क्षेप्यास्त्र जैसे नये शास्त्रास्त्रो का निर्माण, अन्तर्ग्रही उपकरणो से सबधित विज्ञान का अध्ययन, रेडियो-सिनेमा-टेलीविजन इत्यादि का प्रसार आज के जीवन में महत्वपूर्ण प्रश्न बन गया है। हिंदी भाषा के सामने ये प्रश्न ज्वलत समस्या के रूप में पेश है, जिसमे सबसे महत्वपूर्ण समस्या पारिभाषिक शब्दावली की है।

विज्ञान के लिए भाषा की आवश्यकता के कारण हिंदी को सस्कृत की ओर अधिक झुकना पड़ा है। सस्कृत के पुराने तथा नए गढे हुए अनेक शब्द हिंदी मे पारिभाषिक शब्दो के लिए प्रचलित हो गए है, जिनमें कुछ की लोकप्रियता एव अभिव्यजकता निर्विवाद है, किंतु कुछ कठिन बनकर रह गए हैं। डॉ० बाहरी का मत है कि यह सस्कृतनिष्ठ 'हिंदी ही गुजरात, महाराष्ट्र, बगाल और दक्षिण में भी समझी जा सकती और समझी जाती है।'[२] नई वैज्ञानिक, सास्कृतिक एव सामाजिक आवश्यकताओ के कारण अरबी-फारसी के अनेक शब्द हिंदी मे हटने लगे है। स्वतत्रता के उपरान्त नई सामाजिक परिस्थितियो मे भाषा मे अंग्रेजी शब्दो की सख्या बढ गई है। नई परिस्थितियो की माँग पूरी करने के लिए ही सस्कृत की सहायता से नए शब्द गढे जा रहे है।

१—हिंदी भाषा का इतिहास—पृ० ७२—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा।
२—परसियन इन्फ्लुएन्स ऑन् हिंदी—पृ० ७६—बाहरी।

हिंदी के अति-संस्कृतकरण से कहीं-कहीं परेशानी भी खड़ी हो गई है। ऐसी आशंका प्रकट हो रही है कि नए माध्यम के रूप में नई हिंदी कहीं अंग्रेज़ी से भी अधिक मुश्किल न हो जाय। डॉ० रामविलास शर्मा ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया है: 'कल्पना कीजिए एक 'अपधर्षित' व्यक्ति अपने 'अपकर्षक' पर अभियोग लगाता है और 'अपकर्षक' का मित्र 'अपनय' करता है। आप अदालत में 'प्रत्याख्यान' करते हैं। वकील 'अपनय' की अनुमति करता है। इतने ही में एक 'अपनयन' मुकदमा और पेश होता है लेकिन मुकदमे का 'समापन' हो जाता है। आपका 'अभिकर्ता' 'शपथ-पत्र' देता है, जिससे फिर 'व्याज-विकर्षण' होता है। इसके बाद 'मुख्तार के प्रत्यय' की जाँच आती है और तब 'अपचारक' से कहा जाता है कि इस वाद का अन्य वाद के परिणाम का अनुसरण करेगा।'[1] बिना अंग्रेज़ी और हिंदी पर्यायवाची शब्दों की सहायता के इन पारिभाषिक शब्दों का अर्थ नहीं समझा जा सकता। जहाँ तक ऐसे पारिभाषिक शब्दों का संबंध भाषा के शुद्धीकरण से संलग्न है, वह एक हानिकारक उपाय है। अंग्रेज़ी और रूसी में फ़्रांसीसी के और फ़ारसी में अरबी के शब्द काफ़ी संख्या में मौजूद हैं, लेकिन अंग्रेज़ी, रूसी और फ़ारसी भाषा-भाषी आए हुए शब्दों को निकाल कर अपनी भाषा को कमज़ोर करना पसंद न करेंगे क्योंकि गढ़े हुए नए पारिभाषिक शब्द प्रचलित शब्दों का स्थान स्वाभाविक रूप से नहीं ले सकते। इसी प्रकार हिंदी में फ़ारसी और अंग्रेज़ी के शब्दों को निकालकर भाषा को शुद्ध करने का प्रयास हानिकर है, साथ ही साथ भाषा के स्वाभाविक विकास में अप्राकृतिक अवरोध भी। उर्दू हिंदी के पुराने विवाद की तरह भाषा का यह एक नया विवाद खड़ा हो गया है।

कुछ विद्वान् मिश्रित शब्दों वाली हिंदी को इस विवाद का सुलझाव मानते हैं जिसमें विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में अंग्रेज़ी शब्द हिंदी का साथ दें और कानून, अर्थशास्त्र तथा साहित्य इत्यादि के क्षेत्र में अरबी-फ़ारसी-अंग्रेज़ी तीनों के शब्द काम में लाए जाएँ। टेक्निकल (पारिभाषिक) शब्दों की बहुत बड़ी संख्या का समाधान इसमें मिल सकता है। माध्यमिक कृषि भौतिकी में न्यूटन का ठंडा होने का नियम (लॉ ऑफ कूलिंग) इस प्रकार लिखा गया है—'न्यूटन का यह नियम केवल थोड़े ताप के अन्तर के लिए ही ठीक बैठता है। ताप का अधिक अन्तर होने पर किसी वस्तु के विकिरण द्वारा अति सत्वर

१—भाषा साहित्य और संस्कृति—पृ० ७८—डॉ० रामविलास शर्मा।

बाहर जानेवाली उष्मा की मात्रा वस्तु के परम ताप (एब्सोलूट टेम्प्रेचर) क चतुर्थघात (फोथ पावर) के समानुपाती होती है। इस नियम को स्टीफन का नियम (स्टीफन्स ला) कहते हैं। न्यूटन का नियम सिद्ध करने के लिये जल को लगभग 40°C तक गर्म करके एल्युमिनियम या ताँबे के उष्मामापी में ऊपर तक भर देते हैं और उसमें थर्मामीटर और विलोडक डालकर ऊपर से ढक्कन लगा देते हैं।'[1] डा० कुलश्रेष्ठ ने लिखा है कि 'कुछ अंग्रेजी शब्द ऐसे हैं जिनका व्यवहार हिंदी में इतना अधिक होता है कि वह हिंदी भाषा के ही शब्द बन गये हैं, जैसे—थर्मामीटर, आमीटर, गैलवनोमीटर आदि।'

हिंदी के सामने विज्ञान तथा कुछ अन्य विषयों की निम्नलिखित शाखायें प्रस्तुत हैं[3], जिनके लिए भाषा एवं पारिभाषिक शब्दावली का प्रश्न खड़ा होता है, यथा —

(१) गणित-विज्ञान, जिसमे इंजीनियरिंग एवं टेक्नालॉजी भी शामिल हैं। इसके लिए सामान्य शब्दों की कम, किंतु विस्तृत पारिभाषिक एवं उपयुक्त शब्दों की नितान्त आवश्यकता है।

(२) प्राकृतिक-विज्ञान, जैसे—रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, प्राणी-विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, आकृति विज्ञान, (फिजिओलॉजी), शरीर रचना-विज्ञान (एनॉटमी), भूगर्भशास्त्र, भूगोल में भी पारिभाषिक शब्दावली की प्रधानता होती है, किंतु वर्णनात्मक विषय भी बढ जाता है।

(३) समाजशास्त्र या समाज-विज्ञान, जैसे—नृतत्वविज्ञान (एन्थ्रोपोलॉजी) अर्थ-शास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, राजनीति, विधिशास्त्र, मनोविज्ञान इत्यादि में पारिभाषिक शब्दों की अपेक्षा सामान्य शब्दकोश का अधिक महत्व होता है।

(४) इतिहास, आत्मकथा या जीवन परिचय, यात्रा-वर्णन तथा साहित्य आदि में सामान्य शब्दकोश की ही प्रधानता होती है।

१—माध्यमिक कृषि भौतिकी—पृ० ३१६—डॉ० बी० एन० कुलश्रेष्ठ एम० एस-सी०, पी-एच० डी०।

२—वही—भूमिका में।

३—दी प्रोब्लम् ऑफ् हिंदुस्तानी—पृ० ३६—डॉ० ताराचंद।

हिन्दी तथा देश के विकास के लिए हम पूर्वी यूरोप, रूस (सोवियत संघ) तथा चीन जैसे एक समय में पिछड़े देशों के उदाहरणों से लाभ उठा सकते हैं, जिन्होंने अंग्रेजी, फ्रांसीसी या जर्मन का सहारा न लेकर, अपनी राष्ट्रभाषा के सहारे देश का विकास किया और उनमें से कुछ देश आज भारत को अनेक प्रकार की वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक सहायता भी दे रहे हैं। 'चीनियों ने पिछले तेरह वर्षों में जो विकास किया है उसका मूलमंत्र चीनी भाषा का प्रयोग है। जापानियों ने जापानी भाषा का आश्रय लेकर तीस वर्षों में ही मध्ययुग को पार कर वर्तमान युग में प्रवेश किया और इतनी शक्ति का निर्माण किया कि रूस भी परास्त हुआ।'' जिस समय रूस परास्त हुआ (१९०४ ई० में), उस समय रूसी भाषा एक पिछड़ी हुई और 'गँवारों' की भाषा थी। वह विज्ञान की शिक्षा के उपयुक्त नहीं मानी जाती थी और अब वहाँ भाषा अंग्रेजी या फ्रांसीसी के मुकाबले विज्ञान में कहीं आगे है। जारशाही के खात्मे के बाद विभिन्न प्रांतों की शिक्षण संस्थाओं, अदालतों आदि में मजदूर गैर-रूसी जातियों की भाषाओं का व्यवहार होने लगा। वहाँ लोग उच्च शिक्षा की पाठ्य-पुस्तकें गढ़ने न बैठ गए और रूस महान् जातीय भाषाओं के विकास पर कोई रोक न लगा सकी।' रूस की भाँति हमारे देश में भी राष्ट्रीय भाषा और प्रांतीय भाषाओं का विकास परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे पर अवलम्बित है और परस्पर सहायक है।

हिन्दी अभी पारिभाषिक शब्दों की दृष्टि से उन्नत भाषा नहीं है। अतः इसे समृद्ध बनाने के लिए हमें कतिपय पारिभाषिक शब्दों को नाना स्रोतों से ग्रहण करना होगा। संस्कृत के आधार पर नई पारिभाषिक शब्दावली बना सकते हैं, जिसकी सरलता असंदिग्ध है। इसके साथ ही विदेशी भाषाओं के कतिपय शब्दों को जो तत्सत ज्ञान-विधाओं से हिंदी में रूप गए हैं, ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेने से भी हिन्दी की यह समस्या सरलतापूर्वक सुलभ सकती है।

० ०

१—कादम्बिनी—पृ० ८८—डॉ० रघुवीर, सितम्बर १९६३।

२—भाषा और समाज—पृ० ४२१—डा० रामविलास शर्मा।

ख—फ़ारसी का प्रभाव

ध्वनिगत प्रभाव

१—प्रस्तावना

भारतीय इतिहास के मध्ययुग में भारत का सम्पर्क ईरान की आधुनिक भाषा फ़ारसी से ऐतिहासिक कारणों द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों में स्थापित हुआ। ईरान के कई प्रांतों में फ़ार्स एक प्रांत है, जहाँ की अधिक राजवंशों की उत्पत्ति हुई। ईसा से लगभग ५ शताब्दी पूर्व आर्कमीनियन (हखामनीय वंश) और ईसा की तीसरी सदी में सासानी वंश (फ़ार्स प्रांत) वालों ने पश्चिमी ईरान सहित पूरे देश पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और अपनी संस्कृति तथा भाषा का भी प्रभुत्व स्थापित किया। यही कारण है कि सारे देश को फ़ारस और भाषा को फ़ारसी कहा जाता है। व्यापक रूप में इस भाषा के स्वीकृत हो जाने के पश्चात् भी पश्चिमी और मध्य खासकर फ़ार्स और इराके-आजमी की बोलियों में अन्तर बना रहा और इनकी ध्वनियों तथा ४ वर्ष पुरानी फ़ारसी की ध्वनियों में भी अन्तर आ गया। डॉ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या का मत है कि नई फ़ारसी का साहित्यिक रूप जो तुर्कों और ताजिकों द्वारा भारत में लाया गया पूर्वी ईरान में बोली जाने वाली नई फ़ारसी का रूप था।[3] भारत में इसी फ़ारसी का प्रचार हुआ और अध्ययन किया गया जो सुल्तानों (पठानों) और मुग़ल बादशाहों के शासनकाल में न्याय और दरबार की भाषा थी तथा जिसने देश की अन्य भाषाओं को प्रभावित किया।

१—लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ़ पर्शिया पृ ५, एडवर्ड जी ब्राउन।

२—अरबी में प ध्वनि का अभाव है अतः उसके बदले फ़ कहा जाता है। फ़ार्स>फ़ारस और अस्फ़हान पार्स और इस्फ़हान के अरबीकृत उच्चारण हैं।

३—ओरिजिन ऐंड डेवलपमेंट ऑफ़ बेंगाली लैंग्वेज—वाल्यूम १ पृ ४१ डॉ एस के चैटर्जी।

'ईरानी के अन्तर्गत भी दो भाषाएँ आती हैं। इनमे एक है अवेस्ता की भाषा तथा दूसरी है प्राचीन फारसी भाषा।'' अवेस्ता की भाषा उत्तर एव उत्तर-पूर्व ईरान की भाषा थी। इसकी रचना सभवत ईसा पूर्व सातवीं-आठवी सदी मे हुई। अवेस्ता की भाषा और भारतीय आर्यभाषा सस्कृत मे अत्यधिक साम्य है।

पुरानी फारसी ईरान के दक्षिण-पूर्वी भाग की भाषा थी, जो सिकन्दर के आक्रमण से पूर्व दारा के समय से ही उन्नत हो गई थी। प्राचीन फारसी का रूप दारा और उसके पुत्र क्षयाप के शिलालेख एव ताम्रलेख से निर्धारित हुआ है। कई बातो मे इन दोनो भाषाओ मे अन्तर हो गया है यथा 'अवेस्ता की भाषा मे सस्कृत के 'अ' के स्थान पर 'ए' अथवा 'ओ' पाया जाता है परन्तु प्राचीन फारसी मे यह परिवर्तन नही दिखाई देता। सस्कृत के सध्यक्षरो 'ए' तथा 'ओ' के स्थान पर प्राचीन फारसी मे क्रमश 'अइ' तथा 'अउ' का प्रयोग हुआ है और सस्कृत 'ऋ' अवेस्ता 'एरे' (अरे) प्राचीन फारसी मे 'अर' हो गया है, यथा—स० पृच्छामि = अवे० पेरेसामि = प्रा० फा० अपरसम्।'[2] इसी प्रकार स० ज् अथवा ह् अवेस्ता की भाषा मे ज् और प्राचीन फारसी में बहुधा द् हो जाता है यथा 'स० हस्त = अवे० जस्त = फा० का दस्त इसके उदाहरण है।

ईरान के ऊपर दो भयकर आक्रमणो (१) यूनानियो का आक्रमण ई० पू० ३३० (२) अरबो का आक्रमण ६३५ ई० ने प्राचीन फारसी के प्रवाह को छिन्न-भिन्न कर दिया। यूनानियों का आक्रमण वास्तव में सतही था, किंतु अरबो के आक्रमण और ६५० ई० तक पूर्ण रूप से प्राप्त विजय ने ईरान में स्थायी और क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित कर दिए।[3] प्राचीन फारसी के पश्चात मध्य फारसी या पह्लवी तथा नवीन फारसी का विकास हुआ। मध्य फारसी या पह्लवी तीसरी शती ईसवी से नवी शती तक प्रचलित रही, तब तक ईरान का भलीभाँति सास्कृतिक दृष्टिकोण से अरबीकरण पूरा हो चुका था। अनेक अरबी शब्द, ध्वनियाँ एव पदरचना के तत्व इस भाषा में प्रवेश

१—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० २२, डा० उदयनारायण तिवारी।

२—वही, पृ० ७६।

३—लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ् पर्शिया, पृ० ६, एडवर्ड जी० ब्राउन।

पा चुके थे। इसके अतिरिक्त धर्म का सहारा लेकर लिपि को भी बदल दिया गया जिसने भाषा के परिवर्तन एवं विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका पूरी की। इस प्रकार यह भाषा प्राचीन फ़ारसी की अपेक्षा अर्वाचीन फ़ारसी के अधिक निकट पड़ती है। इसमें मिश्रण के कारण स्वतन्त्र समास हो गये और लुप्त विभक्तियों का काम अव्ययों से लिया जाने लगा।

नवीन फ़ारसी पर अरबी भाषा का अत्यधिक प्रभाव है। प्राचीन फ़ारसी में अत्यन्त सूक्ष्म विभक्तियों के प्रयोग से शब्दों का पारस्परिक संबंध प्रकट किया जाता था परन्तु अरबी प्रभावित नवीन फ़ारसी में अव्ययों एवं विभक्तियों के प्रयोग से तथा वाक्य में शब्दों के स्थान एवं स्थिति से यह संबंध प्रकट किया जाता है। इसका साहित्य १०वीं सदी से मिलता है। हिंदी की ही भाँति आकृति से यह बहुत अयोगात्मक हो गई है। 'और सीखी जाती है, सीखने में सरल, सुनने में मधुर।' फ़ारसी में स्वयं अरबी भाषा के एक तिहाई के क़रीब शब्द हैं और बहुतेरे फ़ कर के भी।

अरबी एक ऐसी महत्त्वपूर्ण भाषा है जिसका प्रभाव यूरोप, अफ्रीका और एशिया की कई भाषाओं पर पड़ा है तथा जिनमें इस भाषा के तत्त्व विद्यमान हैं। आर्यभाषा फ़ारसी से भिन्न यह सामी परिवार की भाषा है जो दो भागों में बँटी है (१) पूर्वी ( ) पश्चिमी—(क) उत्तर-पश्चिमी (ख) दक्षिण पश्चिमी। अरबी दक्षिण-पश्चिमी वर्ग की प्रमुख भाषा है। इस भाषा के कुछ लेख ई० पू० आठवीं सदी के भी मिलते हैं। अरब में मध्य भाग की भाषा ही प्रमुख रही है। इस मध्यवर्ती भाग के लेख ई० प० आदि ईसवी चौथी सदी के पहले नहीं आते। मुहम्मद साहब और धर्म इस्लाम के आविर्भाव से पूर्व अर्थात् ईसवी सातवीं सदी से पहले भी इस भाषा में अच्छा खासा साहित्य था। क़ुरानशरीफ़ इसी मध्यवर्ती अरबी में है और उसमें एक ऊँची साहित्यिक ... से अनुमान होता है कि इस्लाम धर्म के प्रचार के पूर्व भी अरब में साहित्य सेवा होती थी ... इस्लाम के प्रचार और अरबों के दिग्विजय के साथ

—हिंदी भाषा का उद्गम और विकास पृ० ... डॉ० उदयनारायण तिवारी।

—सामान्य भाषा-विज्ञान पृ० १ ५ डॉ० बाबूराम सक्सेना।

१—वही पृ० २९९।

अरबी दूर-दराज के देशो मे भी जा पहुँची। एक समय स्पेन तक के लोग इस भापा को बोलते थे। मुसलिम विजय से अरबी भापा के विकास का दूसरा अध्याय आरभ होता है। ८वी सदी से १३ वी सदी तक अरबी सपूर्ण मस्य-ससार मे प्रचलित थी। विज्ञान और भूगोल सबधी यूरोपीय भापाओ के बहुत से शब्द जैसे अलजेब्रा, सिफर, जीरो, मैगजीन आदि अरबी भापा के हैं। 'आधुनिक अरबी का विकास नैपोलियन की विजयो के पश्चात् प्रारभ हुआ।'[1]

अरबी तथा आर्य परिवार की भापा-सघटना मे पर्याप्त अन्तर है। 'आर्य भापा के शब्दरूप इस प्रकार निर्मित होते है—इसमें मुख्यतत्व धातु है, तदुपरात इसमे प्रत्यय तथा विभक्ति को सयुक्त किया जाता है। कभी-कभी धातु के पूर्व उपसर्ग भी आ जाता है। आर्यभापा की धातुएँ एकाक्षर (मोनोसिलेबिक्) होती हैं। कभी-कभी ये धातुएँ परिवर्धित होकर द्वयक्षर अथवा त्र्यक्षर मे भी परिणत हो जाती है, किंतु इनका आधार तो एकाक्षर धातुएँ ही रहती है। धातुओ का द्वित्व भी हो जाता है, यथा—सस्कृत, चल् धातु का चल अ-ति, चाल अय्-अ-ति, प्र-चल्-इत, च-चाल्-अ आदि। हिंदी में चल-ता, चल-ता हू आदि तथा अग्रेजी मे स्लीप, स्लेप्ट, स्लीपर, स्लीपिंगली आदि।'[2]

अरबी धातुएँ प्राय त्रि-व्यजनात्मक होती है। इसम प्रत्येक शब्द प्राय तीन व्यजनों का बना होता है। 'स्वरो के हेर-फेर तथा एकाध व्यजन और जोडकर तरह-तरह के शब्द बना लिए जाते हैं। उदाहरण के लिए क् त् ब् व्यजनो से विभिन्न प्रकार के शब्द (पुल्लिग, स्त्रीलिंग, एकवचन, बहुवचन, भूत, भविष्यत् काल की क्रियाएँ आदि) बना लेते है, जैसे—कतबा (उसने लिखा), कतबू (उन्होने लिखा), कातिब (लेखक), मकतूब (लेख या पत्र), मकतब (लिखने का स्थान) आदि।' किंतु, फ्रासीसी भापाविद् अरनेस्त रेना ने अपना मत अरबी की इस स्थापित विशेपता के विरोध में प्रकट किया है। 'उनका कहना है कि तीन अक्षरो की धातुओ की बात वैयाकरणो की गढन्त है। तीन अक्षरो मे एक अक्षर निर्बल होता है, वास्तव मे प्रत्येक धातु मे दो मूल अक्षर होते है जिनमे एक ही स्वरिक (सिलेबल) बनता है। उनका विचार है कि यदि भारत-

---

१—हिंदी विश्वकोश—प्रथम भाग २१४ नागरी प्रचारिणी सभा।

२—हिंदी भापा का उद्गम और विकास, पृ० ५५३, डॉ० उदयनारायण तिवारी।

३—हिंदी विश्वकोश—प्रथम भाग, पृ० २१५, ना० प्र० स०।

पा चुके थे। इसके अतिरिक्त धर्म का सहारा लेकर लिपि को भी बदल दिया गया जिसने भाषा के परिवर्तन एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका पूरी की। इस प्रकार यह भाषा प्राचीन फ़ारसी की अपेक्षा अर्वाचीन फ़ारसी के अधिक निकट पड़ती है। इसमें लिंगभेद के कारण रूपभेद समाप्त हो गये और लुप्त विभक्तियों का काम अव्ययों से लिया जाने लगा।

नवीन फ़ारसी पर अरबी भाषा का अत्यधिक प्रभाव है। प्राचीन फ़ारसी में सम्भवतः लुप्त विभक्तियों के प्रयोग से शब्दों का पारस्परिक संबंध प्रकट किया जाता था परन्तु अरबी प्रभावित नवीन फ़ारसी में अव्ययों एवं विभक्तियों के प्रयोग से तथा वाक्य में शब्दों के स्थान एवं स्थिति से यह संबंध प्रकट किया जाता है। इसका साहित्य ९वीं सदी से मिलता है। हिंदी की ही भाँति आकृति में यह बहुत अयोगात्मक हो गई है। और सीधी सादी है सीखने में सरल सुनने में मधुर। फ़ारसी में स्वयं अरबी भाषा के एक तिहाई के करीब शब्द हैं और बहुतेरे रूप भी।

अरबी एक ऐसी महत्वपूर्ण भाषा है जिसका प्रभाव यूरोप अफ्रीका और एशिया की कई भाषाओं पर पड़ा है तथा जिनमें इस भाषा के शब्द विद्यमान हैं। आर्यभाषा फ़ारसी से भिन्न यह सामी परिवार की भाषा है जो दो भागों में बँटी है (१) पूर्वी ( ) पश्चिमी—(क) उत्तर-पश्चिमी (ख) दक्षिण पश्चिमी। अरबी दक्षिण-पश्चिमी वर्ग की प्रमुख भाषा है। इस भाषा के कुछ लेख ई० पू० आठवीं सदी के भी मिलते हैं। अरब में मध्य भाग की भाषा ही प्रमुख रही है। इस मध्यवर्ती भाषा के लेख ई० प० आदि ईसवी चौथी सदी के पहले नहीं आते। मुहम्मद साहब और धर्म इस्लाम के प्रादुर्भाव के पूर्व अर्थात् ईसवी सातवीं सदी के पहले भी इस भाषा में अच्छा खासा साहित्य था। कुरानशरीफ इसी मध्यवर्ती अरबी में है और उस ग्रंथ की साहित्यिक गरिमा से अनुमान होता है कि इस्लाम धर्म के प्रचार से पूर्व भी अरब में साहित्य सेवा होती थी। इस्लाम के प्रचार और अरबों के दिग्विजय के साथ

१—हिंदी भाषा का उद्गम और विकास पृ० ३ डॉ० उदयनारायण तिवारी।

—सामान्य भाषा-विज्ञान पृ० १ ४ डॉ० बाबूराम सक्सेना।

१—वही पृ० २८४।

अरबी दूर-दराज के देशो मे भी जा पहुँची। एक समय स्पेन तक के लोग इस भापा को बोलते थे। मुसलिम विजय से अरबी भाषा के विकास का दूसरा अध्याय आरभ होता है। ८वी सदी से १३ वी सदी तक अरबी सपूर्ण सभ्य-ससार मे प्रचलित थी। विज्ञान और भूगोल सबधी यूरोपीय भापाओ के बहुत से शब्द जैसे अलजेब्रा, सिफर, जीरो, मैगजीन आदि अरबी भापा के हैं। 'आधुनिक अरबी का विकास नैपोलियन की विजयो के पश्चात् प्रारभ हुआ।'[१]

अरबी तथा आर्य परिवार की भापा-सघटना में पर्याप्त अन्तर है। 'आर्य भापा के शब्दरूप इस प्रकार निर्मित होते हैं—इसमें मुख्यतत्व धातु है, तदुपरात इसमें प्रत्यय तथा विभक्ति को सयुक्त किया जाता है। कभी-कभी धातु के पूर्व उपसर्ग भी आ जाता है। आर्यभापा की धातुएँ एकाक्षर (मोनोसिलेबिक्) होती है। कभी कभी ये धातुएँ परिवर्धित होकर द्वयक्षर अथवा त्र्यक्षर में भी परिणत हो जाती हैं, किंतु इनका आधार तो एकाक्षर धातुएँ ही रहती है। धातुओ का द्वित्व भी हो जाता है, यथा—सस्कृत, चल् धातु का चल्-अ-ति, चाल अय्-ल-ति, प्र-चल्-इत, च-चाल्-अ आदि। हिंदी में चल-ता, चल-ना हूँ आदि तथा अग्रेजी में स्लीप, स्लेप्ट, स्लीपर, स्लीपिंगली आदि।'[२]

अरबी धातुएँ प्राय त्रि-व्यजनात्मक होती है। इसमें प्रत्येक शब्द प्राय तीन व्यजनों का बना होता है। 'स्वरो के हेर-फेर तथा एकाध व्यजन और जोडकर तरह-तरह के शब्द बना लिए जाते हैं। उदाहरण के लिए क् त् ब् व्यजनो मे विभिन्न प्रकार के शब्द (पुल्लिग, स्त्रीलिंग, एकवचन, बहुवचन, भूत, भविष्यत् काल की क्रियाएँ आदि) बना लेते है, जैसे—कतबा (उसने लिखा), कतबू (उन्होंने लिखा), कातिब (लेखक), मकतूब (लेख या पत्र), मकतब (लिखने का स्थान) आदि।'[३] किंतु, फ्रासीसी भापाविद् अनस्त रेना ने अपना मत अरबी की इस स्थापित विशेपता के विरोध में प्रकट किया है। 'उनका कहना है कि तीन अक्षरो की धातुओ की बात वैयाकरणो की गढन्त है। तीन अक्षरो में एक अक्षर निर्बल होता है वास्तव में प्रत्येक धातु मे दो मूल अक्षर होते हैं जिनमे एक ही स्वरिक (सिलेबल) बनता है। उनका विचार है कि यदि भारत-

१—हिंदी विश्वकोश—प्रथम भाग २१४ नागरी प्रचारिणी सभा।

२—हिंदी भापा का उदगम और विकास, पृ० ५५३, डॉ० उदयनारायण तिवारी।

३—हिंदी विश्वकोश—प्रथम भाग, पृ० २१५, ना० प्र० स०।

यूरोपीय भाषा-परिवार में कोई साम्य है तो उसे यहीं (धातुओं के एक स्वरिक रूप में) देखना चाहिए।[१]

ईरान पर अरब-विजय के फलस्वरूप इस भाषा का फ़ारसी पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। 'अरब आक्रमण और मुसलिम विजय का जो मध्यकालिक था और जिसने सासानी वंश और ज़ोरास्ट्रियन धर्म को नष्ट कर दिया फ़ारस की जनता, दर्शन और धर्म पर अत्यधिक गहरा प्रभाव पड़ा।'[२] भारत में आने से पूर्व फ़ारसी पर अरबी का पर्याप्त प्रभाव पड़ चुका था, अस्तु इस देश में अरबी प्रभावित फ़ारसी का ही आगमन हुआ। तुर्कों या ग़ाज़ियों से पूर्व भारत में अरब आ चुके थे किंतु उनका प्रत्यक्ष प्रभाव भारत पर नहीं था। चूँकि अरबी तुर्की शब्द फ़ारसी से प्रभावित होकर भारत में आये, अस्तु मूल अरबी या तुर्की ध्वनियाँ नहीं आ सकी हैं।[३] मुसलिम-विजेताओं के युद्ध की भाषा तुर्की मानी जाती है और वे आपस में तुर्की बोलते भी थे परन्तु सार्वजनिक व्यवहार के लिए फ़ारसी का प्रयोग होता था। अनेक तुर्की शब्दों के प्रत्यक्ष रूप से हिंदी में आने पर भी उनकी ध्वनियों के आगमन का प्रश्न नहीं उठता क्योंकि भारत में ये पृथक् इकाई के रूप में स्वीकृत न होकर फ़ारसी ही माने गए। डॉ० चैटर्जी ने लिखा है कि 'बाद के समय में भारत की भाषाओं में आगत तुर्की शब्दों की, जबकि उनका प्रत्यक्ष आदान भी हुआ, फ़ारसी उच्चारण के अनुसार ही स्वीकृत किया गया .... हर स्थिति में वे फ़ारसी शब्द ही माने जाएँगे।[४] इस प्रकार हम देखते हैं कि अरबी, फ़ारसी और तुर्की भाषाएं भारत में एक भाषा-इकाई के रूप में मान्य हुईं और इनका एक ही भाषा फ़ारसी के रूप में भारत की भाषाओं पर प्रमुख रूप से हिंदी पर प्रभाव पड़ा।

२—फ़ारसी से अभिप्रेत सम्पर्क

भारत में फ़ारसी के आगमन से पूर्व अरबी भाषा-भाषियों का देश (सिंध-मलाबार) से सम्पर्क स्थापित हो चुका था किंतु स्थानीय अल्पसंख्यकों में मुहम्मद, क़ुरान इत्यादि कुछ शब्दों को छोड़कर उनका कोई प्रत्यक्ष प्रभाव

१—भाषा और समाज, पृ० ४६, डॉ० रामविलास शर्मा।

२—लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ़ परशिया, पृ० १, एडवर्ड जी० ब्राउन।

३—हिंदी भाषा का इतिहास, पृ० १६६, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा।

४—भा० आ० भा० और हिन्दी, पृ० ७०।

नही पडा। भारत मे तुर्को के अमहिष्णु आक्रमण के पश्चात् फारसी भाषा, शब्द समूह एव अन्य भाषातत्वो का प्रभाव पडा और भारत मे क्रातिकारी सामाजिक तथा सास्कृतिक परिवर्तन हुए। 'तुर्कों तथा अन्य मुसलमान विदेशियो द्वारा उत्तरी भारत और उत्तरी भारत के मुसलमानो द्वारा दक्षिण भारत की विजय को लेकर १००० ई० के पश्चात् जब एक नये युग का सूत्र-पात हुआ, तब भारतीय भाषाओ को भी भारतीय विचारो तथा भारतीय सस्कृति की नई दिशा को व्यक्त करने के लिए एक बार नये सिरे से कटिबद्ध होना पडा।'[1] तुर्क आक्रामको के माध्यम से भारत का सम्पर्क तीन भाषाओ मे स्थापित हुआ—युद्ध की भाषा तुर्की, शासन-सस्कृति की भाषा फारसी, और धर्म की भाषा अरबी। महम्मद गोरी के दिल्ली मे शासन-स्थापना के उपरात मुसलिम सैनिको के साथ उन्ही के नेतृत्व मे पजाबी मुसलमान सैनिक (ज्यादातर धर्म-परिवर्तित) पजाबी-फारसी की मिली जबान 'फारसी-आमेज' भी लेकर दिल्ली के हिंदी-क्षेत्र (कुरु प्रदेश) मे आए। यह वह जमाना था जब शौरसेनी अपभ्रंश की शाखा पश्चिमी हिंदी से ब्रजभाषा और खडी बोली की कोपल निकल आई थी। यद्यपि देशी बोली मे फारसी शब्द पहले से मौजूद थे, किंतु मुसलमानी शासन की स्थापना के साथ उसमे विदेशी शब्द बडी तेजी से शामिल होने लगे। नवागन्तुक मुसलमानो ने भी यहाँ की बोलियो मे अभ्यास करना आरभ किया एव परस्पर आदान-प्रदान का क्रम आरभ हुआ।

भारत मे मुसलमानो का सपर्क एकबारगी स्थापित होकर अवरुद्ध नही हो गया, बल्कि विदेश से आवागमन का क्रम बराबर बना रहा। सुल्तान युग के अधिकाश बादशाह तूरानी थे और उनके समय मे तूरानी मुसलमान बराबर आते रहे। यही कारण है कि फारसी के भारतीय लेखक और वक्ता की भाषा मे तूरानी विशेषताएँ पाई जाती हैं। 'हम कह सकते हैं कि भारतीय लेखकों की फारसी वास्तव मे तूरानी है।'[2] डॉ० चैटर्जी का यह भी कथन है कि स्वय फारस (ईरान) मे फारसी बदल गई है, किंतु भारत मे वही पुरानी फारसी-ध्वनियाँ प्रचलित हैं। हिंदी मे प्रचलित क़्, ख़्, ग़्, ज़्, फ़् और अ़् ध्वनियाँ फारसी से निकटतम सम्पर्क का ही प्रभाव हैं।

इसके अतिरिक्त जो सबसे बडा प्रभाव पडा, वह है हिंदी को अरबी लिपि (जो फारसी के माध्यम से आई) की देन। शासको की सुविधा के

1—भारतीय आर्यभाषा और हिंदी, पृ० ११६, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या।
2—"वी मेय् इनफैक्ट सेय्, दैट दी परशियन ऑफ् इन्डियन राइटर्स इज तूरानियन"। ओ० डे० बें० लै०, पृ० ५६०, डॉ० एस० के० चैटर्जी।

लिए फारसी के प्रभाव को स्पष्ट रूप में प्रकट करने के लिए तथा उसकी ध्वनियों को सही अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए हिंदी को फारसी-लिपि (अरबी) व शैली स्वीकार करनी पड़ी—यही कालान्तर में उर्दू लिपि कहलाई। यह वही लिपि थी जिसे फारस वालों ने ७वीं सदी में अरब विजय के उपरान्त अपनी अवस्ती और पहलवी लिपियों को छोड़कर अपना लिया था। 'भारत में यह फारसी-अरबी लिपि ज्यों-की-त्यों हिंदी या हिंदुस्तानी के साथ प्रयुक्त करने के लिए सम्भवतः १६वीं सदी में दक्कन में अपनाई गई।'[1] इस लिपि में अनेक त्रुटियाँ हैं यथा—(१) स्वर-चिह्नों की अस्पष्टता केवल एक जबर (अ) लिपि-संकेत से अ, ए, ऐ, ई का काम करवाया जाता है वाव (व) से व, औ, ऊ, ओ का तथा अलिफ (अ) से अ, आ का काम चलाया जाता है (२) नुक्तों (बिन्दियों) का महत्त्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक स्थान है जिनके ऊपर या ऊपर-नीचे लगी एक, दो और तीन बिन्दियों से न, त, य, ट, प, स जैसे—लिपिचिह्न बन जाया करते हैं और जिन्हें छोड़ देने पर (जैसा कि अक्सर हुआ करता है) या स्थान का ठीक निर्धारण न करने पर अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है जैसा कि कहा गया है—नुक्ते के हेर-फेर से खुदा से जुदा हो गया (३) शब्द के आदि या मध्य में अनेक वर्णों की आकृति छोटी होकर लकीर रूप में लगती है, जिसे 'अभ्यस्त' के सिवा और कोई नहीं पढ़ सकता तब भी यह भारत की एक महत्त्वपूर्ण लिपि बन गई है।

अरबी-सम्पर्क के बारे में भी दो शब्द जान लेना आवश्यक है। इतिहासकार डा॰ मंसूर का मत है कि हमें भारत पर किसी भी प्रत्यक्ष अरबी प्रभाव का विचार भी नहीं करना चाहिए। भारत में जिस प्रकार तुर्कों द्वारा फारसी लाई गई उसी प्रकार अरबी भी लाई गई किन्तु फारसी का जहाँ प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा वहीं अरबी का फारसी के माध्यम से अप्रत्यक्ष। आधुनिक युग में उर्दू को और अरबी को जानकर तथा कुरान में विशेष आस्था रखनेवाले एवं कुरान का हवाला तथा उद्धरण देकर इस्लाम की बड़ाई प्रमाणित करने वाले मुसलमानों के माध्यम से अरबी शब्द वाक्यांश एवं सूक्तियाँ प्रत्यक्ष रूप से उर्दू (हिंदी) में आईं। रेडियो द्वारा काहिरा और रियाद से कुरान का सही पाठ जुमओं में प्रसारित किया जाता है, जिसे व्यक्तिगत रूप के अलावा भारत की

१—भारतीय आर्य भाषा और हिंदी, पृ॰ २११, डॉ॰ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या।

२—मध्यकालीन भारत, पृ॰ २, मंसूर।

बडी मस्जिदो में सामूहिक रूप में भी सुना जाता है।[1] यहाँ के बडे घराने के मुसलमानो में भी यह कार्यक्रम लोकप्रिय है। बनारसी साडी के व्यापार एवं अरबी के अध्ययन के लिए अरब तथा इराक में जानेवाले मुसलमानो द्वारा अरबी शब्दो का नया उच्चारण यहा लाया जाता है, जिसका वे एक विशेष गर्वोक्ति के साथ बयान करते हैं। इन परिस्थितियो मे अरबी-ध्वनियो को ठीक-ठीक ग्रहण करना आसान हो गया है। इस बात का अवसर सुलभ हो गया है कि अरबी-शब्दो मे ठीक अरबी ध्वनियाँ प्रत्यक्ष रूप में ग्रहण कर ली जाए और यह कार्य आरभ भी हो गया है। 'अरबी का प्रत्यक्ष प्रभाव व्यवहारत नही के बराबर रहा है, यद्यपि आधुनिक समय मे मुसलिम लेखको द्वारा हिंदुस्तानी की उर्दू शैली मे अरबी शब्द और वाक्यांश फारसी के माध्यम से नही, बल्कि अरबी से प्रत्यक्षत लिये जा रहे हैं।'[2] वर्तमान युग मे अरबी पढने-पढाने वाले स्त्री-पुरुष मुसलमान आसानी से सुलभ हो जाते हैं, क्योकि कुरान के लिए इसकी आवश्यकता अपरिहार्य है, जब कि फारसी का पठन-पाठन दिन-प्रतिदिन कम या समाप्त होता जा रहा है, क्योंकि अब उसकी आवश्यकता ही नही रह गई है। मेरी आशका है कि अगली पीढी में फारसी विश्वविद्यालयो या अन्य विद्या केन्द्रो मे ही सिमट जायगी, जबकि अरबी भारतीय मुसलिम जनता में निश्चित रूप से बनी रहेगी।

३—ध्वनि-रचना का स्वरूप

हिंदी ध्वनियाँ

फारसी-अरबी की ध्वनि रचना का प्रभाव जानने के लिए हिंदी की ध्वनि-रचना का सक्षिप्त परिचय भी अपेक्षित है। आधुनिक हिंदी ध्वनि-रचना पर सस्कृत, अरबी-फारसी और अंग्रेजी सब का प्रभाव है। इसी प्रभाव के कारण हिंदी मे कुछ नई ध्वनियो का विकास भी हुआ है। डॉ० उदयनारायण तिवारी के अनुसार हिंदी ध्वनियो का स्वरूप निम्नलिखित है[3] —

१—मैंने खुद अरबी के मौलवी के साथ वाराणसी स्थित मदनपुरा की बडी मस्जिद मे काहिरा से कुरान का ब्राडकास्ट सुना है।

२—'ऑफ् डाइरेक्ट अरेबिक इन्फ्लुएंस, देयर हैज बीन प्रैक्टिकली निल्, ऑल्दो दी उर्दू फार्म ऑफ हिन्दोस्तानी इन दी हैन्ड्स ऑफ् मोहम्मन राइटर्स गेट दी प्रेजेंट डे ममटाइम्स बारोज अरेबिक वर्ड्स एंड फ्रेजेज स्ट्रेट फ्राम अरेबिक इटसेल्फ एंड नॉट थ्रू परसियन,। ओ० डे० बे० लै०, पृ० २२४, डॉ० एस० के० चैटर्जी।

३—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० २१३।

(क) स्वर-ध्वनियाँ

प्रयत्न की दृष्टि से —ह्रस्व—अ अँ इ, उ ए ओ
दीर्घ—आ ई ऊ, ए औ ऐ ओ

स्थान की दृष्टि से —

	अग्र	मध्य	पश्च
संवृत	ई इ इ		ऊ, उ उ
अर्ध संवृत	ए, ए ए ए		ओ
अर्ध विवृत	ऐ		औ
		अ अँ	ऑ
विवृत			आ

(ख) व्यंजन-ध्वनियाँ

स्पर्श व्यंजन=द्वयोष्ठ्य दन्त्य मूर्धन्य कण्ठ्य
अ प्राण-म प्राण अ प्रा-म प्रा अ प्रा-म प्रा अ प्रा-म प्रा
प् फ् त् थ् ट् ठ् क् ख् अघोष
ब् भ् द् ध् ड् ढ् ग् घ् सघोष

स्पर्श संघर्षी= तालव्य
अ प्रा०-म प्रा
च् छ् अघोष
ज् झ् सघोष

अनुनासिक=द्वयोष्ठ्य वर्त्स्य मूर्धन्य तालव्य कंठ्य
अ प्रा०-म प्रा अ प्रा -म प्रा अ प्रा अ प्रा अ प्रा
म् म्ह् न् न्ह् ण् ञ् ङ् सघोष

पार्श्विक— वर्त्स्य
अ प्रा -म प्रा
ल् ल्ह् सघोष

लुंठित= वर्त्स्य
अ प्रा०-म प्र
र र्ह सघोष

उत्क्षिप्त— मूर्धन्य

अ० प्रा०—म० प्रा०

		ड़्	ढ़्	सघोष
सघर्षीदत्य ऊष्म=वर्त्स्य		मूर्धन्य	तालव्य	स्वरयंत्रमुखी
	स्	ष्	श्	अघोष
अर्द्धस्वर=	द्वयोष्ठ्य		तालव्य	सघोष
	व्		य्	ह् सघोष

हिंदी में फारसी-अरबी से आगत ध्वनियाँ[1] —

स्पर्श अलिजिह्व— क़्

सघर्षी=	दन्त्योष्ठ्य	पूर्वतालु	कंठ्य	
	फ़्		ख़्	अघोष
	ज़् (ज़्—झ़्)			सघोष

साहिर लुधियानवी जैसे कवियों (शायरों) की देवनागरी लिपि में छपी पुस्तकों में *अरबी-फारसी ऐन की ध्वनि के लिए हिंदी में अ् का व्यवहार होने* लगा है।[2] यह सघर्षी कंठनालीय (स्वर यंत्रमुखी) अघोष ध्वनि है।

'अंग्रेजी तत्सम शब्दों में प्रयुक्त ध्वनियाँ

ऑ

'फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी तत्सम शब्दों में प्रयुक्त विशेष ध्वनियाँ नगरों में शिक्षित वर्ग ही बोलता है।'[3]

फारसी-अरबी की अधिकांश ध्वनियाँ हिंदी के समान हैं, किंतु फारसी में कुछ ऐसी ध्वनियाँ हैं, जो हिंदी में नहीं हैं, इसी प्रकार अरबी में कुछ ऐसी ध्वनियाँ हैं जो फारसी और हिंदी दोनों में नहीं हैं। फारसी-अरबी के अनेक तत्सम शब्दों को अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य हिंदी-ध्वनियों में नहीं है। यही कारण है कि कुछ ध्वनियाँ हिंदी में बढ़ाई गई हैं और कुछ विदेशी ध्वनियाँ सरल कर अपने समीप की हिंदी-ध्वनियों में शामिल कर ली गई हैं। फारसी ध्वनियों का स्वरूप समझने से पूर्व यह आवश्यक होगा कि हम अरबी-ध्वनियों की भी संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर लें।

१—हिंदुस्तानी फानेटिक्स, पृ० ६४, एम० जी० मोहिउद्दीन कादरी।

२—'लोग कहते हैं तो लोगों पे तअज्जुब कैसा ?
सच तो कहते हैं कि नादार की इज्जत कैसे ?', मेरे गीत तुम्हारे हैं, पृ० ६२, साहिर लुधियानवी।

३—हिंदी भाषा का इतिहास, पृ० ६८, डॉ धीरेन्द्र वर्मा।

अरबी-ध्वनियाँ

अरबों की विजय के पश्चात् बहुत बड़ी संख्या में अरबी शब्द समूह को लेने के साथ-साथ फारसी भाषा अरबी-लिपि में लिखी जाने लगी। फारसी के लिए व्यवहृत होने पर अरबी वर्णों के उच्चारण तथा संख्या दोनों में परिवर्तन करना पड़ा। अरबी में कुल २८ हर्फ़ (वर्ण) हैं, जिनमें चौदह सौर अक्षर (हुरूफ़-शम्सी) और चौदह चान्द्र अक्षर (हुरूफ़-क़मरी) कहे जाते हैं, जिनमें फारसी के चार नये वर्ण बढ़ गए, जिनका परिचय आगे दिया जायगा।

अरबी की ध्वनियों में ईराकी बोली से फारसी का सम्पर्क स्थापित हुआ। सम्भवतः ईराक की बोली से ही फारसी का सम्पर्क-स्थापन हुआ और ईराकी उच्चारण की कुछ विशेषताओं का फारसी में पाया जाना संभव है।[1] चूँकि फारसी में अरबी शब्द अरबी भाषा-भाषियों से कम पुस्तकों से अधिक लिए गए (हिंदी में फारसी से भिन्न अरबी शब्दों के लिए यही स्थिति थी) अतः अरबी-ध्वनियों का अध्ययन हमारे लिए अनिवार्य न होते हुए भी आवश्यक है।

अरबी-स्वर

अरबी वर्णमाला में तीन लिपि-संकेत अलिफ़ वाव और ये ध्वनि-रचना के सभी स्वरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अरबी में ये वर्ण 'हुरूफ़-इल्लत' कहे जाते हैं। 'इल्लत' का अर्थ है 'कारण' अर्थात् ये उक्त तमाम परिवर्तनों के कारण हैं। ज़ेर, ज़बर, पेश के संकेत-चिह्नों से भी स्वरों का काम लिया जाता है। यहाँ डॉ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या के आधार पर सातवीं-आठवीं सदी की अरबी ध्वनियों का अध्ययन किया गया है।[2]

	अग्र		मध्य	पश्च	
उच्च	ई	इ		ऊ	उ
मध्य	ए	ए	अ	ओ	ओ
			अऽ		
निम्न				आऽ	आ

१—वही पृ १९२।

२—ओ डे डे ले पृ १५४ डॉ बस के नीरवी।

३—वही पृ १५८।

अरबी-व्यंजन

(स्थानक्रम से बाई ओर अघोष एवं दाहिनी ओर सघोष ध्वनियां उल्लिखित हैं)।

स्पर्श—द्वयोष्ठ्य वर्त्स्य या दंत्य तालव्य कंठ्य अलिजिह्व स्वरयंत्रमुखी
(मग्न-कंठीकृत)

ब् त् द् त द् (च्) ज् क् (ग) क़ (?ग्)

अनुनासिक—द्वयोष्ठ्य दंत्य तालव्य कंठ्य अलिजिह्व

म् न् ञ् ङ् ङ

पार्श्विक— वर्त्स्य (कंठीकृत) तालव्य-वर्त्स्य

(ल्) ल़् ल्

कंपनजात— तालव्य-वर्त्स्य

र्

संघर्षी—द्वयोष्ठ्य अन्तर्दंत्य वर्त्स्य या दंत्य
(मग्न—कंठीकृत)

(?फ्) थ् द् (ध्) स् ज़्—स़् ज़्

तालव्य-वर्त्स्य कंठ्य अलिजिह्व स्वरयंत्रमुखी

श् (ख़ ग़्) ख़् ग़् ह् ह अ्

अर्द्ध स्वर—द्वयोष्ठ्य तालव्य

व य्

अरबी की व्यंजन ध्वनियाँ लगभग अपने पुराने रूप में अभी तक मान्य हैं। साधारण परिवर्तन ज् ध्वनि में हुआ है।[1] 'अरबी जीम अक्षर का प्राचीन उच्चारण ग अथवा ग्य था। आजकल विभिन्न अरबी भाषा-भाषी देशों में इसके उच्चारण में भी भिन्नता आ गई है। अरब-उपद्वीप तथा ईराक में इसका उच्चारण आज ज तथा सीरिया में झ् है। केवल मिस्र में आज भी इसका पुराना उच्चारण ग वर्तमान है।'' अरबी के उपर्युक्त व्यंजन ध्वनियों में से १८ क्रमशः थ्, ग्-ग्य (ज्) ह्, ख, द्, (ध्), ज़्, स्, त्, ज़्, अ्, ग़्, फ़, क़् का हिन्दी ध्वनियों में कोई मेलजोल या साम्य नहीं है। इनमें से कुछ फ़ारसी भाषा में परिवर्तित होकर हिन्दी के सम्पर्क में आईं जिनका वर्णन आगे यथाक्रम किया गया है।

फ़ारसी ध्वनियाँ

नवीन फ़ारसी में पुरानी फ़ारसी की सभी ध्वनियाँ स्वीकृत हैं। दोनों की ध्वनियों में अधिक फर्क नहीं है। इतना अन्तर अवश्य हुआ है कि अरबी

[1]—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास पृ० ५५, डॉ० उदयनारायण तिवारी।

कुछ ध्वनियां जैसे हमजा और ऐन की ध्वनि ने नवीन फारसी की ध्वनियों को बराबर प्रभावित किया है। इसके साथ यह भी ध्यान देने की बात है कि जहाँ अरबी की आठ ध्वनियाँ फारसी में नहीं थी वहीं फारसी की चार ध्वनियाँ अरबी में भी नहीं थी।

विभिन्न घटनाओं और परिस्थितियों तथा अरबी-तुर्की की संश्लिष्टता के कारण फारसी ध्वनियों में भी अन्तर उपस्थित हो गया है। तेरहवीं-चौदहवीं शती की फारसी बोली की ध्वनि-रचना आज जैसी न थी। ईरान की विभिन्न बोलियों ने भी मुख्य भाषा-ध्वनि को प्रभावित किया। फारस के पश्चिमी एवं मध्य प्रान्तों खासकर कुर्द और इराक–आजमी में बोली जाने वाली परिनिष्ठित फारसी की ध्वनियाँ चार सौ वर्ष पूर्व की प्राचीन फारसी से बदल गई है।[1] भारत में तुर्कों और ताजिकों द्वारा यह फारसी लाई गई थी जो सामान्यतः पूर्वी ईरान में बोली जाती थी। वास्तव में यह फारसी की उन्नत बोली थी जिसमें साहित्यिक रचनाएँ होने लगी थी। ताजिकी फारसी की एक उन्नत बोली है जिसने भारत में आने वाली फारसी को प्रभावित किया था। तुर्की उच्चारण ने भारत में फारसी ध्वनियों को कुछ हद तक संशोधित किया क्योंकि फारसी में परिवर्तन या विकास उपस्थित करने में तुर्की बोलने वालों का भी हाथ था। इतना होने पर भी नवीन फारसी की ध्वनि-रचना मध्य फारसी (पहलवी) से अधिक भिन्न नहीं है।[2]

मध्य या पूर्व–इस्लाम फारसी की ध्वनियां डॉ० चादुर्ज्या के अनुसार निम्नलिखित हैं —

फारसी-स्वर

अरबी-लिपि स्वीकार कर लिए जाने के पश्चात् फारसी स्वर-ध्वनियां भी अलिफ वाव और ये एवं जेर, जबर पेश के लिपि-चिह्नों से ही अभिव्यक्त होने लगीं क्योंकि अरबी के समान पहलवी में भी स्वरों के लिए पृथक चिह्न नहीं थे।[3]

१—ओ० डे० बे० लै० पृ० ५११ डॉ० सु० कु० चैटर्जी।

२— 'दी साउंड सिस्टम ऑफ् न्यू परशियन इज नॉट मच डिफरेण्ट फ्राम दैट ऑफ मिडल परशियन (पहलवी)। वही पृ० ५१२।

३—हिन्दी भाषा का इतिहास पृ० ६११ डॉ० धीरेन्द्र वर्मा।

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	ई, इ		ऊ उ
मध्य	ए, ए	[अ]	ओ ओ
निम्न	अऽ	[अऽ]	आऽ
संधि-स्वर	अइ		अउ

फारसी व्यंजन

(स्थानक्रम मे बाईं ओर अघोष और दाहिनी ओर सघोष ध्वनिया उल्लिखित हैं)।

स्पर्श—द्व्योष्ठ्य दंत्य कंठ्य अलिजिह्व स्वरयंत्रमुखी
प् ब् त् द क् ग् क् ?

स्पर्श-संघर्षी— तालु-वर्त्स्य
च

अनुनासिक—द्व्योष्ठ्य दंत्य
म न्

पार्श्विक— तालु-वर्त्स्य
ल्

कंपनयुक्त— तालु-वर्त्स्य
र्

संघर्षी—द्व्योष्ठ्य दंत्य तालु-वर्त्स्य कंठ्य स्वरयंत्रमुखी
फ् व् स् थ्—ज ? श् भ्(ज्) ख्(ग्व) ग् ह

अर्द्ध स्वर—द्व्योष्ठ्य तालु-वर्त्स्य
व् य्

इस पुरानी फारसी मे चार ऐसी व्यंजन ध्वनियाँ हैं, जो अंग्रेजी ध्वनियों से भिन्न हैं अथवा अंग्रेजी में उनका अभाव है। ये ध्वनिया निम्नलिखित हैं —

१—स्पर्श द्व्योष्ठ्य अघोष प्

२—स्पर्श कंठ्य सघोष ग्

३—घर्षस्पर्श तालु-वर्त्स्य अघोष च

४—संघर्षी तालुवर्त्स्य (तालव्य ?) सघोष झ्

पुरानी फारसी की दीर्घ आऽ ध्वनि समाप्त हो गई। ह्रस्व अँ अंग्रेजी स्वर ए के समकक्ष हो गया। ऑ बहुत कुछ अंग्रेजी स्वर ओऽ की तरह उच्चरित होता है और मू, न् से पूर्व यह उ हो जाता है। आधुनिक फारसी ह्रस्व अँ अब आऽ हो गया है, जो यदाकदा ऑ की भाँति उच्चरित होता है और यह ऑ स्वयं किसी-किसी स्थिति में अँ बन जाता है। इसी प्रकार ह्रस्व स्वर ध्वनियाँ एँ, ओँ, इ, उ नवीन फारसी की भाँति प्राचीन फ़ारसी में भी मौजूद थीं। प्राचीन फारसी में संवृत दीर्घस्वर एऽ, ओऽ मौजूद थे, जो मध्य और पश्चिम फारस की फारसी में क्रमशः ई, ऊ में बदल गए हैं और प्राचीन फारसी की मूल ध्वनियों—ई, ऊ के समान बन गए हैं। एऽ तथा ओऽ ध्वनियों को मजहूल या अज्ञात ध्वनि, और ई, ऊ को मारूफ या ज्ञात ध्वनि कहते हैं। पूर्वी ईरान की ताजिक बोली में एऽ तथा ओऽ अभी भी मौजूद हैं। यही कारण है कि जहाँ मध्य ईरान में शेर (सिंह) और शीर (दूध) का ध्वनिभेद मिटा कर दोनों का शीर कर दिया गया है, वहाँ पूर्वी ईरान में प्राचीन फारसी की भाँति शेर और शीर दोनों प्रचलित हैं। भारत की फारसी में मजहूल या अज्ञात ध्वनियाँ बनी रहीं।[1] इसी प्रकार 'दिन' के अर्थ में रोज़ का उच्चारण पहले 'रोज' ही था। भारत में आज भी यह उच्चारण प्रचलित है, किन्तु आधुनिक फारसी में इसका उच्चारण 'रूज़' हो गया है।

पुरानी फारसी के संधिस्वर अइ, अउ नवीन फारसी में एइ, ओउ की भाँति उच्चरित होते हैं,[2] यथा फ़ैयाज़, मौफ, मैयाद, शौक।

जहाँ तक फारसी स्वर ध्वनियों के हिंदी में आगमन का प्रश्न है, यह स्पष्ट है कि एक भी स्वरध्वनि ने हिंदी को प्रभावित नहीं किया। हिंदी के समकक्ष स्वरों ने फारसी के स्वरों का स्थान ग्रहण कर लिया। फारसी में पदान्त में बलाघात की पद्धति भी हिंदी के लिए विदेशी बनी रही। 'फारसी में साधारणतः शब्द के अन्तिम अक्षर पर बलाघात (स्वराघात) होता है, किंतु हिंदी में प्रायः इसके विपरीत होता है।'[4]

1—ओ० डे० डें० लैं०, पृ० ५६३, डॉ० एस० के० चटर्जी।

2—हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० ५४०, डॉ० उदयनारायण तिवारी।

3—ओ० डे० डें० लैं०।

4—हिं० भा० उ० वि०, पृ० ५४०।

फारसी अघोषध्वनि ग्, त्, प् और सघोष ग्, द, ब् हिंदी ध्वनियों के पूर्णतः समकक्ष हैं अतः इनके आगमन का प्रश्न ही नहीं उपस्थित होता। महाप्राणवत् उच्चरित अघोष ख्, थ्, फ् ध्वनियाँ भारत में आगत फारसी के साथ न आ सकी, उनका प्रभाव फारस तक ही सीमित रहा। अरबी ध्वनि अ् (या फारसी हमजा) का तत्सम शब्दों में अवश्य आगमन हुआ है, जो खासकर शिक्षित मुसलमानों या कायस्थों अथवा शायरों की बोलियों में सुना जाता है, जैसे मअ्लूम>मालूम। अब लिखित भाषा में भी यह ध्वनि अभिव्यक्त होने लगी है।

इसके अतिरिक्त फारसी से हिंदी में क्, ख्, ग्, ज्, फ् ध्वनियों का भी आगमन हुआ है।

क् ध्वनि खुद फारस में ग के रूप में ढल चुकी थी, किंतु अरबी प्रभाव से यह पुनरुज्जीवित हुई और हिंदी में खासकर तत्सम शब्दों में स्वीकृत हुई। इस ध्वनि का फारसीदाँ हिंदी लेखकों में लिखने और बोलने दोनों में व्यवहार होता है, यथा कुरान, कैदी। हिंदी के कथ्य रूप में प्रायः यह क् हो जाती है।

ख् ध्वनि पुरानी फारसी की ख् एवं ख्व् दोनों ध्वनियों के समकक्ष है। तत्सम शब्दों में यह ख् के समान ही प्रचलित है यथा खुदा, खिदमत, खाँ। बोलचाल की भाषा में यह ख् के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

ग् ध्वनि कंठ्य घर्ष सघोष ध्वनि है। प्राचीन फारसी क् ध्वनि मध्य फारसी-युग में ग् में बदल सी गई थी, किंतु अरबी प्रभाव से पुनः दोनों ध्वनियाँ स्वतंत्र हो गईं। फारसी के द्वारा हिंदी में इस ध्वनि का आदान हुआ। हिंदी में प्रचलित फारसी शब्दों के परिनिष्ठित उच्चारण में इस ध्वनि का प्रयोग होता है, यथा गरीब, दाग, गजब। साधारण बोलचाल की भाषा में यह ध्वनि ग् में बदल जाती है।

ज् ध्वनि फारसी की एक अजीब विशेषता है। हिंदी में यह ध्वनि सिर्फ अरबी की द्, ज् ध्वनि और अरबी तथा फारसी की द् (ز), ज ध्वनि का प्रतिनिधित्व आगत फारसी-अरबी शब्दों के परिनिष्ठित उच्चारण में करती है तथा साथ ही फारसी ध्वनि झ् (ژ) के उच्चारण का भी प्रतिनिधित्व करती है, यथा —

आख़िर	आखिर
आवाज़	आवाज
काज़ी	काजी
नज़र	नजर
मिज़ाज	मिजाज

प्रथम चार ध्वनियाँ फारसी में ही एक-सी हो गई हैं किंतु उनकी वर्तनी अब भी पहले जैसी ही अलग-अलग है। उर्दू में भी इनकी वर्तनी अलग-अलग है, किंतु हिंदी में उच्चारण के साथ इन आगत ध्वनियों (या एक ध्वनि) की वर्तनी भी एक ही हो गई है। फारसी ध्वनि ज़ का हिंदी में ज के रूप में ही आदान हुआ है।

फ़ फारसी अरबी की उभयनिष्ठ ध्वनि है। अरबी-फारसी शब्दों के परि-निष्ठित उच्चारण में इसका भी आदान हुआ यथा फ़कीर फारसी फुरसत। सामान्य बोलचाल में यह फ हो जाती है।

अन्य जितने ध्वनियों वाले फारसी-अरबी शब्द अपनी ध्वनियों के बिना ही हिंदी में स्वीकृत हुए अर्थात् उन ध्वनियों का आदान नहीं हुआ।

५—फारसी के माध्यम से आई अरबी ध्वनियाँ

जैसा कि पहले बताया जा चुका है अरबी की चार ध्वनियों का फारसी में अभाव है। अरबी लिपि अपनाए जाने के कारण इन चार ध्वनियों के लिए अरबी में प्रयुक्त लिपि-संकेत फारसी वर्णमाला में स्वीकृत कर लिए गए, किन्तु अरबी की इन मूलध्वनियों में से कुछ ने नवीन फारसी में संशोधन कर लिया एवं कुछ से कुछ नवीन फारसी की ध्वनियाँ प्रभावित हुईं। अरबी हे तथा फारसी हे के उच्चारण समान हैं। इसी प्रकार अरबी में जोय ज्वाद एवं जाल के उच्चारण पृथक-पृथक हैं किन्तु फारसी में इनका उच्चारण जे के समान ही होता है। से तथा स्वाद के उच्चारण भी अरबी में भिन्न हैं किन्तु फारसी में सीन अथवा दन्त्य स् की भाँति इनका उच्चारण होता है। तोय का उच्चारण फारसी ते तथा क़ाफ़ का उच्चारण फारसी में ग के समान होता है। ऐन तथा हमजा का फारसी में अभाव है। इस प्रकार अरबी-ध्वनियों के उच्चारण में परिवर्तन कर लेने के कारण फारसी में कई-कई वर्णों के उच्चारण में सादृश्य

१—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास पृ० २३३-४।

हो गया।[1] जिन ध्वनियों में फारसी में साम्य स्थापित हो गया वे निम्न-लिखित है —

सही उच्चारण	फारसी उच्चारण
स्, स़्, थ़्	स्
ज़्, ज़्, द़्	ज़्
ह्, ह़्	ह्
त, त़्	त

अरबी ध्वनियों के संबंध में फारसी ने जो-जो परिवर्तन किए वह हिंदी और उर्दू में फिर बदल न सके किन्तु बताया जा चुका है कि अरबी क़ और ज़् ध्वनियों का नवीन फारसी की ध्वनियों पर प्रभाव पडा, ठीक उसी क्रम मे ये ध्वनियाँ भारत मे आगत तत्सम विदेशी शब्दो के उच्चारण म सही प्रयुक्त होने लगी।

पुस्तको मे, न कि बोलने वालों मे, अरबी शब्द और ध्वनि ग्रहण करने तथा अरबी लिपि अपना लेने के पश्चात् अरबी-फारसी स्वरो में, ईरान में, तथा भारत में ध्वनि सबंधी कोई व्यावहारिक अन्तर नही रहा। अरबी स्वर न तो फारसी में आ सके और न हिंदी म ही। अस्तु अरबी स्वरध्वनियो मे सशोधन एव उनके हिंदी मे आगमन का प्रश्न महत्व नही रखता।

इसी प्रकार अरबी संधि-स्वर अइ और अउ फारसी संधि-स्वरो के ही समरूप हैं।

अरबी व्यंजन ध्वनियो की विशेषताएँ हिंदी और फारसी की दृष्टि से अवश्य ही महत्व रखती हैं। हमजा अरबी की स्वरयंत्रमुखी स्पर्श ध्वनि है। नियमत फारसी मे यह समाप्त हो गई किन्तु दो स्वरो के मध्य यह बनी रही। भारत या खासकर उत्तरी भारत के शिक्षित मुसलमानों क उर्दू उच्चारण में यह

१—हिंदी भाषा का इतिहास, पृ० १९२, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा।

२—ओ० इ० डें० लैं०, पृ० ५६६।

इसी प्रकार इये (ई, ए आदि) की भी विशेषता है। यह दो प्रकार की होती है।

[१] याये मारूफ वह ध्वनि है जिसके पूर्व शब्द में जेर आए और जो पूरी आवाज से उच्चरित की जाय, जैसे सर्दी, गरमी, अरबी और फारसी।

[२] याये मजहूल वह ध्वनि है जो याये मारूफ की भाँति खींच कर नहीं बल्कि ह्रस्व ऍ की भाँति पढी जाय, जैसे शेर, बेल, पेश।

शब्द क्रम में ल् ध्वनि का भी इस प्रकार का महत्व है। अरबी के अट्ठाईस वर्णो में से चौदह सौर अक्षर [हरूफे-शम्सी] है यथा—

[त्, थ्, द्, द्, र्, ज़्, स्, श्, स्, द्- त्, ज्, ल, न्], और बाकी चौदह चान्द्र अक्षर [हरूफे-क़मरी] हैं यथा—

[अ्, ब्, ज् (ग्य्-ग्), ह्, ख्, अ्, ग़् फ्, क्, क्, म्, व्, ह्, य्]।

शब्द में हरूफे-शम्सी के पूर्व (अल्) आता है तो ल् ध्वनि लुप्त हो जाती है और उसका उच्चारण नहीं होता तथा बोलने मे ल् के पश्चात की ध्वनि द्वित्व कर कर दी जाती है यथा—

दार-उल्-सलाम	दारुस्सलाम
इमाम-उल्-दीन	इमामुद्दीन

जब हरूफे-कमरी के पूर्व अल् आता है तो ल् ध्वनि लुप्त नही होती और इसका उच्चारण होता है, यथा—

अब्द-उल्-कादिर—	अब्दुल्कादिर
अब्द-उल्-वहीद—	अब्दुल्वहीद

हिंदी म इस ध्वनि के लिखित रूप को स्वीकार न कर केवल उच्चरित रूप को ही स्वीकृत किया गया।

८—सरलीकृत ध्वनियाँ

हिंदी म आगत फारसी-अरबी शब्दो की मूल ध्वनियो का वर्ण के नीचे बिंदी लगाकर अभिव्यक्त करने की पद्धति की कठिनाई का उल्लेख करते हुए प० किशोरीदास वाजपेयी ने लिखा है कि एक हिन्दी के पंडित 'वकील' मे बड़ा काफ बोलते थ। वे समझते थे कि बड़ा काफ बोलने म ही उर्दू हो जाती है। इसी तरह बिन्दी की बीमारी मे पडकर उर्दू न जानने वालो को बड़ी ठोकरे खानी पडती है। उन्होने बाबू बालमुकुन्द गुप्त के एक लेख का हवाला

उर्दू में संधि-स्वर पाए जाते हैं। 'उर्दू में बहुत से संधि स्वर नहीं हैं। वास्तविक संधि स्वर दो अउ और अइ हैं, जो अरबी और फारसी उद्गम के शब्दों में पर्याप्त संख्या में पाए जाते हैं,'[1] जैसे खौफ, फैयाज।

जो व्यंजन ध्वनियाँ अरबी और फारसी की भाषा-इकाई से न आ सकी उनकी संख्या १० हैं, जिनको हम दो श्रेणियों मे रख सकते है (१) मूल अरबी ध्वनियाँ जिनमें से कुछ के समकक्ष फारसी में भी ध्वनियाँ थी और (२) मूल फारसी ध्वनियाँ। प्रथम श्रेणी में आठ ध्वनियाँ है जो हिंदी मे अपने परिवर्तित रूप में ही आ सकी हैं न कि मूलरूप मे यथा—

अरबी और फारसी उच्चारण	हिंदी उच्चारण	
१—ग्य्-ग्, ज्	ज्—	जम>जमा
२—थ़्, स् (थ़् ?)	स्—	कसरत
३—ह़्, ह्	ह्—	मुहम्मद
४—द़् (ध़्), ज़्	ज़्—	ज़ात>जात
५—स़्, स्	स्—	सन्दूक
६—द़्, ज़	ज़्—	क़ाज़ी>काजी
७—त़्, त्	त्—	तोता
८—ज़्, ज़्	ज़्—	नज़र>नजर

द्वितीय श्रेणी में दो ध्वनिया है जो मूलत फारसी की हैं किन्तु हिंदी मे इनका आदान न हो सका, यथा—

१—च़्	च—चश्मदीद
२—झ़्	ज—मिझ़गाँ>मिजगाँ

डॉ० हरदेव बाहरी का मत है कि फारसी की झ़् ध्वनि भारतीय आर्य भाषाओं के लिए सदैव विदेशी बनी रही।[2] इस ध्वनि वाले शब्दों की संख्या फारसी मे ही कम है, हिंदी में शायद ही इस ध्वनि वाला कोई शब्द प्रचलित हो। उर्दू में इस ध्वनि को अभिव्यक्त करने वाले लिपि-संकेत आगत शब्द की वर्तनी में अवश्य पाये जाते हैं।

हिंदी जैसी मूर्धन्य और महाप्राण ध्वनियो के फारसी मे आगमन का प्रश्न ही नही उपस्थित होता, क्योंकि इन ध्वनियो का स्वरूप फारसी में ही अभाव है। प्राचीन अरबी में हमारी भारतीय भाषा की ग् ध्वनि के अतिरिक्त अन्य

[1]—हिन्दुस्तानी फोनेटिक्स, पृ० ४८, डॉ० एम० जी० एम० कादरी।
[2]—पर्शियन इन्फ्लुएन्स ऑन हिंदी पृ० ५८।

ज़् ध्वनि अरबी-फारसी में एक रूप होकर हिंदी दंत्यऊष्म स् के सघोष रूप में स्वीकृत हुई यथा आज़ाद।

थ् और द् (ध्) ध्वनियाँ फारस और भारत दोनों मे क्रमश स् और ज़् में बदल गईं यथा कथरत>कसरत, दात>ज़ात।

फ़् ध्वनि का हिंदी में फारसी फ़् के समान ही आदान हुआ है।

त्, ज़्, स्, द् अरबी की विशेष ध्वनियाँ हैं 'व् ध्वनि का विकार मिले रहने के कारण ये ध्वनियाँ साधारण दंत्य से भिन्न हैं।'[1] फारसी-तुर्की-हिंदी में त् का भारीपन समाप्त कर इसे दंत्य त् ध्वनि का रूप दे दिया गया यथा तोता, तौर-तरीका। ज़् वास्तव में वर्ण थ् का आच्छादित या कंठीकृत रूप है यथा ज़्व। यह स् का सघोष रूप है। फारसी और हिंदी में यह ध्वनि ज़् मे बदल गई है। स् व-विकार युक्त स् ध्वनि है। फारसी-हिंदी में यह साधारण दंत्य-ऊष्म ध्वनि स् में बदल जाती है। अरबी द् की प्रकृति अपेक्षाकृत कठिन है। यह पुरानी अरबी में सघोष कंठीकृत घर्ष या निरन्तर, किन्तु ऊष्म न होकर, पूर्ण पार्श्विक वर्त्स्य ध्वनि है। अरब मे यह आज भी प्रचलित है। फारसी में यह सामान्यत ज़् ध्वनि में बदल गई और इसी रूप में हिंदी में भी इसका आगमन अपवाद के साथ हुआ। कुरान पढ़ने में अरबीदाँ भारतीय मुसलमान इस ध्वनि को मौलिक रूप देने का प्रयत्न करते है जो द्व् ध्वनि का रूप धारण कर लेती है।[2] अपवाद यह है कि जहाँ सुन्नी मुसलमान इसे ज़् उच्चरित करते हैं, वहीं शीया द भी उच्चारित करते है यथा काज़ी-कादी, क़ाज़ीपुरा-कादीपुरा।

६—हिंदी मे आई मूलध्वनियाँ

व्यावहारिक दृष्टिकोण मे हिंदी के लिए अरबी और फारसी एक ही भाषा-इकाई हैं, जिसकी कुल ध्वनियाँ ३२ होती हैं। जहाँ तक हिंदी मे इन ध्वनियों के मूलरूप मे आगमन का प्रश्न है, इनकी तीन श्रेणियाँ हो सकती है—(१) जो ध्वनियाँ हिंदी के समकक्ष थी, (२) जो ध्वनियाँ हिंदी मे मूलत आईं, (३) जिनका हिंदी मे मूलरूप मे आगमन नहीं हुआ। इस तीसरे वर्ग का अध्ययन अगले खंड मे किया जायगा।

१—"दे आर डिस्टिंग्विश्ड फ्राम दी आर्डिनरी डेंटल्स बाई देयर (उ) और (व) क्वालिटी।" ओ० डे० ले०, पृ० ५६७, डॉ० एस० के० चैटर्जी।
२—वही पृ० ५६८।

हिन्दी में आगत अरबी-फारसी शब्दों की स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों में अन्य परिवर्तन इस प्रकार हैं —

स्वर परिवर्तन —

[१] स्वर-लोप—जियादती	जादती	इ लुप्त
[२] स्वर-परिवर्तन—मुआमलह्	मामला	उ से आ
[३] स्वरागम—हुक्म	हुकुम	उ का आगम

व्यंजन परिवर्तन —

[१] व्यंजन-लोप—मस्जिद	मसीत	ज लुप्त
[२] व्यंजन-विपर्यय—लमह्	लहमा	म—ह्
[३] व्यंजन-परिवर्तन—नकद	नगद	क से ग

संयुक्त ध्वनियाँ (परिवर्तन)—

[१] ख्व से ख—	ख्वाहिश	खाहिश
	दरख्वास्त	दरखास्त दरखास
[२] अह् से आ—	हफ्तह् [हफ्त]	हफ्ता
	शीशह् [शीश]	शीशा

६—हिंदी भाषा की उर्दू शैली में फारसी ध्वनि-विज्ञान

हिंदी में ही वैकल्पिक रूप से फारसी-अरबी ध्वनियाँ आईं, किन्तु 'हिंदी की तुलना में उर्दू ने उच्चारण के फारसीकरण को अधिक महत्व प्रदान किया। उर्दू के जानकार लेखक और वक्ता ध्वनि की शुद्धता पर अधिक बल देते रहे हैं।'[१] सामान्य दृष्टि से हिंदी-उर्दू उच्चारण एक ही है। अन्तर है तो केवल छः ध्वनियों क़्, ख़्, ग़्, ज़्, फ़्, ग़, के उच्चारण का। उर्दू-दाँ, हिन्दी-दाँ की अपेक्षा, इन ध्वनियों के उच्चारण में अधिक सतर्कता से काम लेते हैं। अरबी लिपि में लिखने के कारण उर्दू भाषा-भाषियों को इन ध्वनियों को लिखने और उच्चारण करने में अधिक सुविधा रहती है। उर्दू-हिंदी की ध्वनि-रचना में मूलतः कोई अंतर नहीं है। अरबी-फारसी बोलने वालों के प्रत्यक्ष प्रभाव में आने के कारण, उर्दू में नई ध्वनियाँ आ गईं और एक मिश्रित ध्वनि-रचना पद्धति का विकास हुआ। यदि कहा जाय कि

१—परसियन इन्फ्लुएन्स आन् हिंदी, पृ ५८।

२—ग्रामर ऑफ हिंदुस्तानी, पृ० ५२, डा० ताराचंद।

उर्दू के माध्यम से ही फ़ारसी ध्वनियों का हिंदी में आगमन हुआ, तो अधिक सही होगा।

उर्दू बोलने वालों के भी दो वर्ग हैं [१] कुरान-भाषी अथवा फ़ारसी अरबी का साहित्य-प्रेमी परिनिष्ठित उच्चारण करने वाला वर्ग जिसकी भाषा में फ़ारसी-अरबी तत्सम शब्दों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक रहती है। यह वर्ग फ़ारसी ध्वनियों का उच्चारण अधिक सही रूप में करता है। [२] साधारण उर्दू भाषा-भाषियों का दूसरा वर्ग जो हिंदी भाषा भाषियों में इसलिए नीचे शामिल नहीं किया जा सकता कि परिनिष्ठित हिंदी उच्चारण भी उनके लिए समस्या बना रहता है। ऐसे लोगों को क़लम और क़ुरान के उच्चारण में कठिनाई होती है, लेकिन कुला और फ़कीर में किसी प्रकार की झिझक नहीं।

अरबी लिपि पर हिंदी का प्रभाव—जिस प्रकार अरबी लिपि में फ़ारसी ने अपनी चार ध्वनियाँ प्, च्, झ्, ग जोड़ दी उसी प्रकार फ़ारसी-अरबी की लिपि ध्वनिरचना में उर्दू [या हिंदी] ने भी तीन ध्वनियाँ ट्, ड्, ड़ और बना दीं। अन्य ध्वनियों में ह् के संयोग से हिंदी की महाप्राण ध्वनियाँ भी अभिव्यक्त की जाने लगीं।

दक्खिनी हिंदी—फ़ारसी भाषा भाषियों के लिए दक्खिनी हिंदी की ध्वनियों का उच्चारण कठिन था। मूर्धन्य स्पर्श और नासिक्य स्पर्शसंघर्षी या वर्त्स्य संघर्षी या लुंठित व्यंजनों का उच्चारण उनकी जिह्वा के लिए अत्यन्त कठिन काम था।[१] फलस्वरूप ध्वनियों में शुद्धीकरण प्रारंभ हुआ। अस्तु, मिश्रित ध्वनि-रचना का सबसे बढ़िया नमूना दक्खिनी हिंदी के साहित्य में मिलता है।

दक्खिनी हिंदी में हिंदी या स्थानीय ध्वनियों के प्रभाव से अनेक शब्दों की वर्तनी भी बदल गई है। दक्खिनी हिंदी फ़ारसी (अरबी) लिपि में ही लिखी गई है किन्तु इसके हस्तलेखों में अरबी-फ़ारसी से लिए गए शब्दों की वर्तनी में तत्सम रूप में ही नहीं लिखा गया है, अपितु कई स्थानों पर तद्भव रूप में भी लिखा गया है। यह परिवर्तित वर्तनी वस्तुतः इन शब्दों के दक्खिनी हिंदी के तद्भव रूपों का संकेत करती है जो परिनिष्ठित अरबी-फ़ारसी रूपों के साथ-साथ दक्खिनी हिंदी भाषा-भाषी मुसलमानों में अधिक प्रचलित रहे

१—वही पृ० ११।

सुल्तान युग में ही, साम्राज्य दक्खिनी हिंदी के लिए फारसी लिपि अपनाये जाने और टोडरमल के आदेश से नौकरी में हिंदी भाषा-भाषियों के लिए भी फारसी शिक्षा अनिवार्य कर देने के कारण फारसी शब्द-समूह हिंदी में अधिक मात्रा में आ पड़े। चूँकि हिंदी का, साम्राज्य हिंदी गद्य का, साहित्य उन्नत नहीं था, गद्य की भाषा का स्वरूप भी व्यवस्थित एवं प्रवाहमान नहीं हुआ था, अस्तु आरम्भ के दिनों में यह अनिवार्य था कि फारसी पदरचना के नियम एवं तत्त्व हिंदी को प्रभावित करते। उर्दू शैली के विकास ने इसमें और भी सहायता की। उर्दू ने फारसी-व्याकरण को शीघ्र ही ग्रहण कर लिया। चूँकि उर्दू भाषा रही थी और हिंदी की एक शैली थी, इसलिए फारसी व्याकरण के कतिपय नियम यत्र-तत्र हिंदी में भी सरलता से ग्राह्य हो गए।

२–हिंदी की पदरचना

हिंदी पदरचना का स्वरूप संस्कृत-पदरचना का विकसित या परिवर्तित स्वरूप है, जो पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से अनेक परिवर्तनों का सामना करता हुआ आज की खड़ी बोली हिंदी में विद्यमान है। संज्ञा, विशेषण तथा अव्यय का सामान्य स्वरूप वही है। हिंदी सर्वनामों का स्वरूप बदल गया है, जो वास्तव में संस्कृत सर्वनामों के ही विकसित रूप हैं, 'किंतु प्राकृत, अपभ्रंश तथा आधुनिक भाषाओं तक आते-आते इनमें पर्याप्त परिवर्तन हो गया।'[१] क्रिया का कठिन तिङन्त स्वरूप संस्कृत की अपेक्षा सरल हो गया है। संस्कृत में एक-एक धातु के सैकड़ों रूप बनते थे। 'आर्येतर जातियों के सम्पर्क से धातुरूपों में सरलता ही नहीं आई, कुछ नई प्रवृत्तियाँ भी चल पड़ीं। तिङन्तरूपों के स्थान पर कृदन्त रूपों के व्यवहार की प्रवृत्ति म० भा० आ० भाषा में अधिक पाई जाती है।'[२] क्रियापद की प्रक्रिया संश्लिष्टावस्था से विश्लिष्टावस्था की ओर अग्रसर हुई। संयुक्त क्रियाओं का विकास हुआ। संस्कृत के तीन लिंग हिंदी में भी दो हो गये, जिससे कठिनाई घटने के बदले बढ़ गई। 'हिंदी में व्याकरण-सम्बन्धी लिंग-भेद सबसे अधिक दुरूह है।'[३] संस्कृत के तीन वचन हिंदी में दो हो गए। हिंदी बहुवचन-पद्धति अपेक्षाकृत सरल है। विविध कारक सबंधों को द्योतित करने के लिए संस्कृत में आठ विभक्तियों के अनेक संश्लिष्ट रूप प्रयुक्त होते हैं, किंतु हिंदी में परसर्गों के प्रयोग के कारण कारक का स्वरूप संस्कृत के संयोगात्मक से भिन्न वियोगात्मक हो गया। जहाँ शब्द के विकार

१—हि० भा० उ० वि०, पृ० ४४९, डॉ० उ० ना० तिवारी।
२—वही, पृ० ८६५।
३—हि० भा० इ०, पृ० २५२, डॉ० धी० व०।

रूप में विभक्तियाँ जोड़कर संस्कृत में विभिन्न कारक-सम्बन्धों को अभिव्यक्त करने वाले पदों की रचना की जाती है, वहाँ हिंदी कारकों में परसर्गों के द्वारा शब्द के विकारी रूप में कारक चिह्न लगाकर हिंदी विभक्तियों के रूप बनाये जाते हैं और कारक-सम्बन्धों को व्यक्त किया जाता है। अतः हिंदी मध्यम संस्कृत या उसके विकसित रूप है।

स्वतंत्र व्याकरण-नियमों और सम्बन्धतत्त्वों के कारण हिंदी एक स्वतंत्र भाषा है। और किसी भी भाषा के मूलस्तम्भ उसका 'मूलधन' है या होते हैं—(१) क्रिया-पद (२) अव्यय (३) विभक्तियाँ तथा (४) सर्वनाम। ये चार मुख्य स्तम्भ हैं जिनपर किसी भी भाषा का स्वतंत्र अस्तित्व टिका रहता है। ये तत्त्व कभी बदलते नहीं कभी भी किसी दूसरी भाषा से कोई भाषा नहीं लेती। 'करता है' की जगह करोति हिन्दी में चलेगा नहीं न 'अब तुम आए' की जगह 'यदा तुम आए' ही कोई बोलेगा। 'राम का पुत्र आया' का कभी 'रामस्य पुत्र आया' न होगा। 'उसको मैंने देखा' की जगह 'तम् मैंने देखा' करना असम्भव है। जब संस्कृत से ही हिंदी ये तत्त्व नहीं लेती तो फारसी अरबी या अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं की तो कोई चर्चा ही क्या? सामान्यतः उर्दू में भी क्रिया-पद अव्यय विभक्तियाँ और सर्वनाम फारसी-अरबी से स्वतंत्र हिंदी जैसे ही हैं। किन्तु भाषा के इन मूलस्तम्भों में भी किसी हद तक फारसी-तत्त्व आ गए हैं, यथा करीब-करीब करना लेकिन और मगर, बाजे-मन स्वायत्तीकृत हुए इनमें अपना जिनका आगे विवेचन किया जायगा। यह प्रकट बात है कि ये तत्त्व हिंदी के अपने हो गए हैं।

१—हिंदी में प्रयुक्त फारसी संबंधतत्त्व

हिंदी में अरबी-फारसी के विदेशी शब्द हजारों की संख्या में विद्यमान हैं। हिंदी में आने पर इन शब्दों की प्रकृति में कुछ परिवर्तन हुआ किंतु भाषा की कुछ प्रयोगगत विशेषताएँ जो इनके साथ-साथ आईं जो हिंदी की मिलती जुलती पदरचनागत विशेषताओं के साथ मिल गईं। फलस्वरूप कुछ विदेशी संबंध-तत्त्वों का भी हिंदी में प्रचलन प्रारम्भ हुआ जैसे ईमानदार और बेईमान का हिंदी में प्रयोग। ईमानहीन और अईमान नहीं बन सकता। अरबी में खबर शब्द एकवचन और अखबार बहुवचन है किंतु हिंदी में दोनों एकवचन में ही स्वीकृत हुए क्योंकि उर्दू में अखबार और अखबारात बहुवचन ('जमा' और 'जमा-उलजमा') माने जाते हैं। दूसरी ओर हिंदी में जवाहरात (जौहर का 'जमा

१—हिंदी शब्दानुशासन पृ ४१ पं कि दा वा।

उल्जमा') का एक वचन में और जवाहरातो का बहुवचन मे प्रचलन हो गया है। तात्पर्य यह कि अनेक शब्दों के साथ अनेक सबधतत्वो का हिंदी में आदान हुआ, किंतु सबका नही। हिंदी की प्रकृति में ढल जाने के पश्चात् भी विदेशी शब्दों और सबधतत्वो पर उनकी स्वतत्र सत्ता की छाप मिट नही सकी है।

डॉ० बाहरी का मत है कि फारसी का प्रभाव अभिव्यक्त होने तक हिंदी का ढाँचा पूरा हो चुका था, अत हमें यह स्वीकार नही करना चाहिए कि फारसी से व्याकरण का कोई ढाँचा हमने लिया। किंतु, प्रा० भा० आ० और म० भा० आ० मे भिन्न हिंदी की कुछ ऐसी महत्वपूर्ण विशेषताएँ है, जो हमें हिंदी पर अ-भारतीय आर्य-प्रभाव के बारे में गभीरता मे सोचने को वाध्य करती है।[1] फारसी का प्रभाव हिंदी पर उपसर्ग, प्रत्यय, नामिक, विशेषण, क्रियाविशेषण, सयोजक, मिश्रित शब्द या सयुक्त समास आदि अनेक रूपो मे अभिव्यक्त है। ये भाषातत्व हिंदी-पदरचना मे अत्यन्त उपादेय हैं। यहाँ इनका सम्यक् अध्ययन ही हमारा उद्देश्य है।

४—उपसर्ग

उपसर्ग वह पदग्राम है जिसका व्याकरणगत अर्थ ही प्रचलित होता है। उसके स्वतत्र अर्थ का बोध हो सकता है, पर चलन नही, यथा बहुक्म = ब + हुक्म। 'ब' का अर्थ 'हुक्म' के साथ जुटकर ही महत्व प्राप्त करता है। स्वतत्र रूप से 'ब' का अर्थ नहीं चलता। 'ब' उपसर्ग है। पदरचना के लिए यह शब्द से पूर्व लगाया जाता है।[2] सभी उपसर्गों की यही दशा है। शब्द से सयुक्त होकर वे पद के अग बन जाते हैं, और पृथक् होने पर केवल उपसर्गमात्र। यही बात पदान्त मे प्रयुक्त पदग्राम 'प्रत्यय' के लिए भी, लागू होती है।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसहारविहारपरिहारवत्॥

सस्कृत मे प्र, परा अप सम्, अनु अव, निस्, निर्, दुस्, दुर् वि आङ्०, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, ये बाईस आदि या उपसर्ग कहलाते है।[3] इसके अतिरिक्त उपसर्ग

१—परसियन इन्फ्लुएन्स ऑन् हिंदी, पृ० ५४।
२—हिंदी व्याकरण, पृ० ४१०, प० का० प्र० गुरु।
३—लघुसिद्धान्त कौमुदी, प० १७, प० ज्वाला प्रसाद मिश्र।

तुल्य शब्द अव्यय माने जाते हैं। विशेषण शब्द भी उपसर्ग के समान प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत के कुछ उपसर्ग हिंदी में तद्भव रूप में भी विकसित हो गए हैं, यथा दु<दुर्—हि दुबला<सं दुर्बल।

अनेक फारसी-अरबी उपसर्ग हिंदी में प्रचलित हैं जिनका फारसी-अरबी शब्दों के अतिरिक्त हिंदी शब्दों के साथ भी प्रयोग किया जाता है यथा गैरहाजिर फी दिन बेसुरा। 'साधारणत अभी उपसर्ग किसी शब्द की मदद कर करते हैं स्वतंत्र रूप से पृथक आकर काम नहीं करते।'[1] अरबी उपसर्ग 'ला' का अर्थ है बिना किंतु यह सदा शब्द के साथ प्रयुक्त किया जाता है, यथा लामजहब।

शब्द में जुड़कर उपसर्ग नया अर्थ पैदा करता है विलोम अर्थ भी देता है तथा उपसर्गों के प्रयोग से नये शब्द भी बनाए जाते हैं। हिंदी से संबंधित फारसी-अरबी उपसर्गात्मक पदग्राम इक्कीस हैं —(१) अल्, (२) बा (३) ऐन (४) कम (५) खुश (६) गैर (७) दर, (८) ना (९) नेक (१०) फी (११) ब (१२) बद (१३) बर (१४) बा (१५) बिल्, (१६) बिला (१७) बे (१८) ला (१९) सर (२०) हम (२१) हर। इनमें से ऐसे कई उपसर्ग हैं, जिनको उपसर्ग पदग्राम के रूप में मान्यता नहीं प्राप्त है, बल्कि वे पूरे पद के अंग रूप में ही स्वीकृत हुए हैं और उनका विदेशी शब्दों से अलग प्रयोग नहीं चलता जैसे बिल्कुल अलबत्ता ऐनवक्त। फारसी उपसर्ग एवं उनसे बने शब्द —

(१) अल् (अ —यह कि ऐसा कि का)—अलगरज अलकिस्सा अल्‌बदल अलबत्ता अल्‌मस्त अल्‌मस्ती अल्‌मुखिस अल्‌सलाम।

(२) बा (फा —साथ)—बाबाहु, बाबारा।

(३) ऐन (अ —ठीक यथार्थ)—ऐनजवानी ऐनमौका ऐनवक्त।

(४) कम (फा —अल्प न्यून)—कमअसल>कमअसल (-ली) कमउम्र कमकीमत कमखर्च कमजोर कमनसीब कमबख्त कमसुखन>कमसखुन कमहिम्मत।

(५) खुश (फा अच्छा पवित्र)—खुशइन्तजाम खुशकदम खुशकिस्मत खुशखत खुशखबरी खुशबू खुशदिल खुशनसीब खुशनवीस खुशनुमा खुशबू, खुशरंग खुशहाल।

१—हिंदी शब्दानुशासन पृ ४ प कि दा वा।

(६) गैर (अ०—नहीं, विरुद्ध)—गैरआबाद, गैरइन्सानी, गैरकानूनी, गैर-जिम्मेदार, गैरजरूरी, गैरतनख्वाहदार, गैरपसन्द, गैरमुनासिब, गैरमुल्क, गैरमशहूर, गैरमौजूद (—गी), गैरमौरूसी, गैरमामूली, गैरवाजिब, गैरशरीफ, गैरसरकारी, गैरहाजिर, गैरपका, गैरआदमी।

(७) दर (फा०—अन्दर में, बीच)—दरअस्ल, दरकार, दरकिनार, दर-ख्वास्त, दरगाह दरपेश दरमियाँ>दरमियान, दरयाफ्त, दरहकीकत।

(८) ना (फा०—नहीं)—नाइन्साफ, नाउम्मीद, नाकद्र (—द्री), नाकाबिल, नाकाम, नाकामयाब, नाखुश, नागवार, नाचीज, नातमाम, नादान, नादुरुस्त, नापसंद, नापाक, नाबालिग, नामजूर, नामर्द, नामाकूम, नामुआफिक, नामुनासिब, नामौजूद, नाराज, नालायक, नाशाद, नासाज, नाहक नासमझ।

(९) नेक (फा०—अच्छा, श्रेष्ठ)—नेकक़दम (—मी), नेकदिल, नेकनाम नेकनीयत, नेकमर्द, नेकराय नेकराह नेकवख्त।

(१०) फी (अ०—में बीच, प्रति)—फीमर्द फीमाह, फीसदी।
फीआना फीदिन फीरुपया फीवोट, फीवोटर।

(११) ब (फा०—और, साथ में)—बअमन, बआजादी, बआराम, बआसानी, बइतमीनान, बकलम बकद्र, बखाता, बखुशी, बखूबी, बखैर, बतकल्लुफ बद-स्तूर, बदौलत बनाम, बमुकाम, बजा।

(१२) बद—(फा०—बुरा, खराब)—बदअंजाम, बदअमल, बदइन्तजामी, बद-उमूर, बदकार, बदकिस्मत, बदकौम, बदगुमान, बदतमीज, बददिमाग, बददुआ, बदनजर, बदनसीब, बदनाम, बदनीयत, बदबू, बदमजा, बदमिजाज, बदरंग, बदसुलूक, बदहवास, बदहाल।

(१३) बर (फा० ऊपर, पर)—बरअंदाज, बरकत>बरक्कत, बरकरार, बरकिनार, बरखास्त, बरखुर्दार, बरतरफ बरबाद, बरवक्त।

(१४) बा (फा०—साथ, वाला)—बाअसर, बाआबरू, बाइज्जत, बाइतमी-नान, बाईमान, बाएतबार, बाएहतियात, बाऔलाद, बाकमाल, बाकलमखुद, बाकायदा, बाखबर, बाजाब्ता, बातनख्वाह, बातमीज, बानसीब, बाअदब>बारौब, बावफा, बाहवास, बाहिम्मत, बाहैसियत।

(१५) बिल् (अ०—से, पूर्वक)—बिल्इत्तिफाक, बिलइरादा, बिल्कुल, बिल्वजह, बिल्जुमला, बिलमुकाबिल।

कहा जाता है। धातुओ मे इतर शब्दो मे जो प्रत्यय लगाए जाते है उन्हे 'तद्धित', एव इस प्रकार बने शब्द को 'तद्धितान्त' कहा जाता है। उपसर्गो की भाँति फारसी (अरबी) प्रत्यय भी हिंदी में काफी सख्या मे आए, जिनका हिंदी-पदरचना में हिंदी-प्रत्ययो जैसा ही महत्व है। 'यूरोप की भाषा से हिंदी ने कोई प्रत्यय स्वीकार नही किया, जबकि एशिया (ईरान आदि) की भाषाओं से हिंदी ने विशेषण तथा कई 'प्रत्यय'-'अव्यय' लिए है।'[1] उपसर्गो की तुलना में फारसी प्रत्ययो की सख्या कही अधिक। उपसर्गो की भाति अनेक फारसी-अरबी प्रत्ययो की हिंदी में स्वतत्र सत्ता नही है। यहाँ प्रत्ययो का विभाजन फारसी पदरचना के आधार पर ही किया गया है, जिनमे से अधिकाश हिंदी में शब्द के साथ एक पूरी इकाई के रूप में प्रयुक्त होते हैं और इनके पदग्रामिक विश्लेषण का भान केवल फारसी-दा लोगो का होता है, यथा बाशिन्दा, बामुकाबला आदि।

क (१)-फारसी कृदन्त

फारसी के सीमित धातुरूप हिंदी क्रियापद बनाने के लिए स्वीकृत हुए है, प्रातिपदिक ही अधिक है, अस्तु कृदन्त प्रत्यय भी सीमित सख्या में ही आये है, यथा —[2]

(१) आ—दाना, रिहा, मुर्दा—विशेषण अर्थ में।

(२) आ—चस्पा —विशेषण अर्थ में।

(३) इन्दा—कारिन्दा, जिन्दा, परिन्दा, बाशिन्दा, (चुनिन्दा)[4]—कर्तृ वाचक अर्थ मे।

(४) इश—कोशिश, फरमाइश, नालिश, परवरिश, मालिश—भाववाचक सज्ञा अर्थ मे।

१—हि० श०, पृ० २६८, प० कि दा वा।

२—हायर पर्सियन ग्रामर, प० ३०६, डी० सी० फिलॉट्।

३—हि० व्या०, पृ० ४६७, का० प्र० गु०।

४—चुनिन्दा मे पदग्रामिक विश्लेषण की दृष्टि मे चुन+इन्दा दो पदग्राम है। चुन हिंदी धातु है और इन्दा फारसी प्रत्यय। इनके सयोग से यह सकर शब्द बना है। इन्दा प्रत्यय फारसी में मूलत कर्त्र्यर्थ में अथवा तद्धितान्त में 'वाला' अर्थ मे जैसे 'शर्मिन्दा' मे, पाया जाता है, किंतु यहाँ यह प्रत्यय चुनी हुई चीज के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। सभवत इसीलिए गुरु ने इसे अशुद्ध माना है। पृ० ४६६, वही।

कहा जाता है। धातुओ मे इतर शब्दो मे जो प्रत्यय लगाए जाते है उन्हें 'तद्धित', एव इस प्रकार वने शब्द को 'तद्धितान्त' कहा जाता है। उपसर्गो की भाँति फारसी (अरबी) प्रत्यय भी हिंदी मे काफी सख्या मे आए, जिनका हिंदी-पदरचना में हिंदी-प्रत्ययो जैमा ही महत्व है। 'यूरोप की भाषा से हिंदी ने कोई प्रत्यय स्वीकार नही किया, जवकि एशिया (ईरान आदि) की भाषाओ से हिंदी ने विशेषण तथा कई 'प्रत्यय'-'अव्यय' लिए है।'[1] उपसर्गो की तुलना मे फारसी प्रत्ययो की सख्या कही अधिक।' उपसर्गो की भाति अनेक फारसी-अरबी प्रत्ययो की हिंदी में स्वतत्र सत्ता नही है। यहाँ प्रत्ययो का विभाजन फारसी पदरचना के आधार पर ही किया गया है, जिनमे से अधिकाश हिंदी मे शब्द के साथ एक पूरी इकाई के रूप में प्रयुक्त होते है और इनके पदग्रामिक विश्लेषण का भान केवल फारसी-दा लोगो का होता है, यथा वाशिन्दा, वामुकावला आदि।

क (१)-फारसी कृदन्त

फारसी के सीमित धातुरूप हिंदी क्रियापद बनाने के लिए स्वीकृत हुए हैं, प्रातिपदिक ही अधिक है, अस्तु कृदन्त प्रत्यय भी सीमित सख्या में ही आये हैं, यथा —[2]

(१) आ—दाना, रिहा, मुर्दा—विशेषण अर्थ में।

(२) आ—चस्पा —विशेषण अर्थ में।

(३) इन्दा—कारिन्दा, ज़िन्दा, परिन्दा, वाशिन्दा, (चुनिन्दा)[4]—कर्तृ वाचक अर्थ मे।

(४) इश—कोशिश, फरमाइश, नालिश, परवरिश, मालिश—भाववाचक सज्ञा अर्थ में।

१—हि० श०, पृ० २९८, प० कि दा वा।

२—हायर परसियन ग्रामर, प० ३०६, डी० सी० फिलॉट्।

३—हि० व्या०, पृ० ४६७, का० प्र० गु०।

४—चुनिन्दा में पदग्रामिक विश्लेषण की दृष्टि से चुन+इन्दा दो पदग्राम हैं। चुन हिंदी धातु है और इन्दा फारसी प्रत्यय। इनके सयोग से यह सकर शब्द बना है। इन्दा प्रत्यय फारसी मे मूलत कर्त्रर्थ मे अथवा तद्धितान्त में 'वाला' अर्थ मे जैसे 'शर्मिन्दा' मे, पाया जाता है, किंतु यहाँ यह प्रत्यय चुनी हुई चीज के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। सभवत इसीलिए गुरु ने इसे अशुद्ध माना है। पृ० ४६६, वही।

फ्रांसीसी भाषाविद् अर्नेस्त रेना ने अपना मत इसके विरोध में प्रकट किया है। उनके मत से तीन अक्षरो की धातुओं की बात वैयाकरणो की गढन्त है। 'तीन अक्षरो में एक अक्षर निर्बल होता है, वास्तव मे प्रत्येक धातु के दो मूलाक्षर होते हैं, जिनमे एक ही स्वरिक (सिलेबल) बनता है।'[1] हिंदी मे कुछ अरबी कृदन्त शब्द (पद) ध्वनियो के परिवर्तन के साथ स्वीकृत हो चुके हैं, जैसे कत्ल, कातिल, किताब, कातिब, मकतब। भाषा-परिवार की भिन्नता के कारण हिंदी के लिए अरबी कृदन्त और तद्धितान्त पदो के प्रत्ययो का नियम पूर्णत विदेशी एव अपरिचित ही रह गया है। इनका हिंदी मे प्रत्यक्ष आगमन भी नही हुआ है, केवल फारसी के माध्यम से कुछ कृदन्त शब्द हिंदी मे आ गए हैं, वैसे ही तद्धितान्त भी, किंतु अरबी 'कृत्' प्रत्यय और कृदन्त शब्द हिंदी पदरचना की प्रकृति से मेल नही खाते। अस्तु फारसी प्रत्ययो से भिन्न अरबी प्रत्ययो का हिंदी में फिट बैठना एक समस्या है।

प्रचलित अरबी आगमो शब्द जिनमे स्वर प्रत्ययो मे परिवर्तन होता है फ, अ, ल के विभिन्न वजन के आधार पर उदाहरणार्थ निम्नलिखित है।[2]

क्रियार्थक संज्ञाएं

वजन	धातु		शब्द		
फ अ् ल	क त ल्	से	कत्ल	मारने की क्रिया-भाववाचक	संज्ञा
फि अ् ल	अ् ल् म्	से	अिल्म	ज्ञान	,,
फु अ् ल	ह क म्	से	हुक्म	आदेश	,,
फ अ् ल	त् ल् ब्	से	तलब	बुलाने की क्रिया	,,
फ अ् ल त	र ह् म्	से	रहमत	दया	,,
फि अ् ल त	ख् द् म्	से	खिदमत	सेवा	,,
फ अ् ला	द् अ् व्	से	दअवा (दावा)	अधिकार	,,
फ आ ल	स् ल् म	से	सलाम	नमस्क्रिया	,,
फु आ ल	स् व् ल्	से	सुवाल (सवाल)	प्रश्न	,,
फ ऊ ल	क ब् ल	से	कबूल	स्वीकार	,,
फ अ् ला न	द् र न्	से	दवरान (दौरान)	चक्कर	,,
फि आ ल त	क त् ब	से	किताबत	लिखने की क्रिया	,,
इ फ आ ल	न् क् र	से	इनकार	अस्वीकृति	,,
इ फ ति आ ल	म ह न्	से	इम्तिहान	परीक्षा	,,

१—भाषा और समाज, पृ० ५६, डा० रामविलास शर्मा।
२—हि व्या० पृ० ४७६, का० प्र० गु०।

३—आ>अह्–[स०] करीना, चश्मा, दावा, नगीना, पेशा, बज़ाजा, मुकाबिला, मोज़ा, लतीफा, शाहज़ादा, सराफा, हफ्ता।
[वि०] दाना, दोस्ताना, सफेदा, हसीना।

४—आना>आनह्–[स०] जुर्माना, तलवाना, दस्ताना, नज़राना, बयाना, मेहनताना, शरीफाना, हर्जाना।
[वि०] जनाना, मर्दाना, रोज़ाना, शाहाना, सालाना।
[मिश्रित][1] घराना।

५—आब [पानी]–[स०] गुलाब।

६—आवर [लानेवाली]–[वि०] दस्तावर, दिलावर।

७—आवेज़ [लटकानेवाला]–[स०] दस्तावेज़।
[वि०] दिलआवेज।

८—आबाद [बसा हुआ]–[स०] अहमदाबाद, इलाहाबाद, इस्लामाबाद, महमदाबाद, हैदराबाद।

९—इन्दा>इन्दह्–[वि०] शर्मिन्दा।

१०—इस्तान [स्थान]–[स०] अफगानिस्तान, तुर्किस्तान, दबिस्तान, पाकिस्तान, हिंदुस्तान।

११–ई–[स०] खुशी, जिन्दगी, दुश्मनी, दूकानदारी, दोस्ती, नवाबी, नादिरशाही, नेकी, फकीरी, बदी, बन्दगी, खानगी, दलाली।
[वि०] आसमानी, खाकी, खानदानी, खूनी, तुर्की, बलवाई, देहाती।
[मि०] डायरशाही, लोकशाही, देहलवी।

१२–ईन–[वि०] नमकीन, रंगीन, शौकीन, संगीन।

१३–ईना–[स०] महीना।
[वि०] कमीना, पश्मीना।

१४–कश [खींचना, वाला]–[स०] सरकश।
[वि०] तारकश, दिलकश।
[मि०] धुआंकश।

१५–कार [करनेवाला]–[स०] काश्तकार, पेशकार, सरकार।
[वि०] बदकार, सलाहकार।
[मि०] जानकार।

१६–कुन [करनेवाला]–[स०] कारकुन।
[वि०] फैसलाकुन, बरबादकुन।

१—फारसी प्रत्यय से युक्त हिंदी शब्द।

३१—न—[मि०] इत्तिफाकन, मसलन, कानूनन ।

३२—नवीश (लेखक)—[वि०] अरज़ीनवीस, खतनवीस, नकलनवीस, स्याहा-
नवीस ।

३३—नशीन (आरूढ़)—[वि०] तख्तनशीन, परदानशीन, हाथीनशीन ।

३४—नाक (पूर्ण)—[वि०] खतरनाक, खौफनाक, दर्दनाक ।

३५—नामा>नामह् (पत्र)—[स०] इकरारनामा, मुख्तारनामा, शाहनामा, हिबा-
नामा, बैनामा ।

३६—नुमा (प्रदर्शक)—[स०] कुतुबनुमा ।
[वि०] किश्तीनुमा, खुशनुमा, रहनुमा ।

३७—पोश (पहनने, ढकनेवाला)—[स०] मेज़पोश ।
[वि०] नकाबपोश, सफेदपोश ।
[मि०] पलंगपोश, पखापोश ।

३८—बर (भरा हुआ)—[वि०] पैगामबर ।

३९—बरदार (उठानेवाला)—[वि०] दस्तबरदार, फरमाबरदार ।
[मि०] कुर्जीबरदार, झंडाबरदार ।

४०—बंद (बांधनेवाला)—[स०] इजारबंद, कमरबंद, बिस्तरबंद ।
[वि०] कलमबंद, नालबंद, पाबंद ।
[मि०] लाठीबंद, मुहरबंद, हथियारबंद ।

४१—बाज (खेलनेवाला)—[वि०] जल्दबाज़, दगाबाज़, नशेबाज़, शतरंजबाज़,
शमशेरबाज़ ।

(बाज़ी) [मि०] चालबाज़, छुरेबाज़, ठट्ठेबाज़, धोखेबाज़,
फड़बाज़ ।

४२—बान>वाँ (रखनेवाला)—[वि०] दरबान, बागबाँ, मेहरबाँ, मेज़बाँ ।
(बान)—[मि०] कोचवान, गाड़ीवान, हाथीवान ।

४३—बार (गिरानेवाला)—[वि०] अश्कबार ।

४४—बीन>बी (देखनेवाला)—[स०] खुर्दबीन, दूरबीन ।
[वि०] तमाशबीन ।

४५—मंद (वाला)—[वि०] अक्लमंद, दानिशमंद, दौलतमंद ।

४६—वर (रखनेवाला)—[वि०] गुस्सावर, जानवर, ताक़तवर, नामवर,
हिम्मतवर ।

४७—वार (अनुसार)—[वि०] उम्मीदवार, तरतीबवार, तारीखवार, महीनावार
(माहवार), हफ्तावार, हल्लावार ।
[मि०] प्रश्नवार, क्षेत्रवार ।

नामिक की भाँति प्रयुक्त होते हैं जैसे खाना-ब-दोश।'' इस प्रकार के समासों की कई श्रेणियाँ हो सकती हैं, यथा—

(१) हिंदी उपसर्गतुल्य शब्दों के योग में बने सामासिक शब्द—

ति, तिर—तिदरा तिमाही, तिमंजिला तिरमुहानी।

चौ —चौराहा, चौहद्दी, चौमुहानी चौतरफा।

पच —पचमहला।

छ —छमाही।

नौ —नौमाही।

बारह —बारहदरी।

(२) हिंदी प्रत्यय तुल्य शब्दों के योग, में बने सामासिक शब्द—

कट —जेबकट, गिरहकट।

कटा —पुछकटा, परकटा।

चला —दिलचला।

जला —दिलजला।

(३) फारसी उपसर्ग तुल्य शब्द के योग में बने सामासिक शब्द—[२]

बद —बदचलन।

(४) हिंदी-फारसी मिश्र सामासिक शब्द इसप्रकार मिलजुलकर साहित्य में अथवा व्यवहार में युक्त होने लगे हैं कि उनके भेद-भाव का सामान्यत विचार भी नहीं किया जाता। ये शब्द आपस में इस प्रकार मिलजुल चुके हैं कि पूर्वपद और उत्तरपद के स्थान का भी आदान-प्रदान हो गया है, यथा —

अक्लदाढ़	घूसखोर
चिट्ठीरसाँ	चोरमहल
चोरदरवाजा	जेबघड़ी
बाजारभाव	मियाँमिट्ठू
मुहजोर	मामबत्ती
रंगमहल	राजमहल

१—वही, पृ० ८२६।

२—फारसी उपसर्ग—प्रत्यय के योग में बने मिश्रित या सामासिक शब्दों के उदाहरण उपसर्ग और प्रत्यय प्रकरण में भी दिए गए है।

धन-दौलत	धर्म-ईमान
धोखा-फरेब	नजर-भेंट
नमक-रोटी	नाक-नागा
प्यार-मुहब्बत	पंडित-मौलवी
पीला-जर्द	फल-सब्जी
बैरी-दुश्मन	भाई-बिरादर
भूख-गरीबी	मगन-मस्त
महल-मकान	मालिक-मगिया
मिठाई-मुरब्बा	मियाँ-बीवी
मुर्ग-बटेर	मुश्किल-कठिन
मुल्ला पंडित	मेल-मुहब्बत
मेल-मुलाकात	मेवा-मिठाई
मेला-तमाशा	मोटा-ताजा
राम-रहीम	राजा-वजीर
राजा-बादशाह	राह-बाट
रीति-रस्म	रीति-रिवाज
रोज-रात	लाज-शर्म
लाभ नुकसान	विवाह-शादी
वैद्य-हकीम	सबर-सतोष
साफ-सुथरा	सुख-आराम
मेवा-बदगी	सैर-सपाटा
हँसी-मजाक	हँसी-दिल्लगी
हाट-बाजार	हारी-बीमारी
हिसाब-किताब	हुक्का-पानी

(ख) विरोधार्थक शब्दों से बने समास—

अमीर-कंगाल	धरती-आसमान
बिक्री-खरीद	दुश्मन-साथी
लाभ-नुकसान	मर्द-औरत

'मिश्र द्वद्वों की संख्या और क्षेत्र विशाल है। इनके निर्माण में प्रथम अपेक्षा हिंदी भाषा द्वारा पर्याप्त मात्रा में अरबी और फारसी के शब्दों को आत्मसात् कर लेने की है।'[1]

१—वही पृ० ४९७।

नेकी-बदी	नूरजहाँ
फील-पा (पिलपाव), बाग-बाँ	पीर-पैगम्बर
राहखर्च	मुल्ला-मौलवी
शाहजहाँ	वकील-मुख्तार
शाहज़ादी	शाहजादा
हैदराबाद	हिसाब-किताब

(ख) संज्ञा और विशेषण तथा विशेषण और विशेषण शब्दों के योग मे बने समास—

कमजोर	कम-ज्यादा
खुशदिल	खुशबू
गरीबनेवाज	गरीब-अमीर
गुमराह	चहारदीवारी
जवाँमर्द	जबदस्त
जिंदादिल (-ली)	तंगराह
दोआबा	नेकनाम
नेकराह	पंजाब
बदरगाह	बदबू
बदनसीब	बदरंग
मनमौजी	मौलवी-साहब
सख्त-सुस्त	सर्द-गर्म
स्याह-सुफेद	साफ-दिल

(ग) संज्ञा और क्रियावाची शब्दों के योग मे बने समास—

रूमाल	रोजीरसाँ

(घ) संज्ञा और अव्यय शब्दों के योग मे बने समास—

ईदगाह	दरगाह
पशोपेश	बदरगाह
शिकारगाह	साल-दर-साल
हररोज	हरसाल
हरफनमौला	

६—सामासिक पदों की भाँति हिंदी मे नाम संबंधी मिश्रित र चावल पाई जाती है। डॉक्टर बाहरी का मत है कि 'स्त्रियों के अतिरिक्त हिंदु कायस्थ और खत्री तथा कुछ अन्य लोग भी मूल फारसी के एक पद या

पद वाले नाम रखते हैं।[1] किन्तु स्त्रियों के लिए भी मूल फ़ारसी के एक पद वाले नाम सुलभ हैं यथा गुलशन देवी गुलाब देवी। नामावलि के अन्य मिश्रित शब्द —

अस्मतराम (इस्मतराम)	इकबाल नारायण गुर्टू
इकबालबहादुर सिंह	गुराहुलचंद
गुलाबसिंह	गुलाबराम
गुलाबशाह	गुलजारीलाल
जवाहरलाल	जमादार सिंह
जालिम सिंह	जोरावर सिंह
दौलतराम	नवाबराम
नौबतराम	फकीरचंद
फतेहचंद	फतेहबहादुर सिंह
बख्तीजी	बहादुरराम
महताबराम	मालिकचंद
रामसूरत	राम इकबाल
रामफकीर	लालबहादुर
वजीरचंद	शमशेर बहादुर
शादीराम	शादीलाल कपूर
शौकतराम	शाहबसिंह सोंधे
सेहत बहादुर सिंह	हकूमत राम
हजारीलाल	हजारीप्रसाद

१ —हिंदी संज्ञाओं और एक पदी फारसी प्रत्ययों के संयोग से बने मिश्रित शब्द भी पाये जाते हैं—

इला (ईला)—खारीला शर्मीला समीला।
पना —पाजीपना शर्मीपना जिद्दपना।
ऊ —बाजारू।
ई —बलवाई बिदाई।
इया —फलूरिया>फिलूरिया
ता —सख्ता
बट —सफ़ावट

१—परमिशन इम्प्लुएंस ऑन् हिन्दी पृ ४३।

आर्य भापाओ या हिंदी के समान अरबी मे समास के वजन की कोई चीज नही है। 'समास सी कोई जरा-सी चीज व्यक्तिवाचक सज्ञाओ (वेनजामिन, मलिक-उ्-इज़राएल) में मिलती है। यहाँ पदक्रम आर्य भापाओ से विल्कुल उल्टा है।'[1] किंतु अरबी में दो पदो को सयुक्त करने का यह ढग सवधकारक के नियम में शामिल है, जहाँ शब्दो का कारकसवध विभक्ति के द्वारा प्रकट किया जाता है जो वास्तव में समास नही हो सकता। अरबी इब्न>विन्, वेन् और वल्द बेटा या पुत्र के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। हिंदी मे 'वल्द' अधिक लोकप्रिय है। श्यामलाल वल्द राधेश्याम या रोशनअली वल्द चिरागन अली मे समास नही माना जा सकता। कामता प्रसाद गुरु ने लिखा है कि अरबी में समास के लिए दो सज्ञाओ के वीच में उल् (का) सवध-सूचक रख देते है और भेद्य को भेदक के पहले लाते हैं, जैसे जलाल (प्रभुत्व)+उल्+दीन (धर्म)= जलालुद्दीन (धर्म-प्रभुत्व)।' किंतु विभक्ति का लोप होने से पदो के सयोग के कारण हिंदी 'धर्म-प्रभुत्व' सामासिक पद है। धर्म का प्रभुत्व वाक्याश है। अस्तु जलाल और दीन जव उल् पुरोविभक्ति[2] के विना सयुक्त हो जाँय तो सामासिक पद वन सकता है, किन्तु उल् के रहने पर यह पद नही वाक्याश है, वैसे ही जैसे धर्मस्य प्रभुत्व।

७—नामिक

भारत मे विद्यमान चार भापा परिवारो—(१) भारत-यूरोपीय या आर्यशाखा, उत्तर भारत की भापाए, (२) द्रविडशाखा, विलोचिस्तान की ब्राहुई

१—हि० व्या०, पृ० ४८०।

२—अरबी में सवधकारक का वोध कराने के लिए सवधी के पूर्व उल् (आल्) पदग्राम जोडा जाता है और सवद्ध पद का प्रयोग 'उल्' से भी पूर्व ठीक उसी तरह किया जाता है, जैसे इज़ाफत का प्रयोग करने पर सवद्ध इज़ाफत के पूर्व और सवन्धी इज़ाफत के वाद आता है। इस प्रकार सवद्ध+सवधवोधक पदग्राम+सवधी के ढग पर तीन पदग्रामो की पूरी एक पद समुच्चयात्मक इकाई उत्पन्न हो जाती है। अव यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि ऐसे स्थलो पर इन्हें क्या माना जाय? हमने सववी के पूर्व जोडे जाने कारण इसे पुरोविभक्ति माना है, जो हमारा अपना गढा हुआ शब्द है वैसे ही जैसे सवद्ध (मुज़ाफ) और सवन्धी (मुज़ाफइले) हैं। डॉ० उदयनारायण तिवारी ने इसे निर्देशक उपसर्ग (डेफिनिट आर्टिकल) माना है। (हि० भा० उ० वि० पृ० ५५७), फिलॉट् महोदय ने इसे सिर्फ़ आर्टिकल माना है (पृ० ३१)। चूँकि यह सवध वोधक पदग्राम है, अत आर्टिकल इसे मानना ठीक नही जँचता।

सहित दक्षिण भारत की चार भाषाएँ (३) आस्ट्रो-एशियाई शाखा मध्य भारत की मुंडा-कोल जैसी भाषाएँ (४) तीब्बत-तिब्बती शाखा नेफा क्षेत्र की भाषा में हिंदी और फारसी दोनों भारोपीय या भारत-आर्य परिवार की भाषाएँ हैं जिनमें पदरचनागत नियमों की भिन्नता होने पर भी मूलवस्तुओं में समानता है ऐसी स्थिति में अनेक संज्ञा शब्दों में भी समानता स्वाभाविक है यथा—पिता–पिदर माता–मादर भ्राता–बिरादर तारा–सितारा नाम–नाम बाहु–बाजू मांस–मास द्वार–दर क्षीर–शीर इत्यादि। सम्पर्क की निकटता की स्थिति में व्यावहारिक दृष्टि से अनुमान संज्ञा शब्दों—आवश्यक एवं उपयोगी—का आदान प्रदान अपेक्षाकृत आसान भी होता है। चूँकि फारसी प्रभाव परिलक्षित होने तक हिंदी-व्याकरण का ढाँचा लगभग पूरा हो चुका था अतः यह स्वाभाविक था कि हिंदी पर फारसी मूल शब्दों का ही प्रभाव पड़ता। वस्तु फारसी शब्दार्थ हिंदी में वास्तविक दृष्टि से मूल शब्द हैं और फारसी पदरचनागत नियमों के अनुसार हिंदी में इनका आदान नहीं हुआ है। हिंदी व्याकरण के अनुशासन में आ जाने के कारण ये शब्द इस प्रकार घुलमिल गए हैं कि इनकी पृथकता सम्भव हो सकती है पर सरल नहीं। 'परस्पर सम्बन्ध की दृष्टि से इस शब्दराशि के विकास की तुलना रासायनिक मिश्रण से की जा सकती है न कि भौतिक मिश्रण से जहाँ कि विभिन्न पदार्थ सरलता से विभक्त किए जा सकते हैं।

अतः प्रकरण में भाषाओं के प्रभाव का अध्ययन शब्दतत्त्व या अर्थतत्त्व के आदान-प्रदान का अध्ययन मानना चाहिए। यहाँ विचारणीय प्रश्न यह है कि हिंदी में फारसी के आगत शब्दों का स्थान और महत्त्व क्या है? जैसे विभिन्न व्यक्तियों म समाज में तथा जातियों म परस्पर वस्तुओं का तथा भावों का आदान-प्रदान होता रहता है उसी तरह प्रतिष्ठित भाषाएँ भी आपस में शब्दों का आदान प्रदान किया करती हैं। इस आदान-प्रदान के क्रम में यह संज्ञा ही है जो शब्द के साथ भ पा के अन्य अंगों को भी ले जाती है, किन्तु भाषा के मूलतत्त्वों—क्रियापद अव्यय विभक्तियाँ सर्वनाम का आदान सामान्यतः नहीं होता। इस सिलसिले में वाजपेयी जी ने लिखा है कि 'जब संस्कृत से ही हिंदी ने शब्द नहीं लेती तो फारसी-अरबी या अंग्रेजी

१—एंटिक्विटी ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज पृ ११ डॉ एस एम कत्रे।
२—दरसियन इन्फ्लुएंस ऑन् हिंदी पृ १,२ ए पी वाजपेयी।
३—एंटिक्विटी ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज पृ ११ डॉ एस एम कत्रे।

आदि विदेशी भाषाओं की तो कोई चर्चा ही क्या।'' किंतु धातुओं या पदों की बात अलग है। हिंदी में नामिक और विशेषण के अतिरिक्त फारसी से अव्यय, क्रिया तथा सर्वनाम भी लिए गए हैं। डॉ० बाहरी का मत है कि 'फारसी से ली गई हिंदी-क्रियाएँ तीन रूपों में मौजूद हैं।'[1] इसी प्रकार क्रियाविशेषण, संयोजक, परसर्ग एवं विस्मयादिबोधक भी पर्याप्त संख्या में मौजूद हैं, जिनमें से अनेक हिंदी में स्वीकृत भी हो गए हैं।

डॉ० बाहरी का मत है कि हिंदी में ईकारान्त और आईकारान्त संज्ञाएँ फारसी शुदनी-भाग्य (शुदन-होना), और रुसवाई-अपमान (रुसवा-अपमानजनक) के ढंग पर बनाई जाती हैं। बोलियों में यह पद्धति और भी सरलता एवं सफलतापूर्वक स्वीकृत हुई है। 'डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या इन दोनों आदर्शों का विकास प्राभाषा 'आपिका' से मानते हैं, जिसका, यह स्मरण रहे, न तो इस अर्थ में न इस पद्धति से ही प्रयोग किया जाता है। यह स्पष्टतः फारसी ऋण है।'[2]

उदाहरण—

१—विशेषण से संज्ञा—

मीठा से मिठाई	अच्छा से अच्छाई
बड़ा से बड़ाई	गोल से गोलाई
गोल से गोली भी	

२—क्रिया से संज्ञा—

होना से होनी	भरना से भरनी
मारना से मारी (प्लेग)	करना से करनी
धोना से धुलाई	सीना से सिलाई

३—संज्ञा शब्दों से भाववाचक संज्ञा—ई आदेश से ही भाववाचक संज्ञाएँ भी बनाई जाती हैं। 'खासतौर से प्राभाषा में संज्ञा बनाने की यह पद्धति वास्तव में फारसी से आई है।'[4]

१—वही, पृ० ४१।

२—हिंदी वर्ड्ज़ टेकेन फ्रॉम पर्सियन इक्ज़िस्ट इन थ्री फार्म्स्, पृ० ४८, परसियन इन्फ्लुएन्स ऑन् हिंदी।

३—'डॉ० एस० के० चैटर्जी डिराइव्ज दीज टू टर्मिनेशन्स फ्रॉम ओ आई ए' पृ० ५२, वही।

४—वही, पृ० ५५।

अफ़सर से अफ़सरी
डाक्टर से डाक्टरी
चीन से चीनी
जापान से जापानी
वकील से वकीली

—ई आदेश (प्रत्यय) लगाकर रेल से रेली, प्यास से प्यासी, किताब से किताबी जैसे विशेषण बनाने की इस प्रवृत्ति पर डॉ० बाहरी को संदेह है। यह फ़ारसी से भी हो सकता है और नहीं भी। क्योंकि देशीय, पशीय जैसे शब्द संस्कृत में पहले से ही मौजूद थे और इस—ई का सीधे वहीं से आगमन हुआ है।[1] इस प्रत्यय पर डॉ० उदयनारायण तिवारी ने अपना अलग मत प्रकट करते हुए लिखा है कि 'यह प्रत्यय आ० भा० आ० भाषा का सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रत्यय है। इससे क्रियाओं से भाववाचक तथा करणवाचक संज्ञाएँ, संज्ञापदों से विशेषण, लघुत्ववाचक, व्यापारवाचक तथा भाववाचक संज्ञाएँ और संख्यावाचक विशेषणों से समुदायवाचक तथा भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। यथा क्रिया से (१) भाववाचक—हँसना से हँसी (२) करणवाचक—रेतना से रेती (३) संज्ञा से विशेषण—गुलाब से गुलाबी (४) लघुत्व—रस्सा से रस्सी (५) व्यापार-वाचक—तेल से तेली (६) भाववाचक—गरीब से गरीबी (७) समुदायवाचक—हजार से हजारी ( ) भाववाचक—डॉक्टर से डॉक्टरी। डॉ० तिवारी इसकी उत्पत्ति संस्कृत से ही मानते हैं किन्तु डॉ० बाहरी के मत का भी वे समर्थन करते प्रतीत होते हैं, यथा 'इस प्रत्यय का संबंध सं० इक—इका से है। बाद में फ़ारसी के विशेषणीय तथा सम्बन्धवाची -ई प्रत्यय ने भी इसे पुष्ट किया है।'[2] किन्तु—आई प्रत्यय को डॉ० बाहरी से भिन्न डॉ० चादुर्ज्या के अनुसार तिवारी जी भी संस्कृत से ही प्राप्त मानते हैं, यथा आप्+इका>आपिका, आपिअ, आपी>आई, आइ।

जहाँ तक—ई प्रत्यय का प्रश्न है, कहा जा सकता है कि यह प्रत्यय विश्व की अनेक भाषाओं का सम्मिलित प्रत्यय है। 'फ़ारसी' के अलावा 'अरबी' [अरब से] 'तुर्की' [तुर्क से] 'मिस्री' [मिस्र से] भी बनता है। अंग्रेज़ी में भी 'मास्टरी' शब्द के साथ—ई प्रत्यय विद्यमान है। ऐसी स्थिति

१—वही—पृ० ५१।
२—हिं० भा० उ० वि० पृ० ४५१ डॉ० उ० ना० ति०।
३—वही पृ० ४६१।
४—वही पृ० ११।

में जब कि इस प्रत्यय की संस्कृत और फारसी दोनों से उत्पत्ति के प्रमाण विद्यमान हैं, तो निश्चयपूर्वक निर्णय देना कठिन है, किंतु डॉ० बाहरी का मत अपेक्षाकृत समीचीन प्रतीत होता है।

हिंदी में आगत फारसी (अरबी-तुर्की) ऋणशब्दों को, जिनका विवरण कोशगत प्रभाव में दिया गया है, हम दो श्रेणियों में रख सकते हैं, यथा (१) सत्यागत शब्दसमूह जैसे न्यायालय, सेना, शिक्षा, धर्म, कार्यालय एवं प्रशासन इत्यादि से संबद्ध शब्द—मुकदमा, फौज, कलम, किताब, मसजिद, चपरासी, रिश्वत, जिला इत्यादि। (२) दैनिक जीवन की आवश्यकताओं से संबद्ध शब्दसमूह जैसे वेशभूषा, आभूषण, संगीत, भोजन, यंत्र, खेल, चिकित्सा, बागवानी इत्यादि के शब्द यथा कमीज, बाजूबंद, तबला, हलुवा, रन्दा, ताश, दवा, गुलदस्ता इत्यादि।

हिंदी में अनेक फारसी शब्द भाववाचक संज्ञा के रूप में विद्यमान हैं यथा[1] —

अकारान्त—अदद	अफसोस	अंजाम
अरमान	असर	इत्तिफाक
उम्मीद	उम्मीदवारी	उम्र
एतबार	एहसान	एहसानफरामोशी
ऐब	ऐश	कद्र
कद्रदानी	खातिर	खातिरदारी
ख्याल	गरज़	गम
गश	गुजर-बसर	जुल्म
जबर्दस्ती	जोर	तकसीम
तगादा	तह	तकदीर
तदबीर	तकल्लुफ	तकरार
तनख्वाह	तमीज़	तारीफ
दखल	दर्द	दस्तरखान
निगाह	परवाह	फरेब
फतूर	फर्क	फिक्र
बहार	मदद	मजाक
मतलब	मजा	मज़ेदारी
मस्ती	याददाश्त	यादगारी

१—पर्शियन इन्फ्लुएन्स ऑन हिंदी, पृ० ४७, डॉ० आर० बाहरी।

जिस प्रकार अंग्रेजी में शब्द के भेद आठ प्रकार के होते हैं, फारसी में वैसा नही होता। फारसी में कलमा (शब्द) के तीन भेद होते हैं—(१) इस्म-सज्ञा (२) फिअल>फेल—क्रिया और (३) हर्फ। सर्वनाम और विशेपण इस्म में ही शामिल माने जाते हैं। व्याकरण की दृष्टि मे जहाँ हिंदी मे सज्ञा के तीन भेद (१) जाति-वाचक (२) व्यक्ति-वाचक (३) भाव-वाचक होते हैं, वही फारसी में दो (१) इस्म खास या मअरफह्>मारफह् [व्यक्तिवाचक] (२) इस्म आम या नुकरह् [जातिवाचक] होते हैं[1], फिर प्रत्येक के सात-सात विभाग और हो जाते है। इसमे भी कुछ के कई और भेद हो जाते है, किंतु इनका हिंदी व्याकरण मे सज्ञा के रूप से कोई सम्बन्ध नही है, तथापि उर्दू व्याकरण मे सज्ञा शब्दो का वर्गीकरण फारसी आधार पर ही किया जाता है। इस दृष्टि से उर्दू व्याकरण की पद्धति पर फारसी व्याकरण पद्धति का प्रभाव है।

७ (अ)—वचन

सस्कृत, जेन्द, अरबी, इब्रानी (हिब्रू), यूनानी और लैटिन भाषाओ मे तीन वचन होते है (१) एकवचन (२) द्विवचन (३) बहुवचन[2], किंतु लैटिन मे द्विवचन रूप नही पाया जाता। फारसी, अंग्रेजी और हिंदी मे दो ही वचन-एकवचन और बहुवचन प्रचलित है। वचन शब्दो की सख्या का बोध कराते है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के तीन वचन मे भिन्न मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल (प्राकृतकाल) के प्रारम्भ मे ही व्याकरण से द्विवचन लुप्त हो गया। द्विवचन शब्दो की अभिव्यक्ति के लिए 'द्वि' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। 'अशोक के अभिलेखो में 'दुवे मजुला' (दो मोर) इत्यादि प्रयोग मिलते है।'[3] इस प्रकार हिंदी जैसी आधुनिक भारतीय आर्य भाषा में दो ही वचन की परम्परा आई। बहुवचन बनाने का हिंदी का अपना तरीका भी सस्कृत से भिन्न और स्वतत्र है।

फारसी में दो वचन (१) वाहिद (एकवचन) (२) जम'>जमा (बहुवचन) प्रचलित है, किंतु अरबी के प्रभाव मे जम'-उल्-जम' का प्रयोग भी फारसी मे

1—हायर पर्शियन ग्रामर, पृ० ८६, डी० सी० फिलॉट।

2—हि० व्या०, पृ० २८४, का० प्र० गु०।

3—हिंदी का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, पृ० २०४, डा० भोलाशंकर व्यास।

4—हि० भा० उ० वि० पृ० १२४, डा० उ० ना० ति०।

(४) अफ़्अला — वली-औलिया
(५) फ़ुअ्आल — हाकिम-हुक्काम
(६) फ़आइल — अजीब-अजायब
(७) फ़वाइद — क़ायदा-क़वायद
( ) फ़वाइल — जौहर-जवाहिर
(९) तफ़ाईल — तारीख़-तवारीख़[1]

इसे आन्तरिक बहुवचन भी कहा जाता है क्योंकि इन बहुवचन शब्दों का निर्माण उपसर्ग या प्रत्यय युक्त किसी पदग्रामिक प्रयोग की सहायता से न कर, आन्तरिक परिवर्तन या अन्तर्विभक्ति द्वारा किया जाता है। अरबी में इस प्रकार के विगत एक-बहुवचन एक कठिनाई होते हैं किन्तु फ़ारसी में इसकी समस्या कम हो जाती है क्योंकि सर्वत्र एक पद्धति भी अरबी शब्दोंपर लागू की जाती है जैसे किताब से किताबहा। ये इतने अनियमित और असंगठित हैं कि वास्तव में कोई भी नियम विद्यार्थी की सहायता नहीं कर पाता। अरबी व्याकरण के अनुसार इन बहुवचन बनाने की एक लम्बी सूची है जिससे आरम्भिक छात्र परेशान हो उठता है।[1] किन्तु थोड़े अभ्यास और स्मृति की सहायता से यह कठिनाई कम भी हो जाती है। उर्दू में इस पद्धति के प्रयोग और उपयोगिता पर फ़िलॉट महोदय ने अपना विचार इस प्रकार प्रकट किया है कि उर्दू में भारत के एक हिस्से में जिन शब्द बहुवचन रूप बहुवचन होते हैं तो दूसरे हिस्से में एकवचन भी।[2] व्याख्यातव्यों की हिन्दी में या तो इनका कम प्रयोग प्रचलित है या उर्दू-शैली का प्रयोग।

१—जमा'—उल्—जमा—बहुवचन सम्बन्धी अरबी का यह विशिष्ट तरीका है जिसे जमा'—उल्—जमा' या बहुवचन का बहुवचन कहते हैं। जहाँ हिन्दी व्याकरण के लिए यह एक अजनबी बात है वहीं उर्दू के लिए एक स्वीकृत नियम। उर्दू में इसका प्रयोग वैसे ही होता है जैसे फ़ारसी में किन्तु यह नियम अरबी भाषा के थोड़े शब्दों के साथ सीमित हो गया है। हिन्दी में जमा'-उल्-जमा' के शब्द एकवचनात्मक पदग्रामिक इकाई के रूप में स्वीकृत हुए हैं जैसे

१—वही पृ २११।

२—हावर्ड पर्शियन ग्रामर पृ ५ बी सी पी।

३—'इन उर्दू दी सेम वोकेबल प्लुरल मेय् बी ए प्लुरल इन वन पार्ट ऑफ़ इण्डिया एण्ड ए सिंगुलर इन ऐनादर' पृ ९९ वही।

जवाहरात। इसका मूल एकवचन अरबी शब्द जौहर (गुण, रत्न, मणि, सामियत) है, जिसका बहुवचन (जम'१) जवाहिर (रत्नसमूह) है और उसका बहुवचन (जम'-उल्-जम') जवाहिरात है। अर्थ परिवर्तन के कारण हिंदी में जौहर का अर्थ गुण, तलवार की धार या चमत्कार होता है। रत्न और मणि के लिए सामान्यत इसका प्रयोग नही होता है। यह हिंदी में भी एकवचन है। जवाहिर भी एकवचन में ही प्रचलित है और सामान्यत अपने अर्थ को छोडकर। रत्न के लिए जवाहिरात शब्द चलता है, जिसका प्रयोग एकवचन में होता है। जौहरी की दूकान पर जौहर या जवाहिर नही खरीदा जाता, बल्कि जवाहिरात या जवाहिरातो को खरीदा जाता है।

अखबारात हिंदी मे नही, उर्दू मे प्रचलित है। हिंदी मे खबर, अखबार दोनो एकवचनात्मक हो गए है और 'खबरे', 'खबरो तथा अखबारो' बहुवचन शब्द है। इसी प्रकार अनेक बहुवचन शब्दो को एकवचन रूप मानकर हिंदी-उर्दू मे हिंदी तरीके से बहुवचन बनाया जाता है, यथा औलिया (वली-ए० व०) से औलियाओ, हुक्काम (हाकिम-ए० व०) से हुक्कामो, अम्बिया (नबी-ए० व०) से अम्बियाओ या नबियो आदि।

दक्खिनी हिंदी पर फारसी बहुवचन का प्रभाव—आ या आन प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाने की विधि (यथा अस्पा, मरदा, जना) का दक्खिनी हिंदी पर विशेष प्रभाव पडा है जैसे—

'हौर ग्यालियर के चातुरा, गुन के गुरा उना भी जान ना खोते है, यो बोले है।'[१]

स्त्रीलिंग सज्ञाओ को भी बहुवचन बनाते समय आ प्रत्यय लगाकर रूपात्मक दृष्टि से पुल्लिंग के समान बना दिया जाता है-'जर्या औरता दोस्तकारा की थ्या।[२]

'महबूबा है सो साहब की गोद म माते—'[३]

'उसकिया आखिया जाना लाने जानो शराब के प्याले। दाता देख मासी के दाने, घरेघर फिरकर होते दीवाने।'[४]

इस फारसी बहुवचन पद्धति का प्रयोग आधुनिक गीतो मे भी होता है यथा 'कैफ' भोपाली का आवाहन गीत—

१, २—दक्खिनी हिंदी, पृ० ४७, डॉ० बाबूराम सक्सेना।

३—दक्खिनी हिंदी काव्यधारा, पृ० २२, म० प० राहुल सांकृत्यायन।

४—वही—पृ० ३६।

बोल जवानां हम्मा बोल
बोल मरीदां हम्मा बोल
बोल मजूरां हम्मा बोल
बोल किसानां हम्मा बोल । इत्यादि

डा० कादरी ने लिखा है कि दकन में आर्य और द्रविड़ शब्दों का बहुवचन बनाने के लिए अरबी-फारसी नियमों का स्वतन्त्रतापूर्वक प्रयोग किया गया है, जैसे :—

एकवचन	बहुवचन
पटना (शहर)	पटनाजात
कुंट (तालाब)	कुंटजात

७ (आ)– लिंग

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल में तीन लिंग प्रचलित थे। मध्यकाल तक नपुंसक लिंग समाप्त हो गया था। नपुंसकलिंग शब्दों के रूप पुंलिंग के समान बनने लगे जिससे दोनों का भेद मिट गया। हिंदी में नपुंसकलिंग सर्वथा समाप्त हो गया। हिंदी लिंग सम्बन्धी कठिनाइयों में एक बड़ा कारण यह भी है।

फारसी व्याकरण में दो लिंग-विधान हैं—(१) पुंलिंग (तज़्कीर या मुज़क्कर) (२) स्त्रीलिंग (तानीस या मुअन्नस) किन्तु इसका भेद-विभाजन कुछ नामवाचक शब्दों तक ही सीमित है। फारसी विशेषण और क्रिया में कोई लिंग विभाजन नहीं है। फलस्वरूप फारसी लिंग-हिंदी की तुलना में बिल्कुल आसान है। 'व्याकरण की दृष्टि से कहा जा सकता है कि फारसी में कोई लिंग है ही नहीं। पुंलिंग और स्त्रीलिंग या तो विभिन्न शब्दों द्वारा अभिव्यक्त होते हैं जैसे देव और परी, मर्द और ज़न, ख्वाजा और खातून या नर (पुंलिंग के लिये और मादह् स्त्रीलिंग के लिये) शब्द में जोड़कर लिंग प्रकट करते हैं, जैसे नरगाव या गावनर और मादहगाव या गावमादह्, शेरे-नर और शेरे मादह।[1] इसी प्रकार ज़न और मर्द शब्द भी जोड़े जाते हैं यथा मर्दे-गदा (भिक्षुक) और ज़ने गदा (भिक्षुणी)। विशेषण और क्रिया लिंगसम्बन्धी कठिनाई से मुक्त हैं, यथा —

१—क़वाइद ज़बाने उर्दू पृ० ४६ सय्यद मुहम्मद अमीर।
२—हि० भा० उ० वि० पृ० ४२१ डा० उ० ना० ति०।
३—हायर पर्शियन ग्रामर, पृ० ४१ डी० सी० पी०।

विशेषण (१) जनाने-पीर रफ्तन्द—बडी औरतें चली गइ।
(२) मरदाने-पीर रफ्तन्द—बडे मर्द चले गये।
क्रिया (१) जान आमद औरत आई।
(२) मर्द आमद मर्द आया।

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा है कि 'भारत की पूर्वी भाषाओ मे लिंग-भेद के शिथिल होने का कारण प्राय निकटवर्ती तिब्बत और वर्मा प्रदेशो की अनार्य भाषाओ का प्रभाव माना जाता है।'[१] किंतु हिंदी लिंग-भेद को शिथिल करने मे फारसी जैसी आर्यभाषा का कोई विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर नही होता।

हिंदी लिंग-निर्णय के नियम—(१) शब्द का रूप आकारात होने पर भी यदि अर्थ स्त्रीलिंग से सबद्ध है तो शब्द स्त्रीलिंग माना जाता है जैसे दारा, माता, आत्मा आदि।

(२) अर्थ से भिन्न यदि शब्द का रूप ईकारात है तो शब्द स्त्रीलिंग में माना जायगा, जैसे गिलहरी, तितली, मक्खी, मछली आदि।

(३) शब्द रूप स्त्रीलिंग (ईकारात) का होने पर भी कुछ शब्दो के लिंग निर्णय में जाति की ही प्रधानता होती है जैसे दूध, घी, मट्ठा, मक्खन पुलिंग है, तो दही भी पुलिंग है। हीरा, पन्ना, पुखराज पुलिंग है तो 'मोती' भी पुलिंग है, ऐसे ही बैल, ऊँट, घोडा के साथ हाथी भी। वाजपेयी जी का मत है कि 'हिंदी ने अपनी पुंविभक्ति 'आ' (ा) स्थिर की और 'लडका, डडा, हडा, कघा आदि का पुंमार्ग स्पष्ट किया। ऐसे शब्दो को स्त्रीलिंग में लाने के लिये अन्त्य 'आ' को 'ई' कर देते है—'लडकी 'डडी' 'हडी' 'कघी'। सस्कृत पद्धति का अनुकरण है।'[२]

फारसी-अरबी लिंग-निर्णय के विशिष्ट नियम और हिंदी-उर्दू से उनका सम्बन्ध—फारसी-(१) पुलिंग बोधक 'नर' और स्त्रीलिंग बोधक 'मादह' (मादा) शब्द सज्ञा के आदि या अन्त में लगाकर लिंग निर्णय किया जाता है। हिंदी में ये शब्द केवल आदि में लगते हैं, जैसे नरशेर मादाशेर, नरीपच्छ मदापच्छी।

(२) फारसी में माँ-बाप, भाई-बहन, बेटा-बेटी, श्रीमान-श्रीमती, मर्द-स्त्री के लिये अलग-अलग शब्द ही बने हैं, जिनका प्रयोग हिंदी के समान होता है यथा मादर-पिदर, ख्वाहर-बिरादर आदि।

१—हिं० भा० इ०, पृ० २५१।
२—हिं० श०, पृ० १८५, कि० दा० वा०।

(४) तुर्की प्रत्यय 'म' (मीमे-तानीस) लगाकर स्त्रीलिंगवाची शब्द बनाते हैं, यथा खान से खानम, बेग से बेगम।

(५) अलिफ मकसूरा लगाकर (एक प्रकार से आकारांत बनाकर तथा साथ ही स्वर-व्यंजन में आन्तरिक परिवर्तन कर) पुलिंग संज्ञा को, स्त्रीलिंग बनाया जाता है जैसे कबीर (बड़ा) से कुबरा (बडी), सगीर (छोटा) से सुगरा (छोटी)।

(६) अरबी की वे नाम-धातुएँ जिनके आखीर में अलिफ अथवा आ (आकारांत) हो स्त्रीलिंग होती हैं जैसे इन्तिदा, इन्तिहा, हया, कज़ा, वफा, रज़ा, दुआ आदि।

(७) अरबी की वे नामधातुएँ जिनके अन्त में 'त' हो स्त्रीलिंग होती हैं जैसे मुहब्बत, नफरत, हिकमत, कुदरत, दहशत, मुवाफिकत, कयामत, मुखालिफत, मुनासिबत, रहमत आदि।

(८) अरबी की वे नामधातुएँ जो 'तफ़ईल' के वजन पर बनें स्त्रीलिंग होती हैं, जैसे तस्वीर, तहरीर, तकरीर, तकदीर, तअतील, तफसील, तअलीम, तक़सीम, तसबीह, ताकीद आदि।

(९) सामासिक शब्दों का लिंग निर्णय आखिरी शब्द के अनुसार होता है, जैसे आबो हवा, शिकारगाह, तसवीरखाना।

अन्य आवश्यक बातें—(१) जिस शब्द के अन्त में 'बन्द' शब्द आए, वह पुलिङ्ग होता है, जैसे कमरबन्द, सीनाबन्द, शिकारबन्द, इजारबन्द, गुलूबन्द आदि।

(२) जिस शब्द के आखीर में 'आब' शब्द आए वह पुलिङ्ग होता है जैसे सैलाब, तेज़ाब, सवाब, गुलाब आदि, किन्तु शराब और उसके जितने नाम हैं सब स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

(३) जिस शब्द के अन्त में 'वान' आता है वह अक्सर पुलिङ्ग होता है, जैसे बादवान, सायवान, दीदवान, मेहरबान आदि। आनबान इसका अपवाद है।

(४) जिस शब्द के आखीर में 'दान' आता है, वह पुलिङ्ग होता है, जैसे कलमदान, नमकदान, शमअदान, चिरागदान आदि।

(५) जिस शब्द के आखीर में 'वान' या 'वा' हो वह पुलिङ्ग होता हैं जैसे कारवाँ, पेंचवान, तावान आदि।

(६) जिस शब्द के आखीर में 'स्तान' शब्द आता है वह पुल्लिङ्ग होता है जैसे कब्रिस्तान कोहिस्तान तुर्किस्तान ताजिकिस्तान हिन्दुस्तान आदि।

(७) जिस शब्द के आखीर में कार शब्द होता है वह पुल्लिङ्ग होता है जैसे पच्चीकार पेशकार स्मरतकार आदि किन्तु सरकार स्त्रीलिङ्ग है।

(८) जैसा कि लिखा जा चुका है फारसी के वे शब्द जिनके आखीर में यह (आ) हो अक्सर पुल्लिङ्ग होते हैं। हिंदी में भी ऐसे शब्द पुल्लिङ्ग ही होते हैं जैसे नुस्खा रोजा सफा गर्रा तुर्रा शीशा आईना पैमाना अम्मा चुमा परदा पेशा आदि।

(९) फारसी शब्द बानू का प्रयोग स्त्रीलिंग के रूप में होता है जैसे बानू ए-हरम (अन्तःपुर की अधिका) किन्तु यह 'बान' (जैसे बागबान में) का स्त्रीलिङ्ग नहीं है तथा बानू जैसे ऊकारांत शब्द न तो पुल्लिङ्ग होते हैं और न स्त्रीलिङ्ग।[१] किरमान और तेहरान जैसे स्थानों में व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों में पश्चात् म ऊ या ई निश्चयात्मक रूप में जोड़ दिया जाता है जैसे महमूद के लिये महमूदू या महमदी किन्तु इस ऊकारांत या ईकारांत का लिङ्ग-निर्णय से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(१०) फारसी में जहाँ ताजा जुदा सादा का पुल्लिङ्गवत प्रयोग होता है वहीं हिंदी में ताजी जुदी सादी का स्त्रीलिङ्ग रूप में। हम ताजी खबर सादी जिन्दगी जुदी बात कहते हैं।[२]

ऐसे शब्द जो स्त्रीलिङ्ग-पुल्लिङ्ग दोनों में प्रयुक्त होते हैं —[३]

(१) आब—पानी के अर्थ में पुल्लिङ्ग है, और सफाई या चमक के अर्थ में स्त्रीलिङ्ग।

> दाँत तेरे देखते ही हो गया गालिब शहीद।
> हाय क्या इन मोतियों में आब है शमशीर की।

(२) मर्ज—विचार के अर्थ में पुल्लिङ्ग चौड़ाई के अर्थ में स्त्रीलिङ्ग।

(३) जान—आत्मा के अर्थ में स्त्रीलिङ्ग महबूब या प्रिय के अर्थ में पुल्लिङ्ग।

१—ग्रामर पर्शियन ग्रामर, पृ ५ डी सी फिल्लाट।
—पर्शियन इन्फ्लुएंस आन हिंदी पृ ए पी बाजपेयी।
३—जदीद ग्रामर उर्दू पृ २।

(४) बुलबुल—(पु०) दम तहरीर गुलरेजी हैं या सतरें हैं कागज पर
सरीर कल्क है या बाग में बुलबुल चहकता है।
(स्त्री०) ऐ सबा बाग में तुम नाल-ए-सोजाँ न करो
रश्क से बुलबुल बेवर्गोनवा जलती है।

(५) तूती—(पु०) शहरा है इस मज्ज-ए-रुखसार का
खूब तूती बोलता है यार का।
(स्त्री०) आइना होता है मुह देख के पानी पानी
तूतियाँ होती हैं सुनकर तेरी तकरीर सफेद।

कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो दिल्ली की शायरी में स्त्रीलिङ्ग में और लखनऊ मे पुलिङ्ग और स्त्रीलिग दोनो में बोले जाते हैं —[१]

(१) फिक्र—(पु०) मेरे मौला को हरदम फिक्र है मेरे गुजारे का।
(स्त्री०) फिक्र क्या ऐ मर्द खुश औकात कल की आज है।

(२) नकाब—(पु०) मुह खुलते पर है वह आलम कि देखा ही नहीं
जुल्फ से बढकर नकाब उस शोख के मुह पर खुला।

(स्त्री०) न देखे ग़ैर तुम्हें, और हम तुम्हें देखे।
हमारी आँख का परदा करो नकाब अपनी।

कुछ शब्दों का हमेशा स्त्रीलिंग में ही प्रयोग होता है यथा—आबरू, जिंदगी, आब-व-हवा, औकात, बू, तौबा, तकरार, जिल्द, चिलमन, खता, दास्तान, दीवार, रस्म, रफतार, फाख्ता, बुत, मुर्गाबी इत्यादि। इसी प्रकार कुछ शब्दों का हमेशा पुंलिग में ही प्रयोग होता है, यथा—सैलाब, सितम, साज, जख्म, रग, रुख, तमाशा, दिमाग, हाल, दर्द, खत, सवाब, बुत, खामोश, आब-व-दाना, अखबार, तार, तोता, बाज, परवाना इत्यादि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि हिंदी के लिंग विधान पर सस्कृत, प्राकृत और अरबी-फारसी व्याकरण का प्रभाव पडा है।

पुस्तक, बाधु, मृत्यु, वस्तु, आयु, आत्मा, विनय, विष, घास, नाक, चमक, खाद, जलन प्राकृत म पुल्लिग और हिंदी में स्त्रीलिंग हैं। दूसरी ओर किताब,

१—वही, पृ० २७।

हवा मौत चीज उम्र रूह, गवाह बहर आदि अरबी मे स्त्रीलिंग है अस्तु इनके प्रभाव से ही उपर्युक्त शब्दो का हिंदी मे लिंग-निर्णय हुआ।[1]

दक्खिनी हिंदी—दक्खिनी हिंदी में बहुधा लिंग विपर्यय पाया जाता है[2] जिससे तत्कालीन हिंदी व्याकरण के ढाँचे की कमजोरी का पता चलता है—

> प्यार कोई बडे की मदद रख्या। —यहाँ मदद स्त्रीलिंग है।
>
> मकल अपना सँभाल पाम का फ़िकर कर। —यहाँ मकल पुलिङ्ग है।

ऐसे ही शराब खबर गरज दुनिया आवाज इमारत उम्र मुश्किल कुदरत जरूरत हाजत हकीकत पुलिंग मे इस्तेमाल हुए है। निश्चय ही इस प्रकार का व्यत्यय हिन्दी की अन्य बोलचाल मे भी पाया जाता है।[3]

७ (इ)—कारक

'क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध हो उसे 'कारक' कहते हैं—क्रिया न्वयित्वं कारकत्वम्। अर्थात् क्रिया के साथ संज्ञा सर्वनाम विशेषण के सबंध को कारक कहते है और कारक के जिस रूप या परिणाम से वह सम्बन्ध सूचित होता है, उसे विभक्ति कहते है। विभक्तियाँ विभक्ति प्रत्यय अथवा पर सर्ग द्वारा सूचित की जाती है।

संस्कृत म सात विभक्तियाँ और छ कारक माने जाते है। षष्ठी विभक्ति को संस्कृत वैयाकरण कारक नही मानते क्योकि उसका सम्बन्ध क्रिया से नही है यथा रामस्यपुत्र पुस्तकं पठति मे राम का सम्बन्ध पढना से बिल्कुल नही है। उसका सम्बन्ध 'पुत्र' म है जिसका सम्बन्ध पढने से है। हिंदी व्याकरण के अनुसार आठ कारक माने जाते है किन्तु कारक रचना विश्लेषणात्मक होने के कारण संस्कृत की अपेक्षा सरल है, अस्तु या तो बिना विभक्तियो के प्रयोग के या स्वतंत्र परसर्गों के प्रयोग द्वारा कारक सम्बन्धो का बोध होता है। फारसी कारकरचना मे भी ऐसी ही सुविधा है। कर्ता कारक मे तो कोई विभक्ति लगती ही नही। अन्य कारको मे सामान्यत पू सर्ग (पुर सर्ग) या परसर्ग ही कारक सम्बन्धो का द्योतन करते है। सामी परिवार की भाषा

१—परशियन इन्फ्लुएन्स ऑन् हिंदी ५१ डॉ बाहरी।
२—दक्खिनी हिन्दी पृ ४ डॉ बाबूराम सक्सेना।
३—वही पृ ४५।
४—हि श पृ १०१ कि दा बा।
५—हि व्या ७०१ का प्र गु।

अरबी तक मे 'उपसर्गों का उपयोग इस कार्य के लिये होता है ।'[१] हिंदी-फारसी कर्ता कारक के प्रयोग—

राम गया	राम रफ्त
अहमद आया	अहमद आमद
सीता बोली	सीता गुफ्त

यहाँ 'ने' परसर्ग की फारसी और हिंदी दोनो में आवश्यकता नही पड़ी, क्योंकि हिंदी में केवल सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता के साथ ही 'ने' का प्रयोग होता है, यथा—

राम ने पानी पिया	राम आब खुर्द
अहमद ने किताब बेची	अहमद किताब फरोख्त

यहाँ 'को' परसर्ग की हिंदी और फारसी दोनो में आवश्यकता नही पड़ी, क्योंकि अप्राणिवाचक कर्म के साथ हिंदी में 'को' परसर्ग नही लगता । वाजपेयी जी का मत है कि 'हिन्दी मे विभक्तियो का प्रयोग तभी होता है, जब इनके बिना काम ही न चलने की स्थिति हो । व्यर्थ ही 'को' 'ने' आदि की पूँछ नही लगा दी जाती ।'[२]

जहाँ हिंदी में आठ कारक माने गए हैं वही फारसी में केवल पाँच ।[३] हिंदी में प्राय प्रत्येक कारक के लिए अपना पृथक् परसर्ग है, किन्तु फारसी के कर्ता कारक में सकमक भूतकालिक क्रियाओ के कर्ता के साथ भी कोई पूर्वसर्ग या परसग नही जुटता, क्योंकि वहाँ ये क्रियाएँ वस्तुत तिङन्तज हैं, हिंदी की तरह कृदन्तज नही । कर्ताकारक के सम्बन्ध की पहचान केवल वाक्य में स्थान की मर्यादा से ही सभव है, किन्तु हिंदी के अन्य कारक परसर्गों के समकक्ष फारसी के कारक परसर्ग मौजूद हैं । फारसी कारक (हालत) के भेद —

(१) हालते-फाअली (कर्ताकारक)—वाक्य मे प्रयोग के समय हिंदी 'ने' के समान कोई परसर्ग या पूर्वसर्ग फारसी कर्ता के साथ सयुक्त नही होता ।

१—हि० भा० उ० वि०, पृ० ४२८ उ० ना० ति० । यहाँ उपसर्ग पूर्वसर्ग के अर्थ में प्रयुक्त है ।

२—हि० श०, पृ० १२४ । जिस पदग्राम को वाजपेयी जी विभक्ति मानते हैं, उसे भाषा वैज्ञानिक परसग मानते है ।

३—पृ० ५६ डी० सी० फिलॉट् ।

(२) हालते-मफ़ऊली (कर्मकारक)—इसका अपना परसर्ग 'रा' है जो हिंदी 'को' का समकक्ष है जैसे महमूद रा। करण और अधिकरण कारक सम्बन्ध की अभिव्यक्ति के लिए 'ब' 'बजरिए' 'दर' 'बर' इत्यादि का प्रयोग होता है जो हिंदी के क्रमश से द्वारा मे पर के समकक्ष है जैसे बकिश्ती—नाव से बजरिए अदालत—न्यायालय से दर खाना—घर में बर मजार—कब्र पर। सम्प्रदान के लिए वास्ते पूर्वसर्ग का प्रयोग होता है।

(३) हालते-अज़ी (अपादान कारक)—अपादान कारक के लिए 'अज़' पूर्वसर्ग का प्रयोग होता है जैसे अज़ दरख्त-वृक्ष से अज़ फ़ारस-फ़ारस से।

(४) हालते-निदा (सम्बोधन कारक)—फ़ारसी सम्बोधन कारक के पूर्व सर्ग या परसर्ग का प्रयोग हिंदी ही की भाँति होता है जैसे या रब! ऐ मर्द! 'आ' परसर्ग का अपवादस्वरूप प्रयोग भी होता है जैसे मर्दा-ऐ मर्द! बुलबुला-ओ बुलबुल!

(५) हालते-इज़ाफ़ी (सम्बन्धकारक)—यह फ़ारसी का महत्त्वपूर्ण कारक है। कारक सम्बन्ध को प्रकट करने के लिए 'रा' का प्रयोग का की के आदि के अर्थ में होता है अथवा 'इज़ाफ़त' (एक प्रकार का सम्बन्धसूचक) का प्रयोग होता है।

इज़ाफ़त—दो या अधिक संज्ञा शब्दों या संज्ञा और विशेषण शब्दों को 'ए' [किस्रा-ए-इज़ाफ़त] सम्बन्धसूचक से जोड़ने की विधि को इज़ाफ़त कहते हैं। सम्बन्धकारक में तो यह तरकीब काम में लाई जाती ही है विशेषण और विशेष्य को भी इससे संयुक्त करते हैं। फ़ारसी वैयाकरणों के अनुसार फ़िराक़ महोदय ने इसके तेरह भेद गिनाए हैं जिनके विवेचन की यहाँ अपेक्षा नहीं है।

दिले-नादां तुझे हुआ क्या है
आखिर इस दर्द की दवा क्या है।—ग़ालिब

'दिले-नादाँ' दो शब्दों को मिलाकर बनाया गया है—'दिल' और 'नादान'[1]। पहले 'नादान' को 'नादाँ' किया—हिन्दोस्तां की तरह। फिर जब दिल के साथ इसे जोड़ा गया तो दिल के साथ 'ए' की मात्रा जोड़ कर 'दिले' कर दिया गया। इस प्रकार 'दिले-नादाँ' का मतलब है नादान दिल—विशेषण और विशेष्य।

'दो या दो से अधिक शब्दों को इस तरकीब से जोड़ने को 'इज़ाफ़त' कहते हैं। इज़ाफ़त का अर्थ है सम्बन्ध या मिलन। फ़ारसी इज़ाफ़त में कर्ता के

१—रमारंग पृ रघुपति सहाय फ़िराक़।

नीचे जेर (स्वर 'इ') लगा देते हैं, जिसका उच्चारण 'इ' से बदलकर 'ए' हो जाता । हिंदी (या उर्दू) में ऐसा प्रयोग करते समय कर्ता के ऊपर 'ए' की मात्रा बढ़ा दी जाती है। प्राचीन फारसी में इसका उच्चारण 'ह' के समकक्ष होता है, जब कि अफगानिस्तान और भारत मे 'ए' की तरह, जैसे खानह्-ए-मर्द, पा-ए-मर्द (क्रमश मर्द का घर, मर्द का पाँव) जब कि फारस मे खानह्-इ-मर्द और पा-इ-मर्द कहा जाता है,[१] किन्तु आधुनिक फारसी में भी इसका उच्चारण अक्सर 'ए' की तरह ही होने लगा है।[२]

इजाफत का सर्वाधिक प्रयोग सम्बन्धकारक के लिए होता है जैसे सैरे-चमन—चमन की सैर, सूरते-यार—यार की सूरत नकावे-रुख—चेहरे की नकाव, दर्दे-जिगर—हृदय की पीडा, पेसरे-मन—मेरा लडका, दुख्तरे-तू—तुम्हारी लडकी।

जब इजाफत मे पहला शब्द आकारात होता है जैसे वादा (वादह्), खाना (खानह्) तो उसमें 'आ' की मात्रा हटाकर उसकी जगह 'ए' लगा दिया जाता है, जैसे 'वादाए-करम (करम का वादा), खानाए-मर्द (मर्द का घर), पाए-मर्द (मर्द का पाँव)। इसी तरह ईकारांत शब्द हो तो उसे इकारांत (ह्रस्व) करके उसके आगे 'ए' जोड देते है, जैसे बेचारगिए-इश्क (इश्क की बेचारगी), मस्तिए-शराब (शराबी की मस्ती)। इसी तरह बानुए-हरम (हरम की बानू-अन्त पुर की सरंक्षिका), आहुए-मन (मेरा आहू-हिरण)।

मुजाफ और मुजाफइलैह्—मुजाफ का अर्थ है सम्बन्धित या मिलाया हुआ अर्थात् जो शब्द मिलाया गया हो। यह प्रधान पद होता है। मुजाफ-इलैह से तात्पर्य है वह दूसरा पद जो मिलाया या सम्बद्धित किया गया हो, अर्थात् इनमे मुजाफ सम्बद्ध होता है और मुजाफइलैह् सम्बन्धी। इजाफत द्वारा इन दोना पदों का सम्बन्धसूत्र जोड़ा जाता है, यथा—

अस्पे-जैद सुर्ख अस्त—जैद का घोडा लाल है।
अस्प (घोडा)—मुजाफ (सम्बद्ध)।
जैद (व्यक्ति)—मुजाफइलैह् (सम्बन्धी)।

तुम्हारे लब हैं बागे-हुस्न के फूल
तबस्सुम उनकी नाज़ुक पखडी है।

[१]—हायर परसियन ग्रामर, पृ० ५६, फिलॉट।
[२]—वही, पृ० ५२।

इजाफ़त का दोहरा प्रयोग भी चलता है, जैसे—

तुम्हारे लब हैं गुले-बागे-हुस्न
तबस्सुम उनकी नाज़ुक पत्ती है।

'गुले-बागे-हुस्न'-हुस्न के बाग के फूल, दर्दे-दिले-दीवाना'—दीवाना दिल का दर्द, 'अरमाने-दिले-नूरेजहाँ (नूरे-जहाँ)'-नूरजहाँ (जहाँ की नूर) के दिल का अरमान इत्यादि।

जैसा कि बताया जा चुका है हिंदी भाषा में इजाफ़त के प्रयोग लोकप्रिय रहे हैं।

भारतीय आर्यभाषा की वियोगात्मक प्रवृत्ति प्राकृत या उससे कुछ पूर्व संस्कृत में ही दृष्टिगोचर होती है, किंतु भारतीय आर्य भाषा व्याकरण दृष्टि से अपभ्रंश काल तक प्रायः संयोगात्मक ही रही, जब कि फारसी से भारतीय भाषाओं का संपर्क स्थापित हुआ। भारत में आने से पहले ही फारसी पूर्णतः वियोगात्मक भाषा बन चुकी थी, जिसमें कारक संबंधों का बोध विभक्तियों के बदले पूर्वसर्गों या परसर्गों द्वारा कराया जाता था। फारसी ने हिंदी परसर्गों को सम्पन्न बनाया और हिंदी के वियोगात्मक होने में सहायता दी। 'जिस भाषा (जैसे लहंदी, पंजाबी, हिंदी, पूर्वी हिंदी या बंगला) का फारसी से जितना ही घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुआ, वह अन्य न० भा० आ० भाषाओं की तुलना में उतना ही अधिक वियोगात्मक हो गई। हिंदी की अपेक्षा पंजाबी, और गुजराती, मराठी और बंगला की अपेक्षा हिंदी अधिक वियोगात्मक है।''[1] यहाँ इस सिलसिले में इतना ही स्वीकार किया जा सकता है कि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के स्वाभाविक वियोगात्मक विकास में फारसी ने केवल सहायता प्रदान की है, यह एक मात्र फारसी का ही प्रभाव नहीं है। इसमें फारसी दर, बर, अज, बा, रा, वास्ते [क्रमशः में पर, से, द्वारा (साथ), का, को, लिये] जैसे पूर्वसर्ग सहायक हुए हैं।

८—सर्वनाम

वाजपेयी जी ने किसी स्वतंत्र भाषा के चार मुख्य स्तम्भ बताए हैं—(१) क्रियापद (२) अव्यय (३) विभक्तियाँ तथा (४) सर्वनाम। मूलशब्द-भंडार में सर्वनाम, सम्बन्ध-सूचक शब्द, क्रियाएँ सबसे कम बदलती हैं।[2] हिंदी व्याक-

१—परसियन इनफ्लुएन्स ऑन हिंदी, पृ० ५७, डॉ० बाहरी।

२—भाषा और समाज पृ० ७० डॉ० रामविलास शर्मा।

रूप के अन्य अंगों की अपेक्षा सर्वनाम सर्वाधिक स्वतंत्र है। संस्कृत और फारसी के अनेक सर्वनामों से इनकी समानता अवश्य है। सर्वनाम के सम्बन्ध में संस्कृत तथा हिंदी के साथ फारसी की अत्यधिक समानता है। पुरुषवाचक सर्वनामों की समानता उल्लेखनीय है —

१—उत्तमपुरुष मैं हम (मन-मा)
२—मध्यमपुरुष तू, तुमलोग–आपलोग (तू-शुमा)
३—अन्यपुरुष वह वे (ऊ, ओहा)

जहाँ तक फारसी में सर्वनाम शब्दों के आगमन का प्रश्न है यह स्पष्ट है कि हिंदी ने फारसी से दो सर्वनाम शब्दों को अवश्य स्वीकृत किया है, यथा—खुद और फुलां>फलाना।

खुद—हिंदी में यह निजवाचक सर्वनाम के रूप में प्रयोग किया जाता है और बम्बइया हिंदी में स्वयं से ज्यादा प्रचलित है। हिंदी में इसके समकक्ष 'आप' है — 'वे आप ही बोलने लगे या खुद ही कहने लगे'। 'दोस्त ने कहा कि भूखों फिरते खुद ही मरा जाऊँगा।

फलाना—इसका प्रयोग हिंदी में अनिश्चयवाचक सर्वनाम और विशेषण दोनों रूपों में होता है। अर्थ है अमुक या खास लोग।

सर्वनाम—दरोगा ने तुमकाओं का नाम लेकर कहा है कि फलाँ-फलाँ को बुला लाओ।

विशेषण—फलाँ रामवीर बेचारा में तो शरीफ था पर चोरी उसी ने की।

बोलचाल में इसका रूप फलाने भी मिलता है। पिछड़े वर्गों में फलाना चीज कहकर गाली भी दी जाती है।

संकेतवाचक सर्वनाम— यह 'यह' की उत्पत्ति डॉ. तिवारी ने क्रमशः संस्कृत एष तथा अशौ से माना है यथा एष>एस एस प्रा एषो>अप एहो>यह और असौ>या अमु प्रा असो>अहो ओह वह।[१] डॉ. चाटुर्ज्या का मत इससे भिन्न है। फारसी संकेतवाचक सर्वनाम 'ई' और 'ऊँ' तथा हिंदी बोलियों का सर्वनाम 'ई' की तुलना अपेक्षित है। हिंदी ई और फारसी ध्वनि 'ह्' के योग से 'यह' सर्वनाम बना है। इसी प्रकार पुरानी हिंदी या बोलियों का दूरस्थ संकेतवाचक या अन्यपुरुष सर्वनाम 'ऊ' भी फारसी 'ऊ' या 'आं' से तुलनीय है जिसमें 'ह्' ध्वनि के योग से हुए 'वो' या 'वह'

१—हिं भा उ वि पृ १४१ उ ना ति।
२—वही पृ ४६२।

सर्वनाम बना है।[1] डॉ० बाहरी का यह मत अपेक्षाकृत अधिक ठीक जँचता है, क्योंकि संस्कृत और फारसी एक ही परिवार की भाषाएँ हैं। इसी प्रकार हिंदी-फारसी 'तू' की समानता भी स्पष्ट है।

भाषा में सर्वनाम का महत्व—'कौन सी भाषाएँ एक परिवार के अन्तर्गत हैं यह तै करने में मूलशब्द भंडार का अध्ययन हमारी सहायता करता है।'[2] सर्वनाम मूलशब्द भंडार में प्रमुख इकाई है। डॉ० रामविलास शर्मा ने एक शेर का उद्धरण देकर मूल शब्दभंडार का महत्व दिखलाया है—

'आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक
कौन जीता है तेरी जुल्फ के सर होने तक।'

सर्वनाम 'कौन' और 'तेरी' सबन्धसूचक परसर्ग 'का' 'के', क्रियाएँ 'चाहिए,' 'जीता है', 'होना'—ये नहीं बदली। मूलभाषा का ढाँचा इनके द्वारा सुरक्षित बना है, उम्र, असर, जुल्फ, सर शब्द बाहर से आकर उस ढाँचे का मूलरूप नहीं बदल पाए। इसी प्रकार अरबी का प्रबल प्रभाव फारसी पर है, किंतु सर्वनाम आदि मूलशब्द फारसी के अपने और स्वतन्त्र हैं। अरबी के सर्वनाम अन, नहनो, आन्त, आन्ते, अनातुन आदि से फारसी के सर्वनाम मन, मा, तू, शुमा, ऊ, आहा आदि में कितना अन्तर है और दूसरी ओर इनका हिंदी सर्वनामों से कितना मेल है।

दक्खिनी हिंदी—दक्खिनी हिंदी के कुछ सर्वनामों का फारसी से रूपसाम्य स्पष्ट है[3] यथा—मु, मन (फा० मन, मा) तु, तू, तुज (फा० तू), वो, आ, उना (फा० ऊ० या वू०, आंहा), इन, उन (फा० इ>ईन, आ>आन) इत्यादि।

९—क्रिया

प्रारंभिक विकास के दिनों में हिंदी भाषा का फारसी से निकट सम्बन्ध स्थापित हुआ। अस्तु यह स्वाभाविक था कि फारसी धातु या नामधातु का हिंदी में आदान होता। संस्कृत में संयुक्त-क्रिया की प्रवृत्ति कम है, जब कि फारसी में अधिक। संस्कृत आदि प्राचीन भाषाओं में ऐसी क्रियाओं के अपेक्षाकृत अभाव की चर्चा कर डॉ० उदयनारायण तिवारी ने लिखा है कि इसकी क्षतिपूर्ति आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में संयुक्त क्रियाओं के निर्माण में हो

१—परसियन इन्फ्लुएन्स ऑन हिंदी, पृ० ५०, डॉ० बाहरी।
२—भाषा और समाज, पृ० ७०, डॉ० रामविलास शर्मा।
३—दक्खिनी हिंदी, पृ० ४९-५०, डॉ० बाबूराम सक्सेना।

बी	से	दीदन	देखना
जन	से	जदन	मारना
आराय्	से	आरास्तन	सजाना
आमा या आमाय्	से	आमूदन	सवारना
जह्	से	जिस्तन	कूदना
शिकन	से	शिकस्तन	टूटना
गिरी	से	गिरीस्तन	रोना
नवीम	से	नविस्तन	लिखना
बू या बाश	से	बूदन	होना
शू	से	शुदन	होजाना
शुनू	से	शुनीदन (शनौदन)	सुनना
आख	से	आख्तन	तलवार खीचना
शिनास	से	शिनास्तन	पहचानना
दार	से	दाश्तन	रखना
कार	से	काश्तन	जोतना
बर	से	बुर्दन	ले जाना
मीर	से	मुर्दन	मरना
याब	से	यापतन	पाना
रव	से	रफ्तन	जाना

फारसी क्रिया का विकारी और सयुक्त रूप विभिन्न कालो, वचनो और पुरुषो के अनुसार कर्तृवाच्य में कुल तिरसठ प्रकार का होता है। कर्मवाच्य में 'शुद' या 'शुदह' पदग्राम के सयोग से भी क्रिया के कुल ६३ तिरसठ रूप होते है।[1] फारसी क्रिया में लिंग सबधी कोई समस्या नही है यथा—

मर्द रफ्त	पुरुष गया
जन रफ्त	स्त्री गयी
पसर आमद	पुत्र आया
दुख्तर आमद	पुत्री आयी

व्याकरणात्मक भेद की दृष्टि से हिंदी के ही समान फारसी क्रिया भी दो प्रकार की होती है[2] (१) फेल मुतग्रदी (सकर्मक क्रिया) (२) फेल लाजिम

१—फारसी आमदनामह।
२—हायर परसियन ग्रामर, पृ० २२१।

अदा करना	आराम लेना, -देना, -करना
इन्कार करना	कसरत करना, -कराना
खुश करना, -होना	ग़म करना, -मनाना
गर्मी पड़ना	गर्म करना, -होना
जमा होना, -करना	तमाशा करना, -देखना
तंग आना, -करना	नजर डालना, -लगाना, -गड़ाना, -चुराना, -मिलाना
नजाकत करना, -दिखाना	पसन्द आना, -करना, -कराना,-होना
परेशान होना, -करना	पाबन्द होना, -करना
फरमाइश करना, -सुनना	फजीहत करना
फरोख्त करना	फैसला करना, -होना
बन्द होना, -करना	बहाल होना, -करना
बेवकूफी करना	मालूम होना, -करना
मिन्नत करना	मुसीबत पड़ना, -डालना
मुखबिर होना	मुसाफिरी करना
राहजनी करना	शुरू करना
हाजिर होना	

इनमें से कुछ क्रियाओं का प्रयोग मुहावरे के रूप में भी होता है, जैसे गरम होना, नजर चुराना, पाबन्द होना इत्यादि।

(३) फारसी संज्ञा से हिंदी में अनेक नामधातुएँ भी बनाई गई हैं अर्थात् फारसी संज्ञा या विशेषण शब्दों में हिंदी कृदन्त प्रत्यय 'ना' जोडकर क्रियार्थक संज्ञाएँ निर्मित की गई हैं,[1] यथा—

कफन	से	कफनाना
कबूल	से	कबूलना
खर्च	से	खर्चना
खराद	से	खरादना
तहसील	से	तहसीलना
दफ़न	से	दफनाना
दाग़	से	दागना
नजर	से	नजराना

१—वही, पृ० ४९।

बदल	से	बदलना
बदल	से	बदलना
मुस्त	से	मुस्ताना
शर्म	से	शर्माना

दक्खिनी हिंदी क्रिया—जिस प्रकार दक्खिनी हिंदी संज्ञा के बहुवचन रूप पर फारसी बहुवचनात्मक प्रत्यय का प्रभाव दिखाई पड़ता है, वैसे ही क्रिया के बहुवचनात्मक रूप पर भी यह प्रभाव प्रकट है। जिस प्रकार बन्दा मरदां महबूबां बन्दा है वैसे ही करता जाग्या करसत्यां आदि भी यथा—

पड़ोस औरता अपने मरद बगैर दूसरे को अपना दुख देखाना गुनाह कर जान्या है, अपने मरद को हर दो जहां मे अपना दीन व ईमान कर पहचा न्या है।[1]

१ —विशेषण

संज्ञा शब्दों के समान अनेक फारसी विशेषण शब्दों का भी हिंदी में आगम हुआ है। साथ ही फारसी विशेषण शब्दो के लिंग-वचन का हिंदी विशेषण के लिंग-वचन पर प्रभाव भी पड़ा है। हिंदी के कुछ विशेषणो म लिंग सम्बन्धी परिवर्तन वैसे ही नहीं होता जैसे फारसी मे यथा सुन्दर लड़का सुन्दर लड़के सुन्दर लड़की सुन्दर लड़कियां और फारसी मे जने-पीर (बूढ़ी स्त्री) मर्दे-पीर (बूढ़ा पुरुष) इसी प्रकार जनाने-पीर (बूढ़ी स्त्रियां) मर्दान-पीर (बूढ़े पुरुष)। अरबी विशेषणो में लिंग सम्बन्धी परिवर्तन होता है यथा पेसरे-जमील (सुन्दर लड़का) दुख्तरे-जमीलह >जमीला (सुन्दर लड़की) मर्दे-हसीन सुन्दर पुरुष) जने-हसीनह (सुन्दर स्त्री)। फारसी विशेषणो मे वचन सम्बन्धी परिवर्तन नहीं होता जब कि आकारान्त हिंदी विशेषणों म केवल पुंलिंग में वचनगत परिवर्तन होता है न कि स्त्रीलिंग में जैसे अच्छा लड़का अच्छे लड़के अच्छी लड़की अच्छी लड़कियां। हिंदी में आकारान्त से भिन्न विशेषणो के संबंध में लिंग वचन और कारक में कोई परिवर्तन नहीं होता। यह नियम ही फारसी के प्रभाव से हो सकता है।[2]

१—दक्खिनी हिंदी पृ ५ डॉ बाबूराम सक्सेना।

२—परशियन इन्फ्लुएंस ऑन् हिंदी पृ ११ डॉ बाहरी।

फारसी विशेषण [सिफत]—यह पाँच प्रकार का होता है—

(१) सिफत जाती या मुसब्बह (गुणवाचक)—जैसे नेक, बद, बेह, बेहतर बेहतरीन आदि ।

(२) सिफत अददी (संख्या वाचक)—यक, दो, अव्वल, दोयम, चन्द, तरतीब हफ्तह्वार, माहवार, सालानह आदि ।

(३) सिफत मिकदारी (परिमाण वाचक)—कम, ज्यादह, बहुत आदि ।

(४) सिफत जमीरी (सर्वनामवाचक या सार्वनामिक)—ई, ऊ, फलाना आदि ।

(५) सिफत (निस्बती सम्बन्धवाचक)—अरबी, फारसी, ताजिकी आदि ।

१—हिंदी में आगत फारसी गुणवाचक विशेषण[1] ।

समय—ताजा, ताज़ी, मौसमी ।

स्थान—नजदीक, दूर-दराज़ ।

आकार—खूबसूरत, हसीन, नफीस, खराब, बराबर ।

रंग—सफेद, स्याह, सुर्ख, जर्द, जर्दी, आसमानी, रौशन, फीका, सादा, सादी ।

दशा—गरीब, मरजील, तन्दुरुस्त, नम, खुश्क, मेहनती, सर्द, गर्म, तर, दीवाना, बेकरार, बेकस, जुदा, जुदी ।

गुण—खामोश, नादान, दानेदार, रौबदार, नेक, बद, बेह, बेहतर, बेहतरीन, तेज़, मेहरबान, उम्दा, फीका, खराब, वाजिब, गैरवाजिब, इन्साफ-पसंद, बेईमान, जालिम, रहमदिल, सितमगर, मक्कार, शरीफ, रजील, खामोश जंगी ।

ये विशेषण फारसी संज्ञाशब्दों के अतिरिक्त हिंदी संज्ञाओं के साथ भी प्रयुक्त होते हैं ।

अवस्था या श्रेणी (दरजा)—गुणवाचक विशेषण की तीन श्रेणियों (१) मूलावस्था, (२) उत्तरावस्था, (३) उत्तमावस्था में दूसरी और तीसरी की रचना क्रमश 'तर' और 'तरी'>'तरीन' प्रत्यय-पदग्राम के संयोग से की जाती है, यथा—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
नेक	नेकतर	नेकतरीन
बद	बदतर	बदतरीन

१—हिं० व्या०, पृ० १३३, का० प्र० गु० ।

कम	कमतर	कमतरीन
खूब	खूबतर	खूबतरीन
जियादह्-ज्यादा	ज्यादातर	ज्यादातरीन
बेह्	बेहतर	बेहतरीन

प्रयोग—(१) मा बा मर्दे नेक अस्त—उस जगह भला आदमी है।

(२) जैद अज बक्र नेकतर अस्त—जैद बक्र से अच्छा है।

(३) मुहम्मद दर तमाम मर्दुमान बेहतरीन अस्त—मुहम्मद सभी लोगों में सर्वोत्तम हैं।

इज़ाफ़त का प्रयोग—फ़ारसी में विशेषण-विशेष्य (सिफ़त—मौसूफ़) को जोड़ने—इज़ाफ़ी—सम्बन्धकारक की भाँति इज़ाफ़त की तरकीब तौसीफ़ी (विशेषण—सम्बन्ध) से संयुक्त भी किया जाता है। बिना इज़ाफ़त संज्ञा के बाद आनेवाले विशेषण से सामासिक पद बनता है[1] जैसे खुशरंग बदकिस्मत खुशमिज़ाज आदि। ये पद संस्कृत और हिंदी व्याकरण के अनुसार बहुव्रीहि समास हैं। फ़ारसी गुणवाचक विशेषण का पूर्व प्रयोग एवं परप्रयोग दोनों प्रचलित हैं। परप्रयोग में 'इज़ाफ़त' की तरकीब काम में लाई जाती है, जैसे कोहे-बुलंदे-संगिए-कफ़सार—ऊँचा पहाड़ी कफ़सार पर्वत यारे-गुलबदने-शीरीं-ज़बान—मृदुभाषिणी एवं कोमलांगिनी प्रियतमा। हिंदी में यह पद्धति प्रचलित हुई है और विशेषण-विशेष्य के संयुक्त पद भी स्वीकृत हुए हैं यथा दिले-नादाँ—भोला हृदय दिले-दागदार दागवाला दिल दिले-बेकरार—बेचैन दिल दिले-शिकस्ता—पराजित हृदय आबे-रवाँ—बहतापानी बादे-सर्द—ठंडी हवा मर्दे-उर—धार्मिक मर्दे-नेक—भला आदमी।

२—फ़ारसी से कुछ संख्यावाचक विशेषण भी हिंदी में आए हैं और इनमें से कुछ रूपात्मक दृष्टि से पारिवारिक एकता के कारण मिलते जुलते हैं जैसे फ़ा यक—हि एक फ़ा दो—हि दो फ़ा चहार—हि चार फ़ा पंज—हि पाँच फ़ा नु—हि नौ फ़ा दह—हि दस फ़ा सद—हि सौ।

हिंदी में फ़ारसी से आगत संख्यावाचक विशेषण अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रचलित हैं यथा अव्वल दोयम सेयम-सोम चन्द तमाम कुल, तरतीब तफ़्सीलवार, डेढ़ या सि-(सितार) में।

१—हायर पर्शियन ग्रामर, पृ १५१ फ़िलॉट।

फारसी 'हज़ार' शब्द हिंदी में इतना लोकप्रिय हुआ है कि इसके विस्तार से 'सहस्र' का प्रयोग बहुत कम हो गया है। 'हज़ार' निश्चित सख्यावाचक विशेषण है और 'हज़ारो' अनिश्चित सख्यावाचक। हज़ारवा हिस्सा और हज़ारगुना भी चलता है। 'हज़ारो पर पानी फेरना' मुहाविरा भी प्रचलित है।

दक्खिनी हिंदी—दक्खिनी हिंदी में फारसी 'यक' भी चलता है। 'नब्बे के लिए नवद [स० नवति] और निन्नानवे के लिए नवद नौ [स० नव-नवति]'[1] लिखा जाता था। वास्तव में 'नवदनौ' का तरीका फारसी का ही है जहाँ निन्नानवे को नवद नु या नवद नौ ही लिखते और बोलते हैं।

सख्यावाचक विशेषण का भी फारसी में पूर्व एव पर प्रयोग दोनो चलता है यथा—

पस अज रोजे चन्द दीदम–कुछ दिन के बाद मैंने देखा। दर रोजे जुमअ बर हमह् मुसलमान सह् चीज वाजिब अस्त–शुक्रवार को सभी मुसलमानो के लिए तीन चीजे आवश्यक हैं।

पहले उदाहरण रोजे–चन्द' मे 'चन्द' का पर प्रयोग और दूसरे उदाहरण 'सह् चीज' में 'सह्' का पूर्व प्रयोग हिंदी के समान हुआ है।

३—फारसी के परिमाणवाचक विशेषण हिंदी में इतने घुल-मिल गए हैं कि भेद का बोध भी नहीं होता यथा ज्यादा, बिसयार-बेसी, कम, जरा, तमाम, मअमूली>मामूली, इफरात, काफी इत्यादि।

४—फारसी के सार्वनामिक विशेषण इ–ईंसा, आं–आहा [यह–ये, वह–वे] का 'यह' 'वह' के विकास में किस प्रकार असर पड़ा है यह सर्वनाम प्रकरण में दिखाया जा चुका है।[2] फुना या फलाना-फला का प्रयोग भी हिंदी में सकेतवाचक विशेषण के लिए होता है।

५—जहाँ तक सबधवाचक विशेषण का प्रश्न है, यह स्पष्ट है कि फ़ारसी पद्धति हिंदी में आगत विदेशी शब्दों में ही प्रयोग की जाती है, यथा फ़ारसी, ईरानी, अरबी, ताज़ी, ताजिकी, तुर्की, मक्की, मदनी इत्यादि। सबधवाचक विशेषण बनाने का हिन्दी का अपना तरीका मौजूद है, जिससे फारसी का कोई सम्बन्ध नहीं, किंतु देहलवी, पटियालवी, लुधियानवी,

१—दक्खिनी हिंदी, पृ० ५३, डॉ० बाबूरामसक्सेना।

२—देखिए फारसी सर्वनाम का प्रभाव, पृ० १२४।

मौलवी, ख़ुदाई और दरियाई जैसे शब्दों की रचना पर फ़ारसी प्रभाव दृष्टिगोचर हो सकता है।

हिंदी पदरचना में फ़ारसी विशेषणों का अध्ययन

१—स्वतन्त्र विशेषण[1]—जो शुद्ध न तो संज्ञा शब्दों से बने हैं और न जिनसे भाववाचक संज्ञाएँ ही बनती हैं—

आम[2]	क़रीब
ताज़ा	क़ाबिल
ख़ाली	ख़ास-ख़ासी
पलीत-पलीद	ग़ायब
चिरकी	ग़ैर
ज़ब्त	तमाम
वाजिब	दीवाना
नमकीन	क़बूल-नाक़बूल
फ़ालतू	फ़ाज़िल
बहुत	बद
मामूली	मुफ़्त
मौजूद	रद्दी
हरामख़ोर	हरजाई

२—संज्ञा शब्दों से बने विशेषण—हिंदी में आगत अनेक फ़ारसी शब्दों से हिंदी-विधि से विशेषण बनाए गए हैं यथा—

संज्ञा	विशेषण
असल	असली
क़ीमत	क़ीमती

१—परशियन इन्फ्लुएंस ऑन् हिंदी पृ ४५ बाहरी।

२—ध्वनियों के सरलीकरण के अनुसार हिंदी में क़, ख़, ग़, ज़, फ़ और ग़ ध्वनियों का परिनिष्ठित उच्चारण सामान्यतः नहीं किया जाता और फ़ारसी से आगत शब्दों में क्, ख् ग् ज्, फ् और ग में इनका रूपान्तर हो जाता है। शब्दों का उच्चारण भी इसी क्रम से होता है। उर्दू शैली में वर्तनी तथा उच्चारण दोनों में फ़ारसी ध्वनियों की रक्षा की जाती है।

गुस्सा	गुस्सैल
जिद	ज़िद्दी
जुल्म	जुल्मी
नक़ल	नकली
माल	माली
शर्म	शर्मीला
सैर	सैलानी

सज्ञा शब्दो में हिंदी या फारसी के तद्धितात प्रत्यय जोडकर विशेषण बनाये जाते हैं—

अक्ल	-मन्द	अक्लमन्द
आखिर	-ई	आखीरी
किताब	-वाला	किताबवाला
जागीर	-दार	जागीरदार
माल	-दार	मालदार
शान	-दार	शानदार
सूबा	-दार	सूबेदार
हैदराबाद	-ई	हैदराबादी

३—अनेक फ़ारसी विशेषण शब्दों से भाववाचक सज्ञाएँ भी बनाई गई हैं—

विशेषण	सज्ञा
अक्लमन्द	अक्लमन्दी
अमीर	अमीरी
आसान	आसानी
आजाद	आज़ादी
अबाद	आबादी
आवारागर्द	आवारागर्दी, (आवारापन)
ईमानदार	ईमानदारी
कम	कमी
ख़राब	ख़राबी
खुश	खुशी
ग़रीब	गरीबी

वेशर्म	वेशर्मी
वेहया	वेहयाई
मक्कार	मक्कारी
मजबूर	मजबूरी
मजबूत	मजबूती
मुस्तैद	मुस्तैदी
मुश्किल	मुश्किल-मुश्किलाहट
मेहरबान	मेहरबानी
लफगा	लफगबाजी-लफगई
लाचार	लाचारी
वीरान	वीराना, वीरानापन
सख्त	सख्ती
सर्द	सर्दी
साफ़	सफ़ाई
स्याह	स्याही
शौक़ीन	शौकीनी
हैरान	हैरानी
होशियार	होशियारी

इसी प्रकार—

आवारा	आवारगी
कमीना (कमीनी)	कमीनगी
गदा (गन्दी)	गदगी
ज़िदा (ज़िदी)	ज़िदगी
ताज़ा (ताज़ी)	ताज़गी
वेचारा (वेचारी)	वेचारगी
वेहूदा (वेहूदी)	वेहूदगी
सादा (सादी)	सादगी

४—फ़ारसी विशेषण शब्दों में अनेक ऐसे शब्द हैं जिन तो हिंदी में विशेषण शब्द नहीं है या प्रचलन म नहीं हैं यथा आ बराबर, वेकार, चापलूस, गदा, ग़लत, गरम, कमीना, नाग तय्यार, ताज़ा, नक़ली, अव्वल, वहुत इत्यादि ।

१—अनेक फारसी विशेषण शब्द गाली-गलौज के लिए भी हिंदी मे आगए हैं यथा —

कमीना	कमबख्त
कमजात	खारखाह>खैरख्वाह
जालिम	पाजी
नाभायक	फ़जूलखर्च
बदचलन	बदमाश
बदनाम	बदजात
बदतमीज	बेहूदा
बेईमान	बेशर्म
बेपीर	बेवकूफ
मक्कार	मुर्दाखोर
लफंगा	लुच्चा
शरीर	शैतान
शोहदा	शराबी
सफेदपोश	हरजाई
हरामखोर	हरामजादा
हरामजादी	हरामी
हुज्जती	हुज्जतबाज

१—अनेक फारसी-अरबी विशेषण या विशेषणतुल्य शब्द उपाधियों या संबोधन के लिए हिंदी में प्रचलित हैं जो हिंदू-मुसलमान दोनों के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं यथा—खलीफा मिरजा मुफ्ती मौलवी मौलाना जैसे शब्द सिर्फ मुसलमानों के लिए और दीवान सरदार तथा बख्शी जैसे शब्द हिंदू-मुसलमान दोनों के लिए काम में लाए जाते हैं। इसी प्रकार मालिक—पति भू-स्वामी अधिकारी खुदा आदि मुंशी—लर्क कायस्थ लोगों को मुंशी भी कहा जाता है, हुजूर—न्यायालय में न्यायाधीश या अधिष्ठ अधिकारियों का संबोधन साहब—अधिकारी या विभाग के प्रधान सरकार-बड़े जमींदारों के लिए, हजूरी जनाब इत्यादि शब्द भी प्रचलित है। कुछ शब्दों ने हिंदी स्वाधिपत्य की दृष्टि में अभी तक सफलता नही मिली है, जैसे घर में मालिक आफिस में साहब और कचहरी में हुजूर, सरकार तथा पेशकार। प्रस्तोता कुलपति एवं आचार्य इत्यादि को भी आफिस में 'साहब' कहकर संबोधित किया जाता है। इसी प्रकार कुछ महत्त्व

१—वही पृ ४२।
१—वही पृ ४१।

पूर्ण सामासिक शब्द भी प्रचलित हैं यथा—रायसाहब, रायबहादुर, खाँसाहब खाँबहादुर, सितारे-हिंद, रुस्तमे-हिंद इत्यादि ।

७—प्रविशेषण—जो शब्द संज्ञा की विशेषता बताते हैं वे विशेषण कहे जाते हैं किंतु जो विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं वे प्रविशेषण कहे जाते हैं ।[१] एकाकी प्रयोग में ये शब्द भी विशेषण होते हैं, किन्तु दुहरे प्रयोग में प्रविशेषण जैसे-'बहुत 'ज्यादा' गर्मी' में 'ज्यादा' विशेषण और बहुत' प्रविशेषण है । इसी प्रकार बहुत तेज घोडा, काफी सद पानी इत्यादि ।

८—फारसी क्रिया और अव्यय शब्दो से भी हिंदी में प्रत्यय जोडकर विशेषण शब्द बनाए जाते हैं, यथा—

खरीदना (क्रियाशब्द)	—वाला (प्र०)	खरीदने वाला (वि०)
अन्दर (अव्ययशब्द)	—वाला,ऊनी (प्र०)	अन्दरवाला, अन्दरूनी (वि०)

९—फारसी विशेषण शब्दों का लिंग-वचन और कारक—फारसी व्याकरण में विशेषण शब्दो पर लिंग वचन के परिवर्तन का कोई प्रभाव नही पडता जैसा कि पहले लिखा जा चुका है। हिंदी आकारांत पुवर्गीय विशेषणो के अतिरिक्त अन्य सभी विशेषण सभी कारकों में, दोनो वचनों में और दोनों वर्गों (लिंगों) में सदा एकरस रहते हैं,[२] जैसे लाल घोडा, लाल घोड़े को लाल घोड़ी से, लाल घोडियो पर, लाल घोडों के लिए आदि । यह नियम हिंदी में आगत फारसी विशेषणो पर भी लागू होता है यथा सफेद बकरा और सफ़ेद बकरी के विभिन्न रूपों पर। फारसी विशेषण प्रयोग की इस पद्धति का हिंदी विशेषण के लिंग-वचन और कारक की रचना पर निश्चित और महत्वपूर्ण प्रभाव है ।

' फारसी विशेषण शब्दो में कारक की वजह से कोई परिवतन नही होता यथा—अस्पे-खूबसूरत रफ़्त-खूबसूरत घोडा गया । अस्पे-खूबसूरते-ज़ैद रा बयार-ज़ैद के खूबसूरत घाडे को लाओ । दर खाने-खूबसूरत बबाश—खूबसूरत मकान में रहो ।

सस्कृत मे विशेषण भी विभक्तियुक्त होते हैं, यथा सुन्दर बालक, सुन्दरम् फलम्, सुन्दरी कन्या इत्यादि किंतु हिंदी में ऐसा नही होता । वहाँ ने, को आदि परसर्ग विशेष्य में ही लगते है विशेपण मे नही । निश्चय ही यह हिंदी विशेषण शब्दों को फारसी की देन है ।

१—हि० श०, पृ० २२० कि० दा० वा० ।

२—वही, पृ० २०७ ।

पूर्ण सामासिक शब्द भी प्रचलित हैं यथा—रायसाहब, रायबहादुर, खाँसाहब खाँबहादुर, सितारे-हिंद, रुस्तमे-हिंद इत्यादि ।

७—प्रविशेषण—जो शब्द संज्ञा की विशेषता बताते हैं वे विशेषण कहे जाते हैं किंतु जो विशेषण शब्दो की विशेषता बताते हैं वे प्रविशेषण कहे जाते हैं।[1] एकाकी प्रयोग में ये शब्द भी विशेषण होते हैं, किन्तु दुहरे प्रयोग में प्रविशेषण जैसे—'बहुत 'ज्यादा' गर्मी' में 'ज्यादा' विशेषण और बहुत' प्रविशेषण है। इसी प्रकार बहुत तेज घोडा, काफी सर्द पानी इत्यादि ।

८—फारसी क्रिया और अव्यय शब्दो से भी हिंदी में प्रत्यय जोडकर विशेषण शब्द बनाए जाते हैं, यथा—

खरीदना (क्रियाशब्द) —वाला (प्र०) खरीदने वाला (वि०)
अन्दर (अव्ययशब्द) —वाला, रूनी (प्र०) अन्दरवाला, अन्दरूनी (वि०)

९—फारसी विशेषण शब्दों का लिंग-वचन और कारक—फारसी व्याकरण में विशेषण शब्दो पर लिंग वचन के परिवर्तन का कोई प्रभाव नहीं पडता जैसा कि पहले लिखा जा चुका है। हिंदी आकारांत पुवर्गीय विशेषणों के अतिरिक्त अन्य सभी विशेषण सभी कारकों में, दोनों वचनों में और दोनो वर्गों (लिंगों) में सदा एकरस रहते हैं,[2] जैसे लाल घोडा, लाल घोड़े का, लाल घोडी से, लाल घोडियों पर, लाल घोडों के लिए आदि। यह नियम हिंदी में आगत फारसी विशेषणों पर भी लागू होता है यथा सफेद बकरा और सफेद बकरी के विभिन्न रूपों पर। फारसी विशेषण प्रयोग की इस पद्धति का हिंदी विशेषण के लिंग-वचन और कारक की रचना पर निश्चित और महत्वपूर्ण प्रभाव है।

' फारसी विशेषण शब्दो में कारक की वजह से कोई परिवतन नही होता यथा—अस्पे-खूबसूरत रफ्त-खूबसूरत घोडा गया। अस्पे-खूबसूरते-चंद रा बयार-चंद के खूबसूरत घोडे को लाओ। दर खाने-खूबसूरत बवाश—खूबसूरत मकान में रहो।

संस्कृत में विशेषण भी विभक्तियुक्त होते हैं, यथा सुन्दर बालक, सुन्दरम् फलम्, सुन्दरी कन्या इत्यादि किंतु हिंदी में ऐसा नहीं होता। यहाँ ने, को आदि परसर्ग विशेष्य मे ही लगते हैं विशेषण मे नही। निश्चय ही यह हिंदी विशेषण शब्दो को फारसी की देन है।

१—हि० श०, पृ० २२० कि० दा० वा०।

२—वही, पृ० २०७।

११—अव्यय

हिंदी ने फ़ारसी से क्रिया विशेषण, संयोजक, परसर्ग एवं विस्मयादिबोधक अव्यय शब्दों को ग्रहण किया है, जो हिंदी में अपने मौलिक अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

अव्यय (हर्फ़)—इसके दो भेद होते हैं—(१) हर्फ़ मुफ़र्द (वर्ण)—वे ध्वनियाँ जिनसे शब्द बनते हैं और जिनको लिपि में वर्णमाला कहते हैं जैसे अलिफ़, बे, पे इत्यादि।

(२) हर्फ़ मुरक्कब (संयुक्त)—इससे उन अव्यय शब्दों का तात्पर्य होता है, जो स्वयं तो नहीं बल्कि संज्ञा या क्रिया के साथ मिलकर अपना अर्थ प्रकट करें, जैसे अज़ मशहद ता तेहरान रफ़्तम—मैं मशहद से तेहरान तक गया। यहाँ अज़ (से) और ता (तक) अव्यय शब्द हैं। इस अव्यय को हर्फ़ मानी (सार्थक अव्यय) भी कहते हैं। इस्म (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) और फ़ेल (क्रिया) को छोड़कर उपसर्ग प्रत्यय सहित शब्द के सभी भेद फ़ारसी हर्फ़ में शामिल किये जाते हैं यहाँ तक कि परसर्ग और पूर्वसर्ग भी हर्फ़ के ही भेद माने जाते हैं।

हिंदी पदरचना में फ़ारसी अव्यय—निम्नलिखित फ़ारसी अव्यय शब्द हिंदी पदरचना में स्वीकृत हैं—

१. क्रिया विशेषण—(क) स्थानवाचक—दूर, दूरदराज़, क़रीब, क़रीब-क़रीब, नज़दीक, जानिब, तरफ़, अन्दर आदि।

(ख) कालवाचक—अक्सर, आख़िर, आइन्दा, वग़ैरह, हमेशा, हरगिज़, बाद, जल्दी, सालाना, माहवार, हफ़्तावार, रोज़ाना आदि।

(ग) परिमाणवाचक—बिल्कुल, कम से कम, क़रीब-क़रीब, तक़रीबन, क़तई, ख़ूब, कुल, ज़्यादा, महज़, मुताबिक़, लिहाज़न आदि।

(घ) रीतिवाचक—बजाय, बग़ैर, बराबर, बेकार, बेशक, हू-ब-हू, बतरज़, ज़रूर, क़तई, ख़ामख़ाह, सरासर, शायद, बतौरमिसाल, तरह, तौर, मुमकिन, वग़ैरह, यक़ीनन, वाक़ई, लामुहाला आदि।

२—संयोजक[1]—(क) समानाधिकरण—व, बल्कि, या, मगर, पर, लेकिन, अगर्चे, क्योंकि, हरचन्द, बावजूद।

(ख) आश्रित—कि, हरचि, चूँकि, ताकि, हालाँकि, अलबत्ता, वरने, गुर्चे, गोया, अलावा, अगर, सिवाय, वरना आदि।

अत्फ़—यह इज़ाफ़त की तरह एक तरकीब है, जिसे दो शब्दों को 'व' 'और' से जोड़ने के लिये फ़ारसी में इस्तेमाल करते हैं। यह यद्यपि हिंदी या उर्दू में

१—हायर पर्शियन ग्रामर, पृ. ११८ फ़िलाट।

भी प्रचलित हैं। गुल और बुलबुल को 'अत्फ़' से सयुक्त करने पर 'गुलो-बुलबुल' बना। इसमें 'गुल' मा'तूफ़् जिसे दूसरे शब्द मे मिलाया जाय और 'बुलबुल' मातूफइलैह्, जो प्रथम शब्द मे सयुक्त हो, हैं। इस पद्धति के अनुसार प्रथम पद (मातूफ) का अन्तिमस्वर 'ओ' मे परिणत हो जाता है, वैसे ही जैसे 'इजाफत' में प्रथम पद में अन्तिम स्वर 'ए' में बदल जाता है, यथा गुचो'-गुल 'सादगिओ-शोखी', 'दिलो-दिमाग़', 'जामो-पैमानह्', 'पीरो-फकीर', 'हुश्नो इश्क', 'शामो-सेहर'। कई शब्दो को एक साथ 'अत्फ' और 'इज़ाफ़त' दोनो की मदद से जोडा भी जाता है जैसे 'कैदे-हयातो-बदे-गम' का मतलब है हयात की कैद और गम का बद यानी जीवन की कैद और दुख का बन्धन

शामे-फ़िराको-ग़मे-दिल ज़िक्रे-जवानी में कट गए।
क्या रात थी, क्या दिन थे, महज़ अफ़साने में कट गए॥

वियोग की शाम (शामे-फ़िराक़) और दिल का ग़म (ग़मे-दिल) जवानी की ज़िक्र में कट गए। रात और दिन वही कहानी कहते-कहते बीत गए। 'यदि किसी प्रकार एक सज्ञा के पश्चात् कई विशेषण आवें, तो इज़ाफत का प्रयोग नही होता और सयोजक 'व' सबसे अन्त में आता है जैसे शख्से-बूद आकिल, दाना, हुशियार-ओ-ज़िरिंग—वह चतुर, बुद्धिमान, होशियार और सक्रिय आदमी था।[१]

आश्रित सयोजक 'कि' के सिलसिले में यह ध्यान देने की बात है कि यह हिंदी तथा पजाबी, गुजराती और मराठी को फारसी की त्यअत्यन्त महत्वपूर्ण देन है। बोलचाल में इसका वैकल्पिक रूप 'के' (केह्) भी चलता है, जो फारसी के अधिक निकट है। हिंदी वाक्यरचना में इसका विशेष महत्व है। अन्य फारसी सयोजका के समकक्ष हिंदी क अपने शब्द हैं, लेकिन 'कि' असमानान्तर सयोजक है। कुछ लोग सस्कृत 'किम्' से भी 'कि' की उत्पत्ति मानना चाहेंगे, किन्तु सस्कृत में 'किम्' दो सबद्धवाक्यो के समुच्चय-बोधक अव्यय के रूप मे प्रयुक्त नही होता। वहाँ इसके लिए 'यत्' का प्रयोग पाया जाता है जो प्राकृत अपभ्रश मे 'ज', 'जऊ', 'जई' के रूप म मिलता है, जिसका कई आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओ और बोलियो मे 'जे' रूप दो सबद्धवाक्यो के समुच्चयबोधक अव्यय के रूप में आज भी प्रयुक्त होता है। यद्यपि 'कि'

१—'इफ्, हाउएवर, सेवेरल एडजेक्टिव फालो ए नाउन, दी इज़ाफत्स आर ओमिटेड, एड दी कन्जक्शन, जेनेरली प्रेसीड्ज दी लास्ट वन्ली।' ग्रामर परसियन ग्रामर, पृ० २४२, फिलॉट्।

संस्कृत 'किम्' से संबद्ध नहीं है और इसका विकास फ़ारसी 'कि' से है तथापि फ़ारसी का यह रूप मूल भारत-ईरानी भाषा के उसी स्रोत से सम्बद्ध है, जिससे संस्कृत में 'किम्' का विकास हुआ है।

३—संबंधबोधक—'विभक्तियों और जोड़े से प्रत्ययों को छोड़ हिंदी में मूल संबंध-सूचक कोई नहीं है जिससे कोई-कोई वैयाकरण (हिंदी में) यह शब्द भेद ही नहीं मानते।[1] यहाँ विभक्तियों से पं० कामता प्रसाद गुरु का तात्पर्य परसर्ग ही समझना चाहिए। संबंधबोधक अव्यय शब्दों का परसर्गों के रूप में भी प्रयोग होता है।[2] फ़ारसी से आगत सम्बन्धबोधक अव्यय निम्नलिखित हैं—

क़रीब, ख़ातिर, बाबत, बाद, बदौलत, बारे (में), बराय, माफ़िक़>मुवाफ़िक़, मार्फ़त, बजाय, वास्ते, बावजूद, मानिन्द।

४—विस्मयादिबोधक—ख़ैर, ख़ूब, ख़बरदार, बस, शाबाश, हाय-हाय, उफ़, वाह-वाह>वाहवा, सुभानअल्लाह, तौबा, (क्या) ख़ूब, ख़ूब, ग़ज़ब किया।

१—हिं० व्या० पृ० १६७ का० प्र० गु०।
२—परशियन एलिमेंट्स इन हिंदी पृ० ५ बाहरी।

वाक्य रचनागत प्रभाव

१—प्रस्तावना

वाक्य अभिव्यक्ति की पूर्ण इकाई होता है। 'न्यूनतम पूर्ण उच्चरित के रूप में इसकी सरल ढंग से परिभाषा की जा सकती है।''[१] उद्देश्य-विधेययुक्त बहुपदीय के अतिरिक्त वाक्य एकपदीय भी हो सकता है, यथा फा० बेरो-जाओ, फा० बकुन-करो। यदि ये शब्द दो विरामो के बीच अभिव्यक्त होते हैं तो इनसे पूर्णवाक्य की रचना होती है एव दो अवरोधो के बीच अभिव्यक्त होने से ये शब्द पूर्ण उच्चरित भी बन जाते हैं। किन्तु, इस प्रकार के एकपदीय आदेशात्मक वाक्यों में विभिन्न विचारों एव अनुभूतियो की सम्यक् अभिव्यक्ति नितान्त असम्भव है। इस प्रकार के वाक्यो से आशिक एव तात्कालिक लक्ष्यो की ही सिद्धि होती है, वह इसलिए कि इनमें व्याकरणात्मक उद्देश्य अन्तर्भूत मान लिया जाता है और रूपात्मक दृष्टि से एकपदीय होने पर भी ऐसे वाक्य मूलत एकपदीय नही होते। उनमें इतर सम्बद्ध पद आक्षिप्त कर लिया जाता है। वास्तव म शब्द विशेप का अन्य सम्बद्ध शब्दो के साथ समन्वित अर्थ प्राप्त होने पर ही भाषागत सापेक्षिक महत्त्व स्थापित होता है अन्यथा भाषा में किसी भी स्वतन्त्र शब्द का अध्ययन लाभकर नही हो सकता, क्योंकि उसमें अभिव्यक्ति की कोई पूर्ण इकाई प्राप्त नही होती। सिर्फ 'शहीद' शब्द अपना कोशगत अर्थ रखते हुए भी, किसी प्रयोजन को सिद्ध करने में असमर्थ है। प्रासगिक अर्थ के अभाव में कोई प्रयोजन प्रकट नहीं होता, किन्तु शहीदे-मजहब, शहीदे-इश्क और शहीदे-वतन कहने मे बात कुछ अधिक स्पष्ट होती है। इसी प्रकार 'काफिर' एक शब्द है जो एक प्रकार के वाक्य में एक भाषा का, दूसरे में एक जाति या धर्मानुयायी का और तीसरे में काफिरिस्तान देश के निवासी का बोध कराता है। अत यह स्पष्ट है कि एक शब्द का सम्पूर्ण अर्थ दूसरे शब्द के प्रभाव एव सम्पर्क में ही प्राप्त होता है। 'स्पष्ट बात यह है कि हिंदी में कोई शब्द निरपेक्ष नही है। सज्ञा, विशेषण इत्यादि के रूप में उसका प्रयोजन वाक्य में अन्य सबद्ध शब्दों द्वारा निश्चित होता है, अर्थात् कभी-कभी शब्द समूह का वाक्यगत अर्थ अथवा पूरे वाक्य का अर्थ ही हिंदी वाक्य में स्वतन्त्र शब्दो का व्याकरणिक महत्त्व निश्चित करता है।''

१—इट मेय बी डिफाइन्ड क्वाइट सिंपली ऐज ए मिनिमम कम्प्लीट अटरेंस,' पृ० २०४, मॉडर्न लिंग्विस्टिक्स, साइमन पॉटर।

व्याकरण के दो भेद होते हैं—(१) पदरचना (२) वाक्यरचना, वाक्यरचना से हमारा तात्पर्य शब्दों तथा सविभक्तिक या पूर्वसर्ग (पूर्वसर्ग) एवं परसर्गयुक्त पदों की वाक्यगत संयोजना के नियमों से है। भारतीय आर्य भाषाओं में वाक्यरचना की एक निश्चित पद्धति पाई जाती है। अर्थात् सकर्मक क्रिया के साथ कर्ता कर्म क्रिया की संयोजना को वाक्य कहेंगे और अकर्मक क्रिया के साथ कर्ता-क्रिया की संयोजना को।

वाक्य में प्रयुक्त समस्त पदों को दो भागों में बाँटा जा सकता है—(१) उद्देश्य (२) विधेय। वास्तव में उद्देश्य-विधेय दो चीजें नहीं बल्कि एक सिक्के के दो पहलू हैं। 'वाक्य में स्पष्टरूप से उद्देश्य तथा विधेय का उपादान जरूरी नहीं है केवल उद्देश्य तथा केवल विधेय के उपादान वाले एक पद वाक्यों को भी वाक्य माना जाता है। पुराने वैय्याकरण 'गच्छ' 'मिथ' आदि जैसे केवल विधेयपरक वाक्यों में उद्देश्य (त्वं, युवम्) का आरोप करते हैं, तब उद्देश्य पूर्ति मानकर इसकी रचना करते हैं।[1] किसी भी रूप में नियमबद्ध सम्बन्धतत्वों के साथ कर्ता और क्रिया अथवा कर्ता कर्म और क्रिया या उद्देश्य और विधेय वाक्य के लिए आवश्यक उपादान या तत्व हैं किन्तु इनकी भी अपनी सीमाएँ हैं। वाक्य में इनकी उपस्थितिमात्र पूर्ण अर्थ के लिए पर्याप्त नहीं है। वाक्य में 'कर्ता' कर्म और क्रिया का अर्थ कर्ता-कर्म के अनेक विस्तारकों के कारण पल्लवित या नियन्त्रित हो जाता है और वाक्य केवल विशिष्ट विचारमात्र दे पाता है।[2]

तार की भाषा में एक भिन्न प्रकार की वाक्य रचना होती है। एक तार में लिखा है 'मुबारकबाद'। पाने वाला तार का प्रयोजन या इस 'वाक्य' का प्रयोजन समझ सकता है, किन्तु तार का स्थानान्तरण करने वाला बाबू नहीं समझ सकता। उसके मस्तिष्क में चार विभिन्न विचार एक साथ इस वाक्य के प्रसंग में आ सकते हैं यथा—(१) परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपलक्ष में मुबारकबाद (२) नौकरी मिलने के उपलक्ष में मुबारकबाद (३) शादी के उपलक्ष में मुबारकबाद (४) बच्चा पैदा होने के उपलक्ष में मुबारकबाद। इसी प्रकार बजाय में 'शुक्रिया' या 'थैंक्स' जैसे 'वाक्य' भी तार से आ सकते हैं।

१—हिंदी सिमेंटिक्स पृ० १७४ डॉ० बाहरी
२—प्राकृत पगलम्, डॉ० भोलाशंकर व्यास पृ० २७१।
३—वही पृ० २७१।
४—हिंदी सिमेंटिक्स पृ० १७४।

२—भारत-इरानी शाखा की वाक्यरचना का स्वरूप

प्रत्येक भाषा में वाक्यरचना का एक निश्चित सिद्धान्त एव वाक्यगत उद्देश्य-विधेय अथवा विभिन्न पदो का क्रम निर्धारित होता है। इस क्रम में परिवर्तन के साथ वाक्य के ढाँचे में अन्तर पडने के अतिरिक्त वाक्य के अर्थ या प्रभाव में भी कम या अधिक अन्तर पड जाता है। 'जर्मन वाक्य मे यदि शब्द क्रम बदल दें, तो आपको अर्थ मे परिवर्तन नही मिलेगा, किन्तु इसका परिणाम गैरमुहावरेदार रचना (अशुद्ध व्याकरण) होगा, जबकि अग्रेजी में इस स्थानविपर्यय से व्याकरण पर अच्छा परिणाम होगा, अर्थ मौलिक वाक्य से बिल्कुल भिन्न हो जायगा।'[१] यही बात सस्कृत और फारसी वाक्यरचना के लिए पूर्णत लागू होती है। सस्कृत में शब्दक्रम-परिवर्तन से अर्थ पर सामान्यत प्रभाव नही पडता जबकि फ़ारसी मे शब्दो या पदों के स्थानविपर्यय से मौलिक वाक्य का अर्थ बिल्कुल भिन्न हो जाता है।

भारोपीय आर्य भाषा परिवार मे भारत-ईरानी पूर्वी शाखा की भाषाएँ हैं, जिनकी साहित्यिक भाषा एव कथ्यभाषा की वाक्यरचना पद्धति में किंचित अन्तर के साथ अधिक समानता है। कथ्यवाक्यरचना में कर्ता, कर्म, क्रिया की पद्धति में दोनों शाखाओ में एकरूपता है। साहित्यिक भाषा की वाक्यरचना मे भारतीय शाखा की भाषा सस्कृत में सज्ञा और क्रिया के रूप मे विभक्तियों के अन्तर्भूत होने से वाक्य में कर्ता, कर्म और क्रिया के स्थान का निश्चित होना आवश्यक नही रहा। ईरानी शाखा की पुरानी भाषा अवेस्ता में भी विभक्तियो का स्थान सस्कृत जैसा ही है। 'सुप् विभक्तियो की दृष्टि से भी सस्कृत तथा अवेस्ता में कई समानताएँ पाई जाती है। सर्वप्रथम हम षष्ठी बहुवचन की विभक्ति-नाम् को लेते है, जो दोनों में पाई जाती है।''[२] जैसे स० मर्त्यानाम्, अवे० मश्यानम्, स० वसूनाम्, अवे० वोहुनम् इत्यादि। कालान्तर में अपने विकास 'प्रक्रिया में, खासकर अरबी प्रभाव से, जब पुरानी फारसी या पहलवी वियोगात्मक भाषा बन गई तो 'सुप् विभक्तियो का काम अव्ययों से लिया जाने लगा।'[३] भाषा के इस विकास के फलस्वरूप पुर सर्ग (पूर्वसर्गों) एव परसर्गों के उदय से ईरानी शाखा की नई फारसी में पुरानी

१—लैंग्वेज, पृ० ३४४, ओत्तो येस्पर्सन।

२—सस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, पृ० ७४, डॉ० भोलाशकर व्यास।

३—हि० भा० उ० वि०, पृ० ३०, डॉ० उ ना ति।

फ़ारसी से भिन्न कर्ता कर्म और क्रिया का स्थान निश्चित हो गया। इस प्रकार आधुनिक फ़ारसी में भी कर्ता+कर्म+क्रिया का नियम ही वाक्यरचना का नियम है। संस्कृत गद्यशैली में भी वाक्य के अन्तर्गत पदक्रम सामान्यतः निश्चित हुआ करता था क्योंकि साधारणतः क्रिया का वाक्यान्त में और कर्ता का वाक्यारम्भ में ही प्रयोग होता था लेकिन निश्चितता नहीं क्योंकि कारक सम्बन्धों को व्यक्त करने वाली विभक्तियों से युक्त होने के कारण संस्कृत क्रिया में यह शक्ति आ गई थी कि वह वाक्य में कहीं रहकर कर्ता-कर्म के साथ अपने एक ही प्रकार के सम्बन्ध और अर्थ का बोध करा सके।

संस्कृत वाक्य-रचना-प्रकृति विशेष जटिल नहीं है। कर्ता+क्रिया अथवा सकर्मक क्रिया होने से कर्म का भी क्रम वाक्य में रखा जाता है। सविभक्तिक विशेषण संज्ञा शब्दों के पूर्व उपस्थित होते हैं। यही स्थिति क्रियाविशेषण शब्दों की भी है। सम्बन्धबोधक परसर्ग अथवा संस्कृत वैयाकरणों की परिभाषा में 'कर्मप्रवचनीय' वाक्य की क्रिया के साथ किसी कर्तृभिन्न संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध व्यक्त करती है। शब्दों तथा वाक्यों को परस्पर कुछ अन्य प्रकार के अव्ययों से जोड़ा जाता है, जो समुच्चयबोधक होते हैं जैसा च परं तथा अथवा।[१] चूँकि प्रत्येक पद का पारस्परिक संबंध विभक्तियों द्वारा अभिव्यक्त होता है इसलिए वाक्य में शब्द की स्थानगत स्थिति का कोई महत्त्व नहीं है जैसा कि हिंदी आदि आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में है। एक संस्कृत वाक्य है—'स पुरुषः तं श्वानमताडयत्'। अर्थ को बनाए रखकर स्थानविपर्यय से इस वाक्य को हम—'सपुरुषोऽताडयत् श्वानं' अथवा 'तं श्वानमताडयत् स पुरुषः' के रूप में भी रख सकते हैं जिसका अर्थ प्रत्येक दशा में एक होगा—उस आदमी ने उस कुत्ते को मारा।

फ़ारसी वाक्य में वियोगात्मक भाषा होने के कारण प्रत्येक पद का पारस्परिक संबंध विशिष्ट विभक्ति या पूर्वसर्ग और परसर्ग द्वारा व्यक्त किया जाता है। वाक्य में प्रत्येक पद का स्थान नियत होता है। 'फ़ारसी में हिंदी के समान ही वाक्य के आरम्भ में कर्ता मध्य में कर्म सम्प्रदान तथा अन्त में क्रिया का स्थान होता है।[२] जैसे उस्ताद बा शिफ़्लां नसीहत गुफ़्त (या दाद)—शिक्षक ने लड़कों को उपदेश किया (या बताया)।

१—स भा शा अ पृ २३० डॉ भो शं व्या।

२—हि भा प नि पृ १४६, भ ना ति।

पदरचना के विशेषण-प्रकरण में यह बताया जा चुका है कि विशेषण शब्दों का फारसी वाक्य में पूर्वप्रयोग एव परप्रयोग दोनो प्रचलित हैं। प्रविशेषख के रूप में विशेषण के दुहरे-तिहरे प्रयोग भी चलते हैं। आखीरी विशेषण के पूर्व 'व' मयोजक बढ जाता है। जैसे अस्पम-ताजी सुर्ख तेजो बुलन्द अस्त–

मेग घोडा अरबी, लाल, तेज व बुलन्द है।

फारसी वाक्य में क्रियाविशेषण क्रिया से पूर्व ही आता है, जैसे अहमद दर मैदान तेज ख्वाहेद रफ्त—अहमद मैदान में तेज जायगा।

वाक्य मे कारक सम्बन्धो का बोध पुरसर्ग या पूर्वसर्ग द्वारा कराया जाता है किंतु कर्ताकारक के साथ कोई पुरसर्ग या पूर्वसर्ग नही लगाया जाता। 'आधुनिक फारसी मे उद्देश्य की निरपेक्ष भावेन प्रस्तावना के लिए कर्ताकारक वाक्य के आरम्भ मे ही रखा जाता है जो इसके बाद आने वाली व्याकरणिक सघटना मे स्वतन्त्र होता है।'[1] क्रिया के वचन का निर्णय कर्ता के वचन के अनुसार होता है जैसे मरद गुफ्त-पुरुष ने कहा, मरदान गुफ्तन्द-पुरुषो ने कहा। वाक्य मे क्रिया लिंगमुक्त होती है, जैसे जान मीसुरायद-स्त्री गाती है और मरद मीसुरायद मर्द गाता है।

अस्त, अन्द, बूद, बूदन्द—है, हैं, था, थे, थी, थीं जैसी सत्तार्थक क्रियाओं का प्रयोग भी वाक्य मे किया जाता है, साथ ही इनका सहायक-क्रिया का रूप भी प्रचलित है, जैसे खिताबे-अकबर जलाउद्दीन बूद-अकबर की उपाधि जलालुद्दीन थी और अकबर व जहाँगीर दर आगरह् तख्तनशीन शुदह् बूदन्द–अकबर और जहाँगीर आगरा में सिंहासनारूढ हुए थे। काल-व्यापार के अनुसार फारसी भूतकाल क्रिया की छ विधाए होती हैं किन्तु वर्तमान और भविष्यत् काल की क्रिया में कोई काल-विधा नही होती।[2]

वाक्य में फारसी क्रिया की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उसमे पुरुष वाचक सर्वनाम अन्तर्भूत कर लिए जाते है, जैसे जैद पेसरे-वजीर रा गुफतम-(मैंने) वजीर के लडके जैद से कहा। यके अज मलूके अरब रा हदीसे-लैला-ओ-मजनूं बगुफ्तन्द-अरब के बादशाहो में एक से (उन्होंने) लैला और मजनू की नई खबर सुनाई। इन दोना उदाहरणो में 'गुफ्तम' में 'मैंने' और 'गुफतन्द' मे 'उन्होंने' सर्वनाम क्रिया मे ही अन्तर्भूत है।

विशृंखलवाक्य—फारसी में वाक्य की एक ही क्रिया के साथ कर्ता सज्ञा के अतिरिक्त उसका प्रतिनिधि सर्वनाम भी उपस्थित हो जाता है, खासकर

१—हायर परसियन ग्रामर, पृ० ४४५, फिलॉट्।
२—फारसी ग्रामदनामा।

साधारण वाक्य मे या किसी उपवाक्य मे एक वाक्य टूट जाता है और बिना क्रिया के हो जाता है तथा उद्देश्य (कर्ता) से संबद्ध संज्ञा या सर्वनाम अपनी क्रिया के साथ आती है जैसे मन चश्मम नमीबीनद—मैं मेरी आँखें नहीं देखती अर्थात् मैं नहीं देख सकता।[१] फिलाट महोदय ने लिखा है कि अरबी में ऐसी वाक्य संघटना सामान्य बात है और उसी भाषा से फारसी ने यह पद्धति प्राप्त की है। ऐसे वाक्य को भिन्न वाक्य कहा जाता है।

'वर्तमान फारसी में जहाँ कि प्रतिनिधि सर्वनाम निपात (प्रो एन्क्लीटिक) है, इस प्रकार के वाक्य बहुतायत से प्रयुक्त होते है।[२] यथा—

(१) मम् जनश बीमार शुद—माथा उसकी पत्नी बीमार हो गई अर्थात् भाभी बीमार हो गई।

(२) मुराद मग़ाज़श पाक शुद—मुराद उसकी शरारत उड़ गई अर्थात् मुराद निकम्मा हो गया।

इस प्रकार की वाक्य रचना अवश्य कठिन है। गतिरोध का कारण एक ही उपवाक्य मे विशेष्य संज्ञा और उसके प्रतिनिधि सर्वनाम का एक साथ उपस्थित होना है।

मिश्रित और संयुक्तवाक्य—'व्याख्यात्मक उपवाक्यों की सहायता से जब किसी वाक्य का विस्तार किया जाय तो उसे मिश्रित वाक्य कहते है और व्याख्यात्मक उपवाक्य आश्रित उपवाक्य कहे जाते है।[४] कुछ उपवाक्य क्रिया विशेषण—शर्त कारण परिणाम स्थान काल इत्यादि का परिचय देते है कुछ संबंध का परिचय तथा कुछ विधेयार्थ का परिचय कराते है।

जब एक साधारण वाक्य समानाधिकरण उपवाक्यों की सहायता से विस्तारित किया जाता है तो उसे संयुक्त वाक्य कहते है। ऐसे समानाधिकरण उपवाक्य व्याख्यात्मक नहीं होते। ये संयोजकों के द्वारा संयुक्त हो सकते है,

१—'दी सैन्टेन्स एज वैन ब्रोकेन आफ् एड सेपट स्टैंडिंग बिफ़ोर ए वर्ब ए प्रोनाउन और नाउन इन अँपोजीशन टु दी सब्जेक्ट बीइंग इन्ट्रोड्यूस्ड एंड फ़्लोज आफ्टर दी वर्ब।' पृ ४८६ हायर परशियन ग्रामर।

२—वही पृ ४८६।

३—नागरी प्रचारिणी पत्रिका मालवीय शती विशेषांक पृ ५१८ पृ म स्मिरनोव्।

४—वही पृ ५१७।

५—हायर परशियन ग्रामर, पृ ३४९ फिलॉट।

प्राकृत ने फिर भी संस्कृत वाक्यरचना की परम्परा को सुरक्षित रखा किन्तु अपभ्रंश काल में ज्यों-ज्यों सुप् तिङो का लोप निर्विभक्तिक पदों का प्रयोग परसर्गों का उदय होने लगा त्यों-त्यों भारतीय आर्य भाषा विश्लिष्ट प्रकृति की ओर बढ़ने लगी और न भा आ में आते-आते संस्कृत वाक्यरचना का पूरा गुणात्मक परिवर्तन हो गया। यही कारण है कि संस्कृत की वाक्यरचना आज की भारतीय आर्य भाषाओं व बोलियों की वाक्यरचना से भिन्न दिखाई पड़ती है।[१]

अपभ्रंश काल में भाषा की विश्लिष्टात्मक प्रवृत्ति के कारण संस्कृत वाक्य रचना और उसके कारक नियम क्रमश सरलता की ओर बढ़ने लगे। फलस्वरूप संस्कृत की वाक्य परम्परा में परिवर्तन उपस्थित हो गया। 'आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं ने इसी विश्लिष्ट प्रकृति का आश्रय लिया है। यही कारण है कि हमें संस्कृत की वाक्य रचना आज की भाषाओं व बोलियों की वाक्य रचना से भिन्न दिखाई देगी।[२] इस बात की निश्चित सम्भावना दिखाई पड़ती है कि जिस प्रकार फारसी ने हिंदी परसर्गों एवं सर्वनामों के विकास पर अपना प्रभाव डाला उसी प्रकार भारत में अपनी उपस्थिति से न भा आ के प्रारम्भिक विकास के दिनों में वाक्य रचना प्रकृति पर भी प्रभाव डाला हो और इसे सरलता की ओर अग्रसित करने में सहायता भी प्रदान की हो। मध्यकाल में सरलता की यह प्रवृत्ति उपयोगी सिद्ध हुई। भाषा में इस प्रकार के विकास के महत्व की चर्चा कर ओटो जेस्पर्सन ने लिखा है कि भाषा की यह सरलता की प्रवृत्ति विकासवादी तथा लाभकर है इस बात को पुरानी पीढ़ी के भाषा-वैज्ञानिकों ने उपेक्षित ही समझा क्योंकि प्राचीन भाषाओं के रूप में उन्होंने एक रम्य सुव्यवस्थित विश्व का दर्शन किया और वे उसके अभ्यस्त हो गए थे फलस्वरूप उन्होंने उस व्यवस्था का नवीन भाषाओं में अभाव पाया।[३] संस्कृत वाक्य रचना के परवर्ती विकास अथवा आधुनिक भाषाओं की वाक्य रचना-प्रकृति का आधार भाषा विकास की यही सरलता की प्रवृत्ति है जिसने वाक्य के ढाँचे या संघटना में विकास कर उसे आधुनिक स्वरूप प्रदान किया।

४—आधुनिक भारतीय आर्यभाषा हिंदी की वाक्यरचना

प्राचीन अथवा मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा की साहित्यिक शैली से भिन्न न भा आ की सम्य प्रवृत्ति से प्राय कर्ता+कर्म+क्रिया वाली वाक्य

१—प्राकृत वैयाकरण पृ २७१ डॉ बोलाशंकर व्यास।
२—उ भा हा म पृ २१२ डॉ भो ना व्यास।
३—लैंग्वेज पृ ३११ ओटो जेस्पर्सन।

रचनात्मक प्रवृत्ति पाई जाती है। विशेषण प्राय विशेष्य के पूर्व प्रयुक्त होता है[1], जो सामान्यत संस्कृत कथ्य प्रवृत्ति के समान ही है। संस्कृत तथा आधुनिक भाषाओ की सामान्य प्रवृत्ति की चर्चाकर डॉ० रामविलास शर्मा ने लिखा है कि 'इधर भारतीय भाषाओ में संस्कृत तथा उत्तर भारत की अन्य भाषाएँ वाक्य रचना में एक से नियमो का पालन करती हैं कर्ता पहले, क्रिया अन्त मे, विशेषण मुख्य शब्द से पहले, कर्म और क्रिया से सम्बन्धित शब्द क्रिया के बाद न आकर उसमे पहले आयेंगे। इससे सिद्ध हुआ कि संस्कृत और हिन्दी आदि प्राचीन-नवीन भाषाओ की वाक्य रचना में मौलिक अन्तर नही है।'[2]

हिंदी में कथ्य एव साहित्यिक दोनों शैलियों की वाक्यरचना-पद्धति प्राय एक समान होती है। खडी बोली हिंदी की वाक्यरचना का यह रूप सर्वप्रथम दक्खिनी हिंदी की साहित्यिक कृति में १४ वी शती ईसवी से ही उपलब्ध होता है। 'इस प्रकार खडी हिन्दी के सर्वप्रथम कवि यही दक्खिनी कवि थे। एक ओर उन्होने बोलचाल की कौरवी को साहित्यिक भाषा का रूप दिया तो दूसरी तरफ उनकी कृतियो ने उर्दू कविता का प्रारम्भ किया। हमारी हिन्दी उर्दू की विशेषतौर से गद्य की ऋणी है। दिल्ली के राज्यपालो, सेनापतियो और दूसरे शासकों के साथ कौरवी भारत के भिन्न-भिन्न भागो मे पहुँची है, हाँ साधारण बोलचाल के लिए ही, राजकीय कार्य या साहित्य के लिए नही। वह काम तो फारसी सभाले हुए थी।'[3] ऐसी परिस्थिति में फारसीदा हिंदी लेखकों के लिए फारसी-प्रभाव से बचना न सिर्फ मुश्किल था बल्कि असभव भी। अस्तु जाने-अनजाने न केवल फारसी शब्दो का एक समूह भाषा में प्रवृष्ट हो गया, वरन् फारसी प्रयोग भी उसमे बहुतायत से होने लगे। 'आज भी हमारी साहित्यिक देशी भाषा मे इसी प्रकार की फारसी तरकीबें या प्रयोग बहुतायत से मौजूद हैं।'[4] ग्रियसन के मत से उर्दू वाक्य में फारसी शब्द-भडार का आधिक्य फारसी प्रभाव का प्रमाण नही है, बल्कि वाक्यरचना का फारसी शब्द क्रम (आर्डर आफ् वर्ड्स इन ए सेंटेम) उसका प्रमाण है। उन्ही के शब्दो में, 'हिन्दू किसी बोली को शब्द भडार के आधार पर नही वरन् उसके शब्द क्रम के आधार पर उसे उर्दू अर्थात् हिन्दुस्तानी का फारसीमत वाला रूप मानते हैं।'[5]

१—प्राकृत पैंगलम, पृ० २७५, डॉ० भो० श० व्या०।
२—भाषा और समाज, पृ० ५१, डॉ० रा० वि० श०।
३—दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा, पृ० ५, राहुल साकृत्यायन।
४—उर्दू साहित्य का इतिहास—भाग १, पृ० ७, डॉ० रामबाबू सक्सेना।
५—भाषा और समाज, पृ० ३४८, डॉ० रामविलास शर्मा।

उपर्युक्त परिस्थितियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी की स्वतन्त्र वाक्य रचना पद्धति ने अपने विकास की मंज़िल में जहाँ प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं से अनेक तत्व ग्रहण किए वहीं ईरानी आर्यभाषा फारसी से भी कुछ तत्व स्वीकार किए हैं।

साधारण वाक्य—हिंदी साधारण वाक्य का नियम जैसा कि पहले लिखा जा चुका है उद्देश्य और विधेय के मेल से बनाने का है अर्थात् कर्ता+कर्म+क्रिया के संयोग से साधारण वाक्य बनता है। 'साधारण वाक्य में एक संज्ञा उद्देश्य और एक क्रिया विधेय होती है। और उन्हें क्रमशः साधारण उद्देश्य और साधारण विधेय कहते हैं। उद्देश्य बहुधा कर्ताकारक में रहता है, पर कभी-कभी वह दूसरे कारकों में भी आता है।[१] यदि उद्देश्य और विधेय अपने विशेषतासूचक शब्दों के साथ हैं तो कर्ता और कर्म के पूर्व विशेषण तथा क्रिया के पूर्व क्रिया-विशेषण का प्रयोग किया जाता है, जैसे—

१—राम ने सीता को जंगल में निर्वासित कर दिया।

२—अयोध्या के राजा राम ने सती सीता को भयंकर जंगल में कठोरता-पूर्वक निर्वासित कर दिया।

प्रथम वाक्य बिना विशेषण और क्रियाविशेषण के है, दूसरा उनसे युक्त। वाक्य में जब कोई क्रिया ऐसी आ जाती है जिसका उद्देश्य भिन्न लिङ्ग वचन पुरुष युक्त कर्ता कारक हो तब सोचना होता है कि क्रिया का लिङ्ग-वचन आदि किसके अनुसार हो। ऐसी स्थिति में 'राम तू और मैं जाऊँगा' न कहकर 'मैं तू और राम जायेंगे' कहना अधिक ठीक होता है। इसी प्रकार बहुवचनात्मक कर्ता या एकवचनात्मक दो कर्ता में विशेषण एक स्त्रीलिङ्ग और दूसरा पुंलिङ्ग की स्थिति में 'हजारों पुरुष और स्त्रियाँ आई थीं' न कहकर हजारों स्त्री-पुरुष आए थे' कहना अधिक ठीक होता है।

मिश्रित और संयुक्तवाक्य—यदि विचार एक अन्य पर आश्रित और निर्भर हों तो उनका सम्बन्ध और स्पष्ट अर्थ मिश्रित अथवा संयुक्त वाक्यों में अच्छी तरह दिखाया जा सकता है।[२] ऐसे वाक्यों का हिंदी में सम्यक् विकास अंग्रेजी के प्रभाव से संभव हुआ किन्तु प्रारम्भिक हिंदी में ऐसे वाक्यों की संख्या का विकास विशिष्ट रूप से फारसी के प्रभाव से ही दिखाई पड़ता

१—हिं व्या पृ ६१४ का प्र पु।
२—हिं ब पृ ६५ कि ता बा।
३—हिंदी सेमन्टिक्स्, पृ ७७ डॉ बाहरी।

है। प्रारम्भिक हिंदी में आज की परिभाषा के अनुसार मिश्रित या सयुक्त वाक्य के उदाहरण—

(१) जो चाहहिं सो लेहि।
(२) जो हुउ रक सोइ हुउ राजा।

'इन वाक्यो में प्राय सम्बन्धवाचक वाक्य को पहले रक्खा जाता है। सबध वाचक वाक्य को निर्देशात्मक से पूर्व रखने की प्रणाली को काल्डवेल ने न० भा० आ० पर द्राविड प्रभाव माना है।'[1] किन्तु न० भा० आ० पर, खासकर हिंदी पर, यह प्रभाव द्राविड भाषाओ का नही आर्य भाषा फारसी का है। खडी बोली हिंदी के मिश्रित या सयुक्त वाक्यो पर, चाहे आरम्भ में सबधवाचक वाक्य रक्खे जाँय या निर्देशात्मक, फारसी वाक्यरचना पद्धति का ही प्रभाव है, जिनका अंग्रेजी के प्रभाव से अधिक गुफित और जटिल रूप विकसित हुआ। निम्न-लिखित फारसी वाक्यों के आधार पर उपर्युक्त तथ्य को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है —

(१) हरकि मादर व पिदर रा बयाजारद[2], बू-ए-बिहिश्त न यावद।[3]

(२) हरकि नमाज न कुनद[4], ईमान न दारद[5], व हरकि ज़कात[6] नदेहद[7], नमाज़श अदा नशवद[8]।

(३) गर फ़िरदोस[9] बर रू-ए जमी[10] अस्त।
हमी[11] अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त।
(४) अगर दोस्त ख्वाही[12], खुदख्वाह[13] मबाश[14]।
(५) ज़बाने-फारसी मुश्किल अस्त, लाकुन शीरी[15] अस्त।
(६) कार कुन, कि पशेमा[16] नगरदी[17]।

उपर्युक्त फारसी वाक्यो से देखा जा सकता है कि सम्बन्धवाचक एव निर्देशात्मक दोनो प्रकार के उपवाक्यो को फारसी वाक्य-सघटना में पहले रक्खा जाता है। अस्तु मिश्रित या सयुक्त वाक्यों की रचना पर काल्डवेल महोदय के मत से भिन्न न० भा० आ० या हिंदी पर फ़ारसी प्रभाव ही पड़ा है।

१—प्राकृत पैंगलम, पृ० २७६, डॉ० भो० श० व्यास। २—सताना। ३—पाना। ४—करना। ५—रखना। ६—कर। ७—देना। ८—होना। ९—स्वर्ग। १०—पृथ्वीपर। ११—यही। १२—चाहना। १३—स्वार्थी। १४—न होना। १५—मधुर। १६—शर्मिन्दा। १७—बनना; ग्रहण करना।

५—फ़ारसी और हिंदी वाक्यरचना की समानता

(१) मुख्यकर्म तथा गौणकर्म के प्रयोग का फ़ारसी–हिंदी में एक ही तरीका है, जैसे महमद मुहम्मद रा गाव–सुर्ख दाद—महमद ने मुहम्मद को गाय लाल दी।

(२) फ़ारसी-हिंदी दोनों में क्रिया-विशेषण क्रिया से पूर्व आता है जैसे राजा खूब मीगुरायद—राजा अच्छा गाती है।

(३) भी [नीज हम] का प्रयोग फ़ारसी-हिंदी में समान रूप से कर्ता के साथ किया जाता है जैसे मन नीज तआम खुरदम—मैंने भी खाना खाया।

(४) समुच्चयबोधक में यदि दो तीन चार अथवा पांच शब्द दिए गए हों तो समावाक [अत्फ़] फ़ारसी और हिंदी दोनों में अंतिम पद से पूर्व प्रयोग में आता है, जैसे हामिद अहमद महमूद व मुहम्मद ईं जा बूदन्द—हामिद अहमद महमूद व मुहम्मद यहाँ थे।

(५) फ़ारसी हाय उफ़ इत्यादि संबोधन हिंदी-फ़ारसी दोनों में वाक्यारंभ में आते हैं, जैसे हाय! कलमे-मन गुम शुद—हाय! मेरी कलम खो गई।

(६) फ़ारसी-हिंदी दोनों में पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पूर्व प्रयोग की जाती है, जैसे मन तस्वीर दीदह खुश शुदम—मैं तस्वीर देखकर खुश हुआ।

(७) फ़ारसी और हिंदी दोनों में वाक्यरचना की परकथन और परोक्ष कथन विधि एक ही है, जो अंग्रेजी से भिन्न है, जैसे ऊ गुफ़्त कि मीरवम—उसने कहा कि मैं जाता हूँ। मन गुफ़्त कि [मन] ख़्वाहम रफ़्त—मैंने कहा कि मैं जाऊँगा।

( ) फ़ारसी-हिंदी में वाक्यगत सत्तार्थक क्रिया एवं संयुक्त क्रिया के प्रयोग की एक ही विधि है। अंग्रेजी में भी ऐसा ही है। 'मोटे तौर पर कुछ अन्तर होने पर भी हिन्दी एवं अंग्रेजी के साथ फ़ारसी क्रियापदों की तुलना करने पर एक प्रकार की समानता ही मिलती है।'[१] उदाहरण—ऊ मर्दे-नेक अस्त—वह नेक मर्द है। ऊ आमदह अस्त—वह आया है।

(९) फ़ारसी और हिंदी में वाक्यगत प्रत्येक पद—अर्थतत्व—के प्रयोग की पद्धति व क्रम लगभग एक-सा है, जैसे—

फ़ारसी—चाय हाज़िरस्त बखुरेद! मुआफ़ दारेद आक़ा! नमीदानम कि तु चकी आमदह और मन मन कन्जाम बह मीरवद!

१—दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा पृ ११९ राहुल सांकृत्यायन।

हिंदी—चाय हाजिर है, पीजिए। माफ करें आगा। मैं नही पीता, क्योंकि गर्मी होती है, और एक प्याला मे क्या होता है।

फारसी—आवुर्दह अन्द कि नौशरवाने-आदिल रा दर शिकारगाहे सीदे कवाव मीकरदन्द। नमक न बूद, गुलामे रा वरोस्ता फिरस्ताद, ता नमक आरद। नौशरवान गुफ्त, नमक वकीमत विस्ता, ता वेरस्मी न शवद।

हिंदी—कहा जाता है कि नौशरवाने-आदिल के लिए शिकारगाह मे वे (नौकर) शिकार का कवाव वनाते थे। नमक न था, एक गुलाम को आसपास भेजा, ताकि नमक लावे। नौशेरवान ने कहा, नमक कीमत से लाना, ताकि वेरस्मी न हो।

वली की कविता है—

"शुक्र अल्ला कि यार हमरग अस्त। यारे-मन दर-जहाँ अजव रग अस्त। रग-वारग आशना हैगा।"[1]

प्रथम दो चरण इत्तिफाक से फारसी हो गए हैं, जिनकी हिंदी इस प्रकार है—'शुक्र अल्ला कि यार हमरग है। यारे-मन दर-जहाँ अजव रग है।'

केवल मूलशब्द क्रिया में भाषा का परिवर्तन कर देने मात्र से पूरी कविता का ढाचा फारसी से हिंदी हो गया। वाक्य सघटना की प्रकृति मे परस्पर साम्य का यह प्रमाण है।

६—फारसी वाक्यरचना-पद्धति का प्रभाव

(१) सयुक्तवाक्य [जुमला मुरक्कव] के सिलसिले में ध्यान रखना चाहिए कि हिंदी के समानाधिकरण एव आश्रित उपवाक्यो के अनेक फ़ारसी सयोजक हिंदी वाक्यों मे प्रयुक्त होते हैं। लेकिन, मगर, व, समानाधिकरण सयोजक है, चूकि, कि, अगर, मगर, चुनाचे, गोया, हालाकि, गोकि, वशर्तेकि, ताकि इत्यादि आश्रित सयोजक हैं। सयोजक भी शाब्दिक प्रभाव में शामिल किए जा सकते है, किंतु इनका आगमन वाक्यगत प्रयोग से ही हुआ है।

(२) परिचयात्मक सामासिक पदावली या वाक्यांश में फारसी पद्धति प्रयोग मे लाई जाती है, किंतु 'याए-कैसरा' ('ए' की वृद्धि) को छोडकर, जैसे शाहे-आलम से शाहआलम, नूरे-जहाँ से नूरजहाँ और सूवा-ए-दिल्ली से सूवा दिल्ली[2], इसी प्रकार सूवेदार-अहमदनगर, जिलाधीश-वनारस, मन्त्री

१—दक्खिनी हिंदी काव्यधारा, पृ० ३१२।

२—परसियन इनफ्लुएंस आन् हिंदी, पृ० ५६, डॉ० वाहरी।

उत्तरप्रदेश सरकार, सेवा युवक-संघ व बम्बई राज्यपाल पंजाब। कभी कभी फ़ारसी समासयुक्त पदावली का हिंदी वाक्यों में ज्यों का त्यों प्रयोग होता है, जैसे शेरे-कश्मीर शेख अब्दुल्ला, सदरे-रियासत कर्णसिंह, हुक्मे हिंद तारासिंह इत्यादि।

(३) फ़ारसी और हिंदी में प्रश्नवाचक शब्द वाक्य के पूर्व में ही आते हैं, जैसे कुदाम कस ईं जा आमदह् अस्त—कौन व्यक्ति इस जगह आया है? आया तू मी आयद—क्या वह आ रहा है? प्रश्नवाचक वाक्यरचना के लिए अंग्रेज़ी की भाँति क्रिया पदों का वाक्यारंभ में प्रयोग नहीं होता। फ़ारसी में प्रश्नवाचक शब्द सामान्यतः कम लगते हैं, अर्थ या वाक्य-बलाघात से प्रश्न का बोध होता है, जैसे ऊ आमदह् अस्त?—वह आया है? तू खुर्दी—तू ने खाया? बहुत सम्भव है हिंदी में यह पद्धति फ़ारसी से ही आई हो।

(४) जैसा कि लिखा जा चुका है फ़ारसी और हिंदी दोनों में आदरार्थ में एक वचन कर्ता की क्रिया भी बहुवचन हो जाती है और साधारण अभिव्यंजना में कर्ता के वचन के अनुसार क्रिया का वचन निर्धारित होता है, जैसे च रा उस्ताद ऊ रा दुश्मन दारन्द—वे उस्ताद उसको दुश्मन मानते हैं।

(५) 'अरबी में क्रिया पद से ही वाक्य आरम्भ होता है'[१] जैसे क़ाला अल्लाहु अर्थात् बोले ईश्वर-ईश्वर बोले। फ़ारसी में ऐसा नियम नहीं है, पर अरबी से फ़ारसी में होते हुए यह नियम हिंदी में भी आया। इंशा अल्ला जैसे अरबीदाँ लेखकों ने इस पद्धति को अपनाया है, जैसे 'सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ अपने बनाने वाले के सामने जिसने हम सबको बनाया।'[२] उपर्युक्त नियम के अनुसार इस वाक्य का पूर्ण अरबी रूप इस प्रकार होगा— झुकाकर सिर, रगड़ता हूँ नाक अपने बनाने वाले के सामने बनाया जिसने हम सबको। यह फ़ारसी का प्रत्यक्ष प्रभाव है।

(६) फ़ारसी समुच्चय बोधक 'कि' अव्यय का हिंदी वाक्यरचना में विशेष महत्व आरंभिक गद्य साहित्य के जन्म में ही स्थापित हो चुका था। यद्यपि यह शब्दगत प्रभाव है, पर वाक्यरचना से ही यह हिंदी में आया। जहाँगीर के समय में शाह मीरा जी ने लिखा[३]—'पसी यों जानार है, कि उसकी निसबती में भी उसी का भार है।' 'सो अपस्यूँ दिखलाता है, कि यों

१—हिं० भा० व लि० पृ० ५६ उ० भा० लि०।
२—रानी केतकी की कहानी पृ० १।
३—दक्खिनी हिंदी काव्यधारा पृ० ६।

रखा—।' 'प्रो० ज्यूल ब्लाख ने लिखा है कि 'अब इस प्रकार की रचनाओं में फ़ारसी समुच्चय-बोधकों का बहुत प्रयोग होता है, किन्तु उनसे रचना में कोई अन्तर नहीं पड़ता

हि० मैंने इरादा किया कि चलूं

गोपाल ने जाना कि तोते में अब् प्रान् नहिं है।''

ब्रजभाषा की पुरानी गद्यपुस्तक 'सिंगार सुतक' में भी यह संयोजक मौजूद है—'तब यह मुनि कस्यप यह विचारी कि भाई अबहिं सन्ध्या समो है रतिदान दीबे कहूँ उचित नाहीं।'

७—फारसी के पद समूहों या वाक्यांशों का हिंदी में प्रयोग

इज़ाफत वाले सामासिक पदों के कारण प्रचलित नये पद-समूहों या वाक्यांशों का हिंदी में वाक्यगत प्रयोग आरम्भ हुआ। ऐसे प्रयोग उर्दू की कथ्यशैली में कम, किंतु साहित्यिक शैली में अधिक मिलते हैं। बालमुकुन्द गुप्त, प्रेमचन्द और किशनचन्दर जैसे हिंदी लेखकों में भी यह बात पाई जाती है। इस ढंग के कुछ विशिष्ट प्रयोग भी हिंदी वाक्यों में प्रचलित हैं जैसे शेरे-दक्न, वज़ीरे-आज़म, नौशेरवाने-आदिल, अखबारे-बनारस, वगैरह-वगैरह, आदि।

कुछ अरबी पद-समूह फारसी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होने लगे और फारसी से व उर्दू-शैली में भी आ गये और प्रचलित हो गए, जैसे—'तो सबसे पहले आपने (मुहम्मद) महाजरीन[3] और इन्सार[4] में अखव्वत यानी भाईचारा कायम कराया जो तारीखे-दुनिया में अव्वल और अछूता वाक्या[5] है जिसे रब्ब-अल्-अलमीन[6] बतौर एहसान[7] यों फरमाता है कि ' हक़ीदह् मुहम्मदी - मज़हब अहल हदीस।

इसी प्रकार उर्दू शैली में रोज़-ए-जुमआ, पेश-अज़-सलाम करदन, अज़ वतन, ताक़यामत, ताज़िन्दी-ताबे-ज़िन्दगी, बर मज़ार, दर मस्जिद, दर मदरसा, वख़ानह्, बक़लमखुद, बातौरतरीकह्, सुबहान अल्लह्, अलहम्द-उल्-इल्लाह् (खुदा की तारीफ के वचन), बिस्मिल्लहिर्रहमानिर्रहीम (ईश्वर के नाम पर श्रीगणेश) जैसे अनेक प्रयोग प्रचलित हैं। ताबे ज़िन्दगी और बक़लमखुद जैसे प्रयोग बोलचाल की हिंदी में भी प्रचलित हैं।

१—भारतीय आर्यभाषा, पृ० ३४०।

२—दक्खिनी हिंदी काव्यधारा, पृ० ३१, राहुल सांकृत्यायन।

३—सहाई, ४—घेरेवदा, ५—घटना, ६—ईश्वर, ७—कृतज्ञता।

——हिंदी साहित्यकारों पर फ़ारसी वाक्यरचना की साहित्यिक शैली का प्रभाव——

१ इंशाअल्ला—बाबू श्यामसुन्दर दास ने लिखा है कि इंशा तक 'हिंदी गद्य का कोई स्वरूप निश्चित नहीं हुआ था। ऐसी परिस्थिति में साहित्यिक हिंदी की वाक्य-संघटना पर फारसी का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ— पर वाक्यप्रभाव का विश्लेषण किया जा चुका है। इंशाअल्ला ने आगे लिखा—'डौल डाल एक अनोखी बात का (पृ २)। हिंदी क्रम से इसे इस प्रकार लिखा जायगा—एक अनोखी बात का डौल डाल।

दूसरा उदाहरण—'रानी केतकी का चाहत से बेकल होना और मदनबान का साथ देने से नाहीं करना और लेना उसी भभूत का जो गुरु जी दे गए थे आँख मिचौवल के बहाने अपनी माँ रानी कामलता से। इस वाक्य में पदक्रम पर फारसी प्रभाव के अतिरिक्त इसका मिश्रितवाक्य का रूप भी फारसी ढंग का ही है। डॉ जगन्नाथ शर्मा ने इंशाअल्ला के बारे में लिखा है कि इसके अतिरिक्त इनकी वाक्ययोजना में भी फारसी का ढंग है।[1]

२ दक्खिनी हिंदी के लेखक—खड़ी बोली हिंदी में सर्वनाम (कर्ता-कारक) वाक्यारम्भ में ही प्रयुक्त होता है। सर्वनाम के अप्रयोग अथवा क्रिया के सन्निकट प्रयोग पर फारसी पद्धति का असर संभव हो सकता है। दक्खिनी हिंदी के लेखकों में यह पद्धति पाई जाती है। दूसरे निर्देशात्मक एवं सम्बन्ध वाचक उपवाक्यों से बने मिश्रित और संयुक्तवाक्यों का प्रचलन भी हिंदी में दक्खिनी लेखकों ने ही आरम्भ किया। तीसरे, वाक्यगत क्रिया के लिङ्ग-नियम न बिठाई अथवा स्त्रीलिङ्ग कर्ता के साथ पुल्लिङ्ग क्रिया के प्रयोग पर स्पष्ट फारसी प्रभाव स्वीकार करना चाहिए। इंशाअल्ला कृत रानी केतकी की कहानी (१ ४ ई) से लगभग ४ वर्ष पूर्व ख्वाजा बन्दानेवाज़ गेसूदराज़ (मुहम्मद हुसैनी) के मिश्रित वाक्य का उदाहरण है 'अगर उसमें ते एक पर्दा उठ जावे तो उसकी आग ते मैं जलूं (दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा पृ ४)। मुल्लावजही ने 'सबरस' में लिखा—'आशिक जो मैखाने में पाया सो जावे न

१—रानी केतकी की कहानी भूमिका पृ ११।

२—हिंदी की गद्यशैली का विकास पृ २१।

जाहिद[1] के हाथ ने आया। आशिकी मुसाहिबत होर यारी हैं, इबादत[2] बदगी होर खिदमतगारी है। महबूबा हैं सो साहब की गोद मे सोते, चाकर हैं सो हाथ जोडकर खडे होते।' (वही, पृ० ३२)। 'साहब' पुलिङ्ग है, अत 'महबूबा' स्त्रीलिङ्ग बहुवचन होना चाहिए, किन्तु कर्ता की क्रिया पुलिङ्ग है। स्मरण रहे फारसी-क्रिया में लिङ्ग-विचार नही होता। वली ने अपनी वाक्य-सघटना में फारसी तरकीबो का प्रयोग अधिक बढा दिया, जैसे—

'दर-कफे[3]-यार काफिया[4] तग अस्त रग-बा-रग आशना हैगा।'

३ अम्बिका प्रसाद वाजपेयी—इन्होने फारसी-प्रभावित हिंदी वाक्यो का उदाहरण दिया है[5] (१) न सिर्फ आप ही आवें बल्कि अपने दोस्तो को भी लावें। (२) बावजूद इसके कि मैं था, मुझे इत्तिला न दी गई।

४ राजा शिवप्रसाद सितारेहिद—ऊपर बताए गए आधार पर—'कुछ अकवाल अपने बुजुर्गों का '

'सिवाय इसके मैं तो आप चाहता हूँ कि कोई मेरे मन की थाह लेवे और अच्छी तरह से जाँचे। मारे व्रत और उपवासो के मैंने अपना फूल सा शरीर काटा बनाया।' (हिंदी की गद्यशैली का विकास, पृ० ३५)। 'खुद' सर्वनाम की तरह 'आप' का, और पुरसर्ग 'अज' की तरह 'मारे' का फारसी ढग से वाक्यगत प्रयोग किया गया है। प० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने लिखा है कि 'विशेष ढग से विकास के कारण हिंदी में पुरसर्गों का अभाव है, किन्तु फारसी के सम्पर्क से इसमें काफी सख्या मे पुरसर्ग आ गए है,'[6] जैसे दरअसल न कि, हुक्म से, बावजूद इसके आदि।

५ प० बालकृष्ण भट्ट—'मृतक के लिये लोग हजारो-लाखो खर्चकर आलीशान रौजे मकबरे कब्रे-सगमरमर या सगमूसा की बनवा देते हैं, क़ीमती पत्थर माणिक जमुर्रद से उन्हें आरास्ता करते हैं, पर वे मकबरे क्या उसकी रूह को उतनी राहत पहुँचा सकते हैं, जितनी उसके दोस्त आसू टपका कर पहुँचा सकते हैं।' (हि० ग० शै० वि०-पृ० ५६)। भट्टजी ने फारसी क्रियार्थक सज्ञा 'आरास्तन'—सजाना या सवारना की सहायता से हिंदी सयुक्त क्रिया 'आरास्ता करते हैं' बनाया है। 'कब्रे-सगमरमर' म फारसी इजाफत पद्धति का प्रयोग स्पष्ट है। सघटना की दृष्टि से यह सयुक्त वाक्य है। प्रथम दो उववाक्यों के बीच फारसी समानाधिकरण सयोजक 'व' लुप्त है।

१—जितेन्द्रिय, २—उपासना, ३—हथेली, ४—अलकार या शोभा
५—परसियन इन्फ्लुएस ऑन् हिंदी, पृ० १००, ए० पी० वाजपेयी।
६—वही, पृ० ६६।

'अलकिस्सा थोड़ी देर बाद रामकली अपनी सहेलियों के साथ मुस्कराती हुई दिखलायी दी,' (वही पृ २७)।

११—किशनचन्दर (कृष्णचन्द्र)—किशनचन्दर के फ़ारसी प्रभावित प्रयोग प्रेमचन्द की भाँति उर्दू से हिंदी में आए हैं—'यह हल्की लतीफ़ मगर पेचदार मुस्कराहट किस क़दर दिलचस्प होती है इस दावत का इशारा किस क़दर नमकीन होता है, ऐसा मालूम होता है कि लड़की मुस्करा नहीं रही है होठों से आँख मार रही है' (मुस्करानेवालियाँ पृ ७)। 'वगैरह' प्रयोग का फ़ारसी ढंग—'उसके बाद जमुना मिरजई चूड़ीदार मोरी वगैरह-वगैरह एक-एक करके' (फूल की तनहाई—मीनाबाज़ार, पृ १)।

१२—न्यायालय की हिंदी—चाहे विदेशी शब्दों से युक्त हिंदी हो या देशी शब्दों से युक्त, दोनों की वाक्यरचना पर फ़ारसी वाक्य-संघटना का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है, 'जैसे आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख २१ जनवरी सन् १९५४ ई बवक्त १० बजे दिन के असालतन[1] या मार्फ़त वकील के जो मुकदमे के हालात से करार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर[2] अहम मुतअल्लिके[3] मुकदमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई शख्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदेही दावा की करें और हरगाह[4] वही तारीख जो आपके इज़हार[5] के लिए मुकर्रर है, वास्ते इनफ़िसाल[6] कतई मुकदमा के तजवीज़[7] हुई है पस आपको लाज़िम[8] है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत[9] पर व नीज़ तमाम दस्तावेज़ात को जिन पर आपकी जवाबदेही के ताईद[10] मे इस्तदलाल[11] करना चाहते हों पेश करें। (नार्दर्न इंडिया पत्रिका जनवरी ९ १९५४)। दूसरा उदाहरण' अतएव आपको इसके द्वारा आहूत किया जाता है कि आप या तो स्वयं या ऐसे अभिभाषक द्वारा जो कि सम्यकरूपेण अनुदिष्ट है और वाद सम्बन्धी सब सारवान प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ है या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति है जो कि ऐसे सब प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ है १९५४ के १ के २ दिवस को १० बजे पूर्वाह्न मे दावे का उत्तर देने के लिए इस न्यायालय में उपसंजात हों (वही १९५४)।

१—खुद २—सचमुच ३—अवस्थाएँ ४—संबंध ५—जिस समय ६—बुलाया ७—निश्चित ८—फैसला ९—है १०—अनिवार्य ११—गवाही १२—समर्थन १३—उपयोग।

१०—उपसंहार

कहा जा सकता है कि हिंदी वाक्यरचना की शैली पर फारसी की साहित्यिक वाक्य शैली का ऐसा असर पड़ा कि साहित्यिक दृष्टि से हिंदी की एक नई शैली उर्दू का विकास हो गया, जिसमें विदेशी शब्दो के महत्व को प्रमुखता नही भी दी जा सकती है। फिराक साहब ने इस सिलसिले में लिखा है कि 'शतप्रतिशत हिंदी शब्दो से भी बनी हुई उर्दू गद्य और कविता की किताबें मिलती हैं। इन किताबों में एक भी अरबी-फारसी का शब्द नही है। वस्तुत खड़ी बोली हिंदी को एक विशेष ढग से या एक विशेष शैली में प्रयोग करना उर्दू है।'[1]

फिराक साहब ने कुछ उदाहरण दिए हैं—

यह तो बताओ लिए जाते हो साथ अपने यह रात कहाँ—फिराक

बिगड़े न बात बात पर क्यों जानते हैं वो,
हम वो नहीं कि जिसको मनाया न जायगा।—हाली

यह जो महत बैठे हैं दुर्गा के कुड पर,
अवतार बन के कूदेंगे परियों के झुड पर।—इंशा

बोझ वो सर से गिरा है कि उठाये न उठे,
काम वह आन पड़ा है कि बनाये न बने।—ग़ालिब

वर्तमान हिंदी वाक्यरचना में फारसी प्रभाव कम होता जा रहा है और अंग्रेजी वाक्यरचना का प्रभाव अधिक बढ़ता जा रहा है। वाक्यो की सिन्थेसिस, कृदन्त विशेषण जैसे खडवाक्यो का प्रयोग, पैरेन्थेटिकल उपवाक्य का बाहुल्य, लम्बे मिश्रित एव सयुक्तवाक्यों का प्रचलन, विचार शृखला के मध्य से वाक्यारम्भ और वैसे ही उसकी समाप्ति की वाक्यगत सघटना पर अंग्रेजी वाक्यपद्धति का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

●

१—उर्दू भाषा और साहित्य, पृ० १३।

अल्लाताला दिया करूँगा आप ब्राह्मण को सहारा दीजिए तो–जिहे किस्मत जिहेताला जिहेवख्त–आपके कई पत्र आये '[1] फ़ारसी की समासात पदावली या फ़िक़रे के प्रयोग तथा प्रथम दो क्रिया पदो के साथ सर्वनाम के अप्रयोग पर फ़ारसी प्रभाव दिखाई पड़ता है ।

८—बाबू बालमुकुन्द गुप्त—'बरादरम् फुलर जग ! तुम्हारी जग खत्म हो गई । यह लड़ाई तुम साफ हारे ।'[2] 'बरादरम्' में सम्बन्धकारक का प्रयोग फारसी ढग का है । कर्तकारक का वाक्य-मध्य प्रयोग—'रिआया और मदरसे के तुलबा से लड़ते-लड़ते तुमने नवाबी खत्म की । लोगों को आम जलसे करने और कौमी नारे मारने से रोका ।'[3]

९—रामचन्द्र शुक्ल—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल फ़ारसी समास और तरकीबो को बहुत पसद करते थे । अत कहीं-कहीं जानबूझकर वे फ़ारसी शैली को सजीवता अथवा व्यग्य के लिए अपनाने की कोशिश करते थे । वाक्यारम्भ का फ़ारसी ढग—'खैरियत यह हुई कि अपने सब उपन्यासो को यह मँगनी का लिबास नहीं पहनाना है,' (हि० ग० शै० वि०, पृ० १५२) । उनके वाक्यांशो पर फारसी का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है, जैसे 'मजाक की हद, बात की करामात, दिमागी कसरत, खेल-तमाशे का शौक, जिन्द दिली की कद्र इत्यादि' । (वही, पृ० १४५) ।

१०—प्रेमचन्द—प्रेमचन्द की प्रारभिक रचनाओ में फ़ारसी पद्धति साफ दिखाई पड़ती है, 'जुहाक, कसम है अल्लाह की, मैं इस विलम्ब को कभी क्षमा नहीं कर सकता । फौरन क़ासिद भेजो और वलीद को सख्त ताकीद लिखो कि वह हुसेन से मेरे नाम पर बैयत ले,' (कर्बला, पृ० ३६) । हिंदी में कहा जायगा 'जुहाक़ अल्लाह की क़सम है ।' पुन 'आपने वालिद मरहूम की खिदमत जितनी वफादारी के साथ की, उसके लिए मैं आपका शुक्रगुजार हूँ,' (वही, पृ० ३९) । हिंदी ढग से 'मरहूम वालिद' होना चाहिए । इसी प्रकार 'वलीद, हाकिम–मदीना को ताकीद की जाती है,' (वही, पृ० ४१) । हिंदी क्रम से 'मदीना के हाकिम' होना चाहिए । फ़ारसी या अरबी पदावली का प्रयोग–'बिस्मिल्लाह, हुजूर खुशी से शौक फरमायें, बन्दा हरगिज़ आड़े न आयेगा,' (मगलाचरण–असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य, पृ० १०) और

१—गद्यकार बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पृ० ५९, डॉ० नत्थन सिंह ।
२—वही, पृ० ३१५ ।
३—वही, पृ० ३१७ ।

'अलफ्सिया थोड़ी देर बाद रामकली अपनी सहेलियों के साथ मुस्कराती हुई दिखलायी दी (वही पृ २७)।

११—विशेषणविपर्यय (हाइपैलेज)—विशेषणविपर्यय के फारसी प्रभावित प्रयोग अंग्रेजी की भाँति उर्दू से हिंदी में आए हैं— यह इसकी मनोज़ मगर पेशावर मुस्कराहट किस क़दर दिलचस्प होती है इस वक्त का इशारा किस क़दर नमकीन होता है, ऐसा मालूम होता है कि आँखें मुस्करा रही हैं, होठों से आँख मार रही है (मुस्कराने वालियाँ पृ ७। 'वगैरह' प्रयोग का फारसी ढंग—'उसके बाद अमूमन सिरजोश सुर्ख़ीदे नौरोज़ वगैरह-वगैरह एक-एक करके (फूल की पत्तियाँ—मीनाबाज़ार, पृ १)।

१२—न्यायालय की हिंदी—चाहे विदेशी शब्दों से युक्त हिंदी हो या देशी शब्दों से युक्त, दोनों की वाक्यरचना पर फारसी वाक्य-संघटना का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है, जैसे 'आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख २१ जनवरी सन् १९५४ ई वक्त १० बजे दिन के असालतन या मार्फत वकील के जो मुकदमे के हालात से कदर वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर[3] अहम मुताल्लिके[4] मुकद्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई शख्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जवाबदेही दावा की करें और हरगाह[5] यही तारीख जो आपके इजहार[6] के लिए मुकर्रर है वास्ते इन्फिसाल[7] कतई मुकद्दमा के तजवीज[8] हुई है पस आपको लाजिम[10] है कि उसी रोज अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत[11] पर व नीज तमाम दस्तावेजात को जिन पर आपकी जवाबदेही के ताईद[12] में इस्तदलाल[13] करना चाहते हो पेश करें। (नार्दर्न इंडिया पत्रिका जनवरी ५, १९५४)। दूसरा उदाहरण 'अतएव आपको एतद्द्वारा आहूत किया जाता है कि आप या तो स्वयं या ऐसे अभिभाषक द्वारा जो कि सम्यक्रूपेण अनुदिष्ट है और वाद सम्बन्धी सब सारवान प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ है या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति है, जो कि ऐसे सब प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ है १९५४ के १ के २ दिवस को १० बजे मध्याह्न में वादी का उत्तर देने के लिए इस न्यायालय में उपसजात हों (वही १९५४)।

१—कुल २—अमूमन ३—समस्याएँ, ४—संबंध ५—जिस समय ६—बयान ७—निश्चित ८—फैसला ९—है १०—अनिवार्य ११—गवाही १२—मदद १३—उपयोग।

१०—उपसंहार

कहा जा सकता है कि हिंदी वाक्यरचना की शैली पर फारसी की साहित्यिक वाक्य शैली का ऐसा असर पडा कि साहित्यिक दृष्टि से हिंदी की एक नई शैली उर्दू का विकास हो गया, जिसमें विदेशी शब्दों के महत्व को प्रमुखता नही भी दी जा सकती है। फ़िराक साहब ने इस सिलसिले में लिखा है कि 'शतप्रतिशत हिंदी शब्दों से भी बनी हुई उर्दू गद्य और कविता की किताबें मिलती हैं। इन किताबो में एक भी अरबी-फारसी का शब्द नही है। वस्तुत खडी बोली हिंदी को एक विशेष ढग से या एक विशेष शैली में प्रयोग करना उर्दू है।'[1]

फिराक़ साहब ने कुछ उदाहरण दिए हैं—

यह तो बताओ लिए जाते हो साथ अपने यह रात कहाँ—फिराक

बिगडे न बात बात पर क्यों जानते हैं वो,
हम वो नहीं कि जिसको मनाया न जायगा।—हाली

यह जो महत बैठे हैं दुर्गा के कुड पर,
अवतार बन के कूदेंगे परियो के झु ड पर।—इ शा

बोझ वो सर से गिरा है कि उठाये न उठे,
काम वह आन पडा है कि बनाये न बने।—ग़ालिब

वर्तमान हिंदी वाक्यरचना में फारसी प्रभाव कम होता जा रहा है और अग्रेजी वाक्यरचना का प्रभाव अधिक बढ़ता जा रहा है। वाक्यो की सिन्थेसिस, कृदन्त विशेषण जैसे खडवाक्यों का प्रयोग, पैरेन्थेटिकल उपवाक्य का बाहुल्य, लम्बे मिश्रित एव सयुक्तवाक्यों का प्रचलन, विचार शृ खला के मध्य से वाक्यारम्भ और वैसे ही उसकी समाप्ति की वाक्यगत सघटना पर अग्रेजी वाक्यपद्धति का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

●

१—उर्दू भाषा और साहित्य, पृ० १३।

शब्दकोशगत प्रभाव एवं अर्थपरिवर्तन

१—प्रस्तावना

एक भाषा का दूसरी पर किसी प्रकार का गुणात्मक प्रभाव दीर्घावधि सापेक्ष होता है, जैसे भारत की पूर्वी भाषाओं में लिंगभेद की शिथिलता पर तिब्बत और बर्मा की अनार्य भाषाओं का प्रभाव।[1] ऐसी स्थिति में कोशगत प्रभाव का विशेष महत्व होता है किन्तु यह प्रभाव भी परिमाण एवं संख्या की दृष्टि से न्यून होता है। अनेक विद्वानों ने आधुनिक युग में एक भाषा पर दूसरी भाषा के पड़नेवाले आकस्मिक एवं छिपे प्रभाव को अधिक महत्व प्रदान किया है खासकर ऐसे मामलों में क्योंकि सैनिक विजय के फलस्वरूप एक जन संख्या अपनी मूलभाषा को त्याग कर दूसरी जाति की भाषा को ग्रहण कर लेती है।[2] दो भाषाओं के मेल और नई भाषा की शब्दावली की स्वीकृति के फलस्वरूप यस्पर्सन के अनुसार नई भाषा के नीचे एक पर्त पड़ जाती है, जिसमें पुरानी भाषा के तत्व अधिक रहते हैं। इससे भाषा में नए विकास की सम्भावना प्रस्तुत हो जाती है। आकस्मिकताजन्य परिस्थितियों में बाह्यभाषा का प्रभाव यदि लगभग २५ वर्षों के भीतर प्रकट न हुआ तो संभव है कि कालान्तर में उसका प्रभाव कम जाय या समाप्त हो जाय।

पठान या मुगल आक्रमकों की अपनी भाषा तुर्की थी जो युद्ध की भाषा के रूप में मशहूर थी किन्तु उनके लिए भी अन्य शिक्षा और संस्कृति की भाषा फारसी थी। भारत में आते ही इसका प्रभाव स्पष्ट हो उठा। इसने हिंदी की जीवनी शक्ति में वृद्धि की। आज भी हिंदी में मौजूद फारसी के हजारों शब्द एवं अन्य भाषातत्व इसके प्रमाण हैं। इस फारसी के नीचे भी एक पर्त जमी जिसमें पुरानी भाषा के तत्व ही अधिक थे—जिसका परिणाम उर्दू का विकास समझना चाहिए।

हर परिस्थिति में दो जातियों के मिलने का परिणाम एक दूसरे की भाषा पर प्रभाव के रूप में अनिवार्य नहीं होता। जब कभी दो विभिन्न जातियाँ मिलती हैं और परस्पर घुल-मिल जाती हैं तो यह समझ लेना कि सभी परिस्थितियाँ और फलस्वरूप भाषागत परिणाम एक ही होंगे बहुत बड़ी गलती

१—हि भा इ पृ २११ धी व ।

२—लैंग्वेज पृ १९१ ओटो येस्पर्सन ।

होगी ।'[१] कभी-कभी आक्रामकों की संख्या इतनी कम होती है कि वे देश पर अपनी भाषा को बलात् लाद नहीं सकते और आक्रामकों की दूसरी पीढ़ी मे ही पूर्वजों की भाषा के बदले स्थानीय भाषा का अध्ययन आरम्भ हो जाता है। किंतु कुछ समय पश्चात् बाह्य भाषा पूर्णत मृतप्राय होने से पूर्व प्रशासन, सेना एव शासकों से संबद्ध अनेक अन्य शब्द स्थानीय भाषा को दे जाती है। यदि आक्रामक अधिक हुए, उनका सिलसिला जारी रहा और संयोग से पडोसी हुए तथा अपने मूल देश से सम्बन्ध बनाए रख सके, तो भाषा पर पडनेवाला प्रभाव गम्भीर तथा व्यापक होगा। विजयी कौम की ऊपरी श्रेणी में विजित कौम की जबान कमीनों और मामूली लोगों की जबान समझी जाती है। विजितों की भाषा की घोर उपेक्षा की जाती है। स्थान एव स्थानीय वातावरण से संबद्ध कुछ विशेष शब्दों का महत्व रह जाता है। न्यायालय एव प्रशासन में बाह्य भाषा की प्रधानता से देशी भाषाओं मे उसका शब्दकोशगत प्रभाव स्वय बढ़ जाता है। यही कारण है कि भारत में मुसलिम शासनकाल में फ़ारसी ने प्रमुखता प्राप्त कर ली थी तथा उत्तर भारत की भाषाओं, खासकर हिंदी पर उसका काफी प्रभाव पड़ा और हजारों शब्द हिंदी में आ गए।

इसके अतिरिक्त व्यापारी और कुली की हैसियत से भी एक जगह के लोग दूसरी जगह आबाद होते हैं और उसी जगह की भाषा का प्रयोग करने लगते हैं। विजयी क़ौम से भिन्न, पर्याप्त संख्या में रहने पर भी, ये लोग अपनी भाषा का निर्यात नहीं कर पाते। 'इस प्रकार नवागन्तुकों की अधिक संख्या प्रत्येक वर्ष तब तक हजम कर ली जाती है, जब तक वे नई जाति का एक बड़ा हिस्सा न बन जाय, जबकि दूसरी ओर उनकी भाषा उक्त देश की भाषा पर व्यवहारत कोई प्रभाव नहीं डालती। संयुक्त राज्य अमेरिका में आये दिन की यही कहानी है।'[२]

इतिहास के बीते युग के आक्रामकों की भाषा की भाँति आधुनिक युग में विज्ञान में उन्नत देशों की भाषा का महत्व सर्वोपरि हो गया है। विज्ञान में समुन्नत कौम की भाषाएँ पिछडी कौम में विज्ञान की शिक्षा के साथ प्रवेश कर रही हैं। इस प्रकार विज्ञान की विविध शाखाओं से संबद्ध शब्द अन्य भाषाओं में प्रवेश पा रहे हैं। किसी जमाने में फ्रेंच के सम्मुख पददलित रूसी भाषा के शब्द एशिया और अफ्रीका की भाषाओं में स्थान पा रहे हैं। फैशन-

१—वही, पृ० २०१।
२—वही, पृ० २०३।

फारसी के कारण भी अन्य भाषा के शब्दों का आयात होता है। अफगानिस्तान के आधुनिकीकरण के फलस्वरूप तुर्की में इस प्रकार के अनेक शब्द स्वतः यूरोपीय भाषाओं से अपनाए। संगीत नृत्य एवं वेशभूषा के अनेक फारसी शब्द आज भी हिंदी में अपना प्रमुख महत्व रखते हैं। भाषागत प्रभाव में धार्मिक कारणों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। बाइबिल और कुरान के शब्द अपने अनुयायियों के साथ अनेक देशों की भाषाओं में घुले हुए हैं। हिंदी में फारसी-अरबी शब्दों की मौजूदगी का एक बड़ा कारण यह भी है।

प्रथमतः किसी भाषा से संज्ञा और विशेषण शब्द ही ग्रहण किए जाते हैं—क्रिया जैसे शब्दों के आदान की सम्भावना न्यूनतम रहती है। पहला प्रभाव इसी प्रकार का होता है, किंतु जातियों के लगातार सम्पर्क एवं उनकी निरंतरता के कारण अन्य धर्मतत्वों एवं संबंधतत्वों का आदान भी होने लगता है। यद्यपि शब्दकोशगत प्रभाव सर्वप्रधान है तथापि फारसी कोश की ध्वनिगत एवं व्याकरणगत विशेषताएँ आधुनिक हिंदी में विद्यमान हैं।[1] भारतवर्ष के मुसलमानों में बेस्कर्वल ने लिखा है कि 'यह पूर्ण स्वाभाविक है कि 'रिक्त' शब्द [सर्वनाम पुरसर्ग संयोजक सहायक क्रिया] की अपेक्षा 'पूर्ण' शब्द [नामिक विशेषण एवं भावात्मक क्रिया] जिस वर्ग में अधिकतर 'व्याकरणात्मक' पद शामिल होते हैं ग्रहण लेने की ओर अधिक झुकाव हो। लेकिन भाषाके इन दो वर्गोंमें कोई निश्चित विभाजक नियम नहीं है।'[2] अस्तु जहाँ फारसी से हिंदी में आगत सर्वनाम क्रिया पुरसर्ग एवं संयोजकों की संख्या कम है, वहीं संज्ञा और विशेषण जैसे पूर्ण शब्दों की संख्या अधिक।

२—विदेशी शब्द-संख्या

अं ग्रे जी का शब्द-समूह अनेक भाषातत्वों से युक्त है। अन्य आर्य भाषाओं की अपेक्षा हिंदी में इसकी प्रधानता है। इसमें अरबी फारसी तुर्की तथा यूरोपीय भाषाओं के शब्द भरे हुए हैं जिनके आगमन का क्रम प्राकृत पैगम्बर के युग में ही किसी रूप में शुरू हो गया था। 'प्रा पै' की भाषा में विदेशी शब्दों का अस्तित्व नगण्य है। केवल आधे दर्जन के लगभग विदेशी शब्द मिलते हैं।

मुगदान—(अ) मुक्ताम — कुफ्ताए—(फा) कफ्ताम
मोसवा—(अ) समामा — शाहि—(फा) शाह,

१—गर्वियर्सन इम्पॉरन्स ऑफ हिंदी पृ २ डॉ बाहरी।
२—वैसेल पृ २११ पेस्पर्सन।

हिंदू–(फा०) हिन्दू, तुलुक–(तु०) तुर्क,
णिक–(फा०) नीकह ।'[१]

डॉ० व्यास ने लिखा है कि विदेशी शब्दो की दृष्टि से पुरानी हिंदी की समृद्धतम रचना कीर्तिलता है क्योकि अरबी-फ़ारसी के कई शब्द इसमें पाए जाते हैं। इन्ही दिनो विद्यापति से कुछ वयस्क प्रसिद्ध सत सैयद मुहम्मद हुसैनी ने दक्खिन में खडी बोली हिंदी के गद्य-पद्य का साहित्य प्रस्तुत किया था। खडी बोली की उनकी प्रथम रचना 'मेराजनामा' में अपेक्षाकृत सर्वाधिक अरबी-फारसी शब्द पाए जाते हैं जिनकी सख्या आगे की रचनाओं में बढ़ती गई। 'इस हिंदी-नुमा दकनी भाषा में पहले-पहल अरबी-फारसी के शब्द हिन्दी शब्दो के साथ नगीने की तरह जडे हुए देख पडते हैं।'[२]

हिंदी में ठीक सख्या में अरबी-फारसी के कितने शब्द आए हैं और प्रचलित हैं, यह वास्तव में एक विवादग्रस्त विषय है। डा० ताराचन्द ने लिखा है कि 'यम० सय्यद अहमद देहलवी, मशहूर शब्दकोश 'फरहगे-असाफिया' के सकलन-कर्ता ने कोश में सग्रहीत शब्दों का विश्लेषण किया है। कुल शब्दो की सख्या ५४००० है, अरबी से ऋणशब्दों की सख्या ७५८४ है, फारसी से ६०४१, सस्कृत से ५५४, अग्रेजी से ५०० और अन्य से १८१ तथा शेष स्थानीय हैं। यदि नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा सम्पादित 'हिन्दी शब्दसागर' जैसे शब्दकोश के पृष्ठो को देखें तो ज्ञात होगा कि ७५८४ अरबी एव ६०४१ फारसी शब्दो में से प्रत्येक इसमे मौजूद हैं।'[३] विदेशी शब्द भाषा मे दो प्रकार से आए। प्रथम यह कि भारतीय जनता ने उन्हे अपनी बोल-चाल की भाषा मे ऋण लिया, जबकि शासनकर्ता विदेशियो से उसका सम्बन्ध स्थापित हुआ। दूसरे यह कि कला एव विज्ञान जैसी उच्च विद्या के कुछ शब्द थे, जो शिक्षित लोगो द्वारा अपनाए गए और उन्ही की भाषा में शामिल हुए।[४] प्रथम ढग से आनेवाले शब्द अत्यन्त लोकप्रिय हो गए, किंतु तकनीकी या पारिभाषिक शब्द विशेषज्ञो अथवा उनसे सबद्ध पुस्तको में सीमित रह गए, जो यदाकदा ही जनभाषा में पहुँच सके।

पिछले सात आठ सौ वर्षों म अनगिनत विदेशी शब्द एशिया और यूरोप से भारतीय भाषाओ म ऋण लिए गए। फारसी (अरबी) ऋण शब्दो के बारे

१—प्राकृत पैंगलम, पृ० २८७-८८, डॉ० भोलाशकर व्यास।
२—उर्दू भाषा और साहित्य, पृ० १, रघुपत सहाय फिराक।
३—दी प्राब्लम् ऑफ् हिंदुस्तानी, पृ० ६५, डा० ताराचन्द।
४—एफिनिटी ऑफ् इण्डियन लैंग्वेजेज, पृ० २६, डॉ० यस० के० चैटर्जी।

में डॉ॰ बाहरी का मत है कि हिंदी में सम्भवतः फ़ारसी मूल शब्दों का इतिहास भाषा-जगत में अद्वितीय है।[1] भाषा की दृष्टि से उर्वीलिक अहरदार मुसलिम जाति के लोग चाहे वे बाहर से आए हों अथवा यहाँ के धर्म परिवर्तित रहे हों। इन्होंने फ़ारसी का सरकारी और सांस्कृतिक भाषा के रूप में और अरबी का धर्म की भाषा के रूप में प्रयोग किया। तुर्कों ने सर्वप्रथम उत्तरी भारत पर अपना अधिकार स्थापित किया और वे ही भारत में फ़ारसी लाए। यह एक आश्चर्यजनक बात है कि तुलनात्मक दृष्टि से कुछ ही तुर्की शब्द भारतीय भाषाओं में अपना स्थान बना सके हैं। डा॰ चाटुर्ज्या के अनुसार मुश्किल से ८ तुर्की शब्द हिन्दुस्तानी या हिंदी में और ४ बंगला म विद्यमान हैं। हिंदी ही के माध्यम से कुछ अरबी-फ़ारसी शब्द मराठी तेलुगु कन्नड़ तामिल और मलयालम जैसी दक्षिण की भाषाओं में भी पहुँच गए हैं। 'इन शब्दों का प्रारंभिक संबंध प्रशासन कानून एवं माल विभाग से है, किन्तु दूसरे ढंग के भी कुछ शब्दों का आयात हुआ है। फ़ारसीतत्व जो २ से ३ शब्दों के बीच हो सकते हैं सारे भारत में पाए जाते हैं—हिंदुस्तानी या हिंदी उर्दू में इनकी संख्या और भी अधिक है। ये फ़ारसी तत्व निश्चितरूप सभी भारतीय भाषाओं में समान उत्तराधिकार में प्राप्त हैं।

विभिन्न शब्द कोशों के अध्ययन के पश्चात् डॉ॰ चाटुर्ज्या इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि बंगला में फ़ारसी शब्द संख्या २५ से अधिक नहीं है और ७५ बंगला शब्दों के आधार पर वे पश्चिम एवं मध्य बंगाल म प्रचलित बंगला में फ़ारसी शब्दसंख्या को कुल शब्दों का प्रतिशत मानते हैं।[3] फ़िराक साहब ने हिंदी म इस संख्या को इस प्रकार स्पष्ट किया है, कि 'उर्दू कविता में लगभग साठ-सत्तर हजार शुद्ध हिंदी शब्दों में तीन हजार के लगभग अरबी फ़ारसी शब्द जोड़ दिए हैं जिन्हें पढ़कर चौंकना पड़ता है।[4] अन्यत्र उन्होंने बाबू श्यामसुन्दरदासके हिंदी शब्दसागरका हवाला देकर लिखा है कि उसमें लगभग चार पाँच हजार अरबी-फ़ारसी शब्द सम्मिलित हैं। अतएव उपयुक्त

१—'दी हिस्ट्री आफ् परशियन लैंग्वेज इन हिंदी इन पर्सपेक्टिव आफ़ मैरेजरन इन दी लिंग्विस्टिक वर्ल्ड पृ॰ २ परशियन इन्फ्लुएंस आफ् हिंदी डॉ॰ बाहरी

२—इंडिनिटी आफ् इंडियन लैंग्वेजेज पृ॰ २७ सु॰ कु॰ चैटर्जी।

३—ओ॰ ड॰ बें॰ लै॰ पृ॰ २२२।

४—उर्दू भाषा और साहित्य पृ॰ ४।

५—वही पृ॰ ७।

अहमद देहलवी के फरहगे-असाफिया या 'हिंदी शब्दसागर के १३६२५ अरबी-फ़ारसी तथा लगभग ८० तुर्की शब्दो और फ़िराक साहब द्वारा बताई गई ३००० की न्यूनतम सख्या के बीच हिंदी म आगत फारसी-अरबी-तुर्की शब्दो की प्रचलित सख्या निश्चित की जा सकती है। ये शब्द दिनपर दिन प्रयोग में कम होते जा रहे हैं इसलिए एक स्थिर सख्या तै करना भी कठिन है। तब भी अनुमान किया जा सकता है कि वर्तमान मे प्रचलित फारसी-अरबी शब्दो की सख्या लगभग ६००० होगी।

३-हिंदी मे अरबी-फारसी शब्दो का महत्व

भाषा की स्थायी सपत्ति बन जाने के कारण बदली हुई परिस्थितियो में भी विदेशी शब्दो का महत्व अक्षुण्ण बना हुआ है। हिंदुओ के साथ-साथ रहने वाले मुसलमानो के लिए इस्लाम से सबद्ध सभी शब्दो का महत्व समान रूप से बना हुआ है जैसे कुरान, अल्ला, खुदा, रसूल, पैगम्बर, जुम्मा, कलमा, बिहिश्त, जहन्नम, दोजख, गुनाह, मुआफी, तौबा, पाक, पीर, बुत इत्यादि। अनेक शब्द विशिष्ट अर्थ और विभिन्न अनुषगो से सम्बद्ध होने के कारण हिंदी पर्याय रखने पर भी हिंदी भाषियो में लोकप्रिय हैं जैसे तकदीर, तस्वीर, तावीज, कुश्ती इत्यादि। प्रशासन के क्षेत्र में अरबी-फारसी शब्दो की व्यापकता अभी भी बनी हुई है, यद्यपि अग्रेजी शब्दो से उनका जीवन-मरण का सघर्ष सा छिड गया है। नए हिंदी शब्द भी फारसी शब्दो को हटा रहे हैं, तब भी फारसी शब्द बने हुए हैं जैसे इस्तगासा दाखिलखारिज, दस्तावेज़ वकील, पेशकार, कानून, इजलास इत्यादि। लगातार युद्धो के कारण अनेक फ़ारसी सैनिक शब्द हिंदी मे आ पडे थे और अब पूर्णत अग्रेजी ढग से सेना का सगठन हो जाने के बाद भी सैनिक जीवन एव अस्त्र-शस्त्रो से सम्बद्ध शब्द अनेक प्रचलन में मौजूद हैं, जैसे बदूक, सगीन, तोप, तीर, बारूद, मोर्चा, किला, गोलन्दाज, जमादार, सूबेदार, हवलदार इत्यादि। शिक्षा से सम्बद्ध फ़ारसी शब्दों का महत्व अद्वितीय है। उनमें से कुछ शब्दों का स्थानान्तरण करना बिल्कुल कठिन काम है जैसे कागज़, कलम, मोलवी, परचा, स्याही, दावात, मुहावरा, जिल्द इत्यादि। मुग़ल लोग खाने-पहनने के बडे शौकीन थे। भारत के 'सादा जीवन उच्च विचार' के स्थान पर मुगलो ने ऐश-आराम का नया विचार देश के सम्मुख प्रस्तुत किया। बाबर ने लिखा है कि 'बाबर! बा ऐश कोश कि आलम दोबारह् नेस्त'[१] अर्थात् ऐ बाबर! ऐश के साथ रहो क्योंकि यह ससार दोबारा नहीं होता। अस्तु खान-पान, वेश भूषा और

१—पर्सियन इन्फ्लुएस ऑन् हिंदी, पृ० ३०, डॉ० बाहरी।

मकान सम्बन्धी ऐसे शब्द हिंदी में आ गये जिनकी अनिवार्यता आज भी बनी हुई है। धोती साड़ी दुपट्टा और अँगिया को छोड़कर वस्त्र सम्बन्धी सारे पुराने शब्द फारसी के ही हैं, जैसे कमीज कुरता मिरजई जामा पाजामा सलवार, सदरी शेरवानी चादर, रजाई लिहाफ इत्यादि खान-पान के शब्दों में कबाब कीमा कलेजी सब्जी हलुआ बरफी समोसा नाश्ता चपाती इत्यादि उत्तम मेवों के रूप में सम्बद्ध शब्द जैसे अंगूर अंजीर, किशमिश बादाम मुनक्का पिस्ता सेब इत्यादि।

डॉ. बाहरी ने लिखा है कि 'इस्लाम के समय तक (अभी सदी) पेशेवर ढंग से भारत में सिलाई का कारबार नहीं चलता था।'[1] मुगलों के आगमन के पश्चात् यह एक लाभकर पेशा हो गया। सिलाई से सम्बद्ध अधिकांश फारसी शब्द आज भी हिंदी में बने हुए हैं जैसे दरजी बखिया अस्तर जेब इत्यादि। भवन-निर्माण में आज के कारीगर विदेशी शब्दों से अधिक काम लेते हैं जैसे बुनियाद, कुर्सी दीवार हमामी चमरी मंजिल मरम्मत मकान दालान दरवाजा इत्यादि। शरीर-रचना-विज्ञान के शब्द जैसे जिस्म गुर्दा जिगर, दिमाग बच्चेदानी कमर मेदा कपाल इत्यादि महत्त्वपूर्ण हैं। संगीत और वाद्य का भारत में पूरा विकास होने पर भी इस सम्बन्ध के अनेक फारसी शब्द प्रचलन में हैं। देशी शब्दों के साथ घुलमिल जाने के कारण अन्तर भी मिट गया है जैसे सितार, शहनाई, तबला नगारा>नगाड़ा तराना मुजरा मिजराब इत्यादि। इसी प्रकार चित्रकला चिकित्सा बागवानी पशु-पक्षी इत्यादि से सम्बद्ध फारसी शब्द हिंदी में विद्यमान हैं, जिनसे हिंदी भाषा अत्यधिक मात्रा में सम्पन्न हुई है।

४—हिंदी में आगत अरबी-फारसी तुर्की शब्दों का वर्गीकरण

(क) स्मरण रहे कि अरबी और तुर्की शब्द हिंदी में फारसी के माध्यम से ही आए हैं। हिंदी में आगत फारसी वर्ग के समस्त शब्दों को डॉ. बाहरी के अनुसार पाँच भागों में बाँटा जा सकता है यथा (१) वे शब्द जो किसी समय हमारी भाषा में आए पर अब जो विलीन हो गए हैं (२) फारसी से अनूदित शब्द और वाक्यांश (३) वे शब्द जो हमारी भाषा की सम्पत्ति हो गए हैं और जिन्हें न आ या द्वारा स्थानान्तरित करना असंभव है, (४) वे शब्द जो सामान्यतः हिंदी में प्रयुक्त होते हैं लेकिन उन्हें भाषाओं से स्थानान्तरित किया जा सकता है, (५) वे शब्द जो सामान्यतः समझे नहीं जाते और उन्हें भाषा में

---

१ वही पृ ११।

२—वही पृ २१।

रहने का अधिकार नहीं है जो केवल कुछ लोगों द्वारा अपने 'भाषा राज्य' में ही प्रयोग किए जाते हैं।

इस विभाजन के बारे में अपनी राय जाहिर करते हुए डॉ० बाहरी ने लिखा है कि 'वर्ग (१) और (५) के बारे में हिंदी-भाषियों और विद्वानों को परेशान होने की जरूरत नहीं है। पहले वर्ग के शब्द समाप्त हो चुके हैं और परवर्ती वर्ग के समाप्त हो जायेंगे।'[१] इस प्रकार सिर्फ तीसरे और चौथे वर्ग के शब्द हिंदी में रह जायगे।

(ख) हिंदी में आगत फारसी शब्दों में ध्वनि और व्याकरण की दृष्टि से अनेक परिवर्तन भी कर दिए गए हैं। फलस्वरूप कुछ विदेशी शब्द तत्सम रूप में विद्यमान हैं जब कि कुछ तद्भव रूप में, यथा —शहीद, फ़ंद, नमाज़, कफन, पैजामा, कागद इत्यादि।

५—जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सम्बद्ध शब्द[२]

(१) मुसलिम प्रार्थना, धर्म एवं संस्कृति से संबद्ध शब्द —

अ-अल्ला-ईश्वर	अ-अजान-नमाज की पुकार
तु-आका-स्वामी	तु-आग़ा-मालिक, व्यापारी
अ-औलिया-ऋषि	अ-औरत-स्त्री
अ-इमाम-पुजारी	अ-ईद-एक पर्व
अ-ईमान-विश्वास	अ-ईमानदार-विश्वासी
अ-उलामा-धर्मोपदेशक	अ-कलमा-कुरान के शब्द (धर्म परिवर्तन के मंत्र)
अ-कुरान-धर्मग्रंथ	अ-क़यामत-प्रलय का दिन
अ-कुदरत-ईश्वर, प्रकृति	अ-कफन-शवपट्ट
अ-खतना-मुसलिम संस्कार (विशेष ढंग का)	अ-खलीफा-मुसलिम नेता
तु-फा-खानकाह-मठ	फा-खाब>ख्वाब-स्वप्न
अ-खाला-मौसी	फा-खानसामा-रसोइया
फा-खुदा-ईश्वर	अ-खैरात-दान
अ-गुनाह-पाप	अ-गुसल-स्नान

१—वही पृ० २१।

२—अ-से अरबी, फा-से फारसी और तु-से तुर्की का तात्पर्य समझना चाहिए।

अ-रौजा-समाधि, कब्र	अ-वली-सात
अ-वजू-हाथ मुँह धोना	अ-वाज़-उपदेश
अ-शबेरात पर्व	अ-शरा-धार्मिक कानून
फ़ा-शिरीनी (सिन्नी)-उपहार, प्रसाद	अ शेख़
अ-शैतान-राक्षस	अ-सय्यद-दरगाह का प्रधान पुजारी
अ-सुन्नत (खतना)-मुसलमानी करना	अ सलाम-नमस्कार
अ-हज-मक्का की तीर्थ यात्रा	अ-हरामी-अवैध
अ-हदीस-पुराण, एक पुस्तक (इस्लाम की)	फ़ा-हफ़्ता-सप्ताह

अ-हाजी-तीर्थ यात्री (मक्का से लौटा हुआ)

(खुदा, नमाज़ और पैग़म्बर फ़ारसी शब्द हैं, इनके लिए अरबी शब्द, अल्ला, सलात और रसूल हैं। भारतीय मुसलमानों में ज्यादातर फ़ारसी शब्द ही चलते हैं। दोनों प्रकार के धार्मिक शब्दो में से हिन्दुओं ने एक भी स्वीकार नही किया)।

(२) सैनिक जीवन से सम्बद्ध शब्द —

(क) शस्त्र-अस्त्र इत्यादि —

अ-कवायद-परेड	फ़ा-कमान-तीर (तोप)
अ-फा-किलादार-कोटपाल	अ-क़िला-दुर्ग
फा-कूच-प्रयाण	अ-खदक-खाई
अ खेमा-डेरा	अ-गुलेल-गोलन्दाज़, तोपची, रबड का बना उपकरण
फा जग-युद्ध	फा-जिरह-बख्तर-कवच
तु-तमचा-पिस्तौल	तु-तमग़ा-चिन्ह (विजय का)
फा-तीर-बाण	फ़ा-तेग़-तलवार
तु-तोप	फा-तुफग-हवाई बन्दूक
फा-नेज़ा-भाला	फा-पेशकबज-कृपाण
तु-बन्दूक	तु-बारूद
फा-मोरचा-व्यूह	अ-रसाला (रिसाला)-घुड़सवार

अ-जजीर-सीकड (माप के लिए) फा-ज़मीदारी-भूमि का स्वामित्व
फा-जागीर-सम्पदा फा-जागीरदार-भूमि का मालिक
अ-ज़िला- अ-तहसील
अ-तातील-छुट्टी दफ्तर-कार्यालय
फा-तावान-हानि का जुर्माना फा-दीवानी-मालविभाग का
फा-देहात-ग्रामीण क्षेत्र अ-दौरा-निरीक्षण
अ-दौरान-क्रम अ-नजराना-भेट
अ-फा नजरबंदी-एक प्रकार की कैद फा-परगना-जिले की इकाई
फ़ा-पेश-प्रस्तुत फ़ा-पेशगी-अग्रिमधन
फा-परवान-आदेशपत्र अ-फौजदारी-अपराध, मारपीट से सबंधित
अ-बग़ावत-विद्रोह फा-बदोबस्त-भूमिसुधार
अ-बाकी-शेष अ-फ़ा-बाक़ीदार-बाकी देने वाला
अ-महकमा-विभाग अ-मद्-विषय
अ-माल-धन, रकम अ-फ़ा-मालखाना-माल का दफ़्तर
अ-मालगुज़ारी-कृषिकर अ-मिसल (मिसिल)-कागज़ पत्र
अ-मुजरिम (मुलजिम)-अपराधी अ-मोहल्ला-स्थान, क्षेत्र
फ़ा-रफ्तार-चाल अ-रियासत-राज्य सम्पदा
अ-वकील-विधिवेत्ता, अधिवक्ता फा-शहर-नगर
अ-शामिल-मिला हुआ फ़ा-शुमार-गिनती, गणना
फा-सरकार-शासक अ-सलाहकार-परामर्शदाता
फ़ा-सिफारिश (सिपारिश) संस्तुति अ-सिक्का-मुद्रा
फा-सुपुर्द-प्रदान करना अ-हवालात-बंदीगृह
अ-हवाले-सुपुर्द अ-हाज़िर-उपस्थित
अ-हाज़िरी-उपस्थिति

(ख) प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संबद्ध शब्द—

अ अमीन लगान संग्रहकर्ता अ-अहलकार-कर्मचारी
अ-ओहदा-पद फ़ा-कारकुन-अभिकर्ता, दलाल
फा-कारिन्दा-कार्यरत प्रतिनिधि तु-क़ाबू-शक्ति
अ-गरदावर ग्राम अधिकारी अ-जिलादार-ज़िला प्रशासक
अ-तहसीलदार लगान का फा दरबान निरीक्षण करने वाला नौकर

अ-जब्त-नियत्रण

अ-जबर-मजबूत

अ-जायज़-वैध

अ-ज़ामिन-जमानतदार

फा-ज़िच्च गतिरोध

अ-ज़िल्लत-अपमान

अ-जुर्माना-अर्थदण्ड

फा-ज़ोर-प्रयत्न

अ-तलब-वेतन

अ-तसकीन-सतोष

अ-तसफ़िया-तै

अ-तहक़ीक़ात-जाच

अ-तहरीर-लिखत

अ ताकीद-सहेजना

अ-तै-सुलझाना

फ-दस्तूरी-नियमित देय

अ-दलील-बहस, तर्क

फा-दस्तख़त-हस्ताक्षर

अ-दर्ज-पजीकृत

फा-दाख़िल-दर्ज, लिखना

अ-फा-नक़लनवीस-नकल लेखक

फा बख़्शीश-पुरस्कार

अ मसला-विषय

अ-मेहनताना-पारिश्रमिक

अ मामला-विषय,लेनदेन

अ मुआवजा-प्रतिकारधन

अ-रफ़ा-दफ़ा समाप्तकरना

अ-रिश्वत-घूस

अ-शर्त

अ-सलाम अभिवादन

अ-सबूत-प्रमाण

अ-हल समाधान

अ-हक़ीक़त-सचाई

अ-जरायत-कृषि का

अ-फा-ज़बरदस्त-शक्तिशाली

अ-ज़ाब्ता-प्रक्रिया

फा-जायदाद-सम्पत्ति

अ-फा-ज़िम्मेदार-उत्तरदायी

अ-जुर्म-अपराध

अ-जुलुम>जुल्म-अत्याचार

अ-तरीक़ा-नियम

अ-तलाक़-सबधविच्छेद

अ तसदीक़-प्रमाणित

अ-तसलीम-स्वीकृति

अ-तहरीक-विरोध

अ ताईद-समर्थन

अ-तामील-लागू करना

अ-तौहीन-अपमान

फा-दरयाफ़्त-जाच, पता

फा-दरख़्वास्त-आवेदन

अ-दख़ल-क़ब्जा

फा-दस्तूर-पुराना नियम

अ-नक़ल-प्रतिलिपि

अ-फ़िहरिस्त-सूची

फा-बख़्शीशनामा-दानपत्र

अ-मज़ूर-स्वीकार

अ-मसौदा-लेख या योजना

तु-मुचलका-शर्तनामा

अ-मीयाद-अवधि, सीमा

अ-रशूत-घूसख़ोर

फा-रियायत-छूट

अ-सलाह-परामर्श

अ-सलामी-घूस, नज़राना

अ सुबहा-सन्देह

अ-हक़-अधिकार

फा-हरजाना-दडधन, क्षतिपूर्ति

फा-बरी-मुक्त
फा-बरखास्त-काट देना
फा-बनाम
फा-बयान-गवाही का ब्योरा
फा-बहाली-चालू करना मजूरी
अ-बालिग-वयस्क
फा-बाकलम खुद-अपनी कलम से
फा-बैनामा-रजिस्ट्री
अ-फा बैदार-खरीदने वाला
अ-मसूख-खारिज
अ-मिन्नत-प्रार्थना
अ-मुकदमा-अभियोग
अ-फा मुकदमेबाज-मुकदमा लड़ने वाला
अ-मुआइना-निरीक्षण
अ-मुद्दई-वादी
अ-मुद्दईअलेह>मुद्दालेह-प्रतिवादी
अ-मुजरिम-अपराधी
अ-मुसम्मात-महिला
अ-मुवक्किल-मुकदमा लडनेवाला
अ-रहनदार-ऋणदाता
अ-फा रहनदारी-गिरवीकरना
अ-रुक्का-लिखत, कागज
अ-वक़्त-समय
अ-वसीका-पक्का मामला, लिखापढ़ी
अ-वाकया-दुर्घटना
अ-शहादत प्रमाण
फा-शिनाख्त-पहचान
अ-शिकायत
अ-सबूत
फा-सजा
तु-सुराग-पता
अ-हलकी-साधारण
अ-हिरासत-पुलिस के अधीन
अ-हिब्बह् नामा-दानपत्र

(६) शिक्षा विभाग से सम्बद्ध शब्द —

अ-अव्वल-प्रथम
अ-अखबार-समाचारपत्र
अ-आलिम-विद्वान
अ-इल्म-ज्ञान
अ-इम्तहान-परीक्षा
अ-इबारत इम्ला-लिखने काढंग, श्रुतिलेख
फा-उस्ताद-गुरु
अ-उम्दा-बढ़िया
फा-उम्मेदवार परीक्षार्थी
तु-उर्दू-एकभाषा या शैली, बाजार
फा-कलम-लेखनी
फा-कलमदान-लेखनीपात्र
अ-कलाम-कथन
अ-कव्वाली-मजारों पर गाए जानेवाला गीत
अ-कवायद-व्याकरण
अ-कसीदा-छंद
फा-कामयाब-सफल
अ-कागज
अ-किताब-पुस्तक
अ-किता छंद
अ-कुतुबखाना पुस्तकालय
अ-खबर-समाचार

अ-वाजिब उचित
अ-शऊर>सहूर-गुण
फा-शागिर्द-शिष्य
फा-शायर कवि
फा शायरी कविता
फा-शाबास-प्रशसा
फा-शीराज़ा-किताब सिलनेवाला, तरतीबवार
फा-शिकजा-जिल्दसाजी की मशीन
अ-शुक्र आशीष
फा-शुमार-गिनती
फ़ा-शेर-कविता
अ-सबक़-पाठ
अ-सन् साल
अ-सतर-रेखा
अ-सफा-पृष्ट
अ-सिफत-विशेषण, गुण
फा-सुखन कथन
फा-सेम-तृतीय
फा-सोख्ता
फा-स्याही-मसि
अ-हरफ-अक्षर
फा-हज़ार-सहस्र
अ-हदीस-मुहम्मद की वचनावली
अ हरकत-आचरण
अ-हल-निष्कर्ष
अ-हाशिया
अ-हिदायत-निर्देश
अ-हिसाब-गणित
अ-हुक्म-आज्ञा
फा-हुनर-गुण, कला
फा-होशियार-चतुर
फा-हगामा-शोरगुल

(७) डाकखाने से सम्बद्ध शब्द—

फमा-कबूतर-एक पक्षी, पारावत
अ-कातिब-चिट्ठी लेखक
अ-खत-पत्र
अ-खबर-समाचार
अ-फा-खतरसां पत्रवाहक
फा-खाना-घर (डाकखाना)
फा-पता
फा-मोहर-छाप
अ-लिफ़ाफा
फा-सरनामा-पता
फा-हरकारा खबर-पहुँचानेवाला

(८) वेशभूषा, वर्तन, आभूषण एव सजावट तथा फर्नीचर से सम्बद्ध शब्द—

(क)

अ-अस्तर
अ-अतलस एक प्रकार का कपडा
फा-आस्तीन बाँह
फा-इजारबद-पैजामा की डोरी
फा-कसीदा-कढ़ाई, काढ़ना
फा-कमख्वाब-एक रेशमी कपडा
तु-कलाबतू एक कपडा, रेशमी तागा
तु-कुरता

अ-कहवा
तु-कुलफी
तु-कोरमा
फा-खानसामा-रसोइया
फा-गिजा-माल, ताकतवर भोजन
फा-गोश्त
फा-चासनी
अ-जिन्स-सामान
फा-दस्तरख्वान-भोजन करने का चादर
फा-नमक
फा-फिरनी-खीर
फ़ा-बरफी
फा-मसाला
अ-मिसरी
फा-मैदा
अ-शरबत
फा-शोरबा
फा सिरका
अ-हलवाई

फा कीमा-कुटा हुआ माँस
फा-कोफ्ता-पका माँस
फा-खमीर एक मिठाई
फा-गजक-एक रोटी, दवा
फा-गुलाब (-जल)
फा-चपाती
फा-जियाफत>जाफत दावत
अ-खाहीरी-खिचडी
अ-दावत
फा-नाश्ता
फा-बरफ
फ़ा-बालूशाही
अ-मलीदा
अ-मुरब्बा
अ-रूह अफजी-ताजगी देने वाला
फा-शीरा
फा समोसा
फा-हलवा

(ख)

अ-अनार
अ-अजर-ए जीर
फ़ा-आलूचा-मीठा मेवा
फा कद्दू
फा-किशमिश
फा-खूबानी-सूखाफल
फा-गुलबनफशा
फा-चुकन्दर
फा-तरबूज
फा पियाज
फा-बादाम
फा बिही, बीही-नाशपाती सा फल
फा-मेवा
फा-शहद

फा-अंगूर
अ-अमरूद
फा-आलूबुखारा
फा-काशनी-एक दवा का पौधा
फा-खरबूजा
फा-खुरमा-मीठा-मीठी रोटी
फा-चिलगोजा-चीड का फल, मेवा
फा-जोशान्दा-औषधि की जडी
फा-नोशी स्वादिष्ट
फा पिश्ता
फा-पोदीना
अ-मुनक्का
फा-शरीफा
फा-शहतूत

फ़ा-तम्बाकू
फ़ा-तरकारी-तरकारी
फ़ा-शलजम शलगम
फ़ा-मैदा

(१०) नशा और इत्र-गुलाब से सम्बद्ध शब्द —

(क)

अ-अफ़ीम
फ़ा-चरस
फ़ा-तम्बाकू
फ़ा-नैचाबान नैचा-हुक्के की नली
फ़ा-रिन्द-मिज़ाज मनमौजी
फ़ा-शराबी-शराब पीनेवाला
फ़ा-हुक्का

फ़ा-चस्का-[illegible]
फ़ा-चिलम
अ-नशा
फ़ा-कशीदन खींचना-चढ़ा-फूँकना
फ़ा-शराब
अ-सुराही-प्याला जलपात्र

(ख)

अ-अबीर
फ़ा-बास-सुगंधित वायु
फ़ा-गुलाब-जल
फ़ा-गुलाल-पुष्पचूर्ण
फ़ा-मुश्क-कस्तूरी
फ़ा-रोगन-तेल
फ़ा-शीशी
अ-साफ़
अ-हम्माम-स्नान (एक साबुन)

अ-इत्र-सुगंधित पदार्थ पुष्पसार
अ-ख़िज़ाब-बाल का रोगन
फ़ा-गुलरोगन-पुष्प तैल
फ़ा-तिला-कामोत्तेजक तैल
अ-अर्क़-सत
अ-वस्मा-नील के पत्ते
अ-साबुन
फ़ा-सुरमा
अ-हिना-रंग

(११) कृषि से सम्बद्ध शब्द —

अ असामी-किसान
फ़ा-आबी-सींचीभूमि
फ़ा-काश्तकार-कृषक
अ-ख़रीफ़-कुआर की फ़सल
फ़ा-चाही-कुआँवाला
अ-तक़ावी-कृषि ऋण
फ़ा-पैदावार-उपज
फ़ा-बरबाद-नष्ट
अ-मौसम-ऋतु
अ-रबी-चैत की फ़सल

फ़ा-अ-आबहवा-जलवायु
फ़ा-काश्त-खेती
फ़ा-काश्तकारी-खेती करना
फ़ा-ख़राब-नष्ट हो जाना
अ-जिन्स-सामान (उत्पादन)
अ-नुक़सान-हानि
अ फ़सल-उपज
फ़ा-बारानी-वर्षा का खेत
अ-मौरूसी-उत्तराधिकार में
अ-हवा-वायु

(१२) बागवानी से सम्बद्ध शब्द —

फा-कलम-काटना
फा-कलमी-कलम किया पौधा
फा-गुल-फूल
फा-गुलदस्ता-फूल का गुच्छा
फा-गुलिस्ता-बाग
फा-गुलाब-एक फूल
फा-गुलशन-फुलवारी
फा-गुलनार-बाग
फा-चमन-बाग
अ-ज़खीरा-पौधों की खेती
फा-नरगिस-एक फूल
फा-देवदार-देवदारू
फा-पैवन्द-सजाना
फा-बहार-सौंदर्य, मस्ती, वसंत
फा-बागीचा-लघु उपवन
फा-बाग-उपवन
फा-बू गंध
फा-बियाबान-उजाड़ प्रदेश
फा-खुश(बू) सुगंध
फा-(बद)बू-दुर्गन्ध
अ-हाशिया-किनारा
फा-हज़ारा-एक फूल

(१३) पशु-पक्षियों से सम्बद्ध शब्द —

फा-कबूतर
फा-खरगोश
फा-जानवर-पशु
फा जुर्रा-नरबाज़
अ-तोता सुग्गा
फा-तूती-मैना
अ-दुलदुल-खच्चरी
फा-परिन्दा-पक्षी
फा फाखता-एक कबूतर
अ बतख़
फा बहरी-शिकारी पक्षी
फा-बाज़
फा-बुलबुल
अ मवेशी
फा-मुर्ग़
फा-मुर्गाबी-जलपक्षी
फा-शेर-चीता-शेर
फा-शेरबबर-सिंह
फा-शिकार-घायल पशु-पक्षी
अ-हुदहुद-एक पक्षी, कठफोड़ा
फा-शुतुरमुर्ग-ऊँट जैसा पक्षी, उष्ट्र पक्षी

(१४) अश्वारोही से सम्बद्ध शब्द —

फा-अस्ता-घोड़ा
अ-अरबी-अरब का घोड़ा
फा अयाल, बाल घोड़े की गर्दन के बाल
अ अस्तबल-अश्वशाला
अ-इराकी-इराक का घोड़ा
फा-क़दम-घोड़े की चाल

फा-उस्तरा-छुरा
अ-कसाई-पशु काटने वाला
फा-कारोबार
तु-खरादी-खराद करने वाला
अ-जल्लाद-फाँसी देने वाला
अ फा-जिल्दसाज़-जिल्द बनाने वाला
अ फ़ा-तबक़साज-तबक बनाने वाला
फा-नानबाई-रोटीवाला
फा-पहलवान-मल्लयोद्धा
फा पेशराज-भवन निर्माता
फ़ा-बाग़बान-माली
फा-बाजीगर-तमाशा करने वाला
अ-मेहतर-भंगी
अ-मल्लाह-नाविक
अ मिरासी-ढोल बनाने वाला, खानदानी
अ रफ़ूगर-रफ़ू करने वाला
फा-रंगसाज-चित्रकार
फा-(बे)रोजगार-बेकार
फा-शिकारी-शिकार करने वाला
फा-संगतराश-पत्थर काटने वाला
अ-हजामत-बाल बनाना
अ-हकीम-वैद्य
अ-हमामी-स्नानागार रक्षक

अ फा-कलईगर-कलई करने वाला
फा-कारीगर
तु-खराद
फ़ा-खानसामा-रसोइयाँ
अ-जर्राह-शल्यक
फ़ा-ज़ीनसाज़-घोड़े की जिन बनाने वाला
अ-दलाल-बिचवैया
अ-नालबंद-नाल बनाने वाला
फ़ा-पेशा-काम
अ बजाज-वस्त्र विक्रेता
तु-बावर्ची-रसोइया
फा-मज़दूर-श्रमिक
अ-तु मशालची-प्रकाश दिखाने वाला
फ़ा मीनाकार-सुनार
फा-रंगरेज़-रंगनेवाला
फा-रोज़गार-काम
अ-सर्राफ-धनी, सोनार
अ-साईस-अश्व पालक
अ-हज्जाम-नाई
अ-हलवाई-मिठाई बनाने वाला

(ख)

फा-कशीदा-सूई का काम
फा-कारचोबी-कढ़ाई करने वाला
फा-किश्ती-नाव
फा-ज़री-सुनहला तागा
अ-दूकान
फा-नगीना-कीमती पत्थर
फा-मीनाकारी

तु-कलाबत्तू-रेशम
फा-किनारी
फा-खरीददार-क्रेता
फा-नगाजू
अ फा-दूकानदार
फा-बाज़ार

फा-संग-पत्थर | फा-संगमरमर-चिकना विशेष पत्थर
फा-मार्चा | अ-मुफ़्ती
अ-हरम-जनानखाना | अ-हवेली-कोठी

(१८) स्वास्थ्य, शरीररचना-विज्ञान, रोग एवं चिकित्सा से सम्बद्ध शब्द —

(क)

अ-कद-आकार | फा-कमर-कटि
अ-कदम-पग | फा-खून-रक्त
फा-गरदन-गला | फा-गुरदा-तिल्ली
फ़ा-चश्म-आँख | फा-चेहरा-मुख
फा-ज़बान-जिह्वा | फा जान-प्राण
फ़ा-जिगर-यकृति | अ-तन्दुरुस्त-स्वास्थ्य
अ-ताकत-शक्ति | फा-दम-जान, साँस
फा-दिल-हृदय | फा-दिमाग-मस्तिष्क
अ-नब्ज़-नाड़ी | फा-निगाह-आँख
फा-पेशाब-मूत्र
फ़ा-फोता-अण्डकोश | फा-बगल-काख
फा-बच्चादानी-गर्भाशय | अ-बदन-शरीर
फा-बाज़ू-भुजा | फा रग-नस
फ़ा-सीना छाती | अ-सेहत-स्वास्थ्य

(ख)

फ़ा-आतशक-गर्मी | फ़ा-कै-वमन
अ-खलान-घाव | फा-गुजर-मरना
तु-चेचक-माता की बीमारी | फा-ज़हरबाद-विकृत फोडा
अ-जुकाम-सर्दी खासी | अ ताऊन-प्लेग
फा-दर्द-पीडा | अ-दिक-क्षय
अ-नज़ला-सर्दी | अ नासूर-पुराना घाव
फ़ा-अ बदहज़मी-अपच | अ-बवासीर
फा-बीमार-रोगी | फा बुखार-ज्वर
अ-मरज़-बीमारी | अ मवाद-पीप
अ-मरीज़-रोगी | फ़ा रेशा-कीटाणु केचुआ
अ-लकवा-पंगु | अ लाइलाज-असाध्य
फा सुजाक-योनिसंबंधी बीमारी | अ-हरारत-थकान, बुखार
अ-हैजा-एक संक्रामक बीमारी

अ-रबाब-सारंगी	अ-रियाज-अभ्यास
फा-शहनाई	फा-सरोद
फा-साज़-संगत, बाजा	फा-सितार

(२१) उपाधियां और गाली-गलौज से सम्बद्ध शब्द—

[क]

अ-अमीर-सामंत	अ-खलीफा-मुसलिम जगत का प्रधान
तु अ खांसाहब-सरदार	तु-फा खांबहादुर-सामन्त
अ जनाब-श्रीमान्	फा-दीवान-मंत्री
फ़ा बख्शी-मंत्री के लिए	अ-मलिक-शाह, जमींदार
अ मुंशी-अध्यापक	फा-अ मीर मुंशी-बादशाह या शाहजादों के शिक्षक
अ-मीरज़ा, मिर्ज़ा-प्रधान	
अ-मौलवी-अध्यापक	फा-शाह
अ-शेख-प्रधान	फ़ा-सरदार
फा सरकार-मालिक	अ-साहिब, साहब-श्रीमान
अ-हज़ूर हुज़ूर-मालिक उपस्थिति	

[ख]

फा-आवारा	फा-आवारागर्द
फा-कमीना-नीच	फा-कमबख्त-अभागा
	फा-नालायक-नीच
फा-पाजी-नीच	फा-बदचलन-चरित्रहीन
फा-बदमाश-आवारा	फा-बदजात-दोगला
फा-बदतमीज़-उजड्ड	फा-बेईमान-मिथ्याभाषी
फा-बेहया-निर्लज्ज	फा-बेशर्म-निर्लज
फा-अ बेअदब-धृष्ट	फा-बेहूदा-बदमाश
फा-बेवकूफ-मूर्ख	अ-मक्कार-धूर्त
अ-मूज़ी-दुष्ट	फा-लफंगा-झगड़ालू, चरित्रहीन
तु-लुच, लुच्चा-दुष्ट, लोफर	अ-शैतान-दुष्ट, राक्षस
अ-फा हरामज़ादा-दोगला, हरामी	अ-शोहदा-निकम्मा
अ-हुज्जती-विवादी	

[अ] चुकाना
अ-अमल-व्यवहार
फा-अन्दाज़-अनुमान
अ-अशर्फी-एक सिक्का
फा-आवाज़-ध्वनि
फा-आसमान-नभ
अ-आशिक़ प्रेमी
अ आखिर, आखीर-अन्तिम
अ इश्क-प्रेम
फा उम्मीद आशा
अ ऐब-दोष
अ कत्ल हत्या
फा-कर्ज-ऋण
अ-करामात-चमत्कार
फ़ा कारवाँ-दल
अ किराया भाड़ा
अ कौल वचन
फा खरीता खलीता, पेटी
फा-खानदान घराना
फा-गरदा-धूल
फा-ग़म चिंता
फा-गिरोह-झुंड
फा-गुब्बारा
तु-चाकू
फा चीज़ सामान
अ ज़माना समय
फा जगह स्थान
फा जादू इन्द्रजाल
फा ज़िन्दाबाद अमर
अ-तरफ़ ओर
अ-तरह-ढंग
अ तसल्ली धीरज
अ-तबादला परिवर्तन
फा-अफ़साना > फिसाना-कहानी
फा-अफसोस-चिंता
अ- फा अजायबखाना-संग्रहालय
फा-आदमी-मनुष्य
फा-आराम-सुख
फा-आज़ाद-स्वतंत्र
फा आमदनी-आय
अ-इन्क़लाब-क्रांति
अ-एहसान-कृतज्ञता
अ करीम-दयालु
अ करीब निकट
अ-कफन-शवपट्ट
अ-कब्र
अ-क़ाफिला-टोली
अ किस्सा-कथा
अ फ़ा गरीबनेवाज-दयालु
अ-खत्म-समाप्त
अ-खुलासी-कुली
फा खुर्दबीन-सूक्ष्मदर्शक
फा-गरज़ स्वार्थ
फा ग़द्दार-विश्वासघाती
फा चरखा
फा-चश्मा ऐनक, सीता
फा-ज़रा थोड़ा
फा-जर्दा-तम्बाकू
अ-जलसा जलूस, उत्सव
फा ज़हर-विष
फा-जिस्ता > दस्ता-एक धातु
अ जलूस जनप्रदर्शन
अ-तकाज़ा-माँग
अ-तमाम-सब, पूरा
फा तालाब-जलाशय

तु लाश-शव
फा-वादा-प्रतिज्ञा
फा-वापसी-लौटना
फा-शादी-विवाह
अ-शुक्रिया-धन्यवाद
अ शुरू-आरम्भ
फा सफेदा-एक वृक्ष
अ-सनद-प्रमाण
फा-सितारा-तारा
अ-सुन्नी एक मुसलिम सम्प्रदाय
अ-हवा-वायु
फा हस्ती-अस्तित्व
अ-हालत-स्थिति
फा हिंदी-भारत की भाषा
फा हिंदुस्तान हिंदुओं का निवास स्थान
फा-हिंदुस्तानी-हिंद की, एक भाषा

अ-रुग्रब > रौब-प्रताप, धाक
अ-वहाबी-एक मुसलिम सम्प्रदाय
अ-शाम-सन्ध्या
अ वास्ता-सबध
अ-शीया-एक मुसलिम सम्प्रदाय
अ शुक्र-कृपा
फा शौहर पति
अ-सदी-शती
अ सन्दूक-मजूषा
अ-सुबह-प्रात
फा-सूदखोर-ऋणदाता
अ-हनफी-एक मुसलिम सम्प्रदाय
अ-हाज़मा-पाचन
फा-हिंद-भारत
फा-हिंदू-भारतवासी, एक जाति

६ - अर्थपरिवर्तन

(१) **अर्थपरिवर्तन और उसका स्वरूप**—किसी शब्द का अर्थ पूर्णरूप से निश्चित नही होता। उसका ठीक अर्थ प्रकरणनिष्ठ होता है। इतना होने पर भी प्रत्येक शब्द का कोई न कोई मूल अर्थ अवश्य होता है जो विभिन्न प्रकरणो मे तत्तत् अर्थच्छाया को ग्रहण करता है। इसी मूलअर्थ को हम कोशगत अर्थ कह सकते हैं, जो भिन्न प्रकरणों और प्रसगों के अनुसार विभिन्न अर्थप्रतीति कराता है। मुसलमान मुहम्मद को खुदा का आखीरी पैगम्बर मानते हैं। पडित नेहरू शान्ति के पैगम्बर माने जाते थे। हिटलर युद्ध का पैगम्बर था। यहाँ भिन्न प्रसग में भी 'पैगम्बर' का अर्थ सदेशवाहक है, किंतु 'पैगम्बर' का प्रयोग निरपेक्ष नही है। मुहम्मद, नेहरू और हिटलर के प्रसग में पैगम्बर' धर्म, शांति और युद्ध का सदेशवाहक हो जाता है। इसी प्रकार सिर्फ आँसू कहने से बात स्पष्ट नही होती। दुःख के 'आँसू' का अर्थ सुख के 'आँसू' से भिन्न है और हँसते-हँसते 'आँसू' आने का अर्थ और भी भिन्न हो जाता है। पारसीको से सम्पर्क के आरम्भ में 'हिंद' उस प्रदेश को कहा जाता था, जो सिंधु नदी के आसपास स्थित हो, किंतु कालान्तर में यह समस्त भारत के लिए प्रयुक्त होने लगा। फारसी में 'मुर्ग' शब्द सामान्यत पक्षी के लिए प्रयुक्त होता है,

जब कि हिंदी में एक विशेष पक्षी के लिए। 'गबन' का अर्थ भूलकर कुछ को देना या मानना है जबकि हिंदी में इसका ठीक उल्टा अर्थ प्रचलित है अर्थात् जानबूझकर चोरी करना या हड़पना।

(२) हिंदी अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ और फारसी शब्द —

हिंदी में प्रयोग होने पर अनेक फारसी शब्दों का वातावरण एक प्रकार परिवर्तित हो गया जिसका प्रभाव उन शब्दों के अर्थ पर पड़ा है। दो भिन्न जनसमुदाय के प्रयोग का भी फारसी शब्दों के अर्थ पर प्रभाव पड़ना आवश्यक था। एक प्रसंग में किसी शब्द का अर्थ कुछ था किंतु दूसरे प्रसंग में उसी शब्द का अर्थ बदल गया। इस सिलसिले में डॉ० बाहरी का मत उल्लेखनीय है 'भारतीय वैयाकरण भी अपना मत प्रकट करते हैं कि एक शब्द एक साथ एकाधिक अर्थ नहीं व्यक्त करता। हर बार जब कि शब्द भिन्न आशय से युक्त किया गया हो वह व्यवहारतः नए शब्द के रूप में आता है, यद्यपि उसका स्वरूप पुराना ही रहता है।'[१] भिन्न परिस्थितियों एवं प्रसंगों में शब्द का अर्थ कैसे बदल जाता है इस पर अमेरिकी लेखक श्री जान्सन ने लिखा है कि 'जब शब्द का कोई पैतृक भावार्थ नहीं होता तो प्रत्येक शब्द के उतने भावार्थ होते हैं जितना इसका सम्बन्ध भिन्न परिस्थितियों के प्रसंगों से होता है। जब 'चार्ज' शब्द आक्रमण के लिए प्रयुक्त होता है, तब वह महत्वपूर्ण और ओज होता है, जब वह शुल्क के भावार्थ के लिए प्रयुक्त होता है तो इसका नितांत भिन्न भावार्थ होता है।'[२]

जिन फारसी शब्दों का या फारसी के माध्यम से आगत अरबी-तुर्की शब्दों का हिंदी में अर्थपरिवर्तन हुआ है, उनका तीन भिन्न दिशाओं (१) अर्थविस्तार, (२) अर्थसंकोच (३) अर्थादेश—में अध्ययन करना उचित होगा। इस परिवर्तन का मूल कारण विचार विभिन्नता है जो व्यक्ति या समाज के सम्पर्कजन्य गुणात्मक परिवर्तन के कारण उत्पन्न होती है। अर्थपरिवर्तित शब्दों का संक्षिप्त अध्ययन निम्नलिखित है —

(१) अर्थविस्तार—अर्थ विस्तार उस शब्द में माना जाता है, जहाँ शब्द का अर्थ अपने मूल अर्थ से अधिक हो जाता है यथा —

१—हिंदी सिमैन्टिक्स पृ० १६, डॉ० बाहरी।

२—ऐज मच ऐज हैव नो सिग्निफिकेशन एपार्ट वर्ड कैन हैव ऐज मेनी सिग्निफिकेशन्स ऐज देट पैसेजेज ए रेफरेन्स टु डिफरेंट फैनोमेना पृ० ११ ए ट्रिटाइज ऑन् लैन्गेज बी० जान्सन।

शब्द	फारसी अर्थ	अधिक हिंदी अर्थ
अहलकार	घर का नौकर	न्यायालय का नौकर
इजारा	एकाधिकार, ज़ोर	लाभ, वृद्धि, देय
ईमानदार	विश्वासभाजन	सत्यवादी
कुर्सी	मञ्च	आसन, चबूतरा
क़ैद	जेल की सज़ा	बाध्यता
खबर	जानकारी	समाचार
ख़त	रेखा, पत्र	किनारा, सिरा
खज़ाना	रुपये का भंडार	लालटेन का पेंच[१]
ख़ार	काँटा	ईर्ष्या
खानदानी	पारिवारिक	अच्छे वंश का
गुलाबी	गुलाब का	लाल, हल्का
चिक	महीन परदा, घूँघट	बाँस से बनी जाली
ज़बानी	जीभ का, —से	अलिखित
ज़खीरा	भंडार, सञ्चय	पौधों का समूह
ज़नाना	स्त्री, क्लीव	पत्नी
ज़रदा	पीला रंग, अंडे का सत्व	सुर्ती
जलूस	एक साथ बैठना	सभा, भीड़ का साथ चलना
जवाब	उत्तर	बदला, बराबरी
ज़िलादार	ज़िलाधिकारी	नहर व नलकूप का जाँचकर्ता
ज़ीन	गद्दी	मोटा कपड़ा
तलब	बुलावा	वेतन
तैयार	ठीकठाक	सावधान, मोटा
दरगाह	द्वार, दरवाज़ा	राजसभा, रौज़ा, समाधि-स्थल
दाना	चतुर, अनाज	चना
दारू	उपाय	चिकित्सा, शराब
दावा	अधिकार	अभियोग
दीवान	उपाधि, वही	मंत्री, पुलिस कर्मचारी

१— यह अर्थ पूर्वी हिंदी की बोलियों में प्रचलित है।

कानूनगो	कानूनवेत्ता	एक कृषि अधिकारी
खलीफा	एक पद	दर्जी, सामान्य मुसलमान
खानसामा	गृह प्रबंधक	रसोइया
जमादार	संग्रहकर्ता, एक अधिकारी	मेहतर, एक कर्मचारी
जनाजा	वस्त्र लगा शव	अर्थी
ज़िक्र	स्मृति	सामयिक स्मरण, चर्चा
दरिया	सागर	नदी
दीवानी	न्यायालय	माल का न्यायालय
नाब	निर्मल, शुद्ध जल	अशुद्ध जल
पायचा	पाँव, छोटा पद	पाजामा का निचला हिस्सा
मअमूली>मामूली	व्यावहारिक	सामान्य
मुर्ग़	पक्षी	अरुणशिखा, एक पक्षी
मौलाना	विद्वानों की पदवी	मुसलमानों का संबोधन
रसद	भंडार	खाद्य भंडार
रेज़ा	टुकड़ा	रेशमी कपड़े का टुकड़ा
शाहज़ादा	राजकुमार, राजकुमारी	राजकुमार
सलाह	भलाई, उद्देश्य	परामर्श
सब्ज़ी	हरियाली	तरकारी, हरी तरकारी
साफा	छानने का कपड़ा, छन्ना	पगड़ी का कपड़ा
सिक्का	मुद्रा बनाने का ढाँचा	मुद्रा
सुलतान	राजा, रानी	राजा
हुक्का	मंजूषा	धूम्रपान की पेटी

(२) अर्थादेश—अर्थादेश में शब्द अपना मौलिक अर्थ छोड़ देता है और दूसरा ही अर्थ ग्रहण कर लेता है, यथा—

शब्द	फारसी अर्थ	हिंदी अर्थ
अख़बार	ख़बरें	समाचारपत्र
अरसा	फासला	समय
असबाब	कारण	माल, सामान
आशनाई	दोस्ती	स्त्री-पुरुष का गुप्त प्रेम
आम	अच्छी तरह ज्ञात	साधारण, सामान्य
कवायद	कायदा, व्याकरण	परेड
खाहमखाह	जैसी इच्छा	अकारण
ख़ातिर	मन, हृदय	वास्ते, स्वागत

७—मुहावरे और कहावतें

अ—मुहावरे

(१) आरम्भ

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ बोलचाल, बातचीत या अभ्यास है। विशेष अर्थ के आरोप के कारण लाक्षणिक अर्थयुक्त शब्द समूह, वाक्यांश या संयुक्त क्रिया को भी मुहावरा कहा जाता है यथा लात खाना। रोटी की तरह लात खाई नहीं जाती। लक्ष्यार्थ है लात की मार सहना। मुहावरा भाषा का एक विकासशील तत्व है। हिंदी भाषा में इस शब्द का आगमन फारसी के माध्यम से हुआ है। मुहावरों में शब्द-योजना असामान्य और विलक्षण होती है, इसी कारण मुहावरे का अर्थ उसके शब्दों के अर्थ से भिन्न एक विशेष प्रकार का होता है। मुहावरों में शब्दों का कोशगत अर्थ (लोग़त मानी) स्वीकार नहीं किया जाता बल्कि समाज द्वारा स्वीकृत रूढ़ अर्थ (इस्तलाही मानी) स्वीकृत किया जाता है।

मुहावरे अपनी असामान्य शब्दयोजना के कारण भाषा के अर्थ में चमत्कार उत्पन्न करते हैं। इनमें भाषा की अभिव्यंजनाशक्ति एवं माधुर्य निहित रहता है। मुहावरों से भाषा के रूप में महान परिवर्तन हो जाता है। फलस्वरूप मुहावरे भाषा के श्रेष्ठ अंग माने गए हैं। मुहावरों की दृष्टि से हिंदी एक धनी और जीवित भाषा है। इसमें जहाँ संस्कृत-प्राकृत से मुहावरे स्वीकृत किए गए हैं, वहीं अरबी-फारसी और अंग्रेजी से भी सैकड़ों मुहावरे स्वीकृत हुए हैं। फारसी की लोकप्रियता का कारण मुहावरे भी हैं। विदेशियों की बोलचाल एवं साहित्यरचना के कारण अनेक मुहावरे हिंदी में आए। सदियों तक फ़ारसी के शासन, दरबार एवं न्यायालय की भाषा होने के कारण इन मुहावरों ने स्थानीय भाषाओं में अपना स्थायी स्थान भी बना लिया है। हिंदी के विकास की वर्तमान अवस्था में फारसी मुहावरों, और मुहावरों में प्रयुक्त शब्दों, खासकर संज्ञा शब्दों को हटाया भी नहीं जा सकता।

संस्कृत या प्राचीन भारतीय भाषाओं के मुहावरे आधुनिक ढंग के पाठकों की पकड़ में नहीं आते। आधुनिक मुहावरा पद्धति विश्लिष्ट पदात्मक होती है, जब कि संस्कृत के मुहावरे श्लिष्टपदात्मक होते हैं।[1] फलस्वरूप हिंदी मुहावरे संस्कृत से भिन्न फारसी मुहावरों के अत्यन्त अनुरूप पड़ते हैं। फारसी-हिंदी मुहावरों के साम्य को देखकर डॉ० बाहरी ने लिखा है कि 'दूसरी ओर हिंदी और फारसी मुहावरों में अद्भुत मेल है।'[2] वास्तव में हिंदी की यह एक

१—हिंदी सिमेन्टिक्स, पृ० २५२।
२—वही, पृ० २५२।

२) फारसी मुहावरों का प्रभाव

[क] 'प्राचीन संस्कृत साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उसमें मुहावरे बहुत कम थे। संस्कृतज्ञ प्रत्यक्ष व सीधे शब्दों में कहने में विश्वास रखते थे।'[1] हिंदी पूर्व सभी भाषाओं की ऐसी ही स्थिति थी। फारसी के सम्पर्क में आने पर हिंदी में फारसी के ढंग से क्रिया और संज्ञा द्वारा मुहावरे बनाने की पद्धति प्रचलित हुई। 'दूसरे यह तथ्य कि हमारे बहुसंख्यक मुहावरों में फारसी के शब्द मौजूद हैं, असंदिग्ध रूप से उस भाषा के प्रभाव को दिखलाता है।'[2] एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हिंदी के अनेक मुहावरे फारसी मुहावरों के अनुवाद मात्र हैं, जिनका प्रयोग किसी बात को प्रभावकारी ढंग से सुन्दरतापूर्वक कहने के लिए होने लगा, जिनमें फारसी शब्द पर्याप्त संख्या में आज भी अपरिहार्य रूप में विद्यमान है। 'हिंदी भाषा पर साधारण तौर से किंतु हिंदी मुहावरों पर विशेष तौर से यदि किसी अन्य भाषा का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है, तो वह फारसी है। अरबी और तुर्की के भी बहुत से शब्द और मुहावरे यद्यपि हमारी भाषा में मिलते हैं, किंतु पहले तो उनमें से अधिकांश फारसी में होते हुए ही हमारे यहाँ आये हैं, दूसरे उनकी संख्या इतनी कम है कि हम यह नहीं मान सकते कि उनका भी कोई खास प्रभाव हिन्दुस्तानी भाषाओं पर पड़ा है।'[3] डॉ० बाहरी ने लिखा है कि निम्नलिखित तीस फारसी शब्द लगभग २०० हिन्दी मुहावरों में प्रयुक्त होते हैं।—[4]

मगज	दिमाग	पंजा
दिल	जान	रंग
पहलू	बगल	जबान
दम	गरदन	आवाज
पलक	जखम	खून
कमर	अक्ल	मौज
निशान	गुल	ख्याल

1—परसियन इन्फ्लुएन्स ऑन हिंदी, पृ० ५६, डॉ० बाहरी।

2—वही, पृ० ५६।

3—मुहावरा मीमांसा पृ० २२६, डॉ० ओम प्रकाश गुप्त।

4—हिंदी सिमैन्टिक्स, पृ० २५३।

(ख) अगवाची शब्दों से बने मुहावरे और उनका हिंदी रूप—

फारसी मुहावरा	हिंदी मुहावरा	अर्थ
अगुश्त व दन्दान	दाँतो तले अगुली	स्तब्ध होना
अगुश्त व दन्दान गज़ीदन	दाँतो से अगुली काटना	चकित होना
अगुश्त निहादन	अगुली उठाना	दोषारोपण करना
अदाम अदाम करदन	अग अग करना	अलग अलग
अब्र ू व हम कशीदन	भौंहें तानना	क्रुद्ध होना
अक्ल फरोख्तन	अक्ल बेंच डालना	निर्बुद्धि होना
अक़्ल गुम शुदन	अक्ल गुम होना	नासमझ
अक़्ल रफ़्तगी	अक्ल जाती रहना	बुद्धि गवाना
आवाज़ दादन	आवाज़ देना	बुलाना
आवाज़ करदन	आवाज़ाकशी करना	व्यंग्य करना
आवाज़ नमूदन	आवाज़ उठाना	माग करना
आवाज़ कशीदन	आवाज़ कसना	चिल्लाना
क़दम लग्ज़ीदन	पैर, कदम फिसलना	धोखा खाना
क़दम कशीदन	पैर खीचना	रुकावट डालना
कमर शिकस्तन	कमर टूटना	हिम्मत हारना
कमर बस्तन	कमर बाधना	तैयार होना
ख्याल करदन	ख्याल करना	स्मरण
ख्याल गुम शुदन	ख्याल उतरना	विस्मरण
खून गरम शुदन	खून गर्म होना	गुस्सा करना
खून खुरदन	खून पीना	बर्दाश्त करना
खून करदन	खून करना	मारना
गरदन कशीदन	गरदन उठाना	विद्रोह करना
गरदन खारीदन	गला फाड़ना	चिल्लाना
गरदन ज़दन	गला काटना	धोखा देना
गरदन दराज़ करदन	गरदन नपाना	त्याग करना
गरदन कोताह करदन	गरदन छोटी करना	मुँह मोड़ना
गाम निहादन	पाव रखना	आगमन
गुस्सा ज़ब्त करदन	गुस्सा रोकना	धीरज रखना
गुस्सा खुरदन	गुस्सा पीना	बर्दाश्त करना
गोश बर दाश्तन	कान खड़े होना, करना	चौकन्ना होना
गोश्त दाश्तन	कान देना	सुनना

चश्म ज़दन	निगाह मारना	संकेत करना
चश्म बद करदन	बुरी नज़र करना	अशुभ होना
चश्म बद दूर	बुरी नज़र से बचना	सुरक्षा
चश्म बे आब शुदन	आंख में पानी न होना	कठोर होना
चश्म अन्दाख़्तन	आंख नीचे करना	लज्जित होना
चश्म बराह दाश्तन	आंखें राह पर लगाना	प्रतीक्षा करना
चश्म बर सर	सर आंखो में	सम्मानित करना
चश्म बर ज़मीं अफ़गन्दन	आंख ऊपर न उठाना	शर्मिन्दा होना
चश्म दाश्तन	आस रखना	निगरानी करना
चश्म दो चहार शुदन	आंख दो चार होना	मिलना
चश्म ख़ूं आलूद	आंखों में ख़ून उतरना	क्रुद्ध होना
चश्म नमूदन	आंख दिखाना	क्रुद्ध होना चेतावनी देना
चश्मपोशी नमूदन	आंख बचाना	बचना
चश्म रसीदन	नज़र लगाना	कुदृष्टि करना
ज़ख़्म रसीदन	ज़ख़्म पहुंचाना	दुखी करना
जान बर कफ़ निहादन	जान हथेली पर रखना	ख़तरे में पड़ना
बाज़ी-ए-जान करदन	जान की बाज़ी लगाना	संकट सहना
जान फ़िशानी करदन	जान लगाना	मेहनत करना
अज़ जान गुज़श्तन	जान से गुज़र जाना	बलिदान होना
जान दादन	जान देना	मर जाना
जान ख़ुद फ़िरोख़्तन	जान बेचना	त्याग करना
ज़ुबान ख़ामोश करदन	ज़बान चुप करना	शांत करना
ज़बान दराज़ करदन	बढ़ बढ़ कर बात करना	गप्प मारना
ज़ुबान न शुदन	ज़बान न होना	ख़ामोश होना
बर ज़बान आवुर्दन	ज़बान पर लाना	कहना
ज़बान बुरीदन	ज़बान काटना	चुप करना घूस देना
ज़ुबान दादन	ज़बान देना	प्रतिज्ञा करना
ज़बान गिरफ़्तन	ज़बान पकड़ना	आलोचना करना
ज़ुबान कुशादन	ज़बान खोलना	बोलना
तेवर तब्दील करदन	तेवर बदलना	क्रुद्ध होना
दम ज़दन	दम मारना	सुस्ताना
दम गिरफ़्तन	दम लेना	आराम करना
दम दादन	दम देना	प्रोत्साहित करना

दम गिरफ़्तन	दम घुटना	साँस लेने में कठिनाई
दम कशीदन	दम निकालना	अवकाश पाना
दम खुरदन	दम खाना, -मारना	विश्राम करना
दंदान तुर्श करदन	दाँत खट्टा करना	परेशान करना
दंदान फ़रो गुज़ाश्तन	दाँत निकालना	प्रार्थना करना
दंदान नमूदन	दाँत दिखाना	छीनना प्राप्त करना
दस्त ब दस्त	हाथों-हाथ	आसानी से
दस्तो-पा ज़दन	हाथ पैर मारना-चलाना	कोशिश करना
दस्त बस्ता	हाथ जोड़ना	विनती करना
दस्त अफ़शान्दन	हाथ झाड़ना	त्यागना
बदस्त आवुर्दन	हाथ आना	पाना
दस्त अज़ जान शुस्तन	जान से हाथ धोना	मर जाना
दस्त बर दस्त निशस्तन	हाथ पर हाथ धर बैठना	बेकार होना
दस्त बर दिल निहादन	दिल पर हाथ रखना	साहस करना
दस्त दादन	हाथ देना	सहायता करना
दस्त दाश्तन	हाथ रखना	उत्साहित करना
दस्त गज़ीदन	हाथ मलना	पश्चाताप करना
दस्त कशीदन	हाथ खींचना	अलग होना
दस्तो-पा चह् शुदन	हाथा पाई होना	संघर्ष होना
दस्त पेश दाश्तन	हाथ पसारना	याचना करना
दस्त याफ़्तन	हाथ लगना	पाना, रखना
दस्त उफ़्तादन	हाथ लगना	पाना
दिल पज़ीर शुदन	दिल पसन्द होना	प्रिय होना
दिल बाग़-बाग़ शुदन	दिल बाग़-बाग़ होना	प्रसन्न होना
बर दिल बार जिहादन	दिल पर बोझ रखना	दुखी, संवेदनशील होना
दिल दादन	दिल देना	प्रेम करना
दर दिल गिरफ़्तन	दिल में रखना	स्मरण करना
दिल नमूदन	दिल दिखाना	साहस करना
दिल सैद शुदन	दिल शिकार होना	प्यार करना
दिल ताक़ करदन	दिल उठा लेना, -तोड़ना	प्रेम तोड़ना
दिल चाक करदन	दिल छलनी करना	प्रेम की निष्ठुरता
दिमाग़ तेज़ शुदन	दिमाग़ तेज़ होना	अनियन्त्रित होना
दिमाग़ ख़स्ता शुदन	दिमाग़ ख़स्ता होना	कमज़ोर होना
नज़रे-बद नमूदन	नज़र लगाना	कुदृष्टि पड़ना

रू दाश्तन	मुँह रगाना	सम्मान करना
रू कशीदन	मुँह चढाना	चिगारना
रू सियाही	मुँह काला करना	अपमानित करना
शिकम खारीदन	पेट खुजलाना	वहाना करना
व शिकम रफ्तन	पेट के वल चलना	रेंगना
सर अफगान्दन	सिर नीचा करना	आज्ञा पालन करना
सर आमदन	सिर आना	सामना होना
सर रफ्तन	सिर जाना	मर जाना
सर अज़ पा नशिनाख्तन	सिर पैर न जानना	अज्ञानी होना
सर वर करदन	सिर उठाना	विद्रोह करना
सर वर ख्त	सिर झुकाना	आज्ञा पालन करना
सर बुलन्द करदन	सिर ऊँचा करना	गर्व करना
सर बुरदन	सिर उतारना, उड़ाना	कत्ल करना
सर दादन	सिर देना	मरना
सर फिरो आवुर्दन	सिर झुका लेना	आत्म समर्पण
सर जुफ्त करदन	सिर जोड़ना	परामर्श करना
सर खरीदन	सिर खरीदना	कत्ल करना
सर खारीदन	सिर खुजलाना	चिन्तन करना
सर खुद गिरफ्तन	अपने सिर लेना	जिम्मेदारी लेना
वा सर ओ चश्म	सिर आखो पर	सम्मान पूर्वक
सर पस कशीदन	सिर हटाना	अलग होना
सर पा जदन	सिर पैर मारना	संघर्ष करना
सर पेचीदन	सिर फिरना	बुद्धि भ्रष्ट होना
सर पेश करदन	सिर आगे करना	आत्म त्याग करना
सर शुदन	सिर होना	घमण्ड करना
सर ता पा	सिर से पैर तक	पूर्णत
सर ज़दन	सिर मारना	प्रयत्न करना
सर गरदानीदन	सर फेरना	परेशान करना
सीना करदन	छाती उभाड़ना	अहंकार करना
सीना कुशीदन ।	छाती खुलना	साहस दिखाना

(ग) भाववाचक संज्ञा शब्दों से बने मुहावरे और उनका हिंदी रूप –

आरज़ू करदन	इच्छा करना	चाहना
आरज़ू वरबाद शुदन	इच्छा चूर-चूर होना	असफल होना

आराम गिरफ़्तन	आराम पाना	शान्त होना
आफ़त शुदन	आफ़त होना	भयानक होना
आफ़त करदन	आफ़त करना	उपद्रव करना
इज़्ज़त फ़रोख़्तन	इज़्ज़त बेचना	बुरा काम करना
इज़्ज़त ख़ाक शुदन	इज़्ज़त मिट्टी होना	अपमानित करना
ईमान फ़रोख़्तन	ईमान बेचना	चोरी करना
ईमान क़ायम करदन	ईमान बनाना	न्याय करना
क़तअ तअल्लुक़ करदन	सम्बन्ध या नाता तोड़ना	सम्बन्ध तोड़ना
क़स्द मुसाफ़िरत करदन	सफ़र ठानना	यात्रा करना
क़रार गिरफ़्तन	चैन पाना	आराम पाना
क़रार करदन	वादा करना	आश्वासन देना
क़सम ख़ुरदन	क़सम खाना	प्रतिज्ञा करना
कार दीदन	काम देखना	निरीक्षण करना
अज़ कार रफ़्तन	काम का न रहना	अनुपयोगी होना
ब-कार आमदन	काम में आना	उपयोगी होना
ब-कार आवुर्दन	काम में लाना	उपयोग करना
कूच करदन	कूच करना कूच कर जाना	चलना मरना
ग़म ख़ुरदन	ग़म खाना	धीरज रखना
दग़ा करदन	दग़ा करना	धोखा देना
दर्द गिरफ़्तन	दर्द पकड़ना -होना	कष्ट पाना
दोस्ती दाश्तन	दोस्ती रखना	मित्रता रखना
नश्अ् [illegible] शुदन	नशा उतरना	शान्त होना
नश्अ् [illegible] शुदन	नशा चढ़ना	जोश में आना
नाम दादन	नाम देना	नामकरण करना
निशान शुदन	निशान होना	स्मृति
निशाना साख़्तन	निशाना बनना	शिकार होना
निशाना ख़ता शुदन	निशाना चूकना	धोखा खाना
नीयत बद करदन	नीयत ख़राब करना	नीचता करना
नीयत करदन	नीयत करना	निश्चय
पोस्त बाज़ करदन	पोल खोलना	भेद खोलना
अज़ पोस्त बर आमदन	पोल निकलना	भेद [illegible] करना
फ़रेब ख़ुरदन	धोखा खाना	हानि करना
फ़त्वा दादन	फ़तवा देना	निर्णय करना

बिस्मिल्लाह् करदन	बिस्मिल्ला करना	आरम्भ करना
मजा करदन	मजा उठाना	आनन्द करना
मजा खराब शुदन	मजा किरकिरा होना	सुख न मिलना
मुअमलह् खराब करदन	मामला बिगाडना	नुकसान करना
मौज करदन	मौज करना	मस्ती लेना
रश्क खुरदन	रश्क खाना	ईर्ष्या करना
राज फुशादन	भेद खोलना, राज खोलना	स्पष्ट कर देना
राज़ दादन	राज देना	सूचना देना
रूह् फना शुदन	दम ढीली करना	डरना, पस्त होना
लरजह् गिरफ्तन	कँपकपी लगना	ठंढ लगना
शर्म खुरदन	शर्म घोलकर पी जाना	बुराई का अभ्यास होना
बे शम शुदन	पानी होना	निर्लज्ज होना
शत बस्तन	शत बाँधना	बाजी लगाना
सलाम करदन	सलाम करना	स्वागत करना
सफर–ए–वापसी	वापसी सफर	मौत
हजम करदन	खा जाना	गबन करना
हर्फ गिरफ्तन	बात पकडना	बात पकडना
हिम्मत पस्त करदन	हिम्मत पस्त करना	हराना
हिम्मत पस्त शुदन	हिम्मत पस्त होना	निराश होना

(घ) विशेषण शब्दों से बने मुहावरे और उनका हिंदी रूप —

कम शुदन	कम होना	कमजोर
कुन्द नमूदन	कुन्द करना	बिगाडना
खुश करदन	अच्छा करना	स्वस्थ करना
गर्म करदन	गरम करना	चिढ़ाना
गम शुदन	गरम होना	क्रुद्ध होना
तग दिल शुदन	तग दिल होना	सकीर्ण होना
राह् तग करदन	रास्ता न देना	परेशान करना
तग आवुदन	तग आना	परेशान होना
ताजह् शुदन	ताजा होना	आराम पाना
सवक़ ताजह् करदन	पाठ ताजा करना	याद करना
दिलो-दिमाग़ ताजह करदन	दिल-दिमाग ताजा करना	स्वस्थ होना

ज़मीनो-आसमान यक करदन	ज़मीन आसमान एक करना	अधिक प्रयत्न करना
दर आसमान रिश्ता नमूदन	आसमान में थिगली लगाना	असंभव का काम करना
आतश दादन	आग लगाना	उभारना
आतश निशान्दन	लगी बुझाना	शान्त करना
आस्तीन तंग करदन	आस्तीन चढ़ाना	लड़ने को तैयार होना
मारे-आस्तीन शुदन	आस्तीन का साँप होना	छिपा दुश्मन होना
इलजाम फरमदन	इलजाम रखना	बदनाम करना
उम्र दीवार* गिरफ्तन	दुबारा जन्म होना	[illegible]
कलमबंद करदन	कलमबंद करना	लिख देना
कलम बर कशीदन	कलम फेरना	खारिज करना
कलम बरख्वास्तन	कलम उठाना	समाप्त करना
कमाई करदन	कमाई करना	अच्छा बनाना
कत्ल शुदन	कत्ल होना	बलिदान होना
काम तमाम करदन	काम तमाम करना	मार डालना
किस्सह् शुदन	किस्सा होना	दुर्लभ होना
किस्सह् तमाम करदन	किस्सा तमाम करना	समाप्त करना
किनारह् कशीदन	किनारा खींचना	अलग होना
किनारह् गिरफ्तन	किनारा पकड़ना	अवकाश लेना
कैंची तेज़ करदन	कैंची तेज़ करना	हड़पने की तैयारी
ज़बान कैंची करदन	ज़बान कैंची करना	तीखी बात कहना
खबर गिरफ्तन	खबर लगना	जानना
खबर करदन	खबर करना	सूचना देना
खाक दीदन	खाक छानना	खोजना
खाक करदन	खाक में मिलाना	नष्ट करना
खाक शुदन	मिट्टी होना	मरना, नष्ट होना
खार निहादन	काँटे रखना, बोना	परेशानी पैदा करना
खार शुदन	काँटे बनना	दिल में खटकना
खिश्त ज़दन	पत्थर मारना	कटु बात कहना
गंज कारूँ	कुबेर का खज़ाना	सम्पन्नता
गर्द आबुर्दन	खाक उड़ाना	निष्प्रयोजन कार्य करना
गिरह बर गिरह	गाँठ पर गाँठ	अनेक समस्याएँ
गिरह गिरफ्तन	गाँठ पड़ना	द्वेष करना

पर्दह् अफ्गान्दन	परदा डालना	छिपाना
पदह् बुरदन	परदा उठाना	बलात्कार करना
पर्दह पोशी करदन	परदा करना	लजाना
पसोपेश	आगे पीछे	असमजस में
परागन्दह् शुदन	तितर बितर होना	छिन्नभिन्न
अज पर्दह् बैरून शुदन	परदे से बाहर होना	मुँह दिखाना
अज़ पोस्त बर आमदन	खाल उतारना	मूल्य घटाना
पाईन-पा	पैर के नीचे	दलित
पेश चश्म	आँखो के सामने	प्रत्यक्ष
पुम्बा दर गोश निहादन	कान मे रूई डालना	अनसुनी करना
बाग-बाग	बाग बाग होना	खुश होना
बार बर दिल निहादन	दिल भारी होना	सतप्त होना
बार पज़ी रफ़्तन	पाव भारी होना	गर्भवती होना
बाद करदन	हवा करना	बढ़ाना
बाद शुदन	हवा होना	गायब होना
बुखारे दिल बर आवुर्दन	दिल का बुखार निकालना	गुस्सा निकालना
माल हज़म करदन	माल हज़म करना	लाभ उठाना
माल खुरदन	माल उडाना	चोरी करना
मार शुदन	साप होना	खतरनाक होना
मुहाशरत बाज़ गिरफ़्तन	हुक्का पानी बन्द करना	बहिष्कार
मोम करदन	मोम करना	कोमल करना
मोम शुदन	मोम होना	कोमल होना
मौक़ह् बदस्त आवुर्दन	मौका हाथ लगना	सुविधा मिलना
यके बाद दीगरे	एक के बाद एक	क्रमश
राह दादन	रास्ता देना	सुविधा देना
राह दीदन	राह देखना	आशा करना
राह गिरफ़्तन	रास्ता पकड़ना	आगे बढ़ना
राह कतम करदन	राह काटना	यात्रा करना
बर राह आमदन	रास्ते पर आना	सुधार होना
राह नमूदन	रास्ता दिखाना	सुझाव देना
रग आवुर्दन	रग लाना	परिणाम मिलना
रोगन अज सग मीकुशद	पत्थर से तेल निकालना	कठिन काम करना
अज रेग रोगन कशीदन	बालू से तेल निकालना	कठिन काम करना

मुसम्मह बर इस्म कसी मूसल	नाम पर कलंक लगाना	गलत काम करना
शिकार शुदन	शिकार होना	चंगुल में फँसना
शिकार दादन	शिकार देना	सुपुर्द करना
दर पर्दह शिकार करदन	टट्टी की आड़ में शिकार करना	धोखा देना
शीरीं मानिन्द शहद	गुड़ मीठा	अच्छाई
शीरीं ज़बानी	मधुरी बानी	प्रिय वचन
सर सीनह करदन	मुँहज़बानी याद करना	स्मरण करना
सुर्ख़ मिस्ले आतश	लाल अंगारा	क्रोध से लाल होना
हू-ब-हू	ज्यों का त्यों	समान होना

ख—कहावतें

१—प्रारम्भ

कहावतों को लोकोक्ति भी कहा जाता है। इनका उद्गम लोक जीवन का अनुभव होता है। मुहावरों और कहावतों में अधिक अन्तर नहीं होता बल्कि कहावतें मुहावरों की अनेक विशेषताओं से पूर्ण होती हैं। डॉक्टर बाहरी का मत है कि कहावतें खासकर स्त्रियों में प्रचलित होती हैं।[1] मुहावरों का प्रयोग आलंकारिक भाषा के लिए भी होता है। इसके लिए किसी प्रकार के अनुभव की अपेक्षा नहीं होती जब कि कहावतों की पृष्ठभूमि जीवन की अनुभूतियाँ होती हैं। 'सच तो यह है कि प्रत्येक कहावत किसी के अनुभव पर आधारित होती है। कभी कभी किसी कहावत में जीवन की महान् घटना का सार हो सकता है। कुछ कहावतें हमें अनुश्रुति कल्प या ऐतिहासिक तथ्य का स्मरण कराती हैं। किन्तु प्रत्येक दशा में उनका अर्थ जीवन के सामान्य कामों से सम्बन्ध रखता है। यही कारण है कि लोकोक्ति का श्रोताओं पर मार्मिक प्रभाव पड़ता है। भावाभिव्यक्ति सशक्त हो जाती है एवं अर्थ का प्रभाव स्थायी और गंभीर हो जाता है। यदि कहावतों का प्रयोजन घटनाओं या तथ्यों के अनुरूप है, तो इनका प्रयोग मर्मस्पर्शी हो जाता है।

प्रयत्न के पश्चात् सफल न होने पर जब असफलता की ही मिला सुनाई पड़ती है तो लोग बरबस कह उठते हैं—अंगूर खट्टे हैं। लोमड़ी की कहानी मशहूर है, जिसने पके अंगूर देखे उन्हें पाने के लिए लाख कोशिश की बीस का

१—हिंदी सेमेंटिक्स पृ २९९ डॉ बाहरी।

२—वही पृ २९२।

पानी गिराया, हाथ पाव पटके और जो सफल न हो सकी। निराशा मे उसके मुख से निकल ही आया—अगूर खट्टे हैं (अ गूर तुरश शुदन)। छुपकर गलत काम करने वाला आदमी जब पकडा जाता है, तो उसके लिए लोग 'डूबकर पानी पीना—गरीक शुदह् आब खुरदन' का प्रयोग करते हैं। रमजान के महीने मे रोजा के कारण किसी मुल्ला को प्यास लगी। पानी कैसे पिये। नहाने का बहाना लेकर वे तालाब में डुबकी लगाए और पानी पीने लगे। कम्बख्त टेगरा उनके मुँह में जा फँसा। वह क्यो जान छोडता। बडी छीछालेदर हुई। किसी प्रकार इस काटेदार मछली से उन्हें नजात मिली, पर रोजा हराम हुआ। दुनिया को यह मालूम हुआ कि वे डूबकर पानी पी रहे थे। लोग डूबकर पानी पीने वालो को बडे गौर से देखते हैं। अतएव स्पष्ट है कि लोकोक्ति जीवन की किसी सत्य घटना से सम्बन्ध रखती है।

२—फारसी कहावतो का प्रभाव

फ़ारसी मुहावरो की तरह अनेक फारसी कहावतें भी हिंदी मे आई हैं। कुछ कहावतें फारसी से अनुवाद की गई हैं और कुछ फारसी शब्दो की सहायता से बना ली गई हैं। कुछ फारसी कहावतें हिंदी में ज्यो की त्यो चलती हैं। दावत में लोग अक्सर मित्रो पर व्यंग्य कर दिया करते हैं—'माले मुफ्त दिले बेरहम।' आखिर आदमी कितना भी बेरहम हो तब भी पेट ही भर खाएगा कहावत के प्रयोग का अवसर वहाँ उपस्थित हो जाता है। इसी प्रकार 'तन्दुरुस्ती हजार निअमत' की फारसी कहावत को सामान्य लोग भी प्रयोग करते हैं। 'हिम्मते मर्द मददे खुदा' अपने फारसी रूप मे ही अत्यन्त लोकप्रिय है। 'नीम हकीम खतरे जान' हिन्दी मे एक सामान्य कहावत है। इसी प्रकार 'दाना दुश्मन बेह् नादान दोस्त' और 'देर आयद दुरुस्त आयद' की फ़ारसी कहावतें भी अपने रूप में ही हिंदी मे प्रचलित है।

(क) यहाँ फारसी प्रभावित या फारसी से अनूदित या फारसी की ही वे कहावतें दी जा रही हैं, जो हिन्दी मे प्रचलित हैं :—

अगूर तुरश शुदन	अगूर खट्टे हैं
अव्वल ताम बादह् कलाम	पहले लिख और पीछे दे
आवाजे-तूती दर नक्कारखानह्	नक्कारखाने में तूती की आवाज
आजमूदह् रा केह् आजमूदन	आजमाए को क्या आजमाना
एक जान दो कालिब	एक जान दो शरीर
खर्ज बअन्दाजए-दखल कुन	आमदनी के अनुसार खर्च
गरीक शुदह् आब खुरदन	डूबकर पानी पीना

नौ नकद न तेरह उधार
पाँव तले की जमीन खिसकना
बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुबहान अल्ला
बख्शो बी बिलार मुर्गा बाँड रही
मुफलिसी में आँटा गीला
सुर्खाब का पर लगाना
हाकिम टले, पर हुक्म न टले
हाथ के तोते उड़ जाना
होता वही है जो मंजूरे-खुदा होता है।

• •

ग—अंग्रेज़ी का प्रभाव

ध्वनिगत प्रभाव

१—प्रस्तावना

आधुनिक युग में हमारे देश का सम्पर्क उस साहित्यिक भाषा से भी स्थापित हुआ जो लंदन के आसपास बोली जाती है तथा जिसमें अंग्रेजी का उच्च साहित्य निर्मित हुआ है और जिसे सम्राट् की अंग्रेजी (किंग्स इंगलिश) कहा जाता है। 'सोलहवीं शताब्दी तक यह मान्यता प्रतिष्ठित हो गई थी कि जो बोली लंदन और उसके पड़ोस में बोली जाती है वही समस्त साहित्यिक रचना के लिए टकसाली भाषा है।[1] अंग्रेजी भारोपीय आर्य परिवार की एक प्रमुख एवं लोकप्रिय भाषा है। 'भारोपीय परिवार की भाषाओं में जर्मनिक अथवा ट्यूटनिक शाखा की भाषाएं अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अंग्रेजी जो वर्तमान काल में विश्वभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है इसी शाखा के अन्तर्गत आती है।'[2] इस भाषा-परिवार की तीन उपशाखायें हैं (१) पूर्वी जर्मनिक—जो अब समाप्त हो चुकी है। (२) उत्तरी जर्मनिक—इस शाखा में स्कैंडिनेवियन स्वीडिश डेनिश तथा आइसलैंड की भाषायें शामिल हैं। (३) पश्चिमी जर्मनिक—इस शाखा में भी दो वर्ग हैं, (क) उच्च जर्मन—आधुनिक जर्मन भाषा उच्च जर्मन कही जाती है (ख) निम्न जर्मन—इसमें डच तथा फ्लेमिश मुख्य भाषाएं हैं। निम्न जर्मन के ही एक अन्य वर्ग ऐंग्लो-सैक्सन से अंग्रेजी भाषा का विकास हुआ है। 'ब्रिटेन में पहले केल्टिक शाखा की भाषाएं प्रचलित थीं किन्तु ईसा की छठी शताब्दी में जर्मन जाति की आंग्ल सैक्सन तथा जूट उपजातियों ने ब्रिटेन को अपना निवास स्थान बनाया। इन्हीं के द्वारा यहां केल्टिक के स्थान पर जर्मन शाखा की भाषा अंग्रेजी की प्रतिष्ठापना हुई।'[3] सैक्सन जूट (जूट) आदि जातियों ने ब्रिटेन पर ५वीं ६ठी सदी में कब्जा किया और यहां के निवासियों को परास्त कर उनपर अपनी भाषा आरोपित की। 'मूल ब्रिटेनवासियों की केल्टी बोली को हटाकर विजेताओं की एंग्लिश

१—विश्वकोश भाग १ पृ १४ ना प्र स ।

२—हि भा उ वि पृ १५, डॉ उ ना ति

३—वही पृ १९।

भाषा स्थानापन्न हुई और उसी के नाम से देश का नाम भी बदल कर इंगलैंड पड़ गया।'[१]

अंग्रेजी भाषा में लिखित साहित्य के नमूने ७०० ई० के लगभग के मौजूद हैं। 'अंग्रेजी भाषा के सर्वप्रथम लेख, धर्मग्रन्थों की टीका के रूप में ७वीं सदी तक के मिलते हैं।'[२] शेक्सपीयर से लगभग २०० वर्ष पूर्व का चॉसर (१३४० से १४०० ई० तक) आधुनिक अंग्रेजी का पहला प्रमुख कवि माना जाता है। प्राचीन अंग्रेजी का एक नाम 'एंग्लो-सैक्सन' भी है, जिसमें आगे चलकर उच्च साहित्य की रचना हुई। १०६६ ई० में नार्मन जाति के लोगों ने इंगलैंड को परास्तकर हस्तगत किया। 'नार्मन मूलतः डेन जाति के लोग थे जो अनेक शताब्दियों से फ्रांस में बस गये थे। वे फ्रांस के मूल निवासियों से घुलमिल गये थे और फ्रेंच भाषा बोलते थे।'[३] ये लोग फ्रांस से ही इंलैंड आये थे और वास्तव में फ्रेंच भाषा-भाषी थे। उसी समय से अंग्रेजी भाषा पर फ्रेंच भाषा का अत्यधिक प्रभाव पड़ना आरम्भ हुआ। 'यूरोप की प्राचीन भाषाएँ ग्रीक और लैटिन का वहाँ की भाषाओं पर उसी प्रकार प्रभाव है जिस प्रकार संस्कृत का आधुनिक आर्यभाषाओं पर।'[४]

विकास की दृष्टि से अंग्रेजी के तीन काल हैं—[१] प्राचीन काल—लगभग ११वीं सदी के अन्त तक। (२) मध्यकाल—लगभग १५वीं सदी तक। (३) आधुनिक काल—प्रायः १५०० ई० के उपरान्त। '१६वीं सदी से ही लन्दन और उसके आसपास की बोली को राजभाषा का श्रेय मिलता रहा है और आज यही प्रमुख है। अंग्रेजी आज बीस पच्चीस करोड़ मनुष्यों की बोली है।''[५] किंतु निश्चित रूप से संसार में अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या बताना एक कठिन काम है। 'प्रोफेसर आई० ए० रिचर्ड्स का अनुमान है कि कुल प्रायः २० करोड़ लोग अंग्रेजी भाषा बोलते हैं।'[६] अंग्रेजी का विस्तार यूरोप के साथ साथ अफ्रीका, अमेरिका और एशिया तथा आस्ट्रेलिया में भी है। स्थानीय प्रभाव से अंग्रेजी में भेद होता रहता है, जिसे परस्पर समझने में कठिनाई भी होती है।

१—विश्वकोश, भाग १ पृ० १४।

२—सामान्य भाषा विज्ञान, पृ० २६३, डॉ० बाबूराम सक्सेना।

३—हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ३, सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा इत्यादि, ज्ञानमण्डल वाराणसी।

४—हि० भा० उ० वि०, पृ० ५२६, डॉ० उ० ना० ति०।

५—सा० भा० वि०, पृ० २६३, डॉ० बा० रा० स०।

६—हिन्दी साहित्यकोश, पृ० २।

यूरोपवासियों में पुर्तगाली सबसे पहले १५वीं सदी के मध्य में ही अर्थात् बाबर के भारत आगमन से २८ वर्ष पूर्व ही भारत में समुद्र के रास्ते आ गए थे किंतु हिंदी-प्रदेश से उनका संबंध स्थापित नहीं हो सका। यह कार्य अंग्रेजों ने पूरा किया। प्रथम में १७६४ ई० में बक्सर के युद्ध के समय हिंदी-प्रदेश से अंग्रेजी का संबंध स्थापित हुआ जिसे १७६५ में इलाहाबाद में सम्राट शाहआलम से संधि के अनुसार वैधानिक एवं प्रशासनिक दर्जा प्राप्त हो गया। हिंदी-अंग्रेजी संबंध के सिलसिले में १८०१ ई० में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना और १८३५ ई० में भारतीयों को अंग्रेजी पढ़ाने के कानून की स्वीकृति दो महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। 'लगभग १९वीं शताब्दी के मध्य से अंग्रेजी (जो उस समय शासन की भाषा थी) का प्रचार द्रुतगति से भारतवर्ष में बढ़ने लगा और फलतः हिंदी साहित्य अंग्रेजी से प्रभावित हुआ। 'हिन्दी गद्य बहुत दूर तक अंग्रेजी गद्य के आदर्श पर विकसित हुआ।'[1]

दो भाषाओं के सम्पर्क से नई वस्तुओं से संबंधित शब्दों का आदान-प्रदान भाषागत पहला प्रभाव होता है। डॉ० चाटुर्ज्या के अनुसार 'कंपनी जैसे शब्द को छोड़कर १७५७ से पूर्व बंगला में अन्य अंग्रेजी शब्दों के आने की संभावना नहीं दिखाई देती।'[2] हिंदी में ऐसे अंग्रेजी शब्द और भी बाद में आए। जब अंग्रेजी के नए शब्द हिंदी में आने लगे तो उनकी ध्वनियों का आना स्वाभाविक था। जिस प्रकार अरबी-तुर्की के शब्दों की ध्वनियाँ कुछ बदली हुई स्थिति में फ़ारसी के माध्यम से हिंदी में आईं उस प्रकार अंग्रेजी की ध्वनियों का आगमन नहीं हुआ। हिंदी में अंग्रेजी शब्द और ध्वनियाँ हिंदी-अंग्रेजी के प्रत्यक्ष सम्पर्क का परिणाम है। हिंदी ने अनेक अंग्रेजी ध्वनियों को ज्यों का त्यों स्वीकार किया कुछ को परिवर्तित कर, और कुछ ध्वनियों को फ़ारसी या अरबी ध्वनियों के आधार पर, यथा ट्रक कार टैक्स ठेठर सिमेंट सिविल डाक्टर, कालेज रैलेशं आइस अंग्रेजी ह्यूमरिस्ट इत्यादि शब्दों में।

अरबी-फ़ारसी की ही तरह या उससे कुछ अधिक अंग्रेजी की ध्वनियाँ और लिपि-अंकित भारतीय अंग्रेजी-भाषा के लिए एक विकट समस्या या पहेली है। किन्हीं भी दो स्थान की अंग्रेजी की ध्वनियाँ—अपने बलाघात एवं विशेष ढंग की वर्तनी के कारण—परस्पर मिल नहीं पाती। जिसका अन्तर दो स्थानों

१—वही पृ० ५।

२—ओ० डे० बे० लै० पृ० ५११।

की अंग्रेजी की ध्वनियो में हो जाता है, उतना अन्तर स्थानभेद एव व्यक्तिभेद से अन्य भाषाओ की ध्वनियों में अपेक्षाकृत नही होता। 'अंग्रेजी आलोचक मैथ्यू आर्नोल्ड जब अमरीका गये थे तब अमरीकी जनता उच्चारण भेद के कारण उनकी भाषा समझ नही पाती थी और अमरीकी उच्चारण का अभ्यास करने के लिए उन्हें यहाँ एक विशेषज्ञ से सहायता लेनी पड़ी। इससे इंगलैंड और अमरीका की भाषाएँ दो नही हो गयी।'[१]

ग्लीसन महोदय का कहना है कि विभिन्न प्रयोगो में एक ही ध्वनिप्रतीक या लिपि-संकेत की ध्वनि में इतना अंतर हो जाता है कि कोई महत्वपूर्ण ध्वनिगत वर्णन बिना विभेद (वैरिएशन) को बताए, नही किया जा सकता। 'एक भी अंग्रेजी ध्वनिग्राम ऐसा नही है, जो सभी परिस्थितियो मे समान बना रहे, यद्यपि अनेक ध्वनियों में, खासकर स्थानीय भाषा-भाषी द्वारा, विभेद को सरलतापूर्वक गौण या महत्वहीन माना जा सकता है। किंतु, किन्ही दो भाषाओ मे ऐसी एक ही बात नही होती। अत इस अन्तर ने जहाँ विदेशी अत्यन्त प्रभावित हो जाता है, वही स्थानीय वक्ता इसे सुनता भी नही।'[२]

ध्वनियों के लिखित रूप और उच्चरित रूप में अन्तर होने पर कठिनाई और बढ़ जाती है, जिसके फलस्वरूप ध्वनियों का सही अध्ययन और उनकी सही रूप में स्वीकृति की सभावना कम हो जाती है। यह अंग्रेजी की ध्वनियो में हिंदी या अरबी (फारसी) की अपेक्षा अधिक पाई जाती है। ध्वनियो के उच्चरित रूप तथा उनके लिए प्रयुक्त लिपि-संकेत (वर्तनी) में जितना अन्तर अंग्रेजी में पाया जाता है, उतना अरबी या हिंदी में नही। प्रोफेसर डैनियल जोन्स ने अंग्रेजी की परम्परागत वर्तनी तथा उच्चारण के महान् अन्तर को ध्यान में रखकर अंग्रेजी के लिए अलग से एक ऐसी लिपि का विकास करने की योजना बनाई थी, जो इसकी ध्वनियों के उच्चरित रूप को लिपि के द्वारा अधिक स्पष्ट रूप में संकेतित करा सके। इस आधार पर उन्होने कुछ पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित की थी, जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनिविज्ञान संसद द्वारा मान्य ध्वन्यात्मक लिपि का प्रयोग किया गया है। इस लिपि का प्रयोग उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ (१) एन आॅउट् लाइन ऑफ् इंगलिश् फोनेटिक्स और (२) इंगलिश प्रोनौंसिंग डिक्शनरी में किया है।

१—भाषा और समाज, पृ० १४६–४७, डॉ० रामविलास शर्मा।

२—'देयर इज नो इंगलिश फोनीम व्हिच् इज दी सेम इन आल एनविरॅनमेंट्स, दोऽइन मेनी फोनीम्स दी वैरिएशन कैन इजिली बी ओवरलुक्ड, पर्टिकुलर्ली बाइ ए नेटिव स्पीकर।' पृ० १५९, एन इन्ट्रोडक्शन टु डिस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स, एच ए ग्लीसन।

प्रो॰ डैनियल जोन्स ने अंग्रेजी वर्तनी पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि 'परम्परागत अंग्रेजी वर्तनी ध्वन्यात्मक बिल्कुल नहीं है। अतएव अंग्रेजी का अध्ययन करनेवाले छात्र के लिए इसके द्वारा वांछनीय ध्वनिक्रम की ठीक-ठीक सूचना नहीं मिलती।'[1] अन्य भाषाओं खासकर अरबी और हिंदी के लिपि-संकेतों में प्रायः एक लिपि-संकेत एक ही ध्वनि से सम्बद्ध होता है जब कि अंग्रेजी में अनेक लिपि-संकेतों में एक से अधिक ध्वनियों का आरोप किया जाता है और कुछ लिपि-संकेतों में एक ही ध्वनि का यथा जी (ज्, ग् के लिये) अथ (स्, ष्, क्ष के लिए)।

'निस्सन्देह इन लिपि-संकेतों के ध्वन्यात्मक मूल्यों का अध्ययन बिना कठिनाई के हो सकता है किन्तु ज्यों ही विदेशी छात्र इनका अध्ययन कर लेता है, उसे ऐसे प्रचलित शब्द मिलते हैं जिनमें इन लिपि-संकेतों के मूल्य परस्पर एक-दूसरे से भिन्न होते।'[2] भाषा विज्ञान के अनुसार इन शब्दों में प्रयुक्त ध्वनियों का सामान्यजन के लिए या विदेशियों के लिए ठीक ठीक उच्चारण वास्तव में एक तरह से असम्भव है। इस प्रतिकूलता का परिणाम यह है कि 'विदेशी छात्र जो सामान्य वर्णमाला या लिपि-संकेतों पर पूर्णतः निर्भर करता है, अपरिचित मामलों में यह जानकर स्तब्ध रह जाता है कि किस ध्वनि का प्रयोग किया जाय और वह लगातार शब्दों का गलत उच्चारण करता रहता है।'[3]

यह समस्या क्रांति के पश्चात् रूसी भाषा के विकास के दौरान भी सामने आई। वर्तमान ऐतिहासिक परम्परागत (व्याकरणात्मक) और ध्वनिगत सिद्धान्त जो लिपि-संकेत या वर्णमाला की रचना में इस्तेमाल किए गए थे वास्तव में भाषा के विकास का परिणाम थे। विकास से तात्पर्य है उच्चारण में परिवर्तन और भाषा के ढांचे में नई विशेषताओं का दर्शन। 'यहां तक हम शब्दों को पुराने ढंग से लिखते रहते हैं जब कि वे भिन्न ढंग से उच्चरित हो रहे हैं। रूसी में हम अब भी 'मास्को' (Moskv के वर्तनी Moscow) लिखने में अक्षरस्वरिक (सिलेबल) (मॉ) का प्रयोग करते हैं, जोकि इसका उच्चारण (मॉ) हो जाता है। यह वर्णमाला का ऐतिहासिक सिद्धान्त है। इसी प्रकार रूसी वर्णमाला के व्याकरण सिद्धान्त के अनुसार हम स्लोवो (शब्द) को o से लिखते हैं किन्तु इसका

1—'कम्पेन्डियम इंगलिश स्पेलिंग एज पार्ट ऑफ ए गाइड फोनेटिक' पृ॰ १ एन आउटलाइन आफ् इंगलिश फोनेटिक्स डैनियल जोन्स।

2—वही पृ॰ १।

3—वही पृ॰ ७।

उच्चारण स्लावा (Slovà-Slıvà) की तरह करते हैं।"[1] डॉ लोहिया ने रमा मित्र को एक पत्र में लिखा 'अगर रूसी लोग चाहेंगे तो दो तीन दिन मस्कवा में।'[2] इसप्रकार लिखित रूप और उच्चरित रूप की विभिन्नता भाषा में अधिक कठिनाई उत्पन्न कर देती है। प्रो० जोन्स ने कथ्य अंग्रेज़ी या अन्य भाषाओं के उच्चारण संबंधी कठिनाइयों एवं उन्हें सुलझाने के उपायों का निम्नलिखित ढंग से वर्णन किया है।[3]

(१) किसी भी छात्र को शीघ्र और निश्चित रूप से भाषा में आने वाली वाक्ध्वनि (स्पीच साउंड) का पहचानना सीख लेना चाहिए जिसे कि वह उच्चारण करते हुए सुनता है, तथा साथ ही उन ध्वनियों के श्रावण (एकूस्टिक) गुणों को उसे स्मरण भी रखना चाहिए।

(२) विदेशी ध्वनि के उच्चारण के अनुसार अपने ध्वनि-अंगों को अभ्यस्त करना चाहिए।

(३) भाषा के प्रयोग में उन ध्वनियों का उचित स्थान पर प्रयोग करना भी उसे सीखना चाहिए।

(४) ध्वनियों के विविध गुणों के सिलसिले में उसे मान्य परम्परा का भी ज्ञान कर लेना चाहिए जिसे विशेष रूप से दीर्घता, बलाघात और सुर कहते हैं।

(५) ध्वनियों को संयुक्त करना या मिलाना भी सीखना चाहिए अर्थात् एक संघटना की ध्वनि को दूसरी से जोड़ना और पूरे का शीघ्रता से बिना कठिनाई के उच्चारण करना चाहिए।

(६) कथ्य और लिखित भाषा में निष्णात् होने के लिए छात्र को परम्परागत वर्णमाला या लिपि-संकेत के स्वरूप का तथा परम्परागत लिपि-संकेत एवं उच्चारण के संबंध का अध्ययन करना चाहिए।

२—अंग्रेजी से ध्वनिगत संपर्क

जैसा कि इसी अध्याय के प्रथम खंड में बताया जा चुका है कि भारत से सबसे पहले रोमन लिपि और उसके द्वारा अभिव्यक्त ध्वनियों का सम्पर्क पुर्तगाली

१—डेवलॅपमेंट ऑफ् नान रसियन लैंग्वेजेज इन दी यू० एस० एस० आर०, पृ० ३१, जे० डी० देशेरीव।

२—दिनमान, १२-१०-१९६६।

३—एन आउटलाइन ऑफ् इंगलिश फोनेटिक्स, पृ० २, डी० जोन्स।

भाषा के माध्यम से १६वीं शती के प्रारंभ में हुआ किन्तु विशेष रूप से हिंदी भाषा या हिंदी ध्वनियों का अंग्रेजी ध्वनियों से सम्पर्क १७५७ ई० के पश्चात या १८०० ई० के लगभग स्थापित हुआ जबकि अंग्रेजों का हिंदी-प्रदेश पर प्रभुत्व स्थापित हुआ तदनन्तर पाश्चात्य प्रभाव का क्रम बढ़ता ही गया। भारतीयों के अंग्रेजी पढ़ने और बोलने के साथ यह अपनी पराकाष्ठा पर जा पहुँचा। अंग्रेजी की लिपि भी लोकप्रिय हो चली। यहाँ तक कि अरबी-फारसी लिपि और ध्वनियों की भाँति रोमन लिपि और ध्वनियाँ भी भारत की अपनी लिपि और ध्वनियाँ बन गयी हैं। गोआ के ईसाई कोंकणी के लिए रोमन लिपि का प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त खासी तथा उत्तरी भारत के ईसाइयों में भी रोमन लिपि प्रचलित है।[1] नागाराज्य में रोमन लिपि ही स्वीकृत है। 'भारत के लिए रोमन लिपि' शीर्षक अपने निबन्ध में डॉ० चटर्जी ने भारत की समस्त भाषाओं को रोमन लिपि में लिखने की नवीन प्रणाली बतलाई। इस प्रकार भारतीय मस्तिष्क पर रोमन लिपि और अंग्रेजी ध्वनियों का इतना असर पड़ा कि नागरी लिपि एवं उसकी ध्वनियों की वैज्ञानिकता एवं उपयोगिता पर भी प्रश्नवाचक चिह्न लगने लगे। यह अंग्रेजी ध्वनियों एवं उसकी लिपि की लोकप्रियता का प्रमाण है। अंग्रेजी प्रशासन एवं व्यापार की वृद्धि तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के प्रसार से अंग्रेजी शब्दों एवं ध्वनियों का सम्पर्क देश की बहुसंख्यक सामान्य जनता से भी स्थापित हुआ। 'बंगला में अंग्रेजी शब्दों के परिचय पर भाषा का बहुत पुराना उच्चारण जो बहुत कुछ वर्तनी पर आधारित है, अंग्रेजी स्वरूप के लिए आधार रूप में स्वीकृत हुआ।' जो बात बंगला के लिए है, वही हिंदी के लिए भी।

हिंदी में आगत अंग्रेजी शब्दों को नागरी लिपि में लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि अंग्रेजी में अभिव्यक्त उनकी ध्वनियाँ नागरी लिपि में भी पूर्ण रूप से अभिव्यक्त हो सकें। इसके विरुद्ध एक दूसरी प्रवृत्ति भी पाई जाती है कि अंग्रेजी ध्वनियों को हिन्दी उच्चारण तथा ध्वनि-ग्रामों के अनुरूप बनाकर देशी अभिव्यंजना के अनुसार लिपिबद्ध किया जाय। अंग्रेजी ध्वनियों को सही अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए हिंदी में नये लिपि

१—हि० भा० उ० वि० पृ० ५८४ डॉ० उ० ना० ति०।
२—वही पृ० ५८३।
३—[illegible] पृ० ५५४ [illegible]।

चिन्ह भी बनाए गए हैं, जैसे ऑ, और फारसी-अरबी ध्वनियो को अभिव्यक्त करने के लिए स्वीकृत विशिष्ट लिपि-सकेतो जैसे फ़्, ज़् इत्यादि का भी प्रयोग किया जाता है।

अ ग्रेजी लिपि-सकेतो की विशेषता डॉ चाटुर्ज्या के अनुसार एक ध्वनि-निष्ठ तथा एकाधिक ध्वनिनिष्ठ लिखावट की है। अत भारतीय ध्वनियो के लिए रोमन लिपि की ध्वनियो को सर्वागत अनुरूप बना लेने के पश्चात् वे लिखते हैं कि 'अब, लेखक का यह सुझाव है कि हिन्दुस्थानी के लिपि-सम्बन्धी झगडों का निराकरण रोमन लिपि को स्वीकार करके किया जा सकता है।'[१] उन्ही के शब्दों में इसका कारण यह है कि 'ध्वनियो को सूचित करने की एक अत्यन्त सुगम और सर्वाधिक प्रसारवाली प्रणाली के रूप में वह उसी प्रकार सस्कृति का एक आयुध बन चुकी है, जैसे आधुनिक विज्ञान के आविष्कारो के फलस्वरूप प्राप्त हुई कई प्रणालियाँ तथा यत्र-औजार।'[२]

३—अग्रेजी ध्वनि रचना का स्वरूप

हिंदी वर्णमाला की ध्वनियो का सक्षिप्त वर्णन फ़ारसी-ध्वनि प्रकरण में किया जा चुका है।[३] 'अ ग्रेजी वर्णमाला वस्तुत लैटिन वर्णमाला है, अतएव देवनागरी से उसका सर्वथा पार्थक्य है।'[४] यह स्पष्ट है कि वर्तमान अ ग्रेजी-ध्वनियाँ अग्रेजी भाषा की भाँति सकर-सृष्टि हैं, जिसमें लैटिन एव लैटिन के माध्यम से अन्य भाषाओं की ध्वनिया तथा पुरानी फ्रेंच ध्वनियाँ भी आकर शामिल हो गई हैं। 'लैटिन में च, ज, श जैसी ध्वनियों का अभाव था अतएव प्राचीन अ ग्रेजी में भी ये ध्वनियाँ नही मिलती। बाद में ये ध्वनियाँ अ ग्रेजी में आई। इन्ही कारणो से अ ग्रेजी के ch या tch या t—च, इसी प्रकार dj, j, dg कही-कही g = ज तथा sh, ti = श'[५] माने जाते हैं। इस प्रकार कई लिपि-सकेतों के योग से एक ध्वनि को प्रकट करने की विधि अ ग्रेजी में मिलती है। लैटिन, फ्रेंच तथा अ ग्रेजी की अपनी ध्वनियों के अतिरिक्त अन्य भाषाओ की ध्वनियों को शीघ्रता-पूर्वक अपने में ग्रहण कर लेने की प्रवृत्ति के कारण अ ग्रेजी के लिपि-सकेतो की ध्वनियों के ठीक उच्चारण में 'एक विचित्र प्रकार का असामजस्य' पाया जाता है।

१—भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, पृ० २४१, डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या।
२—वही, पृ० २४२।
३—देखिए फ़ारसी का ध्वनिगत प्रभाव, पृ० ५८-५९।
४—हि० भा० उ० वि०, पृ० ५२९, डॉ० उ० ना० ति०।
५—वही, पृ० ५२९।

वास्तव में ध्वनियों को बोलकर ही सही ढंग से अभिव्यक्त किया जा सकता है, लिखकर नहीं, किन्तु विभिन्न लिपि-संकेतों के विकास के फलस्वरूप ध्वनियों का प्रायः लिखकर व्यक्त करना सुगम हो गया है, किन्तु उस व्यक्ति के लिए लिपि-संकेत महत्वहीन है जो इन ध्वनियों का उच्चारण करना नहीं सीख सका है, अर्थात् जो उन विदेशी ध्वनियों का उच्चारण अपने ध्वनि-अंगों द्वारा नहीं कर पाता जिन्हें लिपि-संकेतों द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।

ध्वनि-विज्ञान की दृष्टि से अंग्रेजी की परम्परागत लिपि या वर्णमाला का अध्ययन अब महत्व की दृष्टि से अवैज्ञानिक हो गया है, जिसमें २६ वर्ण अर्थात् ५ स्वर संकेत, २ अर्द्धस्वर संकेत एवं १९ व्यंजन संकेत सम्मिलित हैं। इस वर्णमाला के बारे में प्रो० जोन्स का मत है कि 'परम्परागत अंग्रेजी वर्तनी ध्वन्यात्मक बिल्कुल नहीं है।'[1] अस्तु, इस लिपि को पूर्ण ध्वन्यात्मक बनाने के लिए इसमें 'इन्टरनेशनल फोनेटिक एसोसिएशन' १९४९, द्वारा संशोधन किया गया ताकि यह उच्चरित ध्वनियों का ठीक प्रतिनिधित्व कर सके। वर्तमान अंग्रेजी में संशोधित लिपि संकेत सामान्य व्यवहार में नहीं आ सके हैं और न आने की संभावना ही है। यह वास्तव में भाषा-वैज्ञानिकों के ही काम की चीज है। ऐसी परिस्थिति में प्रो० जोन्स को लिखना पड़ा कि 'इन सब विभेदों के अस्तित्व ने विदेशी छात्र के लिए यह ज्ञात करना मुश्किल बना दिया है कि वह कौन से उच्चारण को सीखे। वर्तमान समय में किसी विशेष ढंग को 'स्टैंडर्ड' या अन्य रूपों में वास्तविक रूप में 'उत्तम' मानना मैं सम्भव नहीं समझता।'[2]

अ—अंग्रेजी-स्वर ध्वनियाँ

अंग्रेजी भाषा की मुख्य स्वर-ध्वनियाँ वैज्ञानिक लिपि-संकेतों के अनुसार निम्नलिखित हैं[3]—

संख्या	स्वर-ध्वनि	हिंदी रूप	उदाहरण
१—	i:	ई	टी-मेन
२	i	इ	किट्-पाथा
३—	[illegible]	ए	हेम-मगाल
४—	æ	ऐ	मैं-मनुष्य

१—एन आउटलाइन ऑव इंगलिश फोनेटिक्स पृ० ५।
२—वही पृ० १२।
३—वही पृ० ६१।

५—	ɪ	आऽ	हाऽफ-आधा
६—	ɔ	ऑ	डॉग>डॉग कुत्ता
७—	ɔ	ओऽ	फोऽम-फार्म
८—	u	उ	स्टुड-खड़ा
९—	u	ऊ	रूल-नियम
१०—	ʌ	अँ	कॅम-आना
११—	ə	अऽ	टऽन-मुड़ना
१२—	ə	अ	लेमन नीबू

संधि-स्वर

इन स्वर ध्वनियों के अतिरिक्त अंग्रेजी में नौ मुख्य संधि-स्वर [1] भी हैं, यथा[2] —

१—	ei	एय्	डेय्-दिन
२—	ou	ओउ	गोउ-जाना
३—	ai	आऽइ	फ्लाऽइ-उड़ना
४—	au	आऽउ	हाऽउ-कैसे
५—	ɔi	ऑय्	ब्वॉय्-लड़का
६—	iə	इअ	हिअ-यहाँ
७—	ɛə	ऍअ	दॅअ-वहाँ
८—	ɔə	ऑअ	कॉस-कोर्स
९—	uə	उअ	टूअ-यात्रा

उच्चारण में संधि-स्वर की ध्वनियाँ एक ही ध्वनि के रूप में अभिव्यक्त नहीं होती, बल्कि इनका उच्चारण संयुक्त-ध्वनि सा होता है। अस्तु इनका भी अपना महत्व है।

इनके अतिरिक्त अंग्रेजी में दो ध्वनियाँ व्यंजन होकर भी स्वर का काम करती हैं, किंतु उसी समय, जबकि इनका प्रयोग पदान्त में हो। स्वरिक संघटना का काम करने वाली ध्वनि के रूप में इनका प्रयोग होता है, यथा—

१—	l̥	लृ (अल्)	बॉटल्
२—	n̥	नृ (अन्)	बटन्

१—वही, पृ० ६१।

२—स्पेलिंग, पृ० ८ वॅलिन्स।

इनके अतिरिक्त प्रोफेसर डैनियल जोन्स ने कुछ अन्य स्वरों के लिए अन्य लिपि-चिह्नों का प्रयोग किया है, किन्तु इनको गौण मानकर उन्होंने मुख्यतः आठ स्वरों का जो ऊपर दिए गए हैं, वर्णन किया है। तब भी स्वरों एवं संधिस्वरों की कुलसंख्या विदेशी छात्रों को परेशानी में अवश्य डाल देती है, जैसा कि डॉ उदय नारायण तिवारी के कथन से भी स्पष्ट है कि 'साहित्यिक अंग्रेजी में इन समस्त ह्रस्व दीर्घ एवं संधि-स्वरों को मिलाकर कुल १८ स्वर ध्वनियाँ विद्यमान हैं। इनके कारण इनसे बनने वाले शब्दों में पर्याप्त अनिश्चि-तता है।'[1] वास्तव में कुल संख्या अब १८ नहीं २१ माननी चाहिए या पदान्त में स्वरतुल्य प्रयुक्त होने वाली या स्वरिक संघटना का काम करने वाली ल् न् (ल्, न्) ध्वनियों को मिलाकर २१।

प्रो डैनियल जोन्स के चित्र १४ १५ के अनुसार अंग्रेजी स्वरों का उच्चारण स्थान और क्रम—

चित्र १४ के अनुसार उच्चारण स्थान

चित्र १५ के अनुसार उच्चारण क्रम

१—हि भा व लि पृ ५११।
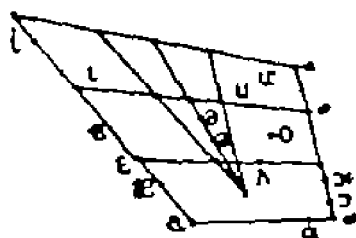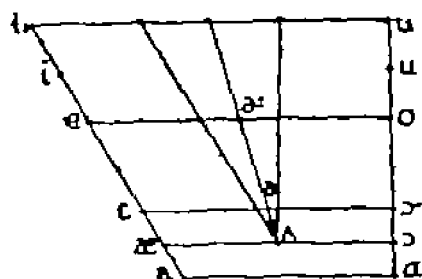
आ—अंग्रेजी व्यंजनध्वनियाँ

प्रो० डेनियल जोन्स के आधार पर अंग्रेजी व्यंजन-ध्वनियों का विश्लेषण निम्नलिखित हैं —[1]

स्पर्शव्यंजन—द्वयोष्ठ्य		वर्त्स्य	कंठ्य	
	प्	ट्̥	क्	अघोष
	ब्	ड्̥	ग्	सघोष
घर्ष स्पर्शव्यंजन		पूर्ववर्त्स्य[2]		
		ट्र्		अघोष
		ड्र्		सघोष
,,	,,	तालव्यवर्त्स्य		
		च्̥		अघोष
		ज्̥		सघोष
अनुनासिक—द्वयोष्ठ्य		वर्त्स्य	कंठ्य	
	म्	न्	ङ्०	सघोष
पार्श्विक		वर्त्स्य	कंठ्य	
	(स्पष्ट ल्)	ल्	आद्य-मध्य प्रयोग—सघोष	
	(अस्पष्ट ल्)		ल् (ल्̣) अन्त्यप्रयोग ,,	
		दंत्य		
सघर्षी ऊष्म		थ		अघोष
,,		द्		सघोष
		दंत्योष्ठ्य		
सघर्षी ऊष्म		फ्		अघोष
		व्		सघोष
		दंत्य		
सघर्षी ऊष्म		स्		अघोष
		ज़्		सघोष

१—एन आउट लाइन ऑफ् इंगलिश फोनेटिक्स, पृ० १३८।

२—स्टैंडर्ड अंग्रेजी में ट्र्, ड्र् (tr, dr) ध्वनियों को शामिल नहीं किया गया है। ये केवल दक्षिणी इंगलैंड की बोली दक्षिणी इंगलिश में पाई जाती हैं।

अंग्रेजी-उच्चारण तथा अमेरिकी उच्चारण में भी भेद है, जैसे ट्रेन, ड्रेन के परिनिष्ठित अंग्रेजी उच्चारण में ट्र, ड्र संयुक्त ध्वनियाँ पाई जाती है, जबकि इंगलैंड की दक्षिणी बोली में ०ट्, ०ड्, पुर वर्त्स्य (पूर्ववर्त्स्य) एकल ध्वनियाँ हैं। इसी तरह वटर, मदर आदि का अंग्रेजी उच्चारण वटऽ, मदऽ है, जबकि अमेरिकी उच्चारण कहीं तो वटर् मदर् है, कहीं वट्र्, मद्र् सुनाई देता है। अस्तु भारत में आई अंग्रेजी ध्वनियों का आरंभ में ही भारतीय-करण हो जाना नितांत असंभव नहीं था। भारतीय अंग्रेजी-ध्वनियों की दो स्थिति हो सकती है (१) जिन ध्वनियों का भारतीय-करण हो गया है, (२) जिन ध्वनियों का भारतीयकरण नहीं हो सका है। जिन ध्वनियों का भारतीयकरण हो गया वे हिंदी की मिलती-जुलती ध्वनियों में शामिल कर ली गई और जिनको हिंदी में आत्मसात् करना संभव न हो सका उनकी अभिव्यक्ति के लिए दो तरीके अपनाए गए—(१) नई ध्वनियों के लिए अलग लिपि-संकेत का निर्माण (२) क) लिखित भाषा में पुराने लिपि संकेतों द्वारा अंग्रेजी की आगत ध्वनियों को उल्लिखित करने का विशेष प्रयत्न (ख) कथ्य अंग्रेजी में अंग्रेजों के अनुकरण से अथवा विशेष प्रकार की ट्रेनिंग या दीक्षा से अंग्रेजी अथवा अमेरिकन ढंग से ध्वनियों के उच्चारण का अपने ध्वनि-अंगों द्वारा विशेष प्रयत्न। किंतु, ये सारे कार्यक्रम विशेष ढंग से अंग्रेजी ध्वनियों के लिए जागरूक शिक्षित वर्ग तक ही सीमित हैं। अंग्रेजी शब्दों और उनके माध्यम से अंग्रेजी ध्वनियों का व्यवहार करने वाली सामान्य जनता तथा बेपरवाह शिक्षित वर्ग इस सिलसिले में दिलचस्पी नहीं रखता और अंग्रेजी ध्वनियों को बराबर हिंदी ध्वनियों का जामा पहनाया करता है, जिससे विशेष ढंग के सभ्य लोग नाक-भौं सिकोड़ते रहते हैं।

इतना ही नहीं अंग्रेजी ध्वनियों पर भारत में यहाँ की प्रांतीय जलवायु एवं बोलीबानी तथा बलाघात एवं सुर का भी प्रभाव पड़ा है। पंजाब, बंगाल एवं मद्रास में एक ध्वनि के तीन उच्चारण सरलतापूर्वक सुने जा सकते हैं। मध्यदेश में ध्वनियों का उभयनिष्ठ उच्चारण अवश्य प्रचलित है, किंतु, स्थानीय प्रभाव के साथ, खासकर उस समय जब वक्ता सतर्क न हो।

विदेशियों द्वारा संचालित कन्वेंट जैसे शिक्षा केन्द्रों में शिक्षित भारतीय विद्यार्थियों द्वारा अथवा पुराने समय में अंग्रेज अध्यापकों से पढ़े भारतीयों द्वारा भी अंग्रेजी ध्वनियों का ठीक उच्चारण करने का प्रयत्न किया जाता है, किंतु यह कार्य उच्चरित या कथ्य अंग्रेजी तक, तथा संख्या की दृष्टि से अल्प-संख्यक वर्ग तक ही सीमित है। इस सिलसिले में इतना ध्यान रखना

अंग्रेज़ी के तत्सम शब्दो को लिखने में व्यवहृत होता है। 'अंग्रेजी के कुछ तत्सम शब्दों के लिखने में ऑ चिन्ह का व्यवहार हिंदी में होने लगा है। अंग्रेजी ऑ का स्थान हिंदी आ से काफ़ी ऊँचा है। प्रधान स्वर ऑ से ऑ का स्थान कुछ ही नीचा रह जाता है।'[1] हिंदी मे इस ध्वनि का आदान हुआ है और अब पर्याप्त प्रयोग भी होने लगा है, यथा कॉंग्रेस, डॉक्टर, ऑपरेशन, लॉर्ड, ऑफिस इत्यादि शब्दो में।

७ वी स्वर ध्वनि ओऽ जिसका प्रयोग सोऽ-देखा, लोऽन-मैदान, नोऽ-नही, फोऽम-फार्म, मोऽ-अधिक, रोऽ-दहाड, बोऽड-बोर्ड शब्दो मे किया जाता है, हिंदी में दो रूप ग्रहण करती है (१) आ (२) ओ का, यथा सा, लान, फार्म और मोर, बोर्ड, कोर्स।

स्वर ध्वनि ११ और १२—अऽ और अ का हिंदी में न तो स्वतंत्र आदान हुआ और न इनके लिए अलग से लिपि-संकेत ही बनाए गए। ये दोनो ध्वनियां हिंदी अ में शामिल कर ली जाती हैं। अंग्रेज़ी की अ या अॅ ध्वनि के लिए १०वें स्वर अॅ को ही स्वीकृत किया गया है, जिसका प्रयोग कॅट-काट, कॅम-आता, कॅम्फऽट-आराम में किया जाता है और ११वा स्वर हिंदी में अ से दीर्घ होने पर भी अ के रूप में ही ग्राह्य है। यद्यपि डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा है कि 'अंग्रेजी में ऑ के अतिरिक्त उसका ह्रस्वरूप अॅ भी व्यवहृत होता है। हिंदी में दोनों के लिए दीर्घरूप का ही व्यवहार लिखने और बोलने में साधारण तया किया जाता है।'[2] किंतु वऽक-काम, जअऽनल-पत्रिका, कअऽनल-कर्नल में हिंदी में ऑ के रूप का व्यवहार लिखने-बोलने में नही होता यथा वर्कशाप, जर्नल; कर्नल, तब भी इसका अपवाद है, जैसे ब्रेकफ़ॉस्ट-नाश्ता म ऑ ध्वनि का प्रयोग हिंदी में चलता है।

१२ वी ध्वनि अ का प्रयोग हिंदी अ की भाँति ही होता है यथा लेमन-नीबू कोरस-गीत, फेमस-प्रसिद्ध में हिंदी अ के आसपास की ध्वनि का ही व्यवहार किया जाता है।

सारांश यह कि अंग्रेजी से वास्तव में केवल एक ही स्वरध्वनि ऑ (ɔ-ऑ) का आदान हुआ है। इस ध्वनि का शुद्ध उच्चारण भी केवल शिक्षित तथा उच्चारण-सतर्क वर्ग ही करता है, शेष जनता में प्रयुक्त ऐसे अंग्रेजी शब्दो में यह ध्वनि 'आ' के रूप में परिवर्तित हो गई है, जैसे आफिस, डाक्टर, लान

१—हि० भा० इ०, पृ० १०३, डॉ० धी० व०।
२—वही पृ० १०३।

आदि किन्तु कुछ शब्दों के परिनिष्ठित उच्चारण में ह्रस्व 'ए' और ह्रस्व 'ओ' ध्वनियों का भी व्यवहार होता है यथा 'बैंक' और 'कैंट' शब्दों में जो पुनः बोलचाल में 'ए' और 'अ' में परिवर्तित हो जाती है।

आ—व्यंजन ध्वनियां

अंग्रेजी की अनेक व्यंजन ध्वनियों के हिंदी में अभाव की चर्चा करते हुए श्री उदयनारायण तिवारी ने लिखा है कि अंग्रेजी के वर्त्समूलीय (या वर्त्स्य) ट् ड् हिंदी में नहीं हैं। हिंदी की ट ड ध्वनियां मूर्धन्य हैं। अंग्रेजी के थ् द् हिंदी के थ् द् से उच्चारण में पृथक हैं। अंग्रेजी में न ध्वनि दो प्रकार की है। एक प्रकार का न् शब्द के आदि में उच्चरित होता है अन्य प्रकार की न् ध्वनि का उच्चारण शब्द के मध्य अथवा अन्त में होता है। जब कहीं-कहीं ङ अथवा ग का समिश्रण होता है तो वहीं कंठीकृत ध्वनि उत्पन्न होती है। अंग्रेजी में वौयस्ड् श् ध्वनि है। श् ध्वनि का हिंदी में अभाव है। यह अंग्रेजी में मेझ्झ—माप और प्लेझर—आनंद आदि शब्दों में मिलती है। अंग्रेजी में र तथा ल का अल्पस्वर उच्चारण होता है। वस्तुतः हिंदी में इस उच्चारण का अभाव है। अंग्रेजी में व का उच्चारण सघर्ष वकार के रूप में होता है। हिंदी मे इस ध्वनि का भी अभाव है।[1]

किसी भी भाषा से नई ध्वनियों को स्वीकार करते समय सबसे बड़ी समस्या उन ध्वनियों को व्यक्त करने या लिपिबद्ध करने के लिए अपनी भाषा के परम्परागत लिपि-संकेतों के सामर्थ्य की उठती है। यदि भाषा में ऐसी शक्ति नहीं है कि वह विदेशी भाषा की ध्वनियों को ग्रहण कर सके तो (१) नई ध्वनियों का आगमन नहीं हो पाता (२) नई ध्वनियों को पुरानी निकटतम ध्वनियों में बदल दिया जाता है, (३) नई ध्वनियों के उच्चारण के लिए नए लिपि-संकेत बना लिए जाते हैं (४) केवल उच्चारण में या बोलने में ही नई ध्वनियों को स्वीकार कर लिया जाता है, लिखने में नहीं। इस स्थिति में अंग्रेजी स्वर ध्वनियों की अपेक्षा व्यंजन ध्वनियां हिंदी को कम प्रभावित कर सकी हैं।

वैदिकोत्तर संघ की नई भाषाओं को जब लिखित रूप दिया गया और नई वर्णमाला तथा नए शब्द स्वीकृत किए गए तो पदरचना एवं ध्वनि सिद्धान्त के नियमों का पूर्णतः पालन किया गया। इस सिलसिले में दो बातों का विशेष ध्यान रखा गया। पहली यह कि नवागत या आगत शब्द जो भाषा में बहुत पहले से प्रचलित थे नई भाषा की ध्वनि परम्परा के अनुसार लिखे जायें। उदाहरण

1—हिं भा व वि पृ २१ ।

के लिए श्रॉफिसर, जेनरल, टेबुल् जैसे शब्द, जिन्हें श्रोसेटिक भाषा ने रूसी से बहुत पहले ही ऋण लिया था, उसी प्रकार लिखे गए जैसे श्रोसेट लोगों द्वारा उच्चरित होते हैं।

दूसरी यह कि सभी नए ऋण शब्द और अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली लगभग या पूर्णत उसी प्रकार लिखी जाय जैसे वह रूसी भाषा में लिखी जाती है, जिससे कि उसे ऋण लिया गया है। श्रोसेटिक, मार्दविनियन और एवेंकी भाषाओं में सोशलिज्म, कम्युनिज्म, बोलशेविक और सोवियत् जैसे सामाजिक तथा राजनीतिक शब्दों की वर्तनी वैसी ही होती है, जैसे रूसी में।[१]

किन्तु हिंदी में अंग्रेजी शब्दों और उनकी ध्वनियों को ग्रहण करने में भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से किसी भी बात का ध्यान नहीं रखा जाता, खासकर अंग्रेजी-व्यंजन ध्वनियों के लिए। अंग्रेजी की तुलना में फारसी और अरबी व्यंजन ध्वनियों के लिए हिंदी भाषा भाषी अधिक जागरूक प्रतीत होते हैं। फारसी की अनेक ध्वनियों को अभिव्यक्ति प्रदान करने की जागरूक चेष्टा की गई, जबकि अंग्रेजी की सामाजिक-राजनीतिक या अन्तर्राष्ट्रीय किसी भी शब्दावली की ध्वनियों के प्रसंग में ऐसी कोई सुनियोजित चेष्टा लिखने या बोलने में नहीं की जाती। जो प्रयत्न होते हैं, वे केवल व्यक्तिगत कारणों से व्यक्तियों द्वारा ही।

अंग्रेजी की अनेक व्यंजन ध्वनियाँ हिंदी में नहीं पाई जाती। इनमें से कुछ त्याग दी गई और कुछ हिंदी की निकटतम ध्वनियों में परिवर्तित कर दी गई हैं। कुछ ध्वनियाँ बोलचाल में (या लिखित रूप में भी) अवश्य स्वीकार की गई हैं यथा फ़्, ज़् और व् ध्वनि।

फ़् ध्वनि को फ़ारसी फ़् के अनुकरण पर हिंदी में स्वीकार करने में किसी भी नवीन प्रयत्न की अपेक्षा नहीं है। इसको बोलने और लिखने की परम्परा यहाँ कायम हो चुकी है यथा फ़िट्, आफ़िस।

ज़् ध्वनि को भी फारसी ज़् के ढंग पर हिंदी में स्वीकृत किया गया है, यथा प्राइज़्, साइज़्।

व् दन्त्योष्ठ्य घर्ष सघोष ध्वनि है जिसका अघोष रूप फ़् है। वास्तव में अंग्रेजी से यही एक बिलकुल नई ध्वनि कथ्य हिंदी में स्वीकृत हुई है, जिसकी परम्परा न तो हिंदी में थी और न यह ध्वनि फारसी-अरबी से ही आई थी, किंतु

१—डेवलपमेंट ऑफ् नान-रशियन लैंग्वेजेज इन दी यू० एस० एस० आर०, पृ० ३४।

कहीं-कहीं हिंदी में ये ध्वनियाँ त् और द् में भी बदल जाती हैं, जैसे–

ऑगस्ट॰	अगस्त
सेप्टि॰म्बर	सितम्बर
॰डेसिम्बर	दिसम्बर
ऑ॰डऽली	अर्दली

डॉ॰ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने अंग्रेजी ॰ट् ॰ड् ध्वनियों के बारे में लिखा है कि 'भाषा की दृष्टि से भारत में सदा विदेशी भाषाओं के प्रभाव को अधिकतर भाषा सम्बन्धी एक इकाई के रूप में ग्रहण किया गया है। इस प्रकार भारतीय भाषाओं में गृहीतशब्द और नाम जो यूरोप की भाषाओं से (जिनमें अधिकाश अंग्रेजी के माध्यम से आए हैं) निश्चित रूप से अंग्रेजी और अन्य यूरोपीय भाषाओं की वर्त्स्य ॰ट् ॰ड् (जो संस्कृत में दंतमूलीय कहलाएँगे), यहाँ तक कि इतालवी जैसी भाषाओं की दंत्य त् द्–ध्वनियों का भारतीय मूर्धन्य अथवा प्रतिवेष्ठित ध्वनियों द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाता है। इस प्रकार अंग्रेजी टिकट, टेबुल, मोटर, डेस्क, बैडमिंटन, फ्रेंच, मेटिस, डूप्ले, इतालवी मैगेन्टा, गैरिबाल्डी, रूसी सोवियट, वोडका, ट्राटस्की, जर्मन गेट, हिटलर इत्यादि में, सभी स्थितियों में, भारत की भाषाओं के सभी समानान्तर शब्दों में मूर्धन्य ध्वनियाँ पाई जाती हैं न कि दंत्य।'[१] इन शब्दों का ठीक उच्चारण इस प्रकार होगा—अंग्रेजी टि॰के॰ट् ॰टेबुल्, मोट॰ऽ, ॰डेस्क, बै॰डमि॰टऽन्, फ्रेंच मेति, दुप्ले, इतालवी मेगेंता, गैरिबाल्दी, रूसी सोवियत, वोद्का, त्रात्स्की, जर्मन गेटे॰', हिट॰'लऽ।

अस्तु अंग्रेजी वर्त्स्य ध्वनि ट्॰, ॰ड् का हिंदी में आदान नहीं हुआ। व्यवहार में ये ध्वनियाँ हिंदी मूर्धन्य में बदल जाती हैं।

॰ट्र्, ॰ड्र् जैसी दक्षिणी इंगलैंड की ध्वनियों का महत्व इंगलैंड के लिए सिर्फ स्थानीय है। अन्य भाषाओं में आदान-प्रदान के समय इनमें दो ध्वनियों ट्+र् और ड्+र् का संयोग ही माना जाता है, न कि दो स्वतन्त्र ध्वनियाँ जैसे—

ट्री,	न कि ट्री
ड्राइग्,	न कि ड्राइङ्॰

१—एफिनिटी ऑफ् इण्डियन लैंग्वेजेज, पृ॰ २४, डॉ॰ एस॰ के॰ चैटर्जी।

जिनका प्रत्यक्ष आदान नही हुआ है, दत्यस्पर्श में परिवर्तित हो जाती हैं[1] अर्थात् थ् और द् ध्वनि मे यथा—

परिनिष्ठित उच्चारण	हिंदी उच्चारण
थिन्	थिन—पतला
थिंक	थिंक—सोचना
दोऽ	दोऽ—गोकि
दी	दी

ॱझ् अंग्रेजी-ध्वनि फारसी झ् की भांति एक विशिष्ट ध्वनि है, जो हिंदी भाषा-भाषियो के लिए सुगम नही है। साधारणत यह अरबी या फारसी ज़् ध्वनि मे परिवर्तित हो जाती है। ॱझ् ध्वनि तालव्यघर्श श् का सघोष रूप है, किंतु हिंदी मे सामान्यत यह दत्यघर्ष स् के सघोष रूप ज़् में बदल जाती है यथा—

प्लेॱझऽ > प्लेजर्—आनन्द
मेॱझऽ > मेजर्—माप

ज़् ध्वनि सामान्यत फारसी परम्परा के कारण हिंदी मे लिखने और बोलने मे चल पडी है, किंतु पूर्व सघोष ध्वनियो के साथ अन्त्य बहुवचन प्रयोग में अंग्रेज़ी के ठीक उच्चारण मे भिन्न ज़् ध्वनि हिंदी मे स हो जाती है, जैसे—

डॉग्स	न कि डॉग्ज़्
लॉग्स	न कि लॉग्ज़्

सही उच्चारण डॉग्ज़्, लॉग्ज़् हिंदी में नही चलता क्योकि इस प्रकार की ध्वनि का हिंदी में आदान नही हो सका है। इसका कारण यह है कि भारतीय वक्ता वतनी देखकर उच्चारण करते हैं। बहुवचनात्मक पद यस (स) होने से शब्द का उच्चारण सकारात होता है।

फारसी के समान अंग्रेजी में भी महाप्राण ध्वनियो का कोई महत्वपूर्ण स्थान नही है, क्योकि दोनो भाषाओ में महाप्राण ध्वनियों का अभाव है। अंग्रेजी मे पदादि प्रयोग में टिन्, किक्, पिट् जैसे कुछ शब्दों की ट्, क्, प् मे हल्का सा महाप्राणत्व उच्चरित मिलता है, किंतु हिंदी में इनका हल्का महाप्राणत्व भी स्वीकृत नही हुआ और ये ध्वनिया अल्पप्राण ध्वनियों की भाँति ही स्वीकृत हुइ।

१—हि० भा० इ०, पृ० २१४, डॉ० धी० व०।

गत परिवर्तन किए गए हैं, जो अमेरिकी अंग्रेजी (अमेरिकन इंगलिश) मे प्रयुक्त होते हैं। यह परिवर्तन वर्तनी में प्रयुक्त उन अनावश्यक लिपि-संकेतों को छोड देने के लिए किया गया जो किन्ही प्राचीन काल की भाषा-स्थिति के उच्चारणो को अभिव्यक्त करने के लिए गढ लिये गए थे। ठीक ऐसा ही परिवर्तन अरबी-फारसी से आए शब्दो में हुआ जो हिंदी भाषा की फारसी वर्तनी मे लिखे जाने पर हिंदी ग्रन्थो में उन लिपि-संकेतो के द्वारा लिखे जाते थे, जो उनके हिंदीकृत उच्चारणो को व्यक्त करते थे। अवधी और दक्खिनी हिंदी की फारसी लिपि (अरबी) में लिखे गए ग्रन्थो में अवधी में शतप्रतिशत् रूप मे और दक्खिनी मे भी अनेक स्थलो पर ख़, ज़, जैसी ध्वनियो में शुद्ध त्, ज् ध्वनिया और उनके लिपि संकेत आदि व्यवहृत मिलते हैं। अनेक फारसी-अरबी शब्दो की ध्वनियों का पूर्ण भारतीयकरण न कर अर्द्ध-फारसीकरण भी किया गया है यथा नजर से नज़र।[१]

अमेरिकन वर्तनी के उच्चरित ध्वनि के अनुसार प्रथम संशोधनकर्ता नोआ वेब्स्टर (१७५८–१८४३) ने उच्चरित और लिखित ध्वनि को एकरूपता प्रदान करने के लिए इस हद तक प्रस्ताव किया कि 'bread' के लिए 'bred', 'build' के लिए 'bild', 'give' के लिए 'giv', 'laugh' के लिए 'laf', 'architecture' के लिए 'arkitecture' और 'oblique' के लिए 'obleek' कर दिया जाय।'[२] वर्तनी सुधार के लिए लिखने या छापने में स्थान और समय की बचत वास्तव में वेब्स्टर का अन्तिम तर्क था। वे वर्तनी-सुधार में अन्य संभव सिद्धान्तों एवं तर्कों म ही अधिक अभिरुचि रखते थे, 'जैसे यह पढने में आसान हो, वास्तविक या विचारणीय पदरचना के लिए अधिक से अधिक अनुकूल हो, उच्चारण में कम से कम अस्पष्ट हो, अमेरिका या सारे अंग्रेजीभाषी जगत के लिए अधिकतम एकरूप और स्थिर उच्चारणयुक्त हो, और सामान्यत स्वच्छ तथा अनुरूप हो।'[३] फलस्वरूप अनेक अंग्रेजी शब्दों की वर्तनी में अमेरिका में परिवर्तन कर दिया गया है।

अमेरिका में वर्तनी-परिवर्तन का प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण है कि जिस लिपि में इंगलैंड की अंग्रेजी लिखी जाती है, उसी लिपि मे अमेरिका की भी, किंतु हिंदी में अंग्रेजी ध्वनियों के सरलीकरण के प्रसंग में ऐसी समस्या उठती ही नहीं। यहाँ समस्या एक ही है कि लिखित हिंदी में अंग्रेजी शब्दो की ध्वनियो

१—देखिए, फारसी ध्वनियो का प्रभाव, पृ० ७३।
२—स्पेलिंग, पृ० १७६, जी० एच० वैलिन्स।
३—वही, पृ० १७८।

के तत्सम रूप पर ध्यान दिया जाय अथवा तद्भव रूप पर किंतु परम्परागत अंग्रेज़ी की सूच ही उच्चरित ध्वनि के अनुरूप नहीं लिखी जाती अतः उच्चरित ध्वनि से भिन्न लिखी गई अंग्रेज़ी की वर्तनी और ध्वनि को हिंदी में ठीक रूप (तत्सम रूप) प्रदान करना वास्तव में एक असंभावना है। यही कारण है कि अंग्रेज़ी की जो स्वर-व्यंजन ध्वनियाँ हिंदी के अनुरूप थी उन्हें ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया गया और जो ध्वनियाँ अनुरूप नहीं थी उन्हें हिंदी में परिवर्तित या सरल कर दिया गया अर्थात् समीप की ध्वनियों में मिला दिया गया यथा —

(क) स्वरध्वनि —

ध्वनि	सरल रूप	उदाहरण		
ऐ–ऍ	ए	मेस	से	फ़ोरमैन
ऑ	ऑ आ	डॉक्टर		डॉक्टर > डाक्टर
ओ॑	ओ	बोउट		बोट
अ॑	अ	बअ्ड		बर्ड
अ	अ या आ	(१) मेयर		मेयर
		(२) ब्रेकफस्ट		ब्रेकफास्ट

(ख) संधि-स्वर —

अंग्रेज़ी के जो संधि-स्वर भारत में दो रूपों में प्रचलित हैं (१) जिनमें दो स्वरों का उच्चारण बना रहता है किन्तु परिवर्तित रूप में (२) जिनमें संधि-स्वर एक स्वर-ध्वनि में बदल जाते हैं यथा —

(१) हिंदी उच्चारण में प्रचलित दो स्वरध्वनि वाले संधि-स्वर—

	संधि-स्वर	परिवर्तित ध्वनि	उदाहरण
१–	आइ	आइ	फ़्लाइ-उड़ना
२–	आउ	आउ	हाउ-कैसे
३–	ऑइ	आय	ब्वाय-लड़का
४–	इअ	इय	हिअ॑(हियर)-यहाँ
५–	ऍअ	एय	देअ (देयर)-वहाँ

(२) हिंदी उच्चारण मे प्रचलित एक स्वरध्वनि वाले संधि-स्वर—

१–	एय्	ए	डे–दिन
२–	औंउ	ओ	गो–जाना
३–	उअ	ऊ	टूऽ>टूर–यात्रा
४–	ओअ	ओ	कोऽस>कोर्स–पाठ्यक्रम

(ग) संयुक्त स्वर—

'अंग्रेजी के ढंग के संयुक्त स्वरो का व्यवहार हिंदी मे नही है अतः इनके स्थान पर प्रायः दीर्घ मूलस्वर या हिंदी के संयुक्तस्वर हो जाते हैं।'[१] हिंदी में व्यावहारिक दृष्टि, अर्थात् लिखने और बोलने की दृष्टि, से संयुक्त स्वरो एवं संधि-स्वरो में किसी प्रकार का कोई अन्तर नही है। अंग्रेजी संयुक्त स्वरो जैसा प्रयोग हिंदी की प्रकृति के अनुकूल भी नही है।

(घ) व्यंजन—

अंग्रेजी व्यंजन-ध्वनियो के हिंदी मे परिवर्तन का वर्णन इसी अध्याय के पांचवे खंड में किया गया है। यहा हिंदी मे उनके सरलीकृत स्वरूप का परिचय ही अभीष्ट है। अंग्रेजी की दो व्यंजन ध्वनियों फ़्, ज़् को हिंदी में फारसी (अरबी) फ़्, ज़् के वज़न पर स्वीकृत किया गया, किंतु फारसी ध्वनियो की तरह अंग्रेजी की ये ध्वनिया भी हिंदी में फ् ज् हो गइ।

व़् ध्वनि व् के समान ही सामान्यतः प्रचलित है।

॰ट्, ॰ड् जैसी अंग्रेजी वर्त्स्यध्वनिया हिंदी में मूर्धन्य ध्वनिया बन गइ। यही स्थिति अंग्रेजी ध्वनि ट्ऱ्, ड्ऱ् के ॰ट्, ॰ड् ध्वनिग्राम की भी है जो आरंभ में ही हिंदी में दो ध्वनियो के संयोग के रूप में स्वीकृत हुइ थी।

॰च्, ॰ज् तालव्य वर्त्स्य संघर्षी स्पर्श ध्वनियाँ हिंदी च्, ज् ध्वनियो के रूप में सरल कर ली गइ।

ल्, ल़् जैसी दो अंग्रेजी ध्वनिया हिंदी में एक ही ल ध्वनि के रूप में स्वीकृत हुइ।

थ़्, द़् अंग्रेजी दंत्यसंघर्षी ध्वनिया हिंदी दन्त्य थ्, द् मे बदल गइ।

॰झ् अंग्रेजी तालव्य संघर्षी ऊष्म सघोष ध्वनि में हिंदी म दो परिवर्तन हुए। पहले परिवर्तन के अनुसार इसका स्वरूप दंत्य संघर्षी ऊष्म

१—हिं० भा० इ०, पृ० २१०, डॉ० धी० व०।

(२) व्यजन लोप--(क) आदि--हास्पिटल--अस्पताल ह् ,,

(ख) मध्य-सेप्टेंबर--सितवर प् ,,

(ग) अन्त्य--कमाड--कमान ड् ,,

५ आगम--(१) स्वरागम--(क) आदि--स्कूल--इस्कूल इ का आगम

(ख) मध्य--ग्लास--गिलास इ ,,

(ग) अन्त्य--फुट --फुटा आ ,,

(२) व्यजनागम (क) मध्य--सिमेंट--सिलमिट ल ,,

(ख) अन्त्य--मोटऽ--मोटर र ,,

(ग) अनुनासिकता-रेक्रूट-रगरूट न ,,

६ घोषत्व परिवर्तन-(१) सघोष से अघोष-१--लार्ड-लाट ड से ट

२--क्लाउज़-क्लाउस ज़ से स

(२) अघोष से सघोष-१--कार्क काग क से ग

२-डिक्री-डिग्री क से ग

७ प्राणत्व परिवर्तन--अल्पप्राण से महाप्राण--क्रिस्तान से खिस्तान क से ख

८ अन्य परिवर्तन-(१) स्वर स्थानातरण-आ से अ क्लाऽक>क्लार्क से क्लर्क

ऑ से अ ऑफिसर से अफसर

ऑ ,, आ डॉक्टर ,, डाक्टर

ऑ ,, ओ बॉटल ,, बोतल

इ ,, ए कालिज ,, कालेज

इ ,, अ इजिन ,, इजन

इ ,, उ बिस्किट ,, बिस्कुट

ए ,, अ होटेल ,, होटल

ऍ ,, अ कॅप्टन ,, कप्तान

ऍ ,, आ गॅरटी ,, गारटी

ऍ ,, ऐ पॅड ,, पैड

(२) सधिस्वर स्थानांतरण--आइ से ए टाइम से टेम

आइ ,, ऐ क्विनाइन ,, कुनैन

(३) व्यजन स्थानातरण--- र से ड रवर से रवड

र ,, ल बैरिस्टर ,, वालिस्टर

न ,, ल नवर ,, लवर

• •

पदरचनागत प्रभाव

१—प्रस्तावना

संपर्क में आने वाली दो भाषाओं का एक दूसरे पर पड़ने वाला प्रथम प्रभाव शब्दकोशगत होता है किन्तु जिस रूप में विजित-विजेताओं की भाषाएं एक-दूसरे के निकट आती जाती हैं (और यदि संयोगवश विजेताओं की भाषा विकसित और विजितों की भाषा अविकसित रही) उस रूप में इस बात की पूरी संभावना रहती है कि उन्नत भाषा का पड़ने वाला प्रभाव शब्दों से आगे बढ़ जाय तथा किसी भाषा की ध्वनि पदरचना अर्थविज्ञान और वाक्य को भी प्रभावित करे। विदेशी भाषा किसी भाषा-भाषी जनता के जीवन में जितनी गहराई तक जा पहुँचती है, उसी मात्रा में उसका प्रभाव शब्द के अतिरिक्त भी पड़ता है। इसका आधार मानव धर्म-स्वभाव है जो एक दूसरे की भाषा और भाव-रूपों के आदान प्रदान में सहायक होते हैं। 'भाषा का मूलतत्व मानव व्यवहार है—वह व्यवहार जो एक व्यक्ति अन्य द्वारा समझे जाने के लिए करता है और वह व्यवहार जो दूसरा व्यक्ति यह समझने के लिए करता है कि पहले के मस्तिष्क में क्या था।'[1] इस प्रकार दो भिन्न देश के लोग परस्पर भाषा के आदान-प्रदान का आधार निश्चित करते हैं। इसी आदान प्रदान के सिलसिले में व्याकरण के कुछ नियम पदरचना के तत्व या संबंधतत्व भी कभी-कभी एक भाषा से दूसरी भाषा में पहुँच जाते हैं। येस्पर्सन ने पदरचना में शब्दतत्व रूप और अन्त में शब्द-संयोग को मुख्य उपादान माना है। शब्दतत्व से तात्पर्य है उपसर्ग मध्यप्रत्यय और प्रत्यय। रूप से तात्पर्य है सर्वनाम सहायक क्रियाएँ, विभक्तियाँ पूर्वसर्ग एवं संयोजक तथा शब्द-संयोग से तात्पर्य है नामिक+नामिक जैसे कैप्टन हुक या महिला लेखिका विशेषण+नामिक जैसे ब्लैकलेट एक्सप्रेस ट्रेन नामिक+क्रिया जैसे चिड़िया उड़ी ट्रेन चली। किसी भाषा से दूसरी भाषा में पदरचनागत प्रभावों का अध्ययन करते समय इन्हीं तत्वों के आदान प्रदान का अध्ययन किया जाता है।

अंग्रेजी विश्व की ऐसी भाषा है जो अनेक भाषाओं से प्रभावित हुई है और साथ ही जिसने अनेक भाषाओं को प्रभावित भी किया है, किन्तु व्याकरणतर

१—फिलॉसफी ऑफ् ग्रामर, पृ० १७ ओटो येस्पर्सन।

२—वही पृ० ४१।

प्रभाव इसने यूरोप की भाषाओं से ग्रहण किए हैं, जब कि एशिया, अफ्रीका और अमेरिका की भाषाओं को इसने प्रभावित किया है। अंग्रेजी में विदेशी भाषाओं के लगभग ६० प्रतिशत शब्द हैं, जिनमें फ्रांसीसी शब्द सर्वाधिक है। अंग्रेजी पर फ्रांसीसी का यह प्रभाव उसी ढंग का माना जा सकता है जैसा अरबी का फ़ारसी पर (डा० चाटुर्ज्या के मत से अरबी शब्दों की संख्या फारसी में ६० से ८० प्रतिशत तक हैं)[1] और फ़ारसी का हिंदी पर लेकिन फारसी शब्दों की संख्या हिंदी में १० प्रतिशत से भी कम है। जिस प्रकार और जिन परिस्थितियों में फारसी ने हिंदी को, अरबी ने फारसी को और फ्रांसीसी ने अंग्रेजी को प्रभावित किया, ठीक उन्हीं परिस्थितियों में अंग्रेजी ने हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को प्रभावित किया है। भारतीय भाषाओं पर यूरोपीय प्रभाव के आयात का कार्य पुर्तगाली ने आरम्भ किया था जिसे अंग्रेजी ने आगे बढ़ाया और अभी तक अंग्रेजी-प्रभाव की वृद्धि में कोई अन्तर नहीं पड़ा है।

हिंदी पर अंग्रेजी का पदरचनागत प्रभाव वास्तव में बिल्कुल मामूली है, पर विचारणीय है। आश्चर्य इस बात का है कि जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रवेश पा लेने के उपरांत भी आर्यभाषा अंग्रेजी की पदरचना ने फारसी से भिन्न हिंदी का इतना कम प्रभावित क्यों किया? इसका कारण संक्षेप में यह है कि आधुनिक शिक्षण संस्थाओं, प्रेस और साम्राज्यवादी नीतियों के अन्तर्विरोध के कारण हिंदी को अंग्रेजी के सामने उस प्रकार घुटने नहीं टेकने पड़े, जिस प्रकार फारसी के समक्ष उसे करना पड़ा था।

२— हिंदी की पदरचना

किसी भी भाषा के अवयव उसके वाक्य होते हैं। मूल शब्दों—क्रिया, अव्यय, विभक्तियाँ और सर्वनाम के संयोग से अभिव्यक्त किया गया वाक्य ही किसी भाषा के स्वरूप का निर्माण करता है, जो वास्तव में पदरचना के विभिन्न संबंधतत्वों एवं अर्थतत्वों की संगठित अभिव्यक्ति माना जा सकता है। हिंदी पदरचना के विकास का क्रम अनेक परिवर्तनों के साथ संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के विकास में स्पष्ट परिलक्षित होता है, किंतु साथ ही इसकी स्वतंत्र सत्ता भी स्थापित हो चुकी है।[2] हिंदी की पदरचना का असल में स्वतंत्र विकास हुआ है और उस पर मध्ययुग में फारसी का भी प्रभाव पड़ा। आधुनिक-युग में अंग्रेजी के सम्पर्क में आने पर इसने अंग्रेजी प्रभाव भी ग्रहण किया, जिसका आगे के पृष्ठों में अध्ययन किया जायगा।

१—भारतीय आर्यभाषा और हिंदी, पृ० १४८, डॉ० सु० कु० चा०।
२—देखिए—फारसी पदरचना का प्रभाव, पृ० ८१।

३—हिंदी में प्रयुक्त अंग्रेजी संबंधतत्व

साधारणतः अभिव्यक्ति के दो शब्दों (अर्थतत्वों) के संबंध को जोड़ने वाला सूत्र ही संबंधतत्व होता है। संबंधतत्व से अर्थतत्व द्वारा अभिव्यक्त विचारों के परस्पर संबंध की सूचना भी मिलती है। ग्लीसन महोदय पदरचना के संबंधतत्वों की परिभाषा देने में कठिनाई अनुभव करते हैं किंतु उन्होंने लिखा है कि 'कुछ पदग्रामों को भाषा के ढाँचे में लघुतम अर्थपूर्ण इकाई माना जा सकता है।'[1] लघुतम अर्थपूर्ण इकाई से तात्पर्य यह है कि जिसे नष्ट किए बिना अथवा जिस का अकस्मात अर्थ परिवर्तन किए बिना विभाजन न किया जा सके जैसे इन्कम्प्लीट (अपूर्ण)। इन्+कम्प्लीट की एक इकाई का अर्थ उसके विभाजन के उपरांत सर्वथा लुप्त हो जाता है और शब्द से भिन्न अर्थ का बोध होने लगता है। इसी प्रकार मन्लीनेस (मर्दापन) में मन्ली+नेस की इकाई को विभाजित कर देने पर व्याकरण के रूप में अन्तर हो जाता है। भाववाचक संज्ञा की इकाई तोड़ देने से एक अंश गुणवाचक विशेषण हो जाता है और दूसरा केवल प्रत्यय (संबंधतत्व) बन जाता है।

हर भाषा का वाक्य-प्रवाह एवं उसके संबंधतत्व पृथक होते हैं। संबंधतत्व को व्यक्त करने के कई तरीके हैं जैसे प्रत्यय शब्द के रूप में यथा का पै पर अथवा अर्थतत्व में जोड़कर यथा समासादि ध्वनि परिवर्तन से यथा गया से गयी भेद से भेद ध्वनिगुण (मात्रा सुर बलाघात) के भेद से यथा 'कन्डक्ट' (संज्ञा) कन्डक्ट (क्रिया)[2] वाक्य में विराम से स्थान के निर्धारण द्वारा यथा राम पुस्तक पढ़ता है—कर्ता कर्म का निश्चय स्थान से होता है।

डॉ. बाहरी ने फारसी प्रभाव के प्रसंग में लिखा है कि 'किसी व्याकरण रूप के आदान से पूर्व तथा भाषा पर फारसी प्रभाव अभिव्यक्त होने तक हिंदी का ढाँचा पूरा हो चुका था।'[3] इसलिए फारसी का बहुत सामान्य प्रभाव हिंदी व्याकरण एवं पदरचना पर पड़ा। ऐसी परिस्थिति में अंग्रेजी का पदरचनागत प्रभाव जैसा कि पहले कहा जा चुका है और उसके संबंधतत्वों का हिंदी में आगमन बहुत कम या नाममात्र ही होना संभव था। किंतु इस संबंध में फारसी-प्रभाव तब भी अंग्रेजी-प्रभाव की तुलना में कहीं अधिक है।

१—'सम मार्फीम्स कैन बी यूजफुली डेसक्राइब्ड ऐज बी स्मालेस्ट मीनिंग फुल यूनिट्स इन दी स्ट्रक्चर ऑफ् दी लैंग्वेज' पृ. ५१ एन इन्ट्रोडक्शन टू डिस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स।

२—सा. भा. वि. पृ. डॉ. बा. रा. स.।

३—परशियन इन्फ्लुएंस आन् हिंदी पृ. ५४ डॉ. बाहरी।

४—उपसर्ग

फारसी के उपसर्ग अधिक संख्या में हिंदी में—हिंदी और फारसी दोनों शब्दों के साथ—प्रचलित हैं,[1] किन्तु अंग्रेजी उपसर्ग या उपसर्गतुल्य पदग्राम कम संख्या में विद्यमान हैं। एक दो शब्दों का उपसर्गात्मक प्रयोग हिंदी पदों के साथ होने लगा है जैसे हाफकमीज, हेडदफ्तरी, किन्तु अधिकतर उपसर्ग और उपसर्ग-तुल्य शब्द हिंदी में प्रचलित और स्वीकृत अंग्रेजी पदों के साथ इस्तेमाल किए जाते हैं जैसे हेडमास्टर, सबडिप्टी, परसेंट।

(क) हिंदी शब्दों के साथ प्रयुक्त अंग्रेजी के उपसर्ग तुल्य पदग्राम—

(१) हाफ—हाफ कमीज, हाफ कुरता।

(२) हेड—हेडदफ्तरी, हेडखजाची, हेडपंडित, हेडमौलवी।

(३) डबल—डबलरोटी, डबल खुराक।

(४) डिप्टी—डिप्टीसाहब।

(ख) हिंदी में आगत अंग्रेजी के कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनमें अंग्रेजी के उपसर्गतत्व विद्यमान हैं, किन्तु हिंदी में इन सभी शब्दों के पदग्रामों का विश्लेषण ठीक उसी रूप में नहीं किया जा सकता जैसे अंग्रेजी में, क्योंकि ये शब्द मूलतः एक ही पदग्रामिक इकाई के रूप में हिंदी में स्वीकृत हुए हैं न कि उपसर्ग रूप में सामान्यतः, जैसे—

(१) डिप्टी—डिप्टीकलक्टर, डिप्टीरजिस्टार।

(२) नान—नानसेंस।

(३) पर—परसेंट।

(४) पार्ट—पार्टटाइम।

(५) प्रो—प्रोकम्युनिस्ट, प्रोअमेरिकन, प्रोवाइस-चासलर।

(६) फुल—फुलपैंट, फुलशर्ट, फुलटाइम, फुलस्पीड।

(७) मिस—मिस्टेक।

(८) सब—सबडिप्टी, सबरजिस्ट्रार, सबओवरसियर।

(९) हाफ—हाफपैंट, हाफप्लेट।

(१०) हेड—हेडमास्टर, हेडमिस्ट्रेस, हेडक्लर्क।

१—देखिए फारसी उपसर्ग, पृ० ८४।

५–ई—बेंगाली ।
६–एबुल—फैशनेबुल ।
७–फुल—ब्यूटीफुल, होपफुल ।
८–शिप—फ्रीशिप, लेक्चररशिप ।

शुक्ला, गुप्ता, मिश्रा जैसे शब्दो के आकारान्त रूप पर भी अंग्रेजी का ही प्रभाव है । ऐसा प्रतीत होता है कि -आ प्रत्यय जोड़कर एक्स्ट्रा, अल्ट्रा जैसा स्वरूप इन्हें दे दिया गया है, पर यह ध्वनि या पदगत प्रभाव नहीं है । यह वास्तव में लिपिगत प्रभाव है । अंग्रेजी मे लिखने पर इन शब्दो का आकारान्त उच्चारण किया जाता है । इन शब्दो के अन्त्य ल्, त्, र् को स्वरिक बनाने के लिए लिपि मे 'अ' की वृद्धि कर देते है । व्यवहार मे यही 'अ' बदल कर 'आ' का रूप ले लेता है ।

६—समास या मिश्रित शब्द

'जब दो शब्द एक साथ जुटकर एक शब्द बनाते है तो इस प्रकार बने शब्द को समास कहते है'', जैसे टाइप-राइटर, स्टेशन-मास्टर । अंग्रेजी समास की विशेषता यह है कि 'साधारणतः आधुनिक हिन्दी के समान अंग्रेजी में भी शब्दों को पृथक् ही रखा जाता है ।'[२] फारसी के समान अंग्रेजी के अनेक सामासिक शब्द हिंदी मे ज्यो के त्यो स्वीकृत कर लिए गए है और कुछ शब्दो को हिंदी शब्दो के साथ मिलाकर मिश्रित शब्द बना दिया गया है । दोनो भाषाओ के समानार्थक शब्द भी साथ-साथ मिलाकर लिखे जाते हैं ।

(१) हिंदी में स्वीकृत अंग्रेजी के सामासिक शब्द—

कामन-रूम	गुड-मानिंग
गेम्स-टीचर	गेम्स-रूम
जज-मजिस्ट्रेट	टाइप-राइटर
टीचर्स-रूम	टेलर-मास्टर
डबल-मार्च	नाइट-शो
नोट-बुक	पाकेट डिक्शनरी
पाकेट-नोट	पिक-पाकेट
प्रेस-मैन	पैंट-मैन

१—इंगलिश ग्रामर सिरीज, बुक ४, पृ० ३५३, जे० सी० नेसफील्ड ।
२—हिं० भा० उ० वि०, पृ० ५३८, डॉ० उ० ना० ति० ।

डबल रोटी	डबल खुराक
डाक्टर साहब	डाक्टर-वैद्य
दो-फुटा	नंबर एक
पान-सिगरेट	पाकिटमार
प्रिंसिपल साहब	प्रेसिडेन्ट साहब
प्रेस-स्वातंत्र्य	पोलिंग स्थान
प्रोफेसर साहब	बक्सा
महिला क्लब	मास्टर साहब (-जी)
मैनेजर साहब	मोटरखाना
रेलगाड़ी	रेलपथ
रोजगार ब्यूरो	लाठीचार्ज
लाट साहब	लेफ्टिनेंट (लपटन) साहब
लेडी-बाग	लोट-कालर
वकील-बैरिस्टर	सभा-सोसाइटी
साइकिल बाजी	साइकिल-सवार
सिनेमाबाजी	सर्कस-घर
सीलबंद (-मोहर)	सेक्रेटरी साहब

(४) नामावलि के मिश्रित शब्द—

कर्नैल सिंह	जर्नैल सिंह
बालिस्टर पाण्डेय	लपटनसिंह
राबर्ट्‌गंज	ग्हिड बाब

(५) हिंदी समासांत पदावली पर अंग्रेजी शैली का प्रभाव'—

अध्यक्ष, हिंदी-विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, एजेंट, इलाहाबाद बैंक, कुलपति, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, प्रिंसिपल, संस्कृत कालेज, महाराज दरभंगा, संपादक 'प्रताप' इत्यादि अंग्रेजी शैली के अनुकरण पर हिंदी में लिखा जाता है, जैसा कि अंग्रेजी में प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज, या सुपरिंटेंडेंट फाइनेंस डिपार्टमेंट लिखने की प्रथा है। इसी प्रकार यूरेशिया, हिन्देशिया, हिंद-चीन, अफ्रेशिया, त्रि-महाद्वीपीय जैसे शब्दों पर भी अंग्रेजी प्रभाव स्पष्ट है।

७—नामिक

अन्य देशी या विदेशी भाषाओं से नामिक का प्रभाव ग्रहण करना या आदान करना भाषा की विकसनशीलता का मुख्य लक्षण है। संज्ञा शब्दों के प्रभाव को स्वीकार करने या अन्य भाषा से अपनी भाषा में आदान करने के

१—पर्शियन इन्फ्लुएन्स ऑन हिन्दी, पृ० ५६, बाहरी।

धार्मिक राजनीतिक सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक अनेक कारण होते हैं जिनकी चर्चा फारसी कोशगत प्रभाव से की जा चुकी है।

अंग्रेजी के सम्पर्क में आने पर ही भारत का आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता से संपर्क स्थापित हुआ अतएव यह आवश्यक था कि इस सम्पर्क के नए और अनिवार्य शब्दों का हिंदी अथवा भारतीय भाषाओं में आदान होता और वैसा हुआ भी। १९१७ ई० की क्रान्ति के उपरान्त सोवियत संघ में अनेक भाषाओं को नई लिपि प्रदान की गई जिनमें आधुनिक जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले शब्दों का नितान्त अभाव था। 'सोवियत संघ की अनेक भाषाओं में शिक्षक छात्र स्कूल सोवियत सोशलिज्म साइंस फिजिक्स कोलखोज (सहकारी कृषि) क्रान्तिकारी उद्देश्य (व्याकरणात्मक) विधेय व्याकरण टेलीफोन पुस्तक सिनेमा थिएटर इत्यादि प्रारंभिक विचार के शब्दों का अभाव था।[१] इस अभाव की पूर्ति के लिए सोवियत संघ में चार प्रकार के प्रयत्न किए गए यथा-(१) भाषा के शब्द-भाण्डार को तथा शब्द-निर्माण की संभावना को स्वीकार करना (२) बोलियों से शब्द को ग्रहण करना (३) अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों का व्यवहार करना (४) रूसी या अन्य भाषाओं से आगत ऋण-शब्दों का व्यवहार करना। आर्मीनियन और जार्जियन भाषाओं में पुरानी शब्दावली की सहायता से नए शब्द बनाए गए जब कि उजबेक और अजरबैजानी में अनेक शब्द पहले ही अरबी या फारसी से ग्रहण किए जा चुके थे। 'वर्तमान में पारिभाषिक शब्दावली का विकास और नई लिखी गई भाषाओं को नई शब्दावली से सम्पन्न बनाने का कार्य रूसी से या रूस के माध्यम से अन्य भाषाओं से आगत ऋण शब्दों द्वारा ही रहा है।[२]

एक भाषा का दूसरी भाषा पर शब्दभागत प्रभाव में नामिक का प्रभाव ही ऐसा है जो भाषा की अभिव्यंजना शक्ति को अत्यधिक मात्रा में बढ़ा देता है जैसा कि खुद अंग्रेजी में अन्य भाषाओं के संज्ञाशब्दों के आदान से हुआ है। हिंदी में अंग्रेजी संज्ञा-शब्दों का उसके प्रातिपदिक रूप में ही आदान हुआ है। किसी प्रकार का प्रत्यय या पदग्रामिक आवेश अंग्रेजी संज्ञा से हिंदी ने स्वीकार नहीं किया जैसा कि फारसी संज्ञा से हिंदी ने 'ई' और 'आई'

१—देखिए-फारसी कोशगत प्रभाव पृ० १९६।

२—डेवलपमेंट ऑफ् नान-रशियन लैंग्वेजेज इन दी यू० एस० एस० आर० पृ० ३।

३—वही पृ० १७।

(शुदन से शुदनी—गोल से गोली, रुसवा से रुसवाई—धोना से धुलाई) से अन्त होने वाली (ईकारात और आईकारात) सज्ञाओ की पद्धति को स्वीकार किया है ।[१]

फ़ारसी के समान अग्रेजी से आगत सज्ञा शब्दों को, जिनका शब्दकोशगत प्रभाव के अन्तर्गत विवेचन किया गया है हम दो श्रेणियों में रख सकते हैं, यथा (१) सस्थागत शब्दसमूह जैसे न्यायालय, सचिवालय, सेना, शिक्षा, धर्म, कार्यालय एव प्रशासन इत्यादि से सबधित शब्द–जज, सेक्रेटरी, कर्नल, लेक्चरर चर्च, टेबुल, कारपोरेशन इत्यादि । (२) दैनिक जीवन की आवश्यकताओ से सबन्धित शब्द—कोट, ड्रामा, सिनेमा, होटल, मशीन, डाक्टर, टिकट इत्यादि ।

हिंदी में अग्रेजी की कुछ भाववाचक सज्ञाएँ भी प्रचलित हो गई हैं जैसे एनर्जी, पावर, लव्, ब्यूटी, हेल्थ, सस्पेस, क्लाइमेक्स, आइडिया, रेजिग्नेशन, सर्विस, जूनियारिटी, सीनियारिटी, प्राफिट, प्रोग्रेस, कम्युनिज्म, रोमेंटिसिज्म, रेनेसाँ, स्टडी, सेक्स, ड्यूटी, प्राइज, रेवार्ड, ट्रुथ, रेस्पेक्ट, रोमास इत्यादि ।

व्याकरण की दृष्टि से किसी वस्तु, व्यक्ति एव स्थान के नाम को सज्ञा कहते हैं, किंतु ग्लीसन महोदय का मत है कि अनेक ऐसी सज्ञाए भी हैं, जो इस परिभाषा में नही आती जैसे गुडनेस, फादरहुड (अच्छाई, पितापन) 'इनके समावेश के लिए गुण, क्रिया, सबध इत्यादि को सूची मे जोडकर परिभाषा को साधारणत विस्तृत कर दिया गया है ।'[२] इसी दृष्टिकोण से अग्रेजी सज्ञा के भेद भी हिंदी संज्ञा से अधिक अर्थात् पाच किए गए हैं यथा –

	प्रापर	१—व्यक्तिवाचक
	कॉमन्स	२–जातिवाचक
१—कॉन्क्रीट	कलेक्टिव	३–समूहवाचक
	मैटीरियल	४–द्रव्यवाचक (पदार्थवाचक)
२—एब्स्ट्रेक्ट		५–भाववाचक

हिंदी गद्य के आरभिक दिना के व्याकरण मे अग्रेजी के प्रभाव के कारण हिंदी सज्ञा में समूहवाचक (भीड, सभा, सघ, कुटब) तथा द्रव्यवाचक (सोना, पानी, हवा, पीतल, तावा, धान) सज्ञाओ को अलग भेद के रूप में स्वीकार

१—परसियन इनफ्लुएस आन् हिंदी, पृ० ५५, डॉ० बाहरी ।

२—एन इट्रोडक्सन टु डिस्क्रिप्टिव लिग्विस्टिक्स, पृ० ९२, ग्लीसन ।

३—इगलिश ग्रामर, पृ० १२, नेसफील्ड ।

किया गया[1] किन्तु कालान्तर में यह क्रम समाप्त हो गया और पदार्थ तथा भाव का सम्यक विचार करते हुए हिंदी में फारसी की दो और अंग्रेजी की पाँच संज्ञाओं से भिन्न केवल तीन (१) जातिवाचक (२) व्यक्तिवाचक (३) भाववाचक संज्ञाएँ स्वीकृत हुई। 'संज्ञा के जातिवाचक व्यक्तिवाचक और भाववाचक उपभेद संस्कृत व्याकरण में नहीं हैं। ये उपभेद अंगरेजी-व्याकरण में जो अलग अलग आधारों पर, अर्थ के अनुसार किए गए हैं।[2] जब हिंदुस्तानी का प्रथम प्राचीन व्याकरण खुद एक यूरोपीय हालैंड निवासी जोशुआ केटेलर द्वारा लिखित १७१५ ई. के आसपास में प्रकाशित हुआ[3] तो ऐसी स्थिति में यह भी संभव है कि हिंदी संज्ञा के तीन भेदों पर भी अंग्रेजी का ही असर हो।

वचन लिंग अथवा कारक के सिलसिले में किसी भी प्रकार के अंग्रेजी व्याकरण की चर्चा अप्रासंगिक है, क्योंकि इस प्रकार का कोई भी प्रभाव वास्तव में हिंदी के लिए विजातीय बना रहा यद्यपि समूहवाचक एवं पदार्थ वाचक संज्ञा भेदों की भांति हिंदी लिंग-प्रकरण में अंग्रेजी के प्रभाव से उभय लिंग (कामन जेंडर) को स्वीकार कर लेने की संभावना दिखाई पड़ने लगी थी'[4] पर हिंदी व्याकरण की प्रकृति में यह भेद स्वीकृत न हो सका क्योंकि हिंदी तो संस्कृत के नपुंसक लिंग को ही जो अंग्रेजी में भी प्रचलित है—स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी। फलस्वरूप अंग्रेजी के आगत शब्दों का लिंग निर्णय भी हिंदी के नियमों के अनुसार ही हुआ जिनके ब्यौरे में जाना अप्रासंगिक है। अंग्रेजी के दो शब्द 'फीट' और 'फीस' अपने बहुवचन रूप में ही हिंदी में प्रचलित हैं जिनका व्यापक प्रयोग शहर और देहात दोनों में होता है। 'फिर 'फीस' तो निश्चित रूप से बहुवचन ही रहा और 'फीट' भी पर हम भूल गए कि इन बहुवचन रूपों को और इस रूप में गृहीत शब्दों को फिर से बहुवचन बनाने का प्रयत्न किया जाने लगा। ऐसा अन्य भाषाओं में भी होता है।[5] लेकिन हिंदी में ये शब्द अरबी 'जवाहिरात' की तरह एकवचन रूप में ही प्रयुक्त किए गये हैं[6] जिनमें शून्य प्रत्यय जोड़कर हम बहुवचन रूप बनाते और प्रयोग करते हैं।

१—संक्षिप्त हिंदी व्याकरण पृ. २८-२९ कामता प्रसाद गुरु।
२—हिं. व्या. पृ. ८७ का. प्र. गु.।
३—हिं. श. पृ. १ प्रकाशकीय वक्तव्य।
४—हिं. व्या. पृ. ८७ का. प्र. गु.।
५—हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्दों का भाषा तात्त्विक अध्ययन पृ. २ डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया।
६—देखिए पृ. १११।

८—सर्वनाम

आर्यभाषा होने के कारण किसी सर्वनाम शब्द के रूप की दृष्टि मे हिंदी अ ग्रेजी मे साम्य दृष्टिगोचर हो सकता है जैसे मी–मुझे, इट–यह, दिस–इस, किंतु किसी प्रकार के प्रभाव या सर्वनाम शब्द के अ ग्रेजी से हिन्दी मे आगमन का प्रश्न ही नही उठता ।

९—क्रिया

अ ग्रेजी क्रिया का साधारण प्रभाव हिंदी पर अवश्य स्वीकार करना चाहिए किंतु साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हिंदी ने अ ग्रेजी से कोई क्रिया-पद स्वीकार नही किया है । सक्षेप में हिंदी-क्रिया को अ ग्रेजी की देन इस प्रकार हैं—

(१) हिंदी की करना, लगना, होना इत्यादि क्रियार्थक-सज्ञाएँ अ ग्रेजी सज्ञा या विशेषण में जोडकर कुछ सयुक्त क्रियाएँ बनाई गई हैं, जिनका प्रयोग हिंदी के कथ्य और लिखित दोनों रूपो में होता है, जिसके फलस्वरूप पूरा पद हिंदी में क्रिया का ही कार्य करता है, जैसे ब्रश करना, टाइट करना । ऐसी सयुक्त क्रियाओ के कुछ उदाहरण—

आर्डर देना, -लेना, -मिलना, -होना
इन्जेक्शन लगाना
एक्टिंग करना
क्लीनिंग करना
कटिंग करना, -कराना
किक करना
चार्ज देना, -लेना, -लगना, लगाना
चेक करना, चेकिंग करना
टाइट करना
टाइप करना
ड्राइविंग करना
पालिश करना
पास करना, -होना
पैक करना
फिट करना, -होना

फेल होना
शुरू करना
बुक करना
रिस्क उठाना
लव् करना
मार्किंग करना
शैविंग करना -कराना
साइकिलिंग करना
स्टार्ट करना
हिट करना
हेल्प करना

(२) अंग्रेजी से बनाई गई कुछ नामधातुऐं भी हिंदी मे इस्तेमाल होने लगी है। अंग्रेजी में 'हिट' शब्द क्रिया है। खेलकूद के प्रसंग में कभी हिंदी मे गेंद मारने को 'हिटना' कहा जाने लगा है। काल व व्यापार के अनुसार इसके विभिन्न रूपो का भी प्रयोग होता है यथा हिटना हिटा हिटाई (भाववाचक संज्ञा) हिट रहा है, हिटता है, हिटो।

इसी प्रकार 'फिल्म' शब्द मे हिंदी -आना' प्रत्यय जिसकी उत्पत्ति फारसी आन' [१] से हुई है, लगाकर 'फिल्माना' क्रियार्थक संज्ञा बनाई गई है। इसका सर्वाधिक प्रयोग सिनेमा संबंधी लेखो मे होता है खासकर हिंदी 'सप्ताह और 'हिन्दुस्तान' समाचार पत्रों मे। 'बाद में इसकी सफलता से प्रभावित होकर ए वी एम ने इसे 'बहार' के नाम से हिंदी मे भी फिल्माया।[२]

हिंदी क्रिया पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव क्रियापद का नहीं है, बल्कि काल और व्यापार के अनुसार क्रियापद की रचना-विधि का है। फारसी क्रिया के प्रभाव के वर्णन मे यह दिखाया जा चुका है कि हिंदी क्रिया का काल-विभाजन अपूर्ण और अनिश्चित है, अस्तु वाक्य में हिंदी क्रिया का काल-व्यापार के अनुसार स्वरूप निर्धारण हिंदीक्रम से वास्तव में नहीं होता बल्कि अंग्रेजी ढंग से ही क्रियाओ की रचना होती देखी जा रही है। इसके अतिरिक्त क्रिया पर अंग्रेजी का कोई और महत्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता क्योंकि जब देशी शब्दो का स्थान विदेशी शब्द ले लेते है, तब भी क्रियाओ में कम से कम परिवर्तन होता है।[३]

१—हि भा स वि पृ ४१७ डॉ ध ना ति ।
२—हिन्दुस्तान १२ १ १९५ वर्ष २९ पृ १ ।
३—भाषा और समाज पृ १ डॉ रामविलास शर्मा।

१०—विशेषण

अंग्रेजी भाषा के कुछ विशेषण शब्द हिंदी में लोकप्रिय होकर प्रचलित हो गए हैं, जिनका बोलचाल में ही नही बल्कि लिखित साहित्य मे भी प्रचलन हो गया है, किंतु हिंदी में अंग्रेजी से उतने विशेषण स्वीकार नही किए गए, जितने फारसी से, जिसका विवेचन फारसी विशेषण के प्रसग में हो चुका है।

प्रयोग की दृष्टि से अंग्रेजी-हिंदी विशेषणो में साम्य है। दोनों के विशेषण सज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द के पूर्व ही लगते हैं जैसे—

क्लीवर ब्वाय	चतुर लडका
ब्यूटीफुल गर्ल	सुन्दर लडकी

फारसी में विशेषण का स्थान शब्द के आगे और पीछे दोनो ओर रहता है यथा —रोजेचन्द—कुछ रोज, सह चीजा—तीन चीजा, दिले-नादा—नादान दिल इत्यादि। अंग्रेजी विशेषणो में हिंदी के समान लिग-वचन सबधी कोई विभेद नही है अर्थात् विशेषण लिंग और वचन से परे होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे फारसी में।

हिंदी मे प्रचलित अंग्रेजी के विशेषण—यहाँ दिए गए विशेषणो में सभी का कथ्य भाषा में प्रयोग होता है, किंतु अधिकाश का लिखित भाषा में भी प्रयोग होने लगा है, यथा—

१—गुणवाचक-आकार—फुल, ब्यूटीफुल, फैशनेबुल, वडरफुल, हाफ़्।
रग —ग्रीन, डार्क ब्लू, ब्राउन, रेड, ह्वाइट।
दशा —जूनियर, टेम्परेरी, डर्टी, परमानेंट, सीनियर, हेल्दी।
गुण —थर्ड क्लास, नानसेंस, प्योर, फर्स्टक्लास, वेस्ट, वेस्ट-क्वालिटी, मिक्स, लाट (लार्ड), वेरीगुड।
अन्य —आर्डिनरी, एजुकेशनल, जूनियर, नेशनल, पेटेंट, पोलिटिकल, फाइन, फैसी, मेडिकल, रफ्, लोकल, सोशल, स्पेशल।

अंग्रेजी गुणवाचक विशेषण की अवस्था (डिग्री) का हिंदी में आगत विशेषणों के साथ कोई सवध नही है। उनकी अवस्था का अन्तर हिंदी विधि से ही ज्ञात किया जाता है जैसे वहुत ब्यूटीफुल, सवसे ब्यूटीफुल, सवसे जूनियर, विल्कुल वेस्ट इत्यादि।

वाक्यरचनामूलक प्रभाव

१—प्रस्तावना

फारसी, अंग्रेजी और हिंदी तीनो भारोपीय परिवार की आर्यभाषाएँ हैं। फारसी और हिंदी भौगोलिक दृष्टि से निकट भी भाषाएँ हैं। मुसलिम शासकों के जमाने मे इनका सम्बन्ध और भी निकट मे स्थापित हुआ। हिंदी से अंग्रेजी अपेक्षाकृत दूर की भाषा थी, किंतु अंग्रेजी शासन के फलस्वरूप, यह न केवल हिंदी के सम्पर्क में ही आई, बल्कि भारत की स्वय मे एक भाषा बन गई। पदरचना एव वाक्य सघटना की दृष्टि से अंग्रेजी काफी समृद्ध भाषा है और उसकी वाक्यरचना सुगठित तथा पूर्ण अभिव्यजक है। फलस्वरूप आधुनिक हिंदी गद्य और उसकी वाक्यरचना पर अंग्रेजी वाक्यरचना-पद्धति का प्रभाव पडना स्वाभाविक है, क्योंकि आधुनिक हिंदी गद्य का सम्यक विकास अंग्रेजी के सपर्क मे ही हुआ है।

वाक्य में सामान्यत आठ प्रकार की बातें प्रकट की जाती हैं यथा (१) सबोधन (२) आकाक्षा (३) आमत्रण (४) अनुमति (५) तर्जना (६) रक्षा (७) वर्णन (भावाभिव्यक्ति) (८) प्रश्न।[1] इनकी अभिव्यक्ति के लिए वाक्य की आवश्यकता पडती है। कभी-कभी एक शब्दात्मक वाक्य से भावाभिव्यक्ति होती है। 'भागो' यह एक वाक्य है, जिसमे न तो कर्ता है और न कर्म। साप दिखाई पडने पर जैक ने अहमद से रक्षा की त्वरा मे सिर्फ 'भागो' का आदेश दिया। यह एक शब्द पूरे एक वाक्य का प्रयोजन सिद्ध करता है, किंतु इस प्रकार के वाक्य सामान्य न होकर विशेष होते हैं, जिनमें परिस्थिति के अनुसार कर्ता, कर्म और पूरक अन्तर्भूत होते हैं। अस्तु वाक्य एक शब्द और उसके अर्थ की इकाई न होकर, परस्पर सबधित शब्दो और उनके सामूहिक अर्थ की अभिव्यक्ति की इकाई है।

१—(१) एक्सक्लेमेशन (२) डेजायर (३) इनविटेशन (४) कन्सेशन (५) थ्रेट (६) वार्निंग ऑफ् (७) स्टेटमट एबॉउट इमेजिन्ड रियलिटी (८) क्वेश्चन। पृ० ३३१ दि फिलॉसफी ऑफ् ग्रामर, येस्पर्सन।

वाक्य की कोई ऐसी परिभाषा नहीं की जा सकती जो प्रत्येक भाषा के लिए सर्वमान्य हो। वास्तव में वाक्य की परिभाषा और उसकी रचना भाषा सापेक्ष होती है। येस्पर्सन के अनुसार वाक्य की परिभाषा इस प्रकार हो सकती है—'वाक्य (सापेक्षत) पूर्ण और स्वतंत्र मानव उच्चरित (अभिव्यक्ति) है—यह पूर्णता और स्वतंत्रता या इसकी स्वत निर्भरता या स्वत निर्भरता की शक्ति से स्पष्ट हो अर्थात् जो स्वयं को उच्चरित कर सके।[1] आचार्य रामचन्द्र वर्मा ने लिखा है कि 'वाक्य में कोई एक पूरा भाव या विचार रहता है। यदि भाव या विचार पूरा न हो तो वाक्य भी पूरा नहीं होता अधूरा रहता है।[2]

'क्या करें' एक स्वतंत्र और पूर्ण इकाई है और इस प्रकार एक वाक्य है, किन्तु अन्य शब्दों अथवा विधेय के साथ इस प्रकार के वाक्य मिलकर उपवाक्य हो जाते हैं, जैसे 'वह नहीं जानता था कि क्या करें। इस प्रकार अनेक उपवाक्यों से संयुक्त हो कर भी एक वाक्य जिसमें एक उपवाक्य दूसरे पर निर्भर हो सकता है, अपनी पूर्ण इकाई और स्वतंत्रता को कायम रखता है अर्थात् वाक्य में अर्थ की अभिव्यक्ति या विभिन्न बातों की अभिव्यक्ति निरपेक्ष होती है। सामान्यत बेकस (कण्ठहार) कहकर या लिखकर चुटकी दी जाती है, किन्तु बेकस के साथ पिछले वाला मैं और मुलनवाला 'तुम' छूटा रहता है और इस प्रकार पूरे वाक्य के अर्थ की ही प्रतीति होती है।

प्रत्येक वाक्य के दो विभाग किए जाते हैं—(१) उद्देश्य और (२) विधेय। वाक्य में कर्ता को उद्देश्य और क्रिया को विधेय माना जाता है। कर्म भी विधेय में ही शामिल है। 'उद्देश्य और विधेय वाक्यरचना के तात्विक अंग होते हैं।[3] 'सूरज चमकता है' में 'सूरज' उद्देश्य है और 'चमकता है' विधेय। 'यह विभाग हमारी आधुनिक आर्यभाषाओं के अनुकूल है। पर यह अन्य परिवारों की भाषाओं पर सर्वथा लागू नहीं है।[4] अस्तु विभिन्न भाषाओं में वाक्य का पदक्रम अलग-अलग होता है। उदाहरण के लिए हिंदी और फारसी में कर्म क्रिया से पूर्व लिखा जाता है जबकि अंग्रेजी

1—ए सेंटेंस इज ए (रिलेटिवली) कम्प्लीट एंड इन्डिपेंडेंट ह्यूमन अटरेंस—दी कम्प्लीटनेस एंड इन्डिपेंडेंस बीइंग शोन बाइ इट्स स्टैंडिंग एलोन यट इज मोड् बीइंग मटर्ड बाइ इट्सेल्फ। वही पृ १०७।
2—हिन्दी प्रयोग पृ ९१।
3—एन इन्ट्रोडक्शन टु डिस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स पृ १२७ ग्लीसन।
4—सामान्य भाषा-विज्ञान पृ १९९ डॉ बाबूराम सक्सेना।

में क्रिया के पश्चात्, किंतु तीनो भाषाओं मे कर्ता का स्थान क्रिया मे पूर्व ही निश्चित है। फारसी, अंग्रेजी और हिंदी तीनो अयोगावस्था की भाषाएँ हैं, इसलिए तीनो मे कर्ता, कर्म, क्रिया के अपने निश्चित स्थान का महत्व है।

२—अंग्रेजी वाक्यरचना-पद्धति

फारसी के समान अंग्रेजी वाक्य में भी प्रत्येक पद का पारस्परिक संबंध विश्लिष्ट विभक्ति या पूर्वसर्ग द्वारा व्यक्त किया जाता है, जिसमे प्रत्येक पद का स्थान हिंदी की तरह नियत रहता है। पद-क्रम में परिवर्तन कर देने से वाक्य के अर्थ मे भी परिवर्तन हो जाता है।

जैक किल्ड ए लायन—जैक ने एक शेर मारा, किंतु, जैक के स्थान पर शेर कर देने से अर्थ की पूरी अभिव्यक्ति में अन्तर पड जाएगा, क्योंकि दोनो शब्द (प्रातिपदिक) विभक्ति से परे हैं। वाक्य मे क्रिया के साथ शब्दो के स्थान की मर्यादा से वाक्य के सही अर्थ का निश्चय होता है।

अंग्रेजी वाक्यरचना का फार्मूला है S+V+O (Subject+Verb+Object कर्ता+क्रिया+कर्म)। विशेषण या प्रविशेषण का कर्ता तथा कर्म से पूर्व और क्रियाविशेषण का क्रिया के पश्चात् एवं पूर्व भी प्रयोग किया जाता है—

We know (S V) हम जानते हैं (कर्ता+क्रिया)।

We know the way (S V O) हम रास्ता जानते हैं (कर्ता+क्रिया+कर्म)।

We know the way to go (S V O+gerundial infinitive expansion) हम जाने का रास्ता जानते हैं (कर्ता+क्रिया+कर्म+क्रियावाचक नामधातु)।

We know the way to go from here (SVO+gerundial infinitive expansion+adverb phrase) हम यहाँ से जाने का रास्ता जानते हैं (क०+क्रि०+क०+क्रियावाचक नामधातु+क्रियाविशेषण)।

अस्तु वाक्य केवल सार्थक शब्दो की एक शृंखला भर नही है, बल्कि एक संरचना है, जिसके द्वारा वक्ता अपनी आकांक्षा अभिव्यक्त करता है।

वाक्य में वाक्यांश (फ्रेज) और उपवाक्य (क्लाज) का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्यांश उद्देश्यपरक होता है यथा, पूअर फेलो, ए हाउस टु सेल, ऐज ए मैटर ऑफ् फैक्ट (क्रम से गरीब बेचारा, बिक्री का मकान, वास्तविकता यह कि)। विधेयपरकता के अभाव में वाक्यांश वाक्य नही बन सकता। उपवाक्य

(क) ह्वेन ही वाज़ इज़ स्टार्टेड
(ख) ह्वाइल ही वाज़ इन माल
(ग) ऐज़ ही वाज़ अ बस माउंट
(घ) ऐज़ सून ऐज़ ही वाज़ इन अंबलमर्ड

इससे स्थिति और स्पष्ट हो जाती है। अंग्रेजी में यह न तो प्रधान उपवाक्य है और न प्रधान उपवाक्य का अधीनभूत बल्कि यह क्रियाविशेषण उपवाक्य है जो क्रिया के समय का बोध कराता है। विभिन्न संयोजकों से युक्त अंग्रेजी के आश्रित उपवाक्य संज्ञा विशेषण और क्रियाविशेषण उपवाक्यों के रूप में वाक्य के मिश्रित और संयुक्त वाक्य के आकार-प्रकार का निर्माण और अर्थ का प्रतिपादन करते हैं।

वाक्य-विश्लेषण से भिन्न वाक्य संयोजन (सिन्थेसिस) अंग्रेजी वाक्यरचना की एक और विशेषता है। 'सिन्थेसिस वह प्रक्रिया है जिससे वाक्य के अंशों को एक इकाई में सूत्रबद्ध करती है। अस्तु यह वाक्य-विश्लेषण का उल्टा है जो इकाई को अंशों में विभाजित करता है। सिन्थेसिस का वाक्य के सम्बन्ध में तीन प्रयोजन होता है—(१) साधारण वाक्यों से एक साधारण वाक्य बनाना (२) साधारण वाक्यों से एक संयुक्त वाक्य बनाना (३) साधारण वाक्यों से एक मिश्रित वाक्य बनाना।

अंग्रेजी वाक्यरचना में कर्तृ वाच्य प्रणाली अधिक प्रचलित है। इसी प्रकार प्रत्यक्ष और परोक्ष पद्धति (परकथन) भी अत्यन्त लोकप्रिय है। अंग्रेजी में डाइरेक्ट तथा इनडाइरेक्ट नरेशन दोनों का समान रूप से व्यवहार होता है, किन्तु हिन्दी में प्रत्यक्ष उक्ति (डाइरेक्ट नरेशन) का अधिक प्रयोग मिलता है।

पैरेन्थेटिकल उपवाक्य (पैरेन्थेटिकल क्लाज़—निक्षिप्त उपवाक्य) अंग्रेजी वाक्यरचना की एक अलग महत्वपूर्ण विशेषता है। यह उपवाक्य वाक्य के अन्तर्गत प्रसंग से कुछ भिन्न किन्तु विषय से सम्बद्ध अनुभव सूचना या विशेषता जो बाद में सोची गई हो बताने के लिए किसी शब्द या वाक्यांश के साथ बीच में जोड़ दिया जाता है, जब कि वाक्य वास्तव में इस उपवाक्य के बिना भी पूर्ण होता है।[2] यदि इस उपवाक्य को पूरे वाक्य में से निकाल दिया जाय तो

१—सिन्थेसिस इज़ दी प्रोसेस ऑफ़ कम्बाइनिंग दी पार्ट्स ऑफ़ ए सेंटेन्स इन टू ए होल। इट इज़ देयरफ़ोर दी अपोज़िट टु एनेलिसिस व्हिच कन्सिस्ट्स इन ब्रेकिंग अप दी होल इन टु इट्स कम्पोनेन्ट पार्ट्स। पृ ११ इंग्लिश ग्रामर सिरीज़ बुक ४ जे सी नेसफ़ील्ड।

२—'ह्वेन एन एक्सप्लेनेटरी क्लाज़ इज़ इन्सर्टेड इन, इट इज़ काल्ड पैरेन्थेटिकल क्लाज़' इंग्लिश ग्रामर, स्वीट।

वास्तविक अर्थ में कोई अन्तर नही पडता। वाक्य के बीच मे यह दो डैश (पडी रेखा) के बीच, दो विराम चिन्हो (कामा) के बीच, या कोष्ट के बीच में लिखा जाता है, यथा—

ब्रूटस—इट् इज ए फैक्ट—वाज नाट ए कान्स्पिरेटर वॅट् ए मैन।

'Most books on Mahatma's woık and polıtıcal carreer—and they are legıon—end the story of hıs lıfe more or less on the same ımagery and thought that wı.h hıs death—'.he lıght, ın our lıves went ou '[1]

'इस प्रकार प्राचीन काल में मेसोपोटामिया और काकेशस-प्रदेश में—स्लाव और ग्रीक भाषाओ के पडोमी देशो में—भारतीय जनो की बस्तियो के प्रमाण मिलते हैं।'[2]

३—अंग्रेजी वाक्यरचना-पद्धति का हिंदी पर प्रभाव

प्रोफेसर ज्यूल ब्लाख ने आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओ की वाक्य रचना पर विचार करते हुए लिखा है कि 'नव्यभारतीय भाषाओ का वाक्यविन्यास प्राथमिक है और जिस हद तक पूर्वसग, नित्यसबधी रूप के अन्तर्गत परस्पर सम्बन्धित रहते हैं, वहाँ तक वह अपरिवर्तनीय और एकरूप है। यह मध्य के अ शो के कारण है जिससे वाक्याशो मे दुरूहता आ जाती है, हिन्दी के—'वाला' युक्त, मराठी के—'णार' युक्त कर्तृवाची सज्ञाएँ, कृदन्तीगुणवाचक विशेषण, म० लेला, हिंदी-'आहुआ'।'[3] हिंदी वाक्यरचना की प्रकृति सामान्यत साधारण वाक्य लिखने की है जो अनेक विशेषण, पूरक और अलकारो से युक्त हो सकता है, अथवा अधिक से अधिक एक आश्रित या समानाधिकरण उपवाक्यो से सयुक्त। फारसी ने हिंदी को निर्देशात्मक और सम्बन्धवाचक वाक्यपद्धति—प्रधान उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य पद्धति—प्रदान की,[4] किंतु अ ग्रेज़ी ने या अ ग्रेजी के प्रभाव ने, सम्बन्धवाचक वाक्यो और आश्रित वाक्यो की गुम्फित प्रणाली को और आगे बढाया, यथा 'यह सक्षिप्तीकरण दुस्साहस अवश्य है, क्योंकि समुद्र की विशालता और गभीरता को एक छोटे मे पात्र में समेट लेना बहुत मुश्किल है, फिर भी साधारण शिक्षित पाठको को, जो एक ही पुस्तक से समस्त भारतीय साहित्य की गतिविधि को थोडे मे जान लेना चाहते हैं, परिचय

१—एसेसिनेशन आफ् महात्मा गाधी, पृ० १४—भूमिका, के० यल० गावा।

२—भाषा और समाज, पृ० १०६, डा० रामविलास शर्मा।

३—भारतीय आर्यभाषा, पृ० ३४०, ज्यूल ब्लाख।

४—देखिये—फारसी वाक्यरचना का प्रभाव, पृ० १५३।

देने के लिये यह प्रयास किया गया है और इसकी सफलता-असफलता के प्रमाण ये ही हैं।[1] इतना लम्बा-चौड़ा वाक्य हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। ऐसे स्थलों पर हिंदी का लेखक अंग्रेजी के वाक्यों के सांचे में अपनी विचारधारा को खोजता है, बैठता है और हिंदी में लिखता है। मौलिक लेखों या रचनाओं में यह वाक्य प्रणाली अपेक्षाकृत सुगम होती है किंतु अनुवाद की भाषा में यह एक न समझी जा सकने वाली तथा न सुलझायी जा सकने वाली समस्या बन जाती है, क्योंकि अनुवादक विषय का अनुवाद करने के साथ-साथ अंग्रेजी वाक्यरचना-प्रणाली का भी—जो हिंदी वाक्यरचना प्रकृति के मेल में नहीं है—अनुवाद करने लगते हैं। अच्छे लेखकों की अंग्रेजी (या अन्य यूरोपीय भाषाओं) से अनूदित कृतियों को शंका और अविश्वास से देखने का यह सबसे बड़ा कारण है।

हिंदी में अंग्रेजी के प्रभाव से प्रचलित कठिन और दुरूह वाक्य-प्रणाली पर प्रोफेसर ब्लूम ब्लाख ने लिखा है कि 'यह देखने की बात है कि यूरोपीय प्रभाव के अन्तर्गत एक ऐसी दुरूह शैली का निर्माण हो रहा है, जिसमें परंपरागत वाक्यविन्यास के अंश अस्थायी रूप में ज्यों के त्यों बने हुए हैं। स्वभावतः यह तथ्य केवल अत्यन्त परिष्कृत भाषाओं में ही दृष्टिगोचर होता है मराठी हिंदी बंगाली।[2]

(१) साधारण वाक्य में किसी भी एक विचार (या विधेय) को प्रकट किया जा सकता है, किन्तु हिंदी की सरल पद्धति के साधारण वाक्यों की रचना पर भी अंग्रेजी का प्रभाव पड़ा है, खासकर जब अंग्रेजी की सिन्थेसिस-पद्धति का सहारा लिया जाता है। इस पद्धति के अनुसार दो-तीन वाक्यों को एक ही साधारण वाक्य में अंग्रेजी के समान लिखा जाता है तथा दो स्वतंत्र समापिका क्रियाओं को परस्पर सम्बद्ध करके एक को क्रियार्थक संज्ञा (या कृदन्ती गुणवाचक विशेषण) और दूसरी को समापिका क्रिया—सकर्मक या अकर्मक—बनाया जाता है। ऐसी स्थिति में प्रथम वाक्यांश साधारण वाक्य का अंग समान बन जाता है पर वस्तुतः अपने उद्देश्य और विधेय की स्वतंत्र सत्ता के कारण इसका अस्तित्व पूर्णतः मिट नहीं पाता। ऐसे उपवाक्य जैसे शब्द समूहों की यह विशेषता है कि उनके अन्दर न सिर्फ अर्थ की बल्कि व्याकरण की दृष्टि से भी उद्देश्य का तथ्य उपस्थित होता है। क्रिया के सामान्य रूप या कृदन्त के किसी भी रूपान्तर

१—भारतीय साहित्य की रूपरेखा विवेचन श्री भोलाशंकर व्यास।
२—भारतीय आर्यभाषा पृ. १४१ ब्लूम ब्लाख।

से ऐसा कार्य व्यक्त हो जाता है, जिसका कर्ता, वाक्य के मुख्य ढाँचे के कर्ता से भिन्न है।'[१] श्री चेर्निशोव् महोदय ने कुछ साधारण वाक्यो का उदाहरण लेकर यह बताने की कोशिश की है कि उनका एक वाक्याश उपवाक्य जैसा ही है। यशपाल का एक वाक्य–

युद्ध आरभ होने पर प्राणरक्षा के लिये आवश्यक पदार्थों को उत्पन्न करना बन्द कर नाश के ही साधन बनाये जाते हैं।

इस एक साधारण वाक्य में असल में कालवाचक क्रियाविशेषण एव स्थानापन्न क्रियासूचक तीन उपवाक्यो की 'सिन्थेसिस' है, यथा—

१—जब युद्ध आरम्भ हो जाता है,

२—तो प्राणरक्षा के लिए आवश्यक पदार्थों को उत्पन्न करना बन्द कर दिया जाता है,

३—और नाश के ही साधन बनाए जाते हैं।

श्री चेर्निशेव् ने लिखा है कि 'इसके आधार पर क्रिया के सामान्य रूप या कृदन्तवाला शब्दसमूह, उपवाक्य जैसे स्वतत्र वाक्याश में परिणत हो जाता है। विस्तृत वाक्य के समान ऐसे स्वतत्र वाक्याश में उद्देश्य सा अपना निजी कर्ता वर्त्तमान है।'[२] डॉ० बदरी नाथ कपूर का मत है कि 'आरम्भ होना, क्रियापद नही, सज्ञापद है, अस्तु यह साधारण वाक्य है।'[३] इस प्रसग में सॉइमन पॉटर का मत उल्लेखनीय है कि साधारण, सयुक्त और मिश्रित वाक्यों का अन्तर केवल सयोजको और विरामचिह्नो पर ही निर्भर न होकर वाक्स्वरता एव लय (मेलोडी) पर भी निर्भर होता है।[४]

हिंदी मे इस प्रकार के साधारण वाक्य लिखने की परपरा अग्रेजी के प्रभाव से ही प्रचलित हुई है।

(२) हिंदी के सयुक्त और मिश्रित वाक्यों पर स्पष्ट ही अग्रेजी के कपाउण्ड और कप्लेक्स वाक्यों का प्रभाव है। फारसी समानाधिकरण और आश्रित सयोजको के प्रभाव से हिंदी मे सयुक्त और मिश्रित वाक्यप्रणाली का आरभ हो चुका था, किंतु उसकी सीमा ज्यादातर वाक्य मे एक निर्देशात्मक और एक

१—नागरी प्रचारिणी पत्रिका, मालवीय शती विशेषाक (२०१८ वि०), पृ० ४८६, वि० ए० चेर्निशोव्।

२—वही, पृ० ४८६।

३—वही, पृ० ८० (स० २०२०, अक १–२)।

४—माडर्न लिंग्विस्टिक्स, पृ० ११०, सॉइमन पॉटर।

संबंधवाचक उपवाक्य तक ही रहती थी[1] पर अंग्रेजी के संयुक्त और मिश्रित वाक्यों के प्रभाव से हिंदी वाक्यरचना-प्रणाली में अनेक आश्रित (संबंधवाचक) और समानाधिकरण उपवाक्यों का प्रचलन हुआ। जो जिसे जिसको जिसने जिनलोगों ने जिन्हें, जिनमें क्योंकि इसलिए अस्तु, यदि तो जहाँ वहाँ जब तब कि किंतु, मगर, लेकिन यद्यपि तथापि चाहे इत्यादि जैसे वाक्य (उपवाक्य)-संयोजकों के सहारे अंग्रेजी-पद्धति की वाक्यरचना हिंदी में चल पड़ी है, जिसका आरंभ भारतेन्दुकाल की हिंदी-वाक्यरचना में ही हो चुका था।

इस रचनापद्धति के प्रभाव से हिंदी में विशृंखल वाक्यों की पद्धति स्थापित होती जा रही है। 'निस्सन्देह यह प्रवृत्ति हिन्दी की अपनी प्रवृत्ति नहीं है। इस प्रकार संबंधवाचक सर्वनाम का प्रयोग आज दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है और अंग्रेजी की ही प्रवृत्ति के अनुरूप हम उसको संबद्धपूर्वगामी शब्द के समीप रखते हैं जिसके फलस्वरूप कर्त्ता क्रिया से दूर जा पड़ता है, और यह भूलकर कि कर्त्ता पूर्व ही आ चुका है, फिर से कर्त्ता का प्रयोग कर बैठते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति का अंग्रेजी में अन्तर्मुक्त वाक्य भी कहा जाता है।'[2] ऐसे वाक्य इस प्रकार बन जाते हैं—'पानी जो बरसता है वह मीठा होता है।' 'वह' का प्रयोग कर्त्ता (सर्वनाम) की पुनरावृत्ति है। भारतेन्दु जी की ऐसी वाक्यरचना का उल्लेख किया जा चुका है।[4]

मिश्रितवाक्य पर डॉ० बाहरी ने अपना मत इस प्रकार प्रकट किया है कि 'यह संकेत किया जा सकता है कि नियमतः मिश्रितवाक्य साहित्यिक व्यक्तियों के लिए उपयोगी होते हैं।[5] मिश्रितवाक्य का प्रयोजन किसी एक तथ्य और उसके कारण पर विशेष जोर देना होता है तथा उसकी किसी विशेषता को बताते हुए उसके अन्य संबन्ध को स्पष्ट करना भी। परस्पर संबंधित विचारों की व्याख्या के लिए भी यह वाक्य उपयोगी होता है। 'मिश्रित वाक्यों में संज्ञा विशेषण और क्रियाविशेषण को उपवाक्यों में बदल दिया जाता है और उन्हें

१—देखिए—फारसी प्रभाव पृ० १२१।
२—देखिए—फारसी प्रभाव पृ० १५०।
३—हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्दों का भाषातात्त्विक अध्ययन पृ० ९५ डा० कै० च० भाटिया।
४—देखिए—फारसी प्रभाव पृ० १९ ।
५—हिंदी सिमैन्टिक्स पृ० १७० डॉ० बाहरी।

महत्वपूर्ण बना दिया जाता है।'[1] अंग्रेजी-हिंदी के मिश्रित वाक्यों का तुलनात्मक उदाहरण—

1—Sanskrit literature and culture are the noblest legacy of the human race in which eternal spiritual truths and the laws of the soul are enshrined

—प्रज्ञा—अक्टूबर, १९६३, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, पृ० ८।

२—As soon as Badge entered the office he was greeted by Madan Lal who asked Badge 'Kab ae?'

—Assassination of Mahatma Gandhi,
P 71, K L Gauba

३—वास्तविक दुखों से, जिनमें स्वजनों की बीमारी मुख्य है, अवश्य दुखी हुआ हूँ।

—आत्मविश्लेषण—गुलाबराय।

बाबू गुलाबराय ने जिस वाक्यपद्धति को स्वीकार किया है, वह अंग्रेजी की ही है, किंतु हिंदी में अब काफी प्रचलित हो गई है।

(३) मिश्रितवाक्य और संयुक्तवाक्य की रचनापद्धति में अधिक अन्तर नहीं होता। विचारों के या तथ्य के समानाधिकरण रूप पर संयुक्तवाक्य का अस्तित्व निर्भर करता है। 'यदि विचार परस्पर अवलम्बित और समानाधिकृत हैं, तो उनका संबंध और अर्थ संयुक्तवाक्य में अधिक अच्छी तरह दिखाया जा सकता है।'[2] समानाधिकरण संयोजकों की सहायता से हिंदी में संयुक्तवाक्य लिखा जाता रहा है, जिसकी सरलपद्धति एक साधारण वाक्य को दूसरे साधारण वाक्य से जोड़ देने की है। अंग्रेजी-पद्धति के प्रभाव से अब संयुक्तवाक्य अनेक आश्रित और समानाधिकरण उपवाक्यों से संयुक्त होकर लिखा जाने लगा है। यह पद्धति केवल विचारप्रधान लेखकों में ही प्रचलित है, सामान्य जनता अथवा समाचार-पत्रों, की साधारण भाषा के वाक्यों में नहीं। उदाहरण—

१—तब भी इतना तो ज्ञात ही है कि व्याकरण, भाषण कला, भाषा-विज्ञान आदि में विशेष उन्नति हुई तथा कतिपय नवीन काव्य-रूपों की भी सृष्टि हुई।—पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धांत, पृ० ६, डॉ० केसरी नारायण शुक्ल।

१—वही, पृ० ३७७।

२—वही, पृ० ३७७।

२—वास्तविक दुखों से जिनमें स्वजनों की बीमारी मुख्य है, यथेष्ट दुःखी हुआ हूँ कल्पित दुखों—विशेषकर आर्थिक कठिनाइयों—से भी विचलित नहीं हुआ हूँ।

—आत्मविश्लेषण—गुलाबराय।

स्मरण रहे—किंतु, मगर और लेकिन समानाधिकरण संयोजक हैं। ऐसे वाक्यों की दुर्बलता की ओर संकेत करते हुए आचार्य रामचन्द्र वर्मा ने लिखा है कि मिश्र और संयुक्त वाक्यों में भूलों के लिए अधिक स्थान रहता है। विशेषतः संयुक्तवाक्य लिखने में लोग कई तरह की भूलें कर जाते हैं। वे वाक्य का प्रारंभ किसी और प्रकार से करते हैं और उसका मध्य किसी और प्रकार का रखते हैं और अन्त कुछ ऐसे ढंग से कर जाते हैं कि आदि और मध्य से उसका ठीक मेल नहीं बैठता। अर्थात् वाक्य बनाते समय वे उसका ठीक तरह से निर्वाह नहीं कर सकते।[१]

(४) हिंदी वाक्यरचना-प्रकृति में अंग्रेज़ी वाक्य रचना की एक नई विशेषता आ गई है और वह है पैरेन्थेटिकल उपवाक्य (निक्षिप्त उपवाक्य) के हिंदी में प्रचलन की। पैरेन्थेटिकल उपवाक्य की पद्धति हिंदी में अत्यन्त लोकप्रिय हो गई है—विशेषकर आधुनिक हिंदी के लेखकों में किंतु इसका प्रयोग भारतेन्दु काल में ही चल पड़ा था यथा—

'नीचे-से-नीचे दर्जे के मनुष्य—किसान कुली कारीगर आदि—और ऊँचे-से ऊँचे दर्जे वाले—ऋषि दार्शनिक राजनीतिज्ञ—सबों ने मिलकर कौमी—तरक्की को इस दर्जे तक पहुँचाया है। —आत्मनिर्भरता—बालकृष्ण भट्ट।

आधुनिक आलोचकों और कथाकारों—यहाँ तक कि कवियों—में भी यह पद्धति चल पड़ी है। पंडित रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है—

'बात यह थी कि जिन लोगों के मन में नई शिक्षा के प्रभाव से नये विचार उत्पन्न हो रहे थे जो अपनी आँखों काल की गति देख रहे थे और देश की आवश्यकताओं को समझ रहे थे उनमें अधिकांश तो ऐसे थे जिनका कई कारणों से—विशेषत उर्दू के बीच में पड़ जाने से—हिन्दी साहित्य से लगाव छूट—सा गया था और शेष—जिनमें नवीन भावों की कुछ प्रेरणा और विचारों की कुछ स्फूर्ति थी—ऐसे थे जिन्हें हिन्दी-साहित्य का क्षेत्र इतना परिमित दिखाई देता था कि नए-नए विचारों को सन्निविष्ट करने के लिए स्थान ही नहीं सूझता था। —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—रामचन्द्र शुक्ल।

१—हिंदी प्रयोग पृ १४।

उपन्यासकार अज्ञेय ने लिखा है—'और, चूंकि उसने ससार के सबसे बड़े डर—शासन के डर—पर आघात किया है, इसलिए उसका अपराध सबसे कठोर दड मागता है'

—शेखर एक जीवनी, भाग १, पृ० ५२।

(५) कर्त्तृवाच्य और कर्मवाच्य वाक्यपद्धति हिंदी को सस्कृत-परम्परा से प्राप्त है। अग्रेजी की वाक्यरचना मे इस पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान है, किंतु हिंदी मे अग्रेजी-ढग की यह पद्धति लोकप्रिय नही हो सकी है, यद्यपि प्रयोग होता है। सामान्यत कर्मवाच्य वाक्यरचना पद्धति का सहारा नही लिया जाता, कर्त्तृवाच्य पद्धति मे ही अधिकतर वाक्यरचना की जाती है—

राम ने रावण को लका में मारा। (कर्त्तृवाच्य)

राम द्वारा रावण लका मे मारा गया। (कर्मवाच्य)

इसी प्रकार प्रत्यक्ष और परोक्ष पद्धति (डाइरेक्ट और इनडाइरेक्ट) की वाक्यरचना भी हिंदी में अग्रेजी के समान प्रचलित न हो सकी। हिंदी में प्रत्यक्ष पद्धति का ही अधिक प्रयोग मिलता है।[१] जिस प्रकार अग्रेजी वाक्यो में डाइरेक्ट से इन्डाइरेक्ट करने में सर्वनाम, क्रिया—खासकर उसका काल, और स्थान तथा काल और स्थान वाचक क्रियाविशेषण शब्दो में परिवर्तन कर दिया जाता है, वैसा कोई क्रम हिंदी में नही चल सका है।

सवाद या वार्तालाप में उद्धरणी ' ' का प्रयोग अवश्य ही लोकप्रिय हो गया है, किंतु उसे हटाकर अग्रेजी ढग से इन्डाइरेक्ट शैली में लिखने का रिवाज नही है—प्रत्यक्ष शैली में ही वाक्य चलता है। अग्रेजी वाक्य से प्रत्यक्ष-परोक्ष शैली का उदाहरण—

Antony 'will you be patient? will you stay a while? I have o'ershot myself to tell you of it I fear I wrong the honourable men, whose daggers have stabbed Caesar, I do fear it' (Direct)

Antony asked the mob that would they be patient? would they stay a while? He had overshot himself to tell them of that He feared that he wronged the honourable men whose daggers had stabbed Caesar, he did fear that (Indirect)

—Julius Caesar, W Shakespeare

१—हिं० भा० उ० वि०, पृ० ५३७, उ० ना० ति०

हिंदी वाक्यरचना मे विभिन्न पदों में इस प्रकार का परिवर्तन नहीं होता क्योंकि यहाँ प्रत्ययविधि ही चलती है, यथा—

शेखर ने फिर परिश्रम से कहा—'हमारी सभ्यता मानव की शैशवावस्था को बदलने का अनन्त प्रयास है। वह चाहती है सुरक्षा पुरुषत्व मानता है साहस।

—शेखर एक जीवनी।

इस वाक्य में इतना ही परिवर्तन हो सकता है कि जबरपंथी हटा दी जाय। इसके अतिरिक्त हिंदी वाक्यरचना की मध्यम शैली मे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।

(६) अंग्रेजी के उन सभी विरामचिह्नों का प्रयोग हिंदी वाक्यरचना में होने लगा है, जो पहले संस्कृत फ़ारसी और हिंदी के लिए अज्ञात थे और जिन्होंने हिंदी वाक्यरचना को नया संगठन और नई अभिव्यक्ति प्रदान की है। इनका प्रयोग मिश्रित और संयुक्तवाक्यों और उनके भीतर निहित उपवाक्यों के संगठन से बढ़ा है। बीच के कोष्ठक भी अंग्रेजी प्रभाव है। हिंदी वाक्यों में नए विरामचिह्नों के प्रयोग पर स्पष्ट ही अंग्रेजी प्रभाव है, यथा—

'झुक झककर पढ़िएगा भाग्य तो उसके भीतर आकृमनजाह बढ़ती जा रही है उसने कोई अपराध नहीं किया है, पर जो उन कोठरियों में है, जो 'भारत में है और सदा भुगत रहे हैं, वह उन्हीं की तरफ़ होगा वह झपटेगा और लड़ेगा'

—शेखर एक जीवनी भाग १ पृ ११।

'यह वाणिज्य कमाती है—और उससे बड़ी चीज क्या है? हमें वाणिज्य चाहिए, तो हमें शान्ति चाहिए! शान्ति! और मैं क्या हुआ हूँ' —

—वही पृ ८५।

(७) अंग्रेजी प्रश्नवाचक वाक्यों को एम आर, वाज बेमर, विल, शैल, डू, एण्ड विल हैव हैज हैड एम् जैसी सहायक क्रियाओं (आक्जिलियरी वर्ब्स) से आरंभ किया जाता है, जबकि हिंदी में प्रश्नवाचक वाक्य क्रिया से आरंभ नहीं होता बल्कि अंग्रेजी की भांति विभिन्न प्रश्नवाचक सर्वनामों से ही। आदेशात्मक वाक्यों मे भी अंग्रेजी में ऐसा ही होता है, जबकि हिंदी मे नहीं।

( ) क्रिया और उसके विभिन्न कालों की दृष्टि से आधुनिक हिंदी गद्य-साहित्य—विशेषतः अंग्रेजी पढ़े-लिखे लेखकों का साहित्य—भी वाक्यरचना अंग्रेजी के तीन कालों और प्रत्येक के चार भेदों या विभागों (इन्डेफ़िनिट कण्टीन्यूअस परफ़ेक्ट परफ़ेक्ट कण्टीन्यूअस) के आधार पर ही चल रही है, जो अगले खंड के विभिन्न उदाहरणों से और भी स्पष्ट हो जाती है।

(९) वाक्स्वरता (इन्टोनेशन) या वार्ता मे लयात्मकता के कारण शब्द या अभिव्यक्ति विशेष पर वक्ता वल देता है, किन्तु लिखित भाषा में हिंदी के लिए यह नई पद्धति है। हिंदी गद्य में अंग्रेज़ी-प्रभाव से ही वाक्स्वरता का विकास और प्रयोग आरम्भ हुआ है। लेकिन हिंदी या अन्य भाषाओं की वाक्स्वरता का 'अभी समुचित अध्ययन नही किया जा सका है।'[१] 'अंग्रेजी मे वल प्रदान करने की सर्वसुलभ विधि यह है कि जिस शब्द को महत्ता प्रदान करनी हो, विशेष वल डालना हो, तो उस शब्द को अपने निश्चित स्थान से पूर्व ही प्रयुक्त किया जाये और यदि वन पड़े तो वाक्य के प्रारम्भ में रख दिया जाये।'[२] उदाहरण—

मैने जार्ज को पेन दी।	—साधारण।
जार्ज को मैंने पेन दी।	——जार्ज पर जोर।
पेन मैंने जार्ज को दी।	—पेन पर जोर।

(१०) हिन्दी-वाक्य-विश्लेपण की नई पद्धति अंग्रेज़ी-व्याकरण की देन है।

४—हिंदी साहित्यकारो पर अंग्रेजी शैली का प्रभाव

१ पंडित वालकृष्ण भट्ट—हिंदी गद्य का सम्यक् विकास—आधुनिक रूप में—अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना के साथ आरम्भ हुआ। प० वालकृष्ण भट्ट ने फारसी और अंग्रेज़ी दोनों के वाक्य-प्रयोगो को मुक्त रूप में स्वीकार किया है। अंग्रेज़ी ढग का सयुक्तवाक्य—'कोई-कोई जिन्हें कभी को इसका ख्याल आता है वे परमेश्वर की इच्छा या कलि की महिमा कह वोध कर लेते हैं और यह तय कर रक्खा है कि 'हम नित्य-नित्य गिरते ही जायगे', उनकी पैनी बुद्धि की कहा तक प्रशसा की जाय जिनकी नस-नस में दास्यभाव भरा है, उनके मन में कभी एक वार भी यह नही आता कि जापान, अमेरिका, तथा योरोप के देशो में कलियुग ने अपना प्रभाव क्यों न दिखाया, क्या कलि चाण्डाल को भी भारत ही व्यापने का मिला ?'

(सबसे भले हैं मूढ जिन्हें न व्यापै जगतगति)

भट्ट जी द्वारा पैरेन्थेटिकल उपवाक्य के प्रयोग का उदाहरण पीछे आ चुका है।

२ प्रेमचन्द—उपन्यास सम्राट् प्रेमचन्द की वाक्यरचना सचमुच साधारण वाक्योंकी होती है अथवा अधिक से अधिक एक निर्देशात्मक और एक सबधवाचक

१—एफिनिटी आफ् इंडियन लैंग्वेजेज, पृ० १९, (डा० विश्वनाथ प्रसाद)।
२—हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्दो का भाषा-तात्विक अध्ययन, पृ० ३५१।

वाक्य की जो उनके अधिकांश उपन्यासों से स्पष्ट है। समानाधिकरण संयोजकों से बने सामानाधिकरण उपवाक्य भी मिलते हैं। ऐसे वाक्य हिंदी वाक्यरचना प्रकृति के अनुरूप होते हैं या फ़ारसी वाक्यरचना-प्रकृति से सामान्यतः मिलते-जुलते। ऊपर बताए गए लक्षणों के अनुसार अंग्रेजी-प्रभावित वाक्य शैली प्रभाकर के साहित्य में बहुत कम दिखाई पड़ती है। संयुक्तवाक्य का उदाहरण—माना परिस्थिति ऐसी है कि बिना अंग्रेजी भाषा की उपासना किये काम नहीं चल सकता लेकिन अब तो इतने दिनों के तजरबे के बाद मालूम हो जाना चाहिये कि इस नाव पर बैठकर हम पार नहीं लग सकते फिर हम क्यों आज भी उसी से चिमटे हुए हैं ?

(कुछ विचार—पृ १०४)

पैरेन्थेटिकल उपवाक्य का उदाहरण—'अब साहित्यकार बनने के लिए अनुकूल रुचि के सिवा और कोई कैद नहीं रही—जैसे महात्मा बनने के लिए किसी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता नहीं—आध्यात्मिक उच्चता ही काफी है, तो महात्मा लोग दर-दर फिरने लगे उसी तरह साहित्यकार भी लाखों निकल आये।

(वही—पृ २५)

३ जैनेन्द्र—अंग्रेजी विषय और शैली से प्रभावित तथा अंग्रेजी में सोचकर हिंदी में लिखने वाले अंग्रेजी—या हिंदी लेखकों पर अंग्रेजी की वाक्यरचना-प्रकृति का असर पड़ना स्वाभाविक है—चाहे यह असर मिश्रित और संयुक्त वाक्यों के रूप में हो या साधारणवाक्यों की लघुता के रूप में। 'न हो उसके पुराने पते पर ही लिखेंगे। और एक अपनी तस्वीर भी देना। शादी से ठीक पहलेवाली नहीं—जो बचपन की है। (वह मुस्कराया। सुनीता खुश हुई) समझी ?'

(सुनीता—पृ २५)

जैनेन्द्र के वाक्यो पर अंग्रेजी के साथ फ़ारसी वाक्यरचना का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है यथा दिल्ली से बाहर—तो हम दिल्ली से बाहर ही यह चला जावे। यह खूब अच्छी तरह जान लेना चाहता है कि हरिप्रसन्न की उसे तनिक भी चिन्ता नहीं है। अब हरिप्रसन्न को नहीं है ख्याल उसकी याद रखने का तो सुनीता को भी उसकी क्या फिक्र नहीं है।

(वही—पृ १५२)

४ अज्ञेय [illegible]—वाक्य के गठन और विरामचिह्नों के प्रयोग तथा पेरेन्थेटिकल उपवाक्य पर अंग्रेजी का स्पष्ट प्रभाव इन वाक्यों में देखा जा

सकता है—'लेकिन लस्सी कंठ के नीचे उतरने से इन्कार कर देती है—सूखे, शुष्क, उलझे—बाल, आखो में कीचड, दातो पर पीली-पीली मैल, गन्दे चीकट कपडे—एक भिखारिन पत्नी से होड़ करती हुई कहती है—'बाबू एक पैसा ' केवडे की गन्ध मर जाती है और स्वादिष्ट लस्सी के घूट विष के घूट बन जाते हैं ।'

(जुदाई की शाम का गीत, सपने, पृ० ११)

५ धर्मवीर भारती—अंग्रेजी की प्रत्यक्ष शैली का प्रयोग—'अभी कौन रात बीत गई है । बैठो ।' कान पकडकर जमुना बोली । माणिक ने घबरा कर कहा—'नीद नही लग रही है भूख लग रही है ।'

(सूरज का सातवा घोडा, पृ० २०)

इसी प्रकार 'अन्त में जब पत्नी पान बनाकर ले गई और पति को समझा-कर कहा—'लडका तिहाजू है तो क्या हुआ । मरद और दीवार—जितना पानी खाते हैं उतना पुख्ता होते हैं ।' (वही पृ० ४४) । 'मरद और दीवार' के उपरान्त पडी रेखा की आवश्यकता नही है । वाक्य का ढाचा सबधवाचक और निर्देशात्मक वाक्य का है, किसी प्रकार के विराम की आवश्यकता नही दिखाई पडती, किंतु लेखक को सभवत अंग्रेजी शैली का अनुकरण मात्र करना था ।

६ अज्ञेय—अंग्रेजी की, आधुनिक शैली और वाक्यरचना के ढाचे की अज्ञेय पर अत्यधिक छाप है । इनका दृष्टिकोण है,—'एकाएक शेखर उठ खडा हुआ, और दीवार से अंग्रेजी में बोला, (जाने क्यों वह घृणा का भाव और किसी भाषा में व्यक्त ही नही कर सकता) "I hate her, I hate her"

(शेखर एक जीवनी, भाग १, पृ० १८६)

असल में इसका भी एक दूसरा कारण है, 'अंग्रेजी भाषा भी उसकी मातृभाषा नही तो धातृभाषा तो थी ही ।'[१] पैरेन्थेटिकल क्लाज (उपवाक्य) का प्रयोग और मनोवैज्ञानिक अधूरे विचार की भाँति अधूरे वाक्य एक सामान्य बात हैं, 'आप कहेंगे कि यह तो एक vision नही, यह एक तर्क-प्रणाली है, एक फ़लसफा है । लेकिन मैं मानता हूँ कि फलसफ़ा भी अन्तत दृष्टि है, vision है—और अपनी धारणा की पुष्टि के लिए फलसफे के हिन्दी नाम की शरण लेता हूँ—दर्शन ।'

(शेखर एक जीवनी, भाग १, पृ० ७)

१—शेखर एकजीवनी, भाग २, पृ० ११ ।

मिसरा ! मिसरा कहने के बाद मुँह वा दिया उसने। मम्मी शीघ्र ही समझ लेती है दैट सिवेन्ड्रा मिस्सा ? मिस्टर ब्लेकस्टोन की चेतावनी प्रतिध्वनित हुई— 'मोस्ट बदमास ब्राह्मीन—नोटोरियस। दि ब्राह्मीन क्रिमिनल ही'ज ' (वही, पृ० २६५)। श्री रेणु की शब्दावली, वाक्यांश और वाक्यरचना पर स्पष्टत अंग्रेज़ी का प्रभाव दिखाई पडता है।

९ डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल—अंग्रेजी आश्रित उपवाक्यो और पैरेन्थ-टिकल क्लाज के ढग का बना हिंदी वाक्य—'हम शहरो की कृत्रिम माधना से ऊबकर—जहाँ आकाश-बेल की तरह मनुष्य ने अपने पैरो के नीचे की जडो को, जिससे वह अपना जीवनरस चूसा करता था, अपने ही हाथो से काट डाला था—फिर गाँव की ओर आकृष्ट हुए हैं।'

(भूमि को देवत्व प्रदान—'पृथ्वीपुत्र' से)

१० यशपाल—ऊपर बताई गई अनेक विशेषताओं से युक्त यशपाल जी के वाक्य 'गठे-गठाये प्लाट की, क्लाइमेक्स की, अब क्या होगा कि साँस रोक उत्सुकता की जरूरत नही कथोपकथन, चरित्रचित्रण, देशकाल, भाषा-शैली को बराबर लेकर आइडिया के जल में खरल करके 'एक्जेक्ट' बनाने की जरूरत नही नई कहानी को पुराणपुरुषो से अच्छी कहानी का सर्टिफिकेट नही लेना चाहिए नई कहानी को एक आइडिया, सूक्ति और विट नही होना चाहिए नई कहानी अपने ही मुहल्ले और समाज की उपलब्धि होनी चाहिए।'[1]

जैसा कि प्रो० ज्यूल ब्लाख ने लिखा है कि 'यह मध्यअंशो के कारण है जिससे वाक्यांशोमें दुरूहता आ जाती है।'[2] इस ढग का यशपाल जी का वाक्य—'कुछ दिन बाद रामज्वाया जाकर मा को लौटा लाते या बुढिया छोटे बेटे के घर में,जगह की और भी तगी से तग आकर बडे बेटे के बच्चो को देख आने के लिए उच्चगली मे लौट आती थी, पर सन् १९४७ के जाडो में बुढिया छोटे बेटे के यहाँ आई थी तो गहरी सर्दी खा गई।'

(झूठासच, वतन और देश, पृ० १०)

यशपाल जी के वाक्यों में अंग्रेज़ी सिन्थेसिस पद्धति का भी प्रयोग मिलता है, जिसका विवेचन पिछले खड में हो चुका है।

१—नई कहानिया—'सुने तो कहें नई कहानी की बहस और बहक', पृ० १२३, सितम्बर १९६२।

२—भारतीय आर्यभाषा, पृ० ३४०।

११ राहुल सांकृत्यायन—प्रगतिशील विचारों का लेखक होने के नाते राहुल जी को किसी भी अच्छे विदेशी प्रभाव को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती थी। अंग्रेजी ढंग का संयुक्तवाक्य—'बेगार में हर एक ममता छनने वाले अलबाता और जुलाहा था, उसे रोका और मानव इसका यह परिणाम देख रही है कि कई बुनने वाले अथवा बुनने-सीने वाले मुश्किल से कोई होंगे जो इस्लाम की छाया में न आ गये हों।

(बोल्गा से गंगा पृ २११)

संयुक्त वाक्य जो सिम्पेथिक की विशेषताओं से भी युक्त है—'जरा ख्याल तो कीजिये आजकल का अधिकांश मनुष्य हर वक्त काम की चक्की में पिसे रहकर कला और साहित्य के सृजन या अवलोकन के आनन्द के लिए समय नहीं निकाल सकते और जिन थोड़े लोगों को वैसा अवसर भी मिलता है, वे भी धनी लोगों को संतुष्ट करने के लिए उसका ऐसी चीजों के निर्माण में उपयोग करते हैं जिनसे दूसरे मनुष्यों के शरीर और मन विकृत होते हैं।

(साम्यवाद ही क्यों पृ ८८)

१२ डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी—अंग्रेजी शैली में व्यक्तिपरक निबंध लिखने वाले डॉ द्विवेदी यद्यपि अंग्रेजी के बहुत बड़े प्रेमी और ज्ञाता नहीं हैं किन्तु उनकी वाक्यरचना-पद्धति पर भी अंग्रेजी का प्रभाव दिखाई पड़ता है। वास्तव में उनके वाक्यगठन में संस्कृत समासांत पदावली के वाक्य हिंदी के साधारण वाक्य फारसी के निर्देशात्मक और सम्बन्धात्मक वाक्य तथा अंग्रेजी के मिश्रित और संयुक्त—पैरेन्थेटिकल उपवाक्य के साथ—वाक्य की रचना शैली की प्रभाव-समष्टि परिलक्षित होती है। अंग्रेजी प्रभावित वाक्यरचना का उदाहरण 'एक मानवी मस्तक का भीतरी हिस्सा था जिसके ठीक मध्य में स्फटिक मणि की चौकी पर कांचनी वाग्यष्टि थी जिसपर उस भवन का शौकीन पालतू मयूर बैठा करता था—शौकीन इसलिए कि चन्द्रप्रिया की नूपुरों की झंकार से ही नाच लेने में उसे रस मिलता था।

(मंजुल—एक पुरानी कहानी पृ २)

पैरेन्थेटिकल लगाव का उदाहरण 'उसे अपनी प्रिया का ध्यान आया—उसे हुमें सोने के समान वर्ण वाला छरहरा शरीर, मुखीसी दांत पकी बिम्बफल के समान अधर, चकित हरिणी के समान नेत्र—विधाता की मानो पहली रचना हो जब उनके पास सब सामग्री पूरी मात्रा में थी कभी उन्होंने कृपणता नहीं दिखाई होगा की कांति, सौन्दर्य की वारींगनी, कमनीयता की मूर्ति।

(वही पृ ६)

५—उपसहार

इस वात की सभावना है कि जव साम्राज्यवादी भापा अ ग्रेजी, जिसे अव उन्नत अन्तर्राष्ट्रीय भापा कहा जाता है—देश में प्रमुख स्थान पर नही रह जायगी, और सर्वत्र उसका स्थान हिंदी या क्षेत्रीय भापाए ले लेंगी तथा देश के अन्य भापा भापी विद्वान् हिंदी की ओर झुकेगे और हिंदी में साहित्य की रचना करेंगे, तो वे एकवारगी हिंदी वाक्य-पद्धति में न आकर अ ग्रेजी वाक्य-पद्धति के माध्यम से ही हिन्दी भापा में अभिव्यक्ति प्रदान करेंगे, क्योकि उसमे सोचने और लिखने में उन्हें सुविधा होगी। जिनकी मातृभापा हिन्दी नही है, उनके द्वारा लिखित हिंदी के साहित्य में अ ग्रेजी वाक्यरचना और शैली का अधिक प्रभाव स्पष्ट रूप से पडेगा ।

शिक्षा के प्रचार और सास्कृतिक उन्नति के कारण नई अभिव्यक्ति और शैली अधिक लोकप्रिय हो रही है, इसके प्रमाणस्वरूप नये लेखकों की रचनाएँ साहित्यिक या राजनीतिक पत्र-पत्रिकाएँ तथा समाचार-पत्रो के अग्रलेख के वाक्य-गत ढाँचे देखे जा सकते हैं। वास्तव मे यह नई वाक्यरचना-पद्धति या शैली अव हिंदी की अपनी पद्धति वन गई है, किन्तु डॉ० वदरीनाथ कपूर ने अपना विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि 'हमारे अधिकतर अनुवादक अपने मुहावरो, पदो आदि से परिचित नही होते और विदेशी मुहावरो, पदो आदि की चकाचौध में आकर उनका अनुवाद करते हैं और इस प्रकार अपनी भापा का रूप और सौन्दय विकृत कर देते हैं। उनके ऐसे वाक्य देखने में आते हैं जो समझ में नही आते। अ ग्रेजियत से भरी हिन्दी देखकर कभी-कभी तो सामान्य लोगो को भी वहुत कष्ट होता है।'[१] हिंदी वाक्य-सरचना पर अ ग्रेजी के अत्यधिक प्रभाव को देखकर शब्दमहर्षि वावू रामचन्द्र वर्मा को कहना पडा कि 'हमारे वाक्यो पर अ ग्रेजी मानो सिर से पैर तक छाई रहती है। अव अ ग्रेजी पढे-लिखो में कोट-पैट और हैट पहनने वालो की सख्या दिन पर दिन वढ़ती जाती है और हमारी भापा का स्वरूप विकृत क्या वल्कि भ्रष्ट होता जा रहा है।'[२] इसका एकमात्र समाधान दोनो भापाओ की वाक्य-सरचना का स्वाभाविक सह-अस्तित्व ही है।

१—आजकल की हिन्दी, पृ० ५५ ।

२—अच्छी हिन्दी, पृ० ३३७ ।

शब्दकोशगत प्रभाव एवं अर्थपरिवर्तन

१—प्रस्तावना

किसी भी भाषा में देशी और विदेशी सभी प्रकार के शब्द मिलकर उस भाषा के कोश का निर्माण करते हैं। भाषा की दृष्टि से मूलशब्दों या परम्परागत शब्दों का अधिक महत्त्व होता है और आगतशब्द भाषा के मूलधन में वृद्धि करते हैं किन्तु विदेशी या आगतशब्दों के आधिक्य से भाषा क्लिष्ट हो जाती है, जैसे राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद की भाषा फारसी शब्दों के आधिक्य से स्वाभाविक नहीं रह गई थी। यही स्थिति डॉ॰ देवराजकृत 'अजय की डायरी' जैसी पुस्तकों की भाषा के सिलसिले में भी दिखाई पड़ती है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी भाषा में फारसी-अंग्रेजी के शब्दों का मर्यादित और आवश्यक प्रयोग किया है तथा भाषा को सम्पन्न बनाया है। शब्दकोश भाषा की स्थिति (शक्ति) का परिचय देता है जितना शब्दकोश सम्पन्न एवं प्रचलित शब्दों से भरा होगा उतनी ही भाषा सम्पन्न एवं समर्थ होगी।[1] साथ ही यह भी आवश्यक है कि सभी प्रकार के विदेशी शब्द भाषागत व्याकरण के नियमों द्वारा नियंत्रित हों और उन्हीं के द्वारा उनकी अभिव्यक्ति एवं वाक्य प्रयोग की पद्धति निर्धारित हो।

विदेशी शब्दों की दृष्टि से फारसी-अरबी के प्रति हिंदी अधिक ऋणी है। लगभग १   वर्षों तक भारत में तुर्कों और पठानों के शासन के पश्चात् १४९८ ई॰ से भारत का सम्पर्क कालीकट (दक्षिण भारत) में यूरोपवासियों (पुर्तगालियों) से स्थापित हुआ और पुर्तगाली भाषा के शब्द भारतीय भाषाओं—मराठी, गुजराती, उड़िया और बंगला में प्रचलित हुए। पुर्तगाल निवासियों ने ही सबसे प्रथम यूरोप की बहुत सी वस्तुओं का प्रचार हिन्दुस्तान में किया अतएव उनके नाम उसी रूप में प्रचलित हो गए जिस रूप में उनके यहाँ बोले जाते थे।[2] पुर्तगालियों ने समुद्र पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और भारत के समुद्र-तटीय कुछ हिस्सों पर अपना राज्य भी। हाजियों के आवागमन का प्रबंध विदेशी व्यापार का संचालन एवं ईसाई-धर्म का प्रचार उन्हीं के नियंत्रण में

१—मार्क्सिज्म एण्ड प्रॉब्लम्स ऑफ लिंग्विस्टिक्स पृ॰ ११ से स्टालिन।

२—उर्दू साहित्य का इतिहास—भाग १ पृ॰ ६ डॉ॰ रामबाबू सक्सेना।

था। १५१० ई० में वे गोवा के शासक भी बन चुके थे। फलस्वरूप अनेक भारतीयो एव यूरोपवासियों को, यहाँ तक कि अग्रेज-इतर लोगो से सम्पर्क के लिये क्लाइव को भी पुर्तगाली भाषा सीखनी पडी थी। महाराष्ट्र-बगाल मे पुर्तगालियो के सम्पर्क के कारण इन प्रदेशो की भाषाओं में पुर्तगाली शब्द स्थान पा गये और इनके माध्यम मे हिंदी जैसी भारत की अन्य भाषाओ मे भी जा पहुँचे। बहुत से शब्द प्रयोग में न रहने से समाप्त हो गए और बहुतों का स्थान बाद में अग्रेजी ने ले लिया। 'बिहार तथा उत्तर भारत की भाषाओ एव बोलियो पर पुर्तगाली भाषा का सीधा प्रभाव नही पडा। यह धीरे-धीरे बगाल तथा बगला भाषा के द्वारा ही आया।'[1] ये शब्द विभिन्न वस्तुओ, सस्थाओ एव ईसाई धर्म से सबधित हैं।

क्लाइव के भारत आगमन के बाद चार विदेशी शक्तियो मे से केवल अग्रेजो का यहाँ आधिपत्य बढ़ा। पुर्तगाली भाषा की सारी सुविधायें और अनुकूल परिस्थितियाँ अग्रेजी को सुलभ हो गइ। फ्रासीसी और डच भाषा का भारत मे कोई उल्लेखनीय प्रभाव न पड सका। इनके जो महत्वपूण शब्द थे वे अग्रेजी में पहले से मौजूद थे। अग्रेजी भाषा के शब्द १८ वी शती के अन्त तक देशी भाषाओ में आने लगे थे। फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के साथ अग्रेजी का हिंदी-उर्दू तथा अन्य भारतीय भाषाओ पर अधिक प्रभाव पडा और ऋण-शब्दो की सख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी, किन्तु १८५७ तक प्रचलित अग्रेजी शब्दो की सख्या बहुत कम थी। इनमें प्रमुख हैं कपनी, गवर्नर, जनरल, पुतगाल, फ्रास, कालेज, फीस, मशीन, रेसिडेसी, रेल, इजन, लाइन, मिनट, सेकड, इंची, बाइबिल तथा कारतूस इत्यादि। इनके अतिरिक्त अग्रेजी महीनो के नाम भी प्रचलित हो चले थे। उत्तर भारत की भाषाओं में सबसे पहले ये शब्द बगला में आए, 'जब अग्रेजी ने १७६५ ई० में शासन-सूत्र सभाला तो गवनर-जनरल, कौंसिल, कलक्टर, लार्ड, ट्रेजरी, पुलिस जैसे प्रशासनिक शब्द एकाएक बगला में आ गए।'[2]

कलकत्ता स्थित फोर्ट विलियम कालेज में अध्यापक सदल मिश्र ने ही अग्रेजी के कुछ शब्दो का प्रयोग आरम्भ कर दिया था, जैसे 'कम्पनी' शब्द का, यथा 'महाप्रतापी वीर नृपति कम्पनी महाराज के सदा फूला फला रहे।'[3] पर हिंदी

१—हिं० भा० उ० वि०, पृ० २१६, डॉ० उ० ना० ति०।

२—ओ० डे० बें० लैं०, पृ० ६३३।

३—नासिकेतोपाख्यान, पृ० १।

से कम है, किन्तु पश्तो से अधिक। ये शब्द खान-पान वेश-भूषा सजावट तथा धर्म इत्यादि से सम्बन्धित हैं।

यूरोप की भाषाओं में अंग्रेजी से हिंदी में सबसे अधिक शब्द आये हैं और आते जा रहे हैं। ऐसे आगत शब्दों की ठीक संख्या का निर्धारण अभी तक नहीं हो सका है, क्योंकि यह अभी सम्भव नहीं है कि जनसामान्य एवं शिक्षित वर्ग के लिये आवश्यक सभी शब्दों का अन्तिम लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाय। अंग्रेजी शब्दों की संख्या एवं विशेषता के मूल्यांकन का अभी ठीक समय नहीं है। अंग्रेजी शब्दों में लगातार वृद्धि होती जा रही है। अंग्रेजों द्वारा लाये गये अंग्रेजी कुछ शब्द वस्तुओं विचारों एवं संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् सामाजिक शैक्षणिक एवं औद्योगिक विकास तथा विदेशों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध एवं देश में विज्ञान की विविध शाखाओं की उन्नति से ऐसे शब्दों की एक विशाल संख्या का देशी भाषाओं में (और हिंदी में) आगमन हुआ है। पंचवर्षीय योजनाओं के प्रवर्तन तथा उनके कार्यान्वयन से देश में विद्यमान यूरोपीय ढंग के राजनीतिक दलों से, योरोपीय ढंग से (खासकर अंग्रेजी ढंग से) देश में सम्पन्न हुये तीन आम चुनावों से एवं विधान-मंडलों तथा संसद में अंग्रेजी और हिंदी में दिये गये भाषणों के फलस्वरूप भाषा में अंग्रेजी शब्दों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। यूरोपीय मतवाद एवं सिद्धांतों पर आधारित देश में कला और साहित्य के निर्माण से भी अंग्रेजी शब्दों की संख्या में वृद्धि हुई है। उच्चविज्ञान की पुस्तकें हिंदी में लिखी जाने पर और भी वृद्धि सम्भव है। इस प्रकार अंग्रेजी से आगत शब्दों की कुल अनुमानित-संख्या १ (तीन हजार) के लगभग होगी। डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया ने मध्यम वर्गीय जीवन से सम्बन्ध रखने वाले साहित्य की चर्चा कर लिखा है कि 'आज जब उपन्यासकार इस वर्ग के व्यक्तियों के जीवन का चित्रण जब अपने उपन्यासों में और नाटककार अपने नाटकों में करता है तो अंग्रेजी सभ्यता तथा संस्कृति से प्रभावित होने के कारण अंग्रेजी शब्दों की भरमार रहती है। ऐसे उपन्यास में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों की यदि सूची बनाई जाय तो सम्भवतः अंग्रेजी के कोश का कोई ही शब्द उसमें से बच सके।'[1] किन्तु, जनसामान्य में अंग्रेजी के अधिक शब्द लोकप्रिय या प्रचलित नहीं हो सके हैं। सम्भवतः यही कारण है कि डॉ. भाटिया ने अपनी थीसिस की शब्दावली में लगभग १९९ अंग्रेजी शब्दों का उल्लेख किया है।

अंग्रेजी शब्द भाषा में दो प्रकार से आए। पहले यह कि नौकरी या व्यापार में देशी जनता ने उन्हें विदेशी शासकों या व्यापारियों के सम्पर्क में अपनी

१—हिंदी में अंग्रेजी के आगत शब्दों का भाषा-तात्त्विक अध्ययन पृ. ६४।

बोलचाल की भाषा में ग्रहण शब्द के रूप में अपनाया। दूसरे यह कि शिक्षण-संस्थाओं एवं सरकारी संस्थानों में शिक्षित लोगों द्वारा विज्ञान एवं कला जैसी ऊँची विद्या के शब्द अपनाये गये और शिक्षितों की भाषा में प्रचलित हुए। पहली श्रेणी के शब्दों की लोकप्रियता निर्विवाद है, किंतु तकनीकी या पारिभाषिक दूसरी श्रेणी के शब्द विशेषज्ञों अथवा विशिष्ट प्रकार की पुस्तकों तक सीमित रह गए हैं। जन-शिक्षा के प्रतिशत में वृद्धि एवं औद्योगिक-सभ्यता के देश में प्रसार से दूसरी श्रेणी के शब्द अपनी संख्या में और भी वृद्धि के साथ लोकप्रिय होते जायँगे। विभिन्न भाषा के शब्दों को अपना बना लेने के कारण अंग्रेजी के समान हिंदी भी एक समन्वयात्मक भाषा बन गई है, जो विश्व की एक महत्वपूर्ण भाषा हिंदी के सुन्दर भविष्य का प्रमाण है।

३--हिंदी में आगत अंग्रेजी शब्दों का महत्व

अंग्रेजी शब्दों ने भारत में नई सभ्यता तथा भारतीय साहित्य एवं जन-जीवन को उन्नत बनाने में सहायता प्रदान की है। इस कार्य की पूर्ति एवं वृद्धि के लिए संभवतः हमें और भी अंग्रेजी शब्द स्वीकार करने पड़ें। डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने अंग्रेजी शब्दों का महत्व बताते हुए लिखा है कि 'अंग्रेज चले गये, पर बिना खतरा मोल लिये, हम उनकी भाषा को प्रशासन, विज्ञान एवं उच्च शिक्षा में अधिकृत स्थान से नहीं हटा सकते।'[१] यहाँ डॉ० चाटुर्ज्या के मत से हम सहमत नहीं हैं, क्योंकि अंग्रेजी या किसी भाषा के बिना हम अपना राष्ट्रीय और सामाजिक काम चला सकते हैं। इतना अवश्य है कि टेक्नालाजी, अन्य विज्ञान तथा राजनीति से संबंधित अंग्रेजी के शब्दों को हम तब तक नहीं हटा सकते, जब तक हिंदी इस प्रकार के ज्ञान और विचारों को अभिव्यक्त करने वाली पारिभाषिक शब्दावली एवं विविध अभिव्यक्तियों (एक्सप्रेशन्स) तथा फार्मूलों (सूत्रों) से परिपूर्ण नहीं हो जाती। यह स्पष्ट है कि हिंदी के आधुनिकीकरण में शब्दों का महत्व निर्विवाद है। इन शब्दों ने, जिनका १९वीं शती के उत्तरकाल तक हिंदी में अभाव था, यूरोपीय जीवन और दर्शन तथा विचार और संस्थाओं का भारत से परिचय कराया और तत्संबंधी ज्ञान का प्रसार किया एवं हिंदी को भाषा की नई टेकनीक दी। हिंदी में समानांतर शब्दकोश की उपलब्धि हो जाने पर भी अंग्रेजी के इन

१---' दी इंगलिश हैव् गान, बट् देयर लैंग्वेज, विदाउट पेरिल टु आवरसेल्व्ज, कैन नॉट् बी रेमूव्ड फ्राम दी डोमेन्स ऑफ् एडमिनिस्ट्रेशन, साइंस एंड हायर एजुकेशन।' पृ० २८, एफिनिटी आफ् इंडियन लैंग्वेजेज (एस० के० चैटर्जी)।

में इन शब्दों का साहित्यिक प्रयोग व्यवस्थित रूप में भारतेंदु-काल में विशेषत गद्य साहित्य में आरम्भ हुआ। भारतेंदु हरिश्चन्द्र एवं बालकृष्ण भट्ट ने अपेक्षाकृत अधिक स्वच्छन्दतापूर्वक अंग्रेजी शब्दों का अपने साहित्य में प्रयोग किया है और आगे के लेखकों के लिए एक अच्छी परम्परा की स्थापना भी कर दी है। समाचार-पत्रों एवं आवागमन के साधनों के विकास के साथ ये शब्द जनता में शीघ्र ही लोकप्रिय भी हो गए। आगे के लेखकों और सम्पादकों के लिए अपनी कथा-कहानियों एवं समाचार-पत्रों में इन शब्दों का व्यवहार अनिवार्य हो गया। अंग्रेजी ढंग की शिक्षा का जोर बढ़ने से तथा यूरोप की मशीनों द्वारा बनाई गई नई वस्तुओं के देश में प्रचार से ये शब्द ग्रामीण जनता तक भी पहुँच गए।

३—विदेशी शब्द-संख्या

सच तो यह है कि अंग्रेजी के माध्यम से पूरे यूरोप की विभिन्न भाषाओं के शब्द हिंदी में या भारतीय भाषाओं में आए हैं, क्योंकि इस में विभिन्न भाषाओं के शब्द ग्रहण करने और उन्हें अपना बना लेने की अद्भुत क्षमता है। यदि अंग्रेजी के अपने मूल तथा विदेशी दोनों प्रकार के शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो अंग्रेजी में विदेशी शब्द ही अधिक संख्या में उपलब्ध होंगे। अंग्रेजी ने सहस्रों आवश्यक तथा अनावश्यक शब्दों को लैटिन तथा उससे प्रसूत फ्रेंच भाषा से ग्रहण किया है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी ने ग्रीक, इटालीय, स्पेनीय, जर्मन आदि यूरोप की तथा संसार के अन्य देशों की अनेक भाषाओं को आत्मसात् किया है।[1] अंग्रेजी ने हिंदी भाषा को अपने तथा अन्य विदेशी भाषाओं के ऐसे शब्द प्रदान किये हैं जिनके स्थान पर हिंदी में दूसरे शब्द न थे और ये शब्द अब हिंदी के अभिन्न अंग बन गये हैं। इस भाषा से हिंदी में एक विशाल साहित्य का अनुवाद भी हुआ है, जिसके फलस्वरूप अनेक पारिभाषिक शब्द भी हिंदी में प्रविष्ट हो गये हैं।

अंग्रेजी और पुर्तगाली के अतिरिक्त अन्य यूरोपीय भाषाओं से अपेक्षाकृत बहुत कम शब्द हिंदी में आ सके हैं। डॉ० चटर्जी के अनुसार तो बंगला में इन भाषाओं से बीसों दस शब्द से अधिक नहीं आये। हिंदी में तो यह संख्या और भी कम है।[2] चन्द्रनगर के उपनिवेश में बंगला और फ्रेंच का प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित हुआ जहाँ फ्रेंच शब्द बंगला में आ सके। पांडिचेरी की तमिल

१—हि० भा० उ० वि० पृ० ५१७ उ० ना० ति०।

२—वही पृ० २११।

म निश्चय ही फ्रेंच शब्दो की सख्या सैकडो मे जा सकती है क्योंकि वहा की भाषा (तमिल) एक शती से अधिक तक फ्रेंच के आधिपत्य मे रही, जहा उसका स्थान अब अ ग्रेजी ने ले लिया है। हिंदी में दो-चार फ्रेच शब्द बगला के माध्यम से ही आ सके हैं शेष फ्रेंच शब्द अ ग्रेजी बनकर इस के माध्यम से आये। फ्रासीसी से कारतूस, कूपन, अ ग्रेज, रेस्तरा, रेनेसा और होतेल शब्दों का हिंदी में आदान हुआ है। 'अ ग्रेजी फ्रेंच शब्द होटल को अपनाये हुये है।'' डच भाषा मे अप्रत्यक्ष ढग से तुरुप, बम (तागा गाडी का), यूनानी से टेलीफोन, जर्मन से हिंदी का प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित न हो सका, फिर भी युद्ध, रेडियो और समाचार-पत्रो के माध्यम से कुछ महत्वपूर्ण शब्द यथा किंडरगार्टेन, हिटलर-(शाही), ब्लिट्ज, हर, फ्यूहेरर और (नात्सी) नाजी जैसे शब्द हिंदी में आ गये है। 'अल्पका' शब्द 'यदि अ ग्रेजी से नही आया है, तो स्पेनिश हो सकता है।'[२] इतालवी से फासिस्त, फासिज्म, रूसी से जार, वोल्गा, वाड्का, क्रेमलिन, बोल्शेविक, सोवियत्, स्पुतनिक, मिग और रूबल जैसे शब्द हिंदी मे प्रचलित हो गये हैं। इस बात की सम्भावना बढती जा रही है कि रूसी शब्दो की सख्या अगले कुछ वर्षों में और भी बढ जाय। पेट्रोल केंद्रो, कृषि-फार्मों, विद्युत्-गृह, इस्पात एव इजीनियरिंग के बडे कारखानों की स्थापना तथा भारतीय विशेषज्ञो के रूस में अध्ययन एव रूसी टेक्नालाजिकल कालेज की देश मे स्थापना और रूसी विद्वानो द्वारा उसमें अध्यापन से इसका आधार बन चुका है।

हिंदी में पुर्तगाली शब्दो की सख्या अग्रेजी के बाद दूसरे स्थान पर है। हिंदी से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न होने पर भी भारतीय भाषाओ मे सबसे पहले नए विचार एव नवीन वस्तुओ मे सबद्ध शब्द पुर्तगाली से ही आए और वे पहले जन-सम्पर्क से और तब साहित्य के माध्यम से हिंदी में आए। सर्वप्रथम मराठी (१४९८ ई० में) और बगला (१५३७ ई० में) जैसी आ० भा० आ० से पुतगाली का सपर्क स्थापित हुआ। हिंदी में प्राय बगला के माध्यम से ही ये शब्द स्थान पा सके। 'सोआरीज महोदय ने ४८ शब्द हिंदी मे और १०१ शब्द हिन्दुस्तानी मे माने हैं। उनका यह हिंदी और हिन्दुस्तानी का भेद कुछ समझ में नही आता।'[३] डॉ० चाटुर्ज्या ने लिखा है कि 'विभिन्न भारतीय भाषाओं मे २०० से कुछ अधिक पुतगाली शब्द प्रचलित हैं। बगला में ही १०० से अधिक शब्द हैं।[४]' हिंदी में पुर्तगाली के प्रचलित शब्दो की सख्या १००

१—वही, पृ० ५३७।

२—हि० भा० इ०, पृ० ७५, धी० व०।

३—हिंदी में अ ग्रेजी के आगत शब्दो का भाषा-तात्त्विक अध्ययन, पृ० ४८।

४—एफिनिटी ऑफ् इडियन लैंग्वेजेज, पृ० २७ (एस० के० चैटर्जी)।

से कम है, किन्तु पचास से अधिक। ये शब्द खान-पान वेश-भूषा सजावट तथा धर्म इत्यादि से सम्बन्धित हैं।

यूरोप की भाषाओं मे अंग्रेजी से हिंदी में सबसे अधिक शब्द आये हैं और आते जा रहे हैं। ऐसे आगत शब्दो की ठीक संख्या का निर्धारण अभी तक नहीं हो सका है, क्योंकि यह अभी सम्भव नहीं है कि जनसामान्य एवं शिक्षित वर्ग के लिये आवश्यक सभी शब्दों का अन्तिम लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाय। अंग्रेजी शब्दों की संख्या एवं विशेषता के मूल्यांकन का अभी ठीक समय नहीं है। अंग्रेजी शब्दों में लगातार वृद्धि होती जा रही है। अंग्रेजों द्वारा लाये गये अंग्रेजी अधिक शब्द वस्तुओं विचारों एवं संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। स्वतंत्रता के उपरांत सामाजिक शैक्षणिक एवं औद्योगिक विकास तथा विदेशों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध एवं देश मे विज्ञान की विविध शाखाओं की उन्नति से ऐसे शब्दों की एक विशाल संख्या का देशी भाषाओं मे (और हिंदी मे) आगमन हुआ है। पंचवर्षीय योजनाओं के प्रकाशन तथा उनके कार्यान्वयन से देश में विद्यमान यूरोपीय ढंग के राजनीतिक दलों से योरोपीय ढंग से (खासकर अंग्रेजी ढंग से) देश मे सम्पन्न हुये तीन आम चुनावों से एवं विधान-मंडलों तथा संसद में अंग्रेजी और हिंदी मे दिये गये भाषणों के फलस्वरूप भाषा में अंग्रेजी शब्दों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। यूरोपीय मतवाद एवं सिद्धांतों पर आधारित देश मे कला और साहित्य के निर्माण से भी अंग्रेजी शब्दों की संख्या में वृद्धि हुई है। अन्यविज्ञान की पुस्तकें हिंदी मे लिखी जाने पर और भी वृद्धि सम्भव है। इस प्रकार अंग्रेजी से आगत शब्दो की कुल अनुमानित-संख्या ३ (तीन हजार) के लगभग होगी। डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया ने मध्यम वर्गीय जीवन से सम्बन्ध रखने वाले साहित्य की चर्चा कर लिखा है कि 'जब या उपन्यासकार इस वर्ग के व्यक्तियो के जीवन का चित्रण जब अपने उपन्यासों में और नाटककार अपने नाटकों में करता है तो अंग्रेजी सभ्यता तथा संस्कृति से प्रभावित होने के कारण अंग्रेजी शब्दों की भरमार रहती है। ऐसे उपन्यास मे प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों की यदि सूची बनाई जाय तो सम्भवतः अंग्रेजी के कोश का कोई ही शब्द उससे बच सके। किन्तु, जनसामान्य में अंग्रेजी के अधिक शब्द लोकप्रिय या प्रचलित नहीं हो सके हैं। सम्भवतः यही कारण है कि डॉ. भाटिया ने अपनी थीसिस की शब्दावली में लगभग ११९ अंग्रेजी शब्दों का उल्लेख किया है।

अंग्रेजी शब्द भाषा में दो प्रकार से आए। पहले यह कि नौकरी या व्यापार में देशी जनता ने जब विदेशी शासकों या व्यापारियों के सम्पर्क में अपनी

१—हिंदी मे अंग्रेजी के आगत शब्दो का भाषा-तात्त्विक अध्ययन पृ. ६४।

बोलचाल की भाषा में ऋण शब्द के रूप में अपनाया। दूसरे यह कि शिक्षण-संस्थाओं एवं सरकारी संस्थानों में शिक्षित लोगों द्वारा विज्ञान एवं कला जैसी ऊँची विद्या के शब्द अपनाये गये और शिक्षितों की भाषा में प्रचलित हुए। पहली श्रेणी के शब्दों की लोकप्रियता निर्विवाद है, किंतु तकनीकी या पारिभाषिक दूसरी श्रेणी के शब्द विशेषज्ञों अथवा विशिष्ट प्रकार की पुस्तकों तक सीमित रह गए हैं। जन-शिक्षा के प्रतिशत में वृद्धि एवं औद्योगिक-सभ्यता के देश में प्रसार से दूसरी श्रेणी के शब्द अपनी संख्या में और भी वृद्धि के साथ लोकप्रिय होते जायेंगे। विभिन्न भाषा के शब्दों को अपना बना लेने के कारण अंग्रेजी के समान हिंदी भी एक समन्वयात्मक भाषा बन गई है, जो विश्व की एक महत्वपूर्ण भाषा हिंदी के सुन्दर भविष्य का प्रमाण है।

३—हिंदी में आगत अंग्रेजी शब्दों का महत्व

अंग्रेजी शब्दों ने भारत में नई सभ्यता तथा भारतीय साहित्य एवं जन-जीवन को उन्नत बनाने में सहायता प्रदान की है। इस कार्य की पूर्ति एवं वृद्धि के लिए संभवतः हमें और भी अंग्रेजी शब्द स्वीकार करने पड़ें। डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने अंग्रेजी शब्दों का महत्व बताते हुए लिखा है कि 'अंग्रेज चले गये, पर बिना खतरा मोल लिये, हम उनकी भाषा को प्रशासन, विज्ञान एवं उच्च शिक्षा में अधिकृत स्थान से नहीं हटा सकते।'[१] यहाँ डॉ० चाटुर्ज्या के मत से हम सहमत नहीं हैं, क्योंकि अंग्रेजी या किसी भाषा के बिना हम अपना राष्ट्रीय और सामाजिक काम चला सकते हैं। इतना अवश्य है कि टेक्नालाजी, अन्य विज्ञान तथा राजनीति से संबंधित अंग्रेजी के शब्दों को हम तब तक नहीं हटा सकते, जब तक हिंदी इस प्रकार के ज्ञान और विचारों को अभिव्यक्त करने वाली पारिभाषिक शब्दावली एवं विविध अभिव्यक्तियों (एक्सप्रेशन्स) तथा फार्मूलों (सूत्रों) से परिपूर्ण नहीं हो जाती। यह स्पष्ट है कि हिंदी के आधुनिकीकरण में शब्दों का महत्व निर्विवाद है। इन शब्दों ने, जिनका १९वीं शती के उत्तरकाल तक हिंदी में अभाव था, यूरोपीय जीवन और दर्शन तथा विचार और संस्थाओं का भारत से परिचय कराया और तत्संबंधी ज्ञान का प्रसार किया एवं हिंदी को भाषा की नई टेकनीक दी। हिंदी में समानांतर शब्दकोश की उपलब्धि हो जाने पर भी अंग्रेजी के इन

१—'दी इंगलिश हैव् गान, बट् देयर लैंग्वेज, विदाउट पेरिल टु आवरसेल्व्ज़, कैन नॉट् बी रेमूव्ड फ्राम दी डोमेन्स ऑफ़् एडमिनिस्ट्रेशन, साइंस एंड हायर एजुकेशन।' पृ० २८, एफ़िनिटी आफ् इंडियन लैंग्वेजेज़ (एम० के० चैटर्जी)।

अनावृत एवं उपयोगी शब्दों को हटाने की आवश्यकता ही क्या है ? भाषा का शुद्धीकरण हानिकर प्रयास होता है। अंग्रेजी के आगत शब्द हिंदी की संपत्ति हैं।

अन्य भाषाओं के शब्दों ने अंग्रेजी को जो गुण प्रदान किया है वही गुण हिंदी को अंग्रेजी या अन्य यूरोपीय भाषाओं के शब्द प्रदान करते हैं। अंग्रेजी ने यूरोप की लातीनी यूनानी फ्रांसीसी डच जर्मन इतालवी स्पेनी और पुर्तगाली तथा एशिया की चीनी जापानी फ़ारसी अरबी मलयालम संस्कृत अन्यभारतीय भाषाओं एवं पोलिनेशियाई भाषाओं से शब्द लिए हैं। अंग्रेजी में गणना के अनुसार ऐसे फ्रांसीसी शब्दों की संख्या लगभग दस हजार है, जिनमें से चार हजार शब्द आज इस प्रकार प्रचलित हो गए हैं कि उनका विदेशी जामा बिल्कुल नहीं पहचाना जाता क्योंकि अंग्रेजी ने उन्हें अपनी बोली और उच्चारण के अनुसार आत्मसात् कर लिया है।[1] इन शब्दों ने अंग्रेजी को संपन्न बनाया है और अभिव्यंजना-शक्ति प्रदान की है। हिंदी ने अंग्रेजी का यह गुण बहुत-कुछ स्वीकार किया है और अपने को उस हद तक संपन्न बनाया है।

अंग्रेजी के धार्मिक शब्द हिंदी में बहुत कम प्रचलित हैं। बाइबिल और चर्च ही सर्वाधिक लोकप्रिय शब्द हैं। क्रिसमस फ़ादर, सेंट मदर आदि जैसे शब्द भी प्रचलित हैं। प्रशासन के क्षेत्र में स्वराज्य के उपरांत भी इस भाषा के शब्द प्रचलित हुए हैं। अनेक प्रशासनिक शब्द हिंदी में आ चुके हैं और आते जा रहे हैं। अनेक अंग्रेजी शब्दों ने अरबी-फ़ारसी शब्दों का स्थान भी ले लिया है यथा मिनिस्टर सेक्रेटरी असेम्बली चेयरमैन बोर्ड, पी ए डिपार्टमेंट एप्लिकेशन अपील ला मजिस्ट्रेट पुलिस इन्सपेक्टर, आई जी डी आई जी कलक्टर डिप्टी मजिस्ट्रेट एस एस पी जज कमिश्नर पेटीशन आर्डर इत्यादि। इन शब्दों के कम होने की या बदले जाने की कोई संभावना नहीं दिखाई पड़ती। सैनिक जीवन एवं अस्त्र-शस्त्रों से संबंधित अनेक शब्द भी प्रचलित हो गए हैं। चूंकि पूरा आधुनिक सैनिक ढांचा अंग्रेजी ढंग का ही है और अस्त्र-शस्त्र भी नए ढंग के हैं अतः इनसे संबंधित प्राय सभी शब्द अंग्रेजी भाषा के ही प्रचलित हैं यथा रंगरूट (रेक्रूट) रैंक लाइन परेड मार्च, सोल्जर कमांडर, मेजर, रेजिमेंट यूनिफ़ॉर्म आर्मी नेवी स्टेनगन ब्रेनगन मशीनगन इत्यादि। इन शब्दों ने अपना स्थान हिंदी या देशी भाषाओं में बना लिया है, जिसे परिवर्तित करना कठिन है।

१—हिंदी विश्वकोश खंड १—पृ ११।

शिक्षा-विभाग में अनेक अंग्रेजी शब्द प्रचलित हैं, यद्यपि इनके समकक्ष हिंदी के भी शब्द साथ-साथ चलते हैं, यथा स्कूल, कालेज, यूनिवर्सिटी, क्लास, टीचर, लेक्चरर, हेड, प्रिंसिपल, स्टूडेंट, पेपर, बुक इत्यादि। इसी प्रकार खान-पान, वेश-भूषा और आवास से संबंधित नए शब्द यथा केक, ब्रेड, टी, बिस्कुट, होटल, कप, प्लेट, काफी, टी-सेट, लेमन-सेट, शर्ट, पेंट, कोट, टाई, ओवरकोट, हैट, बिल्डिंग, रूम, विन्डो, गेट, क्वार्टर, इत्यादि, कला कारीगरी के शब्द यथा टेलर, टेलरिंग, पेंटर, पेंटिंग, ब्रश, कलर, पालिश, बोर्ड, बीभर, फिटर इत्यादि, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के शब्द यथा हेल्थ, डॉक्टर, हास्पिटल, प्लेग, टी० बी, इंजेक्शन, नर्स, कंपाउंडर, आपरेशन, एक्स-रे, वार्ड, सिविल-सर्जन, इत्यादि, आधुनिक मनोरंजन के साधनों से संबंधित शब्द यथा सिनेमा, ड्रामा, क्लब, म्यूजिक, एक्टर, रील, स्क्रीन, हाल, वायलिन, हीरो, हिरोइन, रेडियो, टेलीविजन, आर्टिस्ट, डाइरेक्टर इत्यादि, विज्ञापन से संबंधित शब्द यथा आर्डर, एजेंट, गारंटी, डिजाइन, मार्का, वी० पी० पी०, सुपरफाइन, बेस्टक्वालिटी, मूवी कैमरा, एन्लार्जमेंट, गेयर, ब्रेक, एयरकंडीशन, इलेक्ट्रिकल, रिपेयरिंग, हाउस, वर्कशाप, स्पीड, गुडइयर, मोटर इत्यादि, व्यक्तियों के नामों से संबंधित शब्द यथा सी० वी० रमन, ए० के० गोपालन, ई०यम०यस० नम्बूदिरिपाद, टी०यन० कौल में प्रथम पद, दूकानों एवं कारखानों से संबंधित शब्द यथा दी एशिया साइकिल कंपनी, बाम्बे ड्राइ क्लीनर्स, किंग ऑफ़ बनारसी सारीज, चुर्क सिमेंट फैक्टरी, राजपाल एंड सन्स, बाटा शू कंपनी, दिल्लीफ्लावर मिल्स, ग्वालियर सूटिंग, चतुर्वेदी टाइपस्कूल, बंगाल टाइपराइटर, आयुर्वेद सेवाश्रम फार्मेसी, स्वस्तिक आयल मिल्स लिमिटेड इत्यादि में पूरा या आधा अंग्रेजी पद तथा दूकानों एवं व्यापार केन्द्रों के लिए कंपनी, स्टोर, सन्स, ब्रदर्स इत्यादि शब्द हिंदी में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हो गये हैं। इसी प्रकार जीवन के अन्य पहलुओं से संबंधित शब्दों ने भी हिंदी या देशी भाषाओं में अपना स्थायी और महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

४—अंग्रेजी शब्दों का वर्गीकरण

अंग्रेजी (और पुर्तगाली) से जितने शब्द हिंदी में आये, उनमें से अनेक शब्दों में ध्वनि और व्याकरण की दृष्टि से परिवर्तन भी हो गए हैं। इसके फलस्वरूप कुछ शब्द तत्सम रूप में और कुछ तद्भव रूप में विद्यमान हैं। इन शब्दों का निम्नलिखित ढंग से वर्ग-विभाजन किया जा सकता है —

(१) जिन शब्दों के समानान्तर हिंदी में शब्द हैं, और जिन्हें स्थानान्तरित किया जा सकता है यथा स्कूल, कालेज, टीचर, पेन, ड्रामा इत्यादि।

(२) जिन शब्दों के समानान्तर हिंदी में शब्द नहीं हैं और जिन्हें सरलता से रूपान्तरित नहीं किया जा सकता यथा रेल, बस, बैंक, टिकट, एक्स—रे, सिनेमा इत्यादि।

(३) उच्च शिक्षा या विज्ञान के शब्द जिन्हें सामान्य जन नहीं समझते। इन्हें पारिभाषिक शब्दों की श्रेणी में रखा जा सकता है, यथा कार्बन-डाइ आक्साइड, एल्यूमिनियम, स्पुटनिक, मेगाटन, किलोवाट, रेडियो-एक्टिव, विटामिन, कोलोथीन, प्रोटीन इत्यादि।

(४) जिन शब्दों में ध्वनि संबंधी परिवर्तन कर लिया गया है यथा लालटेन, लपटन, ओसियर, इंजियर, एक्ट, टेशन, सिमेंट, बोतल इत्यादि।

५—जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबद्ध शब्द

(क)—पुर्तगाली शब्द

(१) धर्म से संबद्ध शब्द—

क्रिस्तान—ईसाई	कैथोलिक
गिर्जा—उपासनागृह	पादरी—धर्मोपदेशक
बपतिस्मा—ईसामत की दीक्षा	यशू—ईसा मसीह

(२) खान-पान के शब्द—

अनन्नास—एक फल	अचार
काफ़ी—कहवा	काजू
गोभी	तम्बाकू
[illegible]	पपैया
पाव (रोटी)	बिस्कुट
संतरा	साबू
सलाद	

(३) वेश-भूषा एवं बर्तन से संबद्ध शब्द—

कमीज	काज—बटन के लिए बना छेद
पीपा	बाल्टी
गमला	साया

(४) जहाज इत्यादि के शब्द—

अरगन—बाजा	अलमारी (आलमारी)

अल्कतरा
इस्त्री
कमरा
काज
चावी (-भी)
मेज
बम्बा
बडल
साबुन
आलपीन
इस्पात–फौलाद
कनिस्टर
गमला
फर्मा
फीता
बटन
वायलिन

(५) उपयोगी सामानो से सबद्ध शब्द—

आया–दाई
इस्पात-पक्कालोहा
कोच-घोडागाडी
तौलिया
बरमा
बजरा-एक नाव
मिस्त्री
पागर(पगार)-वेतन
इस्त्री–
कारबन
गोदाम
पीपा
परेक(ग)-कील
बोतल
मस्तूल नाव का एक भाग

(६) शस्त्र एव प्रशासन के शब्द—

कप्तान
गारद-सिपाहियो की टुकडी
नीलाम
किरच-तलवार
पिस्तौल-एक शस्त्र

(७) अन्य—

मार्का

(आ)–अंग्रेजी शब्द

(१) ईसाई प्रार्थना, धर्म और सस्कृति से सबद्ध शब्द—

अकल्-चचा
ईस्टर एक पर्व
एडम (आदम)-प्रथम मानव
क्रिस्चन-ईसाई
अटिन (अटी)-चाची, मौसी, फूफी
ईव (हौवा)-प्रथम महिला
एजिल-धर्मग्रथ,
क्रिसमस-एक पर्व

क्राइस्ट-ईसा
गाड-ईश्वर
गुड मार्निंग-नमस्ते
चाप्ल-मठघर
जीव् (ज्यू)-यहूदी
डैडी-पिता
प्राफेट-पैगम्बर
पार्टनर-साझेदार, मित्र
प्रोटेस्टेन्ट-एक सम्प्रदाय (सुधारवादी)
पोप
फ्रेन्ड-मित्र
ब्वाय-लड़का
बाइबिल-धर्मग्रन्थ
बिशप-पादरी
मदर-माँ
मिशन-सेवा, सेवाश्रम
मिशनरी-धार्मिक संस्था
मेरी (मरियम)-ईसा की माँ महिमार्थक
मैजिक-जादू
रोमन कैथोलिक-एक सम्प्रदाय (सनातनी)
लव्-प्यार, प्रेम
लक-भाग्य
लेडी-स्त्री
वेरीगुड-बहुत अच्छा
सेंट-संत
हैप्पी-सुख

कोर्टशिप-प्रेम का सम्बन्ध
गुड फ्राइडे-एक पर्व
गेस्ट-अतिथि
चर्च-गिरजा
चैरिटी-दान
थियासोफिस्ट-एक सम्प्रदाय
पापा-पिता
प्रीस्ट-पुजारी
प्रेयर-प्रार्थना
फादर-धर्मोपदेशक, पिता
ब्रदर-भाई
बेबी-बच्चा
ममी-माँ
मास्टर-स्वामी, शिक्षक
मिस्टर-श्रीमान्
मिसेज-श्रीमती (पत्नी)
मिस-कुमारी
मैडम-श्रीमती (कुमी)
रिलिजन-धर्म
रेडी-तैयार
लवर-प्रेमी
लाफ-हँसी
लुक-देखना
स्वीट-मधुर
सिस्टर-बहन, नर्स
होस्ट-स्वागतकर्ता

(२) दैनिक जीवन से संबद्ध शब्द—

(क) अस्त्र शस्त्र इत्यादि :—

आर्म-शस्त्र
एयरो प्लेन-हवाई जहाज
एटामिकपावर-परमाणु शक्ति-भण्डार
एयर-रेड-हवाई हमला

आर्टिलरी-तोपखाना
एटम बम-परमाणु बम
एयरगन-हवाई बन्दूक
कास्मोड्रोम-अन्तरिक्ष अड्डा

कारतूस-गोली
कैंप (कप्)-तम्बू
कैण्टोनमेंट (कटूमेंट)-छावनी
कैनन-तोप
गार्ड-रक्षक
गुरिल्लावार-छापामार युद्ध
टारपीडो-जलनौका
ट्रूप-टुकड़ी
डबल मार्च-कूच
डिपो-गोदाम
परेड-क़वायद
फ्रंट-मोर्चा
फ्लाइंग बम-अस्त्र
फोर्ट-किला
बाम्बर-बमवर्षक
मशीनगन-तोप
(सब) मशीनगन-छोटी तोप
मिग
यूनीफार्म-वेश
राकेट
रेसिडेन्सी-सेना का पड़ाव
लेवीगन-शस्त्र
वार युद्ध
स्टीमर
स्टेनगन-शस्त्र
हाइड्रोजन बम-उद्जनबम
हेलिकाप्टर

केबिन-अनुभाग
किट-वेश
कोर्टमार्शल-फौजी न्यायालय
गन-बन्दूक
जेट
टामीगन-शस्त्र
टेंट-खेमा
डायनामाइट-विध्वंसक
ड्रिल-कवायद
पिस्टल (पिस्तौल)-शस्त्र
पैराशूट-हवाई उपकरण
फायर-गोली मारना, दागना
बम (बाम्)-बम
ब्रेनगन-शस्त्र
बैरक (बारक)-छावनी
बैलून-गुब्बारा
मार्च-आगे बढ़ना
मोटरबोट
राइफल-बन्दूक
रिवाल्वर-पिस्तौल
लाइट हाउस-प्रकाश गृह
लैस सुसज्ज
वीपन-शस्त्र
स्टीमरबोट
शूट-मारना
हाइड्रोजन गैस-उद्जन गैस

(ख) सेना और सैनिक अधिकारी—

अटेंशन
आफीसर
एयर मार्शल
एयर फोर्स
एन० सी० सी०

आर्मी
एडमिरल
एयर वाइस मार्शल
एयर कमोडो
कपनी

कमीशंड आफीसर
कर्नल
कैप्टन
कोर
क्वीन
गवर्नर जनरल
ग्रुप लीडर
जूनियर आफिसर
डिवीजन
नेवी
प्लाटून
प्रिंस
प्रेसिडेंट
फील्डमार्शल
फ्लाइंग लेफ्टिनेंट
बाडीगार्ड
मार्शल
मेजर
यूनिट
राइट टर्न
रेजिमेंट
लेफ्टिनेंट
लेफ्टिनेंट जनरल
वाइस प्रेसिडेंस
वाइस एडमिरल
सन्तरी
सार्जेंट
सीनियर कमांडर
सोल्जर
स्टैंड-ईज

कमांडर
किंग
कैवेलरी
चिफमार्श
गवर्नर
ग्रुपकैप्टन
जनरल
जूनियर कमांडर
नान कमीशंड आफिसर
पाइलट
प्राइवेट फार्म
प्रिंसेज
फ्लागोफर्स
फ्लाइंग आफिसर
बटालियन
बिप बियर
मार्शल ला
मेजर जनरल
रंगरूट (रिक्रूट)
रिजर्वफोर्स
रीयर एडमिरल
लेफ्ट टर्न
लेफ्टिनेंट कर्नल
वायसराय
विंग कमांडर
सब मैरीन
सीनियर आफिसर
सैक्शन
स्क्वाड्रन
हाल्ट

(१) प्रशासन भाग एवं कार्यपालिका से संबद्ध शब्द—

(क) सामान्य प्रशासन के शब्द—

आर्डिनेंस-अध्यादेश
आडीटर-जाँचकर्ता

आर्डर (आडर)-आदेश
आइटेम-मद्द
इन्टरव्यू-साक्षात्कार
एप्वाइंटमेंट-नियुक्ति
एरिया-क्षेत्र, हल्का
एक्साइज-आबकारी
एल्डरमैन
कलक्टरी-कलक्टर का कार्यालय
कान्फ्रेंस-जलसा
कारपोरेशन-निगम
कोड-कानून
गवर्नमेंट-सरकार
चेंज बदलना, फुटकर
चेयरमैन-सभापति
टैक्स-कर
टोलटैक्स-पथकर
टाउन एरिया (-हाल)
टेम्परेरी-अस्थायी
ड्यूटी-काम, नौकरी
डिस्ट्रिक्ट-जिला
पालिसी-नीति
प्रापर्टी-धन
प्लानिंग-योजना
प्रिजन कैद
प्वाइंट आफ आर्डर-आदेश शब्द
पोस्ट-पद
प्लाट-भूमि का टुकड़ा
प्रोमोशन-तरक्की
फाइल
बिल
म्युनिसिपैलिटी-नगरपालिका
मनी-सेक्सन-धन विभाग
मॅम्बर-सदस्य

आर्गनाइजेशन-संगठन
इन्कम टैक्स-आय कर
एडवरटाइजमेंट-विज्ञापन
एडवांस-अग्रिम
एसेसमेंट-मूल्यांकन
एजेंडा-कार्यसूची
कमेटी समिति
कमिश्नरी-कमिश्नर का कार्यालय
कालोनी-बस्ती
क्षेनिंग-चेतवाजी
कौंसिल-समिति, सभा
गजट-राजपत्र
चेन-सीकड़, जंजीर
जेल-बन्दीगृह
ट्रांसफर-परिवर्तन
डिस्ट्रिक्टबोर्ड-जिलापरिषद
डिवीजन-तहसील
डिमोशन-तनुज्जुली
नोटीफाइड एरिया
नोटिस-सूचना, चेतावनी
पाइप-नल
पिंसिन-नौकरी का भत्ता
प्रिजनर-कैदी
प्राइवेट सेक्रेटरी-निजी सचिव
प्रोवेशन-परख की अवधि
फार्मूला-सूत्र
फील्ड-खेत, क्षेत्र
फायर ब्रिगेड
बजट
बोर्ड मण्डल
मनी-धन
मीटिंग-बैठक
मेयर

युनाइटेड स्टेट (यू० एस०)	एक्ट
रसीद (रेसीट)	रिटायर-अवकाशप्राप्त
राउण्ड-गश्त	रेजिग्नेशन-स्तीफा
रेकार्ड-अभिलेख	रेवेन्यू-आय (सरकारी)
लीज-सरकारी बिक्री	रेजोल्यूशन-प्रस्ताव
वारंट-विशेष सूचना	वार्निंग-चेतावनी
वाटरवर्क्स-पानी घर	वार्ड-हल्का
वेल्थ-धन	स्टेट-राज्य सरकार
सस्पेंड-मुअत्तल	सर्विस-नौकरी
सर्किट हाउस	सरकुलर-आदेशपत्र
सिक्योरिटी-जमानत	सिटी-शहर
सेन्टर-केन्द्र	सेन्ट्रल जेल-केन्द्रीय जेल
सेक्रेटेरियट-सचिवालय	स्कीम-योजना

(ख) प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों से सम्बद्ध शब्द—

अर्दली-सेवक	असिस्टेंट-सहायक
असिस्टेंट जेलर	आर्म्ड पुलिस-सशस्त्र पुलिस
आर्गनाइजर-संगठक	आफिस-कार्यालय
आनरेरी मजिस्ट्रेट	आई जी
इन्सपेक्टर	इन्चार्ज
एडीशनल मजिस्ट्रेट	एक्साइज इन्सपेक्टर-आबकारी निरीक्षक
ए डी सी	कमांड-आदेश
कमिश्नर	कलक्टर
क्लर्क	कान्स्टेबुल (हेड)
जेल	(सेन्ट्रल) जेल
जेलर	(असिस्टेंट) जेलर
ज्युडिशियल मजिस्ट्रेट	डाइरेक्टर
डिप्टी-उप(अधिकारी)	डिप्टी कमिश्नर
डिप्टी-डाइरेक्टर	डिप्टी-सुपरिन्टेंडेन्ट
डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट	डी आई जी
ड्रिल	पी ए सी
पुलिस	फायर-गोली दागना
ब्लाक आफिसर-[illegible]	मजिस्ट्रेट
यस डी ओ	रजिस्ट्रार

सबइन्सपेक्टर — सर्किल इन्सपेक्टर
सर्वेंट-नौकर — सिटी मजिस्ट्रेट
सायरन-भोंपा — सी० आई० डी०
सीनियर सुपरिण्टेण्डेण्ट — स्पेशल मजिस्ट्रेट
सेंसर — होमगार्ड
शूटिंग — होमडिफेंस

४—कानून से सम्बद्ध शब्द—

असेम्बली-विधान मण्डल — आर्टिकल-धारा
इन्फारमेशन-सूचना — एक्ट-कानून
एफ० आई० आर० पहली रिपोर्ट — एप्लिकेशन-आवेदन
कन्ट्रेक्ट-समझौता — क्लाज-धारा
(बाई) क्लाज-उपधारा — मच क्लाज
कंडीशन शर्त — कापी-अनुकरण, अनुकृति, प्रतिलिपि
कोड-विधि — कान्स्टीच्यूशन-संविधान
कोरम-निश्चित संख्या (तिहाई संख्या) — कौंसिल-परिषद
चार्टर-विधान — ट्रेजरी-राजकोष
नोटिस-इश्तहार — प्लीडर-वकील
प्राइज-पुरस्कार — पार्लिमेंट-संसद
पावर-शक्ति — पार्टीशन-बटवारा
पार्टनरशिप-साझेदारी — पेटीशन-याचिका
पेनल-जाँच कमेटी — प्रैक्टिस-काम, अभ्यास, वकालत
पीरियड-अवधि — फीस-शुल्क
फिनिश-समाप्त — बार कठघरा
बार एशोसियेशन-वकील संघ — बैरिस्टर
मोर्गेज सशर्त हस्तान्तरण, बिक्री — मैटर-मजमून, मामला
रजिस्ट्री-बैनामा, लिखापढ़ी — रिवार्ड-पुरस्कार
राइट-अधिकार — रिसीव-प्राप्ति
रीडिंग-वाचन — रेजेक्ट-अस्वीकृत
रूल-नियम — रूलिंग-निर्णय
ला-कानून — (बाई) ला उपकानून, धारा
लाइयर वकील — लाइयर्स नोटिस-कानूनी सूचना

यूनाइटेड फ्रंट (यू एफ)	रपट
रसीद (रेसीट)	रिटायर-अवकाश ग्रहण
राजपत्र-गजट	रेजिगनेशन-त्यागपत्र
रेकर्ड-अभिलेख	रेवेन्यू-आय (सरकारी)
लीज-सशर्त बिक्री	रेजोल्यूशन-प्रस्ताव
वारंट-विशेष सूचना	वार्निंग-चेतावनी
वाटरवर्क्स-पानी घर	वार्ड-हल्का
वेल्थ-धन	स्टेट-राज्य सरकार
सस्पेंड-मुअत्तल	सर्विस-नौकरी
सर्किट हाउस	सरकुलर-आदेशपत्र
सिक्योरिटी-ज़मानत	सिटी-शहर
सेन्टर-केन्द्र	सेन्ट्रल जेल-केन्द्रीय जेल
सेक्रेटेरियट-सचिवालय	स्कीम-योजना

(ख) प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों से सम्बद्ध शब्द—

अर्दली-सेवक	असिस्टेंट-सहायक
असिस्टेन्ट जेलर	आर्म्डपुलिस-सशस्त्रपुलिस
आर्गेनाइज़र-संगठक	आफ़िस-कार्यालय
आनरेरी मजिस्ट्रेट	आई जी
इन्सपेक्टर	इन्चार्ज
एडीशनल मजिस्ट्रेट	एक्साइज इन्सपेक्टर-आबकारी निरीक्षक
ए० सी पी	कमान्ड-आदेश
कमिश्नर	कमान्डर
क्लर्क	कान्स्टेबुल (हेड)
जेल	(सेन्ट्रल) जेल
जेलर	(असिस्टेंट) जेलर
ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट	डाइरेक्टर
डिप्टी-उप(अधिकारी)	डिप्टी कमिश्नर
डिप्टी-डाइरेक्टर	डिप्टी-सुपरिन्टेंडेन्ट
डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट	डी आई जी
ड्रिल	पी ए सी
पुलिस	फायर-गोली चलाना
ब्लाक प्रमुख	मजिस्ट्रेट
बी डी ओ	रजिस्ट्रार

सबइन्सपेक्टर	सर्किल इन्सपेक्टर
सर्वेंट-नौकर	सिटी मजिस्ट्रेट
सायरन भोंपा	सी० आई० डी०
सीनियर सुपरिएटेण्डेण्ट	स्पेशल मजिस्ट्रेट
सेसर	होमगार्ड
शूटिंग	होमडेफेंस

४—कानून से सम्बद्ध शब्द—

असेम्बली-विधान मण्डल	आर्टिकल-धारा
इन्फारमेशन-सूचना	एक्ट-कानून
एफ० आई० आर० पहली रिपोर्ट	एप्लिकेशन-आवेदन
कन्ट्रेक्ट-समझौता	क्लाज-धारा
(बाई) क्लाज-उपधारा	सब क्लाज
कंडीशन शर्त	कापी-अनुकरण, अनुकृति, प्रतिलिपि
कोड-विधि	कान्स्टीच्यूसन-संविधान
कोरम-निश्चित संख्या (तिहाई संख्या)	कौंसिल परिषद
चार्टर-विधान	ट्रेजरी-राजकोष
नोटिस-इश्तहार	प्लीडर-वकील
प्राइज-पुरस्कार	पार्लिमेंट-संसद
पावर-शक्ति	पार्टीशन-बटवारा
पार्टनरशिप-साझेदारी	पेटीशन-याचिका
पेनल-जाँच कमेटी	प्रैक्टिस-काम, अभ्यास, वकालत
पीरियड-अवधि	फीस-शुल्क
फिनिश समाप्त	बार कठघरा
बार एशोसियेशन-वकील संघ	बैरिस्टर
मोर्गेज सशर्त हस्तान्तरण, बिक्री	मैटर-मजमून, मामला
रजिस्ट्री-बैनामा, लिखापढ़ी	रिवार्ड-पुरस्कार
राइट-अधिकार	रिसीव-प्राप्ति
रीडिंग-वाचन	रेजेक्ट-अस्वीकृत
रूल-नियम	रूलिंग-निर्णय
ला-कानून	(बाई) ला उपकानून, धारा
लाइयर वकील	लाइयर्स नोटिस—कानूनी सूचना

ला बुक-कानून की किताब
सैंक्शन-कानून से मंजूरी
वार्निंग-चेतावनी
विटनेस-गवाह
शेयर-हिस्सा
शेयर होल्डर-हिस्सेदार
स्कोप-क्षेत्र, सीमा
सिगनेचर-हस्ताक्षर
सम्मन-सूचना
स्पीकर-अध्यक्ष

(६) न्याय से संबद्ध शब्द—

अपील
ओथ-शपथ
एप्रेजल-प्रमाण
[illegible] आर्डर-असाधारण स्थिति का आदेश
एक्सपेंस-खर्च
एग्रीमेंट-समझौता, सुलह
एडवोकेट-वकील
एफीडेविट-हलफनामा
एक्शन-कारवाई
एक्सीडेंट-दुर्घटना
एडीशनल-अतिरिक्त
एडमिशन-स्वीकृति, भर्ती होना
ऐरेस्ट-गिरफ्तार
कस्टडी-अधिकार
कम्प्रोमाइज-समझौता
क्राइम-जुर्म
कन्ट्रोल-अनुशासन
क्रिमिनल-फौजदारी
किडनैप-अपहरण
कैंसेल-खारिज
केस-घटना, मुकदमा
कोर्टफीस-न्यायालय शुल्क
कोर्ट-न्यायालय
(क्रिमिनल) कोर्ट-फौजदारी न्यायालय
(सिविल) कोर्ट-दीवानी न्यायालय
(हाई) कोर्ट-उच्च न्यायालय
(डिस्ट्रिक्ट) कोर्ट-जिला न्यायालय
(स्पेशल) कोर्ट-विशेष न्यायालय
(सुप्रीम) कोर्ट उच्चतम न्यायालय
(सब) जज-उपन्यायाधीश
जज-न्यायाधीश
जस्टिस-न्यायाधीश, न्याय
चीफ जज
जजमेंट-फैसला
जूरी-सलाहकार
(बेनिफिट ऑफ) डाउट-सन्देह से लाभ या छूट
डाउट-सन्देह
डिक्री-आज्ञा
डिफेमेशन केस-मानहानि का मुकदमा
डेट-तारीख
परमीशन-अनुमति
प्रूफ-प्रमाण
पोजीशन-स्थिति, महत्व
फाइल-संग्रह
बेंच (न्यायालय)-खंड न्यायालय
मीलार्ड-हाईकोर्ट के जज का सम्बोधन
रजिस्टर-पुस्तिका
स्टाम्प टिकट, मोहर
स्टेटमेंट-बयान
सरेंडर-समर्पण
सिगनेचर-हस्ताक्षर
सिक्योरिटी-जमानत
सेशन-जिला न्यायालय

सूट फाइल-अभियोग करना — स्टेय् आर्डर-निषेधाज्ञा
सेशन जज — हाईकोर्ट जज
सोर्स- पहुँच — हियरिंग-सुनवाई

(६) शिक्षा-विभाग से सबद्ध शब्द—

(क)

अपर प्राइमरी — आ० टी०
आई० एस-सी० — आई० ए०
आई० काम० — आर्ट्स कालेज
आई० टी० आई० — इन्टरमीडिएट कालेज
इजीनियरिंग कालेज — इंस्टीच्यूट
इंस्टीच्यूशन — इंट्रेंस (एंट्रेंस)
इन्टर — एम० ए०
एफ० ए० — एम० एस-सी०
एम० काम० — एम० बी० बी० यस०
एम० डी० — कालेज
एम० बी० एस० — जूनियर हाईस्कूल
टीचर्स ट्रेनिंग कालेज — टेक्नोलॉजी कालेज, (कालेज, इन्स्टीच्यूट ऑफ् टेक्नोलॉजी)
डिग्री कालेज — डी० फिल्०
डी० लिट्० — पी-एच्० डी०
बी० ए० — बी० काम०
बी० बी० एम० — बी० एस-सी०
बेसिक प्राइमरी — मिडिलस्कूल
मेडिकल कालेज — मैट्रिक
म्यूजिक कालेज — यूनिवर्सिटी
लॉ कालेज — वीमेंस कालेज
साइन्स कालेज — हाईस्कूल
हायर सेकण्डरीस्कूल

(ख)

असिस्टेंट मास्टर-सहायक अध्यापक — असिस्टेंट मिस्ट्रेस-सहायकअध्यापिका
इन्स्ट्रक्टर-शिक्षक — इंसपेक्टर-निरीक्षक
एकेडेमिक कौंसिल-विद्वत्परिषद — एक्जीक्यूटिव कौंसिल-कार्यकारी परिषद
टीचर-अध्यापक — चांसलर

ग्रुप-टोली
चाक-खड़िया
ज्यामैट्री-रेखागणित
टास्क-काम
(होम)टास्क-घर का काम
ट्रेंड-प्रशिक्षित
डस्टर-झाडन
डायरी
(फर्स्ट) डिवीजन
डिगरी-उपाधि
डिवीजन श्रेणी
डेस्क
नम्बर-अंक
नावेल उपन्यास
नोट-संक्षिप्त
प्राक्टर (चीफ)
पास-उत्तीर्ण
पीरियड-घंटी
पेन-कलम
पेपर-प्रश्नपत्र
पोजीशन-स्थान
पोयम-कविता
(फर्स्ट) पोजीशन-प्रथम स्थान
फार्म-प्रपत्र
फाइन-जुर्माना
फाउन्टेन पेन-कलम
फिजिक्स-भौतिकविज्ञान
फीस शुल्क
फेयर-अच्छा, उत्तम
बाइन्डिंग-जिल्दसाजी
बायलॉजी-जीवविज्ञान
ब्रेकेट-कोष्ठ
बोर्डिंग-छात्रावास

(पोस्ट) ग्रेजुएट
चार्ट-खाका
ट्यूशन शिक्षण
टाइमटेबुल-कार्यक्रम
(अन) ट्रेंड-अप्रशिक्षित
ट्रेनिंग
डिक्शनरी-शब्दकोश
(सेकेण्ड) डिवीजन
(थर्ड) डिवीजन-तृतीय श्रेणी
डिप्लोमा-प्रमाणपत्र
डिप्लोमा होल्डर-प्रमाणपत्रप्राप्त
थीसिस-शोधप्रबंध
नानसेंस-व्यर्थ
निब
नोट बुक-संक्षिप्त लेखन-पुस्तिका
प्राइवेट
प्राइज़-पुरस्कार
पेन्सिल
पेज-पृष्ठ
प्रोमोशन-तरक्की
पोएट-कवि
प्रेक्टिकल
फन्कशन-उत्सव
फारेन-रिटर्न-विदेश से लौटे
फाइनल
फीशिप-नि शुल्क
फेल-अनुत्तीर्ण
ब्लाटिंग पेपर-सोख्ता
बुक बाइन्डिंग-किताब की जिल्द करना
बुकसेलर-पुस्तक विक्रेता
बुक-पुस्तक
बोर्ड-परिषद, समिति
मेस-भोजनालय

डाइरेक्टर-संचालक	ट्यूटर-गृहप्राध्यापक
डी आई ओ ऑफ स्कूल्स-जिलाविद्यालयनिरीक्षक	डिप्टी डाइरेक्टर-उपसंचालक
डीन ऑफ् फैकल्टी संकाय अधिष्ठाता	प्रिंसिपल-प्रधानाचार्य
प्रो-चांसलर	(वाइस) प्रिंसिपल उपप्रधानाचार्य
प्रोफेसर	प्रो-वाइस चांसलर
मिस्ट्रेस-अध्यापिका	मास्टर-अध्यापक
एस डी आई-सहायक निरीक्षक	मैनेजर-प्रबन्धक
(डिप्टी) रजिस्ट्रार	रजिस्ट्रार
रेक्टर	रीडर
वाइस चांसलर-कुलपति	लेक्चरर प्राध्यापक
सिंडिकेट	सिंडिटर
स्टैंडिंग कमेटी	सिनेट
सेक्रेटरी	हेडमास्टर-प्रधानाध्यापक
स्टूडेंट	हेड ऑफ् दी डिपार्टमेंट-विभागाध्यक्ष
(असिस्टेंट) हेडमास्टर-सहायकप्रधा	(असिस्टेंट) हेडमिस्ट्रेस-सहायकप्रधा
हेडमिस्ट्रेस-प्रधानाध्यापिका	

(ख)

अटेंडेंस	अनकेमरा-बीचकक्षित
आर्ट-कला	इस्पेलिंग-वर्तनी
इण्टरवल अवकाश	इन्गेजमेंट
इंक-स्याही	ईरेजर चूक
एक्सपर्ट-विशेषज्ञ	एक्सपीरिएन्स-अनुभव
एकनामिक्स्-अर्थशास्त्र	एटलस-चित्रावली
एग्जामिनेशन-परीक्षा	एग्जामिनर-परीक्षक
एनसाइक्लोपीडिया-विश्वकोष	एजुकेशन-शिक्षा
एनिवर्सरी-वार्षिकोत्सव	क्लास-कक्षा
क्लासिकल-शास्त्रीय	कन्वोकेशन-समावर्तन समारोह
कलर-चित्र	कापी-पुस्तिका
कामर्स-वाणिज्य	कामा-विराम
कैंडीडेट-उम्मेदवार	कोलन-विराम
केमिस्ट्री-रसायनविज्ञान	ग्लोब-भूमिया का नक्शा
कोर्स-पाठ्यक्रम	गाउन-चोगा
गार्जियन-संरक्षक	ग्रेजुएट-स्नातक

ग्रुप-टोली
चाक-खड़िया
ज्यामैट्री-रेखागणित
टास्क-काम
(होम)टास्क-घर का काम
ट्रेंड-प्रशिक्षित
डस्टर-झाड़न
डायरी
(फर्स्ट) डिवीजन
डिगरी-उपाधि
डिवीजन श्रेणी
डेस्क
नम्बर-अंक
नावेल उपन्यास
नोट-संक्षिप्त
प्राक्टर (चीफ)
पास-उत्तीर्ण
पीरियड-घंटी
पेन-कलम
पेपर-प्रश्नपत्र
पोजीशन-स्थान
पोयम-कविता
(फर्स्ट) पोजीशन-प्रथम स्थान
फार्म-प्रपत्र
फाइन-जुर्माना
फाउन्टेन पेन-कलम
फिजिक्स-भौतिकविज्ञान
फीस शुल्क
फेयर-अच्छा, उत्तम
बाइन्डिंग-जिल्दसाजी
बायलॉजी-जीवविज्ञान
ब्रैकेट-कोष्ठ
बोटिंग-छायावास

(पोस्ट) ग्रेजुएट
चार्ट-खाका
ट्यूशन-शिक्षण
टाइमटेबुल-कार्यक्रम
(अन) ट्रेंड-अप्रशिक्षित
ट्रेनिंग
डिक्शनरी-शब्दकोश
(सेकेण्ड) डिवीजन
(थर्ड) डिवीजन-तृतीय श्रेणी
डिप्लोमा-प्रमाणपत्र
डिप्लोमा होल्डर-प्रमाणपत्रप्राप्त
थीसिस-शोधप्रबंध
नानसेंस-व्यर्थ
निब
नोट बुक-संक्षिप्त लेखन-पुस्तिका
प्राइवेट
प्राइज-पुरस्कार
पेन्सिल
पेज-पृष्ठ
प्रोमोशन-तरक्की
पोएट-कवि
प्रेक्टिकल
फन्क्शन-उत्सव
फारेन-रिटर्न-विदेश से लौटे
फाइनल
फीशिप-नि शुल्क
फेल-अनुत्तीर्ण
ब्लाटिंग पेपर-सोख्ता
बुक बाइन्डिंग-किताब की जिल्द करना
बुकसेलर-पुस्तक विक्रेता
बुक-पुस्तक
बोर्ड-परिषद, समिति
मेस-भोजनालय

म्यूज़ियम-अजायबघर	रफ़ कापी-रद्दी फुटकर कापी
मैप-नक्शा	मार्किंग-मार्गविधा
मानीटर	रबर
(मार्निंग) रजिस्टर-उपस्थिति पुस्तिका	रस्टीकेशन-निष्कासन
राइटिंग-मेज़	रिज़ल्ट-परीक्षाफल
रिसर्च स्कालर-शोधकर्ता	रिसर्च असिस्टेंट-शोध सहायक
रिफ़रेन्सबुक-सन्दर्भ पुस्तक	रीडर-पाठ्य पुस्तक
(रैपिड) रीडर-द्रुतपाठ्य पुस्तक	रीडर्स डाइजेस्ट-एक पत्रिका
रूम-कमरा	रोल नम्बर
लेक्चर-व्याख्यान	लाइन-लकीर
लेट-विलम्ब	लेसन-पाठ
वर्ड मीनिंग-शब्दार्थ	वार्डन
सार्टिफ़िकेट-प्रमाणपत्र	स्कालरशिप-छात्रवृत्ति
स्पीच-व्याख्यान	स्लेट सिलेट
साइन्स-विज्ञान	सीट-बैठने का स्थान
सेमीकोलन-अर्धविराम	सेंटर पेन्स
हाइफ़न	हाल भवन
हुक-समावर्ती रेखा	हिस्ट्री-इतिहास
होस्टल-छात्रावास	होल्डर-कलम का एक भाग

(ख)

असिस्टेंट लाइब्रेरियन-सहायक ग्रंथपाली	डिप्टी-लाइब्रेरियन
इश्यू-किताब देना	एन्ट्री करना-किताब को रजिस्टर में चढ़ाना
एक्सेशन रजिस्टर	ऐनुअल चेकिंग-वार्षिक जाँच
काउण्टर-किताब देने की खिड़की	कैटेलाग-सूची
कैटलाग रजिस्टर-पुस्तकों की सूची	चेकिंग-जाँच
चेकर-जाँच कर्ता	जरनल-पत्रिका
ड्रावर-दराज	डेली-नित्य
डेट-स्टाम्प-तारीख छाप	डेट स्लिप-तारीख का पुर्जा
नम्बर-किताब की संख्या	(सीरियल) नम्बर-क्रम संख्या
न्यूज़पेपर-अखबार	पब्लिशर प्रकाशक
पाकेट बुक-छोटी पुस्तक	पार्ट-भाग
(फ़र्स्ट) पार्ट-किताब का पहला भाग	पीरियाडिकल-पत्रिकाएँ
पम्फ़लेट-छोटी पुस्तकें	बुक-पुस्तक

बुकपाकेट-पुस्तक कोश
बुक कार्ड-पुस्तक प्रपत्र
बुकमेलर-पुस्तक विक्रेता
मथली-मासिक
मैगजीन-पत्रिका
रिजर्व-बुक-सुरक्षित पुस्तिका
रीडर पाठक
रीडर्स टिकट-पाठक का प्रपत्र
रेटर्न-लौटाना
रेक-दराज
लाइब्रेरी-ग्रंथालय
लाइब्रेरियन-ग्रंथावी
लाइब्रेरी कार्ड-पुस्तकालयप्रपत्र
वालूम-ग्रन्थ
वीकली-साप्ताहिक
सेफ-दराज

(ङ)

आउटिंग-बाहर जाना
कैम्प (कप)-डेरा लगाना
कपिंग-बाहर ठहरना
कैम्प-फायर-रात की आग (स्वाग)
काशन-सकेत
गाइड-महिला-स्काउट
ट्रिप-यात्रा
ट्रूप-टोली
डायरी-दैनिकी
ड्रामा-नाटक
पिकनिक-पर्यटन
पेट्रोल-एक टुकड़ी
फ्लेग-झंडा
मार्चपास्ट-(सलामी चाल)
रैली-एकत्र होना
स्काउट-बालचर
स्काउट मास्टर-शिक्षक
हाइक-पर्यटन

(७) डाकखाने से संबद्ध शब्द—

(क)

एक्सप्रेस-शीघ्र
एक्सप्रेस डेलीवरी-शीघ्र भेजना
एक्नालेजमेंट-एक प्रकार की रसीद
एयरमेल-हवाई पत्र
ए० एम०-रात १२ से दिन १२ बजे तक
कम्प्लेंट-शिकायत
कमीशन-शुल्क
कार्ड
(पोस्ट) कार्ड
जोनल-स्कीम
टेलीग्राम
टेलीफोन
डिलीवरी-देना
डिपाजिट-जमा करना
डिस्पैच-रवाना करना
डेलीमेल-रोज की चिट्ठी
डली-रोज, रोजाना
पार्सल
परसेंट-प्रतिशत
पी० एम० दिन १२ बजे से रात १२ बजे तक
पासबुक
पीयन-चपरासी
पैकेज-बंडल
पोस्ट आफिस

चेस्टर-बडी कोट	जाकेट-सदरी
जरसी-ऊनी वस्त्र	टेलरमास्टर-दर्जी
टाई	टेरीलीन
टेलरिंग कम्पनी-सिलाई की दूकान	टूईल-एक कपडा
नैलोन एक प्रकार का कपडा	पतलून-पुरुषों का पहनावा
पाकेट-जेब	पापलीन-एक कपडा
पालिश	पैंट-पुरुषों का वस्त्र
पेटीकोट-साया	(हाफ) पैण्ट
(फुल) पैण्ट	फाइन-श्रेष्ठ कपडा
फलालैन-एक कपडा	फुल बूट
फिराक (फाक)-लडकियों का कपडा	ब्लाउज-स्त्रियों का कपडा
बटन	बुशशर्ट-पुरुषों का कपडा
बकलस-बकसुआ	बूट-जूता
बाडिस (बाडी)-कचुकी	बैग-झोला, कोश
बेल्ट-पेटी	ब्रश
मर्सराइज	मफलर-गुलेबन्द
मनीबेग	मार्केट-बाजार
मीडियम-मध्यम श्रेणी का कपडा	लूम-करघा
लेडीमिन्टो (मेस्टन) क्लाथ	लक्लाट (लागक्लाथ)
रिबन फीता	लिनन-एक कपडा
रेयन क्लाथ	रेनकोट-बरसाती कपडा
वायल-एक कपडा	रेडीमेड
वीभर-जुलाहा	वास्कट-पहनावा
सुपरफाइन-श्रेष्ठ	वूलेन-ऊनी
शर्ट-कमीज	(फुल) शर्ट-पूरी कमीज
शू-जूता	सरज-एक कपडा
	सिल्क
स्वीटर-पहनावा	स्लीपर-चप्पल
सूट	सूटकेस
सेनफोराइज्ड	सैंडल-जूता, जूती
सैण्डो	स्कर्ट-घघरा
हैण्डलूम-हाथ का बुना कपडा, करघा	हैट-टोपी

(क)

कप	केतली
गिलास	जग
जार	टब
टिफिन कैरियर	टी पाट
टी सैट	ट्रे-तश्तरी
प्लेट	डिश
मग	पाट
स्पून	सैमन पेट

(ख)

आर्मलेट-बाँह का गहना	ईयरिंग (इयरिंग)-कान का गहना
क्लिप-बाल का गहना	चेन-जंजीर
ब्लेसर-मोहरी	रिंग-अंगूठी
नेकलेस-गले का गहना	लाकेट
रिस्टलेट-कलाई का गहना	

(ग)

आलमारी	आर्मचेयर-बाहदार कुर्सी
ईज़ीचेयर-आराम कुर्सी	कोच-गद्दा
चेयर-कुर्सी	टेबुल
टेंट-तम्बू	टेबुल क्लाथ
डेस्क	बेंच
मैट-चटाई	स्टूल
स्टैंड-रखने का स्थान	(बुक) स्टैंड-किताब रखने का स्थान
सोफा सेट	ड्रेसिंगबाक्स-सिंगारदान

(घ)

अप-टू-डेट-अधुनातन	आलपीन
एलार्म-घड़ी	एल्बम-चित्रपुस्तिका
कलेंडर	कार्ड (पत्र)
कैंडिल-मोमबत्ती	क्लाक-बड़ी घड़ी
ग्लास-शीशा	टाइमपीस-घड़ी

टेलीविजन
डायल-ढीलापन, यंत्र
थर्मस
(लेडीज़) पर्स-बटुआ
पेट्रोमेक्स-गैसबत्ती
फैशन-सजावट
फ्रेम
बोतल
माचिस-दियासलाई
रिकर्ड
लाटरी
लीवर-यंत्र
(रिस्ट) वाच-कलाई घड़ी
स्टोव
हरीकेन-लालटेन

ट्रंक-संदूक
ड्राइक्लीनिंग
पर्स-पैसे की पेटी
पिन
फिट-ठीक
फैशनेबुल-सजा हुआ
फ्लास्क
ब्लेड
मिरर-दर्पण
रेडियो
लालटेन
वाच-घड़ी
सेफ्टीपिन
स्प्रिंग
हुक

(६) खान-पान तथा फल-तरकारी से संबद्ध शब्द—

(क)

आइसक्रीम-बरफ की मिठाई
कॉफी-कहवा
क्रीम मक्खन
चाकलेट-मिठाई
टी चाय
टिफिन कैरियर-नाश्तापात्र
डिनर-भोजन
फ्राई-तेल में बना
फीस्ट-दावत
बटर मक्खन
ब्रेक फास्ट-सुबह का नाश्ता
मिल्क-दूध
(पाउडर) मिल्क-दुग्ध चूर्ण
राशन-गल्ला
लंच-मध्याह्न भोजन

आमलेट-तला हुआ अंडा
केक-एक मिठाई
चीज़-पनीर
टाफी-मिठाई
टिफिन नाश्ता
टोस्ट-मक्खन रोटी
पार्टी-दावत
(गार्डन) पार्टी-कमरे के बाहर दावत
फैट-मोटा तत्व, चर्बी
ब्वायल्ड एग-उबला अंडा
ब्रेड रोटी
मटन मांस से बना खाद्य
(कण्डेन्स्ड) मिल्क जमाया दूध
मीट-मांस
लेमनेड-मिठाई

फर्टलाइजर-उर्वरक खाद
फील्ड-खेत
ब्रीडिंग-नस्ल
ब्लाक-कृषि सुधार का केन्द्र, ब्लाक
राइस-धान
सोडा (सोडा)-खाद

(१२) बागवानी से सम्बद्ध शब्द—

गार्डेन-बाग
नाइटक्वीन-एक फूल
फ्लावर-फूल
रोज-गुलाब
लोटस-कमल
गार्डीनर-माली
पार्क (पारक)-बाग
फाउण्टेन-फौव्वारा
लिली-कमलिनी
सनफ्लावर-सूर्यमुखी

(१३) पशु-पक्षियों से सम्बद्ध शब्द—

अल्शेशियन-एक कुत्ता
टाइगर-चीता
पैंथर-तेंदुआ
बुलडाग-बड़ा कुत्ता
जू-चिड़ियाघर
नाइटेंगिल-बुलबुल
बर्ड-चिड़िया

(१४) यातायात और सवारी से सम्बद्ध शब्द—

(क)

कप कटोरिया
गेयर-पुर्जा
चैन कवर-चैन का ढक्कन
टायर
नट-पुर्जा
पंप
फ्री
बर्स्ट-ट्यूब का फटना
बेल-घंटी
मैडगार्ड
रिक्शा
लैम्प
सास्पूशन (सुलेशन)
स्प्रिंग
स्क्रू-पुर्जा
हब
कैरियर-साइकिल की दूसरी सीट
चैन
ट्यूब
ट्राइसिकिल-तीन पहिया की गाड़ी
पम्पर
पायडिल
फ्रेम
बाइसिकिलिंग
ब्रेक-रोक
रबड़
रिम
वाल (वाल्व)
साइकिल
सीट
स्टैंड
हैंडिल

गुड्स-माल	गुड्स ट्रेन-मालगाड़ी
गुड्स क्लर्क-माल बाबू	चेकर-जाचकर्ता
जकशन-जहा दो रेल शाखाएँ मिले	जोनल रेलवे-क्षेत्रीय रेलवे
टाइमटेबुल-रेल आवागमन का समय	टी० टी० आई-टिकट जाचकर्ता
टिकट	टिकट कलक्टर-टिकट सग्रहकर्ता
ट्रेन-गाड़ी	टू टायर
ट्रैक-पथ	ड्राइव चलाना
ड्राइवर-इजन चालक	ड्राफ्ट्समैन-रूपकार, नकशानवीस
डाउन ट्रेन-सागर की ओर को रेलगाड़ी	डिवीजन-कुछ जिलो की रेलो का कार्यालय
डिमरेज-समय से माल न छुड़ाने का जुर्माना	डीजल इजन-डीजल से चलने वाला इजन
थर्ड क्लास तृतीय श्रेणी का डिब्बा	नार्दर्न रेलवे-उत्तरी रेलवे
थ्री टायर	पास
पावर-शक्ति	पिस्टन-इजन का एक हिस्सा
प्लेटफार्म	पार्सल-माल भेजना
पार्सल ट्रेन-पार्सल की गाड़ी	पैकेज-बडल बाधना
पैसेंजर-यात्री गाड़ी, यात्री	पैंटमैन-रेलवे का नौकर
फर्स्ट क्लास- प्रथम श्रेणी का डिब्बा	फायरमैन-कोयला झोंकने वाला
फिटर-फिट करने वाला	फोरमैन-मेठ
फोर्स-ताकत	ब्वायलर-इन्जन का हिस्सा
बर्थ-गद्दी	बफर-गद्दर
बार-छड़	बुकिंग-टिकट देना
बुकिंग आफिसर-टिकटघर	बोगी-डब्बा
मैकेनिक-मशीन बनानेवाला	मेल-लम्बी सफर की गाड़ी
यार्ड-क्षेत्र	रेल गाड़ी (पटरी)
रेलवे कमीशन	रेलवे बोर्ड
रेलवे लाइन-पटरी	रेलवे पुलिस
रेलवे मजिस्ट्रेट	रेड फ्लैग-लाल झंडी
रेजर-आरक्षण	लाइन-पटरी
लाइट मशीनर	लोकोमोटिव-इन्जन का कारखाना
लोको-इन्जन-विभाग	वर्कशाप-कारखाना
लोकल-स्थानीय	वाच एण्ड वार्ड-पहरा विभाग

वास्केट बाल	ब्रिज
वैडमिन्टन	म्युजिकल चेयर
मार्निंग वाक-टहलना	रेस दौड
लाग जम्प	लान टेनिस
वालीवाल	वाटर पोलो
वेट लिफ्टिङ्ग	साफ्ट वाल-हल्की गेंद
स्विमिंग-तैराकी	हाकी
हाई जप	हार्स रेस

(ख)

कप	ग्लोव्स-क्रिकेट में हाथ रक्षा का एक उपकरण
गोलपोस्ट-गोल का खम्भा	ग्राउंड-मैदान
टेबुल-टेनिस का आधार	टेग-फीता
ड्रेस-खेल का वेश	नम्बर-क्रिकेट का रन बनाने के लिए (गिनती)
नेट-जाली	पार्क-बाग
पोल-बास, खभा	पोस्ट-खम्भा
पूल तालाव	पैड पाव ढकने का उपकरण
फ्लैग-झडा	फील्ड-मैदान
ब्लेडर-रबर	बर्ड-चिडिया (बैटमिन्टन में)
बाल-गेंद	बैट-बल्ला
बोर्ड-गणनापट्ट (क्रिकेट में)	मिडल-विजयचिह्न
मैट-क्रिकेट की चटाई	रैकेट-उपकरण
लान-मैदान	विसिल-सीटी
विकेट-क्रिकेट का उपकरण	शू-जूता (खेल का)
शील्ड-विजयचिह्न	स्विमिंगपूल-तैरने का तालाव

(ग)

अम्पायर-निर्णायक	ऑफ्साइड (हाफ साइड)
आउट	इनिंग पाती
इण्डिया एलेवन भारत एकादश	एक्सरसाइज-व्यायाम
ओलम्पिक गेम-विश्व खेल	क्लब-खेलकूद की सस्था
कम्प्टीशन-प्रतियोगिता	कमेण्ट्री-खेल का विवरण
कोचिंग-खेल की विशेष शिक्षा	कार्नर-कोने से गेंद मारना

कालेज एलेवन-कालेज एकादश	कैच-हाथ से गेंद पकड़ना
गोल कीपर-गोल रक्षक	चम्पियन-सर्वजेता
जजमेंट-निर्णय	जोनल मैच-क्षेत्रीय मैच
टच-स्पर्श (पैर या हाथ का बाल से)	स्टिक टास-बाजी
टीम-टोली	टेस्ट-प्रतियोगिता
टेस्ट मैच-विजय के लिए मैच	टूर्नामेंट-प्रतियोगिता समारोह
डिस्ट्रिक्ट मैच-जिला मैच	डिसमिस-बरखास्त होना
नोबाल-गलत गेंद	प्लेयर्स खिलाड़ी
पिच-गेंद गिरना	पी टी टीचर-व्यायाम शिक्षक
पेनाल्टी	फाउल-गलत
फाइनल-अन्तिम	फुलबैक-गोल के समीप का खिलाड़ी
फ्रेण्डली मैच-परस्पर खेल	फोर(र) ?-चौका
बुक अप-समाप्त	बालर-गेंदबाज
बाई रन	बैट्समैन-बल्लेबाज
मैच-खेल	रन-दौड़ बनाना
रन आउट	रनर्स-खिलाड़ी प्रतिनिधि
राँग साइड-गलत दिशा	राइट आउट-दाहिनी ओर का खिलाड़ी
राइट इन-दाहिनी ओर भीतर का खिलाड़ी	रिकार्ड-कीर्तिमान
रिंग-गोलार्द्ध	रैफरी-निर्णायक
लाइंसमैन-सीमा निर्देशक	लेग आउट-क्रिकेट का बाल पैर से लगना
लेफ्ट आउट-बायीं ओर का खिलाड़ी	लेफ्ट इन-बायीं ओर भीतरी खिलाड़ी
शार्टकार्नर-निकट का कोना	स्कोर-रन बनाना
शूट-मारना	स्पोर्ट्स-खेल कूद
सिक्सर-छः रन बनाना	सेंटर-मध्य
सेंटर फारवर्ड-आगे का खिलाड़ी	सेमी फाइनल
हाफ बैक	हिट-मारना
हिप हिप हुर्रे-हर्षध्वनि	

(१६) विभिन्न पेशों से सम्बद्ध शब्द—

(क)

कार्बन	टाइप-छापना
टाइपराइटर-मशीन	टाइपिस्ट-छापने वाला

ट्रू कापी-प्रतिलिपि	रिबन-फीता

(ख)

काफी-हाउस	केफीटीरिया
डेरी-दुग्ध उद्योग	होटल-भोजनालय
केबिन-कक्ष	टिप-पुरस्कार
बिल	मीनू (मेनू) सूची
बेयरा-नौकर	लाज-निवास स्थान
रेस्तरा (रेस्टूरेन्ट) भोजनालय	वेटर-नौकर

(ग)

एनलार्ज (मेंट)-बड़ा करना	आयलकलर
कैमरा-फोटो का यन्त्र	नेगेटिव
डेवलप-बड़ा करना	पेंटिंग
पाजिटिव	पेन्टर-चित्रकार
पेंट	फोटो-चित्र
फिल्म	फोटोग्राफरी-फोटोखींचना
फोकस	वाटरकलर
फोटोग्राफर-फोटो खींचनेवाला	स्टूडियो
रील	शेड छाया

(घ)

इलेक्ट्रिक-बिजली	इलेक्ट्रीशियन-बिजली का कारीगर
इलेक्ट्रिक बेल-बिजली की घंटी	कनेक्शन-सम्बन्ध
करेंट-धारा	केस-तार की पेटी
कूलर	टेबुल लैम्प
ट्यूब लाइट	नेगेटिव-ऋण बिजली
थ्री वे प्लग	पाजिटिव-धन बिजली
प्लग	प्वाइण्ट
पावर हाउस-बिजली घर	फैन-पंखा
फ्यूज वायर-रद्दी तार	बल्ब
बटन	बेड स्विच
बैटरी	मीटर
यूनिट	माइक्रोफोन

मशीनरी-यंत्र का कारबार	मिल-कारखाना
लीवर-मशीन का एक अंग	

(१७) व्यापार एवं व्यापारिक संस्थाओं से संबद्ध शब्द—

आडीटर-लेखा परीक्षक	इंकपैड-रंग का डिब्बा
इनकम-आय	इंटरेस्ट-ब्याज
इन्वायस-बीजक	इन्श्योरेंस-बीमा
इम्पोर्ट-आयात	एक्सपोर्ट-निर्यात
एक्सचेंज-विनिमय (विदेशीमुद्रा)	एजेण्ट दलाल
एजेन्सी-दलाली	एलाउंस-भत्ता
एकाउंट-खाता	कस्टमर-ग्राहक
कम्पनी	कैलेंडर
क्वालिटी-किस्म	करेंट एकाउण्ट-चालू खाता
कमीशन-छूट	कैशबुक-आय खाता
कामर्स-वाणिज्य	कैशियर-खजाँची
कैपिटल-पूंजी	कोटा-निश्चित भण्डार
गुड्स-सामान	चेक-रुपये के भुगतान का एक कागज
जर्नल-रोजनामचा	जनरल मर्चेंट-फुटकर सामानों के विक्रेता
ट्रेड-व्यापार	ट्रेड मार्क-व्यापार चिन्ह
टोटल-योग	डिपाजिट-जमा
ड्यूटी-चुंगी	नोट-कागजी मुद्रा
पब्लिक-जनता का	प्राइवेट-निज का
पालिसी	प्रापर्टी-दौलत
प्राफिट लाभ	पास-पोर्ट-पारपत्र
पेटण्ट-निश्चित ढंग की	पेपर-कागजात
पे-वेतन	पैड-नाम पता छपा कागज, रंग का डब्बा
फर्म संस्था	फैक्ट्री-कारखाना
फीगर संख्या, रकम	बजट-आय-व्ययक
ब्लैक मारकेट-चोर बाजार	ब्लाटिंग पेपर-सोख्ता
ब्रांच आफिस-शाखा कार्यालय	बिल्टी रेलवे का कागज
बिजनेस व्यापार	बिलसेक्सन-भुगतान विभाग
बैंक	बैलेंस
बोनस-लाभांश	मनी दौलत
मार्केट बाजार	मेमो-पुर्जा

रेंट-किराया
लेटर-पत्र
कागज़-पुर्ज़ा
शेयर मार्केट-सट्टेबाज़ी का बाज़ार
सेम्पुल-नमूना
सेल-बिक्री
स्टोर-गोदाम
हेड आफिस प्रधान कार्यालय
लाभ-हानि
लेजर-खाता
डायमबोर्ड
शेयर-हिस्सा
स्टाक-भंडार
सप्लाई-पूर्ति
सेल्सटैक्स बिक्रीकर
हेड क्लर्क-बड़े बाबू

(१८) मकान से संबद्ध शब्द—

क्वार्टर-निवास
कोर्टयार्ड-आंगन
गर्डर (गाटर)
गेट-द्वार
डोर-दरवाजा
पलस्तर (प्लास्टर)
फ्लैट
फोर्ट-किला
बाथरूम-स्नानागार
रेंट-किराया
लिंटर
बिल-बिजली
सिमेंट (सिमन्टि)
सीलिंग-छत का निचला हिस्सा
हाउस नम्बर-मकान की संख्या
हैल्थ-स्वास्थ्य
कान्ट्रैक्टर-ठेकेदार
कालोनी-बस्ती
मिरमिट-अरमा
प्लाट (पिलाट) मैदान
पोर्च-बरामदा
फ्लश
बिल्डिंग-इमारत
बेडरूम-शयनागार
रिपेयर मरम्मत
लिफ्ट
वेंटीलेशन-हवादार
स्लीपर-धरन
हाउस-मकान
गेस्टहाउस-अतिथिगृह
हाल

(१९) स्वास्थ्य शरीर रचना बीमारी एवं चिकित्सा से सम्बद्ध शब्द—

(क)

आई-आंख
किडनी-गुर्दा
टूथ-दांत
नर्व-नाड़ी
ब्लड-खून
ईयर-कान
चेस्ट-छाती
फुट-पैर
ब्रेन-मस्तिष्क
यूरीन पेशाब

बोन-हड्डी	लीवर-यकृति
लग्स-फेफड़ा	स्टूल-मल
स्प्रिंग-तिल्ली	हेड सिर
हार्ट दिल	

(ख)

इनफ्लुएंजा	ईचिंग-खुजली
एनीमिया-रक्त की कमी	एब्सेस-भीतरी घाव
कालाजार-लीवर की बीमारी, ज्वर	कालरा-हैजा
कान्स्टीपेशन-कब्जियत	कैंसर-पुराना घाव
कोल्ड-सर्दी	ट्यूमर-सूजन
ट्रकोमा-रोहुआ	टाइफाइड सियादी ज्वर
टी॰ बी॰-तपेदिक	डाइरिया-दस्त
डाइबिटीज-प्रमेह	डिसेन्टरी-दस्त
डिफ्थीरिया-गलारोग	निमोनिया
पाइरिया-दांत का रोग	प्लूरिसी-उरस्तोय
प्लेग-महामारी	फ्रैक्चर-टूटना
फीवर-ज्वर	सेप्टिक
मलेरिया	हार्टट्रबुल-हृदय की बीमारी
लिवर	हाइड्रोसिल-फोता
हार्टपल्पिटेशन-हृदय की धड़कन	हिस्टीरिया-मिर्गी
हार्निया	हेडएक-सिर दर्द

(ग)

आपरेशन-चीरफाड़	आईड्राप-आंख की दवा
इन्जेक्शन-सूई	एक्सरे
एस्प्रो	एम्बिस्ट्री •
एनासिन	एनिमा
एलोपैथ-अंग्रेजी दवा	कन्सलटेशन-परामर्श
कम्पाउंडर (कम्पोटर)	काड लीवर आयल-मछली का तेल
कैप्स्यूल-टिकिया	कैलसियम (टिकिया, सूई)
कैस्टर आयल-रेंडी का तेल	कुनैन-दवा
कोरामिन	कोडोपाइरिन
ग्लूकोज	चेक रोक-थाम

ट्रीटमेंट	टॉनिक-पीने की दवा
टिंचर आयोडिन	टैबलेट-टिकिया
टेरामाइसिन	डॉक्टर
डाइट-पथ्य	डिसपेन्सरी-दवाखाना
डिस्टिल्ड वाटर-आसवित जल	डेन्टल-दांत का
डोज़(ज)-खुराक	थर्मामीटर-तापमापी
नर्स-परिचारिका	नश्तर-फोड़ा चीरना
प्लास्टर-पट्टी	पाउडर-चूर्ण
पेंसिलिन	पेशेन्ट-मरीज़
प्रैक्टिस-चिकित्सा	प्रीकाशन-सावधानी
पोटास	फ़ायल-शीशी बंद दवा
फर्स्टएड-प्राथमिक चिकित्सा	फ़िज़ीशियन-डॉक्टर
फिनैल (फ़ैनाइल)	बर्मी
बर्थ कन्ट्रोल	विटामिन
ब्लडटेस्ट-रक्तजाँच	बोरिक एसिड
ब्लडप्रेशर-रक्तचाप	बैंडेज-पट्टी
बोरिक पाउडर	मेडिकल आफ़िसर
बोन सेटर-हड्डी जोड़ने वाला	मेडिसिन-दवा
मिक्सचर-दवा	मेट्रन-प्रधान नर्स
मेडिकल स्टोर-दवा की दुकान	यूष
मेडिकल प्रैक्टिस-डाक्टरी	पार्मेटमेंट-मलहम
रेड क्रास	वार्ड सुपरिंटेंडेंट-कक्ष प्रधान
वार्ड-कक्ष	स्टूल टेस्ट-मल जाँच
विज़िटर-मरीज़ देखने वाला	स्ट्रेचर
स्ट्रेप्टोमाइसिन	सल्फर-गंधक
सर्जन-शल्यक	सिरप
सिरींज	सिमट
सिफ़ाइलिस	सिस्टर-नर्स
सिविल सर्जन-प्रधान शल्यक	स्टेथिस्कोप (स्टेथिस्कोप)-आला
सैरिडान	सुपरिंट बेड
सैलाइन वाटर-लवणित जल	हाउस सर्जन-शल्य के डॉक्टर
हास्पिटल (अस्पताल)-चिकित्सालय	होमियोपैथ

(२०) चित्रकला से सबद्ध शब्द—

आर्टिस्ट-चित्रकार	आर्ट-चित्र
आयल पेंट तैल चित्र	कार्टून-व्यगचित्र
कलर-रग	ड्राइग-चित्रकला
ग्रीन-हरा	ब्लू-नीला
पोर्टेट-तस्वीर	ब्रश (बुरुस)-तूलिका
ब्लू-ब्लैक-नीला-काला	रेड-लाल
माडेल-प्रतिमा	स्काई कलर-आसमानी रग
वार्निश	

(२१) सगीत, वाद्य, नाटक और सिनेमा से सबद्ध शब्द—

आर्टिस्ट कलाकार	एक्टर-अभिनेता
एक्ट्रेस-अभिनेत्री	एक्स्ट्रा-सहायक अभिनेत्री
कर्टेन परदा	कलर्ड-रगीन (चित्र)
कार्ड निमन्त्रणपत्र	केटोस्ट्राफ-अन्तपरिणाम
कोएक्टर्स-सहायक अभिनेता	गिटार-वाजा
कोरस	ग्रीन रूम-सज्जा भवन
ग्रामोफोन एक वाजा	गेटकीपर-पहरेदार
गेस्ट आर्टिस्ट-अतिथि कलाकार	टाकीज-सिनेमा हाल
ट्यून-ध्वनि	ड्रामा-नाटक
ट्रेजेडी-दुखात	(मोनो) ड्रामा एक अभिनय
(मेनो) ड्रामा एक अभिनय	ड्रामेटिकटर्न-मोड
ड्रामेटिक पिच प्रभाव	डायस-मच
डास-नृत्य	डाइलाग-सवाद
डाइरेक्टर-निर्देशक	प्राम्प्टर-पार्श्व सकेतक
ड्रेस वेश	पोर्सोनियम-झालर
पियानो एक वाजा	फिल्म तस्वीर
	फोकसिंगग्लास-प्रकाश का शीशा
फोकस-रगीन प्रकाश	(कार्बन) फोकस
वाइस्कोप-तस्वीर	विगुल-तुरही
वैंड वाजा	म्यूजिक सगीत
म्यूजियम-अजायव घर	म्यूजिसियन-सगीतज्ञ
मिस्मरेज्म जादू	मीटर सिनेमा-रील की माप

मेकअप-सजावट	रील-सिनेमा का चित्र
लाइट-प्रकाश	लाइट इफेक्ट-प्रकाश का चमत्कार
वायलिन-एक बाजा	विलेन-खलनायक
विंग-पार्श्व	शो-दृश्य
सैक्सोफोन-बाजा वाद्य	स्टार-सितारा तारिका
स्क्रिप्ट-नाटक की प्रतिलिपि	स्टूडियो-सिनेमा या चित्र निर्माण-केंद्र
स्टेज-रंगमंच	स्टेज क्राफ्ट-रंगमंच कला
स्टेज टेकनीक-कौशल	स्क्रीन-परदा
स्पीच-वक्तव्य	सर्कस
सांग-गीत	सिनेमा
हारमोनियम-एक बाजा	हाल-दर्शक कक्ष
हीरो-नायक	हिरोइन-नायिका

(२२) प्रशंसा और निंदा से सम्बद्ध शब्द—

(क)

गुड-अच्छा	नाइस-सुन्दर
फर्स्टक्लास-बहुत अच्छा	ब्यूटीफुल-सुंदर
लार्ड (लाट)	

(ख)

स्टुपिड-मूर्ख	डैम्फूल-मूर्ख
नानसेंस-नासमझ, नादान	फूल-मूर्ख
रैस्कल-पाजी गुंडा	वैगाबाड-आवारा
सेंसलेस भ्रष्ट बुद्धि	

(२३) व्यक्तियों और बस्तियों के नाम में अंग्रेजी शब्द—

(क)

कर्नल सिंह	जर्नल सिंह
कप्तान (लेफ्टिनेंट) सिंह	मुस्तालिन सिंह
बालिस्टर पांडेय	बेबी

(ख)

मार्टनगंज	डेहरी-आन-सोन
कूर्टकोला	बनारस कैंट (वाराणसी कैंट)
बैरकपुर	मान्टगोमरी

मैकमहोनरेखा
रावर्ट् सगज
रिहड-वाघ

(२४) राजनीति से सम्बद्ध शब्द—

अपोजीशन-विरोधी दल
इलेक्शन-चुनाव
एजेंट-अभिकर्ता
कनवेंसिग-प्रचार
कलीग-सहकर्मी
कम्युनिस्ट-साम्यवादी
कम्युनिस्टपार्टी-साम्यवादी दल
कांग्रेस-महासंघ
कांग्रेस सभा
कामरेड-साथी
गजट-राजपत्र
ट्रेड्यूनियन-मजदूर संघ
डिक्टेटर-तानाशाह
डिमोक्रेसी-जनतंत्र
डिबेट-बहस
प्लेबिसाइट-जनमतसंग्रह
डेलीगेट-प्रतिनिधि
पासपोर्ट-पारपत्र
पब्लिक ओपिनियन-जनमत
पार्टी-दल
पोलिंग मतदान
पोलिंग स्टेशन-मतदान केंद्र
पोलिंग-अफसर-मतदान अधिकारी
पोलिंग एजेंट-मतदान अभिकर्ता
फासिस्ट-तानाशाहवादी
वैलेट-मत
वैलट-पेपर-मतपत्र
वुर्जुआ-रूढिवादी
वूथ-मतदान कक्ष
मार्क्सिजम-मार्क्सवाद
माइनारिटी-अल्पमत
मीटिंग-सभा
मेम्बर-सदस्य
मेजारिटी-बहुमत
यूनियन संघ
रेवोलूशन-क्रांति
रेवोलूशनरी-क्रांतिकारी
लीडर नेता
वोट-मत
वोटरलिस्ट-मतदाता सूची
स्पीकर-वक्ता
स्ट्राइक-हड़ताल
सपोर्ट-समर्थन
स्पीच-भाषण
सोसलिस्ट-समाजवादी
सेसन-सत्र, संसद की बैठक
सोसलिज्म-समाजवाद

(२५) धातु और सिक्के से सम्बद्ध शब्द—

आयरन-लोहा
आयरन कंपनी-लोहे की कंपनी
एल्यूमीनियम (अलमुनिया)
कापर-तांबा
ग्लास-शीशा
गिनी (गिन्नी)
गोल्ड-सोना
(रोल्ड) गोल्ड-नकली सोना
टिन
डालर-अमेरिकी सिक्का

प्लेटिनम-एक धातु	पेंस-एक सिक्का
पेनी	प्लास्टिक
पेट्रोल	पौंड-इंग्लैंड का एक सिक्का
माइका-अभरक	रूबल-रूस का सिक्का
मोबिल	वारनिश
शिलिंग-एक सिक्का	स्टील फौलाद
स्टर्लिंग-पौंड	सल्फर-गंधक
सिल्वर-चाँदी	सेंट-एक सिक्का

(२१) माप से सम्बद्ध शब्द—

अप्रैल	अगस्त
अक्तूबर	आवर-घंटा
इंच	एकड़
औंस	कम्पास
किलोवाट	किलोमीटर
किलोग्राम	कुण्टल (क्विन्टल)-१ किलोग्राम
क्यूबिक फुट	कैरेट
कोलोरीज	ग्राम
गैलन	जनवरी
जुलाई	जून
ज्यामेट्री बाक्स	टन
ट्यूजडे-मंगल	डिग्री-अंश
डेसिबल	डेका मीटर
डेसीमीटर	डेसी लीटर
ड्राम	थर्सडे-गुरुवार
थर्ड-तीसरा	थर्मल (यूनिट)-ताप
दिसम्बर	नवम्बर
पौंड-रुक्का	पौंड-एक सिक्का
फर्लांग	फर्स्ट-प्रथम
फरवरी	फारेनहाइट-ताप की माप
फ्राइडे-शुक्रवार	फीट
फुट	मई
मन्थली-मासिक	मण्डे-सोमवार

मार्च
मिलीमीटर
मेगाटन
लीटर
वेन्जडे बुधवार
सितम्बर
सेकड
सेंटीग्रेंड-ताप की नाप
सेंटीलीटर
सैटरडे-शनिवार
स्केल-माप
हैक्टोमीटर

मिनट
मिली लीटर
रिम
वीक-हफ्ता
सन्डे-रविवार
सिंगल-एक
सेंट
सेंटीमीटर
सेंट्स्क्वायर
स्क्वायर-वर्ग
हंडर वेट

(२७) विज्ञान से सम्बद्ध शब्द—

(क) भौतिक विज्ञान—

एटम-परमाणु
एंगेल-कोण
एमीटर धारा मापी
कन्स्ट्रक्शन-रचना
काकेव लेन्स-अवतल ताल
कार्क (काग)-ढक्कन
गैस
ट्रांसफार्मर
डिग्री-माप
ता(चा)रकोल-कोयला, अलकतरा
थ्योरम-साध्य
निकल्सन हाइड्रोमीटर-उपकरण
पाउडर चूर्ण
पेण्डुलम दोलक
फिजिक्स-भौतिक विज्ञान
फिजिकल बैलेंस-भौतिकतुला
वर्नियर स्केल-माप
बीकन-प्रकाश स्तम्भ

एटामिक साइंस-परमाणु विज्ञान
कप-कटोरी
काकेवमिरर-अवतल दर्पण
कानवेक्स मिरर-उत्तल दर्पण
ग्लास स्लेव-शीशा
ट्रांसपरेंट-पारदर्शक
टेम्परेचर-ताप
डैनियल सेल-कोप
थर्मस फ्लास्क
थर्मामीटर-तापमापी
प्राबलम-समस्या
प्रिज्म-त्रिपारदर्शक
प्रोटीन-तत्व
पोल-ध्रुव
फ्रीक्वेन्सी-आवृत्ति
फीगर चित्र
बीकर-पात्र
बैरोमीटर-वायुदाबमापी

लेंस
मीटर मिन-उपकरण
लाइट प्रकाश
लेन्स-ताल
वोल्ट-इकाई
स्क्रू गेज-पेंच प्रमापक
स्पेस साइन्स-अन्तरिक्ष विज्ञान
सेल-घटक
सेन्टीग्रेड-इकाई

मिरर-दर्पण
रेफ्लेक्शन-परावर्तन
रीएक्टर-भट्ठी
लेबोरेटरी-प्रयोगशाला
वार्निश
स्प्रिंग
स्प्रिंग बैलेंस-कमानीदार तुला
(ड्राई) सेल-शुष्क कोष
हीट-ताप

(ख) रसायन विज्ञान—

अल्कोहल
आर्गेनिक केमिस्ट्री
ईथर
एसिड-अम्ल
एमोनिया
कार्बन डाइआक्साइड
क्लोरीन
टेस्टट्यूब परखनली
नाइट्रेट
पोटेशियम
प्रोटीन
सल्फाइड
सल्फर-डाइ-आक्साइड
सोडियम आक्साइड
हाइड्रोक्लोरिक एसिड गैस

आक्सीजन-ओषजन
इवेपोरेशन-वाष्पीकरण
ईस्टर
एसिड गैस-अम्ल गैस
कार्बन
कार्बोहाइड्रेट
केमिस्ट्री
न्यूक्लियस
नाइट्रोजन
पोटाश
सल्फर-डाइ-आक्साइड
सल्फाइट
सल्फेट
सोडियम
हाइड्रोजन

(ग) वनस्पति विज्ञान एवं जीव विज्ञान—

औइस-बधिया
जियालाजी-भूगर्भ विज्ञान
टिश्यू-तंतु
ट्यूब बेबी-ट्यूब का प्रसव
डाइनेमो

जूलाजी-जंतु विज्ञान
जियोफिजिक्स-भू-भौतिकी
टेस्ट-स्वाद
टेंस-प्रवृत्ति
थ्योरी-सिद्धांत

नर्वस-स्नायु
ब्राच शाखा
बैंटरी
सेल-कोष
प्रेक्टिकल-प्रयोगात्मक
ब्रेन-मस्तिष्क
बोटेनी-वनस्पति विज्ञान
स्टैंड-उपकरण

(घ) रेडियो

एरियल-हवाई तार
ट्रासमीटर-प्रेषक
टेपरिकार्ड
पोल-स्तम्भ
मैगनेट-चुम्बक
मैगनेटिज्म चुम्बकत्व
रिसीवर-सग्राहक
रेडियो स्टेशन
रेडियो एक्टिव-रेडियो विकिरण
रेडियो हाउस
साउण्ड वाक्स-ध्वनि कोष
एनाउन्सर उद्घोषक
ट्राजिस्टर
टेप
टेलीविजन
ब्राडकास्ट
रिकार्ड अभिलेख
रेडियो
रेडियो फोटो
रेडियो न्यूज
साउण्ड-ध्वनि

(२८) विविध शब्द—

अटेलियन-इटलीवासी
आइलैण्ड-टापू
इटरव्यू-साक्षात्
ईशू-सतान, देना
कूप-क्राति
कोल-कोयला
क्रेन-यत्र
कोका
ग्रेड
जर्मनी
जेन्टलमैन-सभ्य
जोकर-विदूषक
ट्राम्वे
डबल-दूना
डिसमिस-समाप्त
अमरीका
इटली
इलाउस-भत्ता
एडीशन-सस्करण
कम्युनिज्म-साम्यवाद
कूपन-पुर्जा
चाज-उत्तरदायित्व, दोष
चिट-पुरजा
जर्मन
जेन्ट-पुरुष
टाउन-नगर
टूर-यात्रा
टेम (टाइम)
डिमाई-आकार
ड्यूटी-कर्तव्य

विकास हो सके। अंग्रेजी जनसमुदाय की घनिष्ठता ज्यों-ज्यों कम होगी और अंग्रेजी वातावरण का प्रभाव ज्यों-ज्यों देश से मिटेगा तथा ज्यों-ज्यों स्थानीय संस्कृति का प्रभाव बढ़ेगा अंग्रेजी शब्दों के अर्थपरिवर्तन की संभावना भी उतनी ही बढ़ेगी। शब्दों के अर्थ में परिवर्तन का आधार बताते हुए डॉ० बाबूराम सक्सेना ने लिखा है कि 'प्रत्येक व्यक्ति एक ही शब्द को ठीक-ठीक उसी अर्थ में नहीं लेता जिसमें दूसरा, और जितनी ही एक जनसमुदाय की घनिष्ठता दूसरे से कम होती है, उतनी ही अर्थ के अन्तर के बढ़ने की संभावना रहती है।'[1] भारत में ऐसी परिस्थिति के अभाव के फलस्वरूप, और साथ ही सामान्य जनता द्वारा व्यापक रूप में अंग्रेजी शब्दों के अपनी परिस्थितियों एवं प्रसंगों में प्रयोग की कमी के फलस्वरूप इन शब्दों में अर्थपरिवर्तन लगभग नहीं आ हुआ है।

जिन शब्दों में अर्थपरिवर्तन हो जाता है वे भाषा में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं करते, क्योंकि उनकी संख्या महत्व की दृष्टि से बहुत कम होती है। 'इस प्रकार के निश्चित शब्द एवं अभिव्यक्तियाँ तथा अर्थपरिवर्तन के अन्य उदाहरण भाषा में इतने कम होते हैं कि वे समस्त भाषा-तत्व का मुश्किल से एक प्रतिशत हो पाते हैं।'[2] एक निश्चित प्रक्रिया से गुजरने पर ही इस प्रकार के देशी या विदेशी शब्दों में अर्थपरिवर्तन सम्भव होता है। जब तक यह प्रक्रिया, जो लंबी होने के साथ संयोगवश भी हो सकती है, पूर्ण नहीं होगी, शब्द के अर्थ में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सकता। डॉ० हरदेव बाहरी ने लिखा है कि 'हम अर्थ के उसी भाग को ग्रहण करते हैं, जो एक या अन्य कारण से हमारे मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है और बहुधा अर्थ का यह भाग शब्द के ठीक भावार्थ का गौण या आकस्मिक अंग मात्र होता है। हम आलस्य-वश उसके ठीक भावार्थ को नहीं समझते और दूसरे भावार्थ का शब्द पर आरोप कर देते हैं, जो पहले की छाया अथवा अवशेष होता है। हम अर्थ का अनुमान करते हैं शब्द-कोश में ढूँढने की अपेक्षा यह सरल होता है।'[3] जनता, खासकर सामान्य जनता, शब्द के कोशगत अर्थ की अधिक चिंता नहीं करती, उसके लिये सापेक्षतया, कोशगत नहीं, प्रयोगगत अर्थ ही ग्राह्य होता है। व्यक्तिगत अनुभव की परिवर्तनशीलता का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अनुभव की व्यापकता, संकोच एवं विविधता के साथ शब्द के अर्थ में विकास

1—सा० भा० वि०, पृ० ११७।
2—मार्क्सिज्म एंड प्रोब्लम्स ऑफ़ लिंग्विस्टिक्स, पृ० ३५, जे० स्टालिन।
3—हिंदी सिमैंटिक्स, पृ० १८५।

या परिवर्तन की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी परिस्थिति में शब्द का मौलिक अर्थ या तो बढ़ जाता है या कम हो जाता है। 'हमारी भाषा में विदेशी शब्दों का साम्य हमारे इसी दृष्टिकोण का स्पष्ट परिणाम होता है।'[1] अल्पज्ञान के कारण सभी नये शब्द किसी व्यक्ति के लिये विदेशी शब्द हो सकते हैं किंतु विदेशी शब्द वास्तव में वे ही हैं जो सबके लिये खासकर एक विशेष भाषा के बोलने वालों के लिए अपरिचित और नए हों तथा उसी भाषा-परिवार की या अन्य परिवार की दूसरी भाषा से सम्बन्धित हों। ऐसे शब्दों के अर्थ में परिवर्तन समय और अनुभवसापेक्ष होता है। अस्तु, जैसा पहले लिखा जा चुका है हिंदी में आगत अंग्रेज़ी शब्दों में बहुत कम अर्थ परिवर्तन हुआ है। भविष्य में ही इस कार्य के पूरा होने की सम्भावना है।

अंग्रेज़ी के कुछ शब्द जिनमें भिन्न दिशाओं में अर्थपरिवर्तन हुआ है निम्नलिखित हैं —

(१) अर्थविस्तार—इन शब्दों का अर्थ अपने मूल अंग्रेज़ी अर्थ से अधिक हो गया है। निम्नलिखित शब्दों में अंग्रेज़ी में ही इस ढंग का अर्थविस्तार हो गया था और इसी विस्तृत अर्थ में ये शब्द हिंदी में चलते हैं —

शब्द	अंग्रेज़ी अर्थ	अधिक हिंदी अर्थ
कलक्टर	संग्रहकर्ता लगान का अधिकारी	जिलाधीश
कापी	अनुकरण	पुस्तिका
टिकट	रेलवे टिकट (स्टाप नहीं)	पोस्ट कचहरी के टिकट
पेपर	कागज	अखबार प्रश्नपत्र
बटन	कपड़े की बटन	बिजली की बटन (स्विच)

(२) अर्थ संकोच—जिन शब्दों का व्यापक से संकुचित अथवा सामान्य से विशिष्ट अर्थ में प्रयोग होने लगा है—

शब्द	अंग्रेज़ी अर्थ	संकुचित अर्थ
ग्लास	शीशा शीशे का पात्र	पात्र
गैस	रासायनिक तत्व	बत्ती
कार्ड	चौपता गत्ते का पत्र	पते का पत्र
तिजोरी (ट्रेज़री)	कोष	रुपये की आलमारी

१—वही पृ० १९।

शब्द	अंग्रेजी अर्थ	संकुचित अर्थ
फर्म	व्यापारिक संस्थान, सुदृढ़	व्यापारिक संस्थान
फूट	पैर, माप–१२ इंच	१२ इंच का माप
बैरंग (बीयरिंग)	ले जाना	बिना टिकट पत्र
मोटर	गतिदायी यंत्र	हवागाड़ी
रेस	कबीला, दौड़	दौड़
स्प्रिंग	कूदना, वसंत, आरंभ, कमानी	कमानी
स्प्रिट	द्रव, आत्मा, जोश	द्रव

(३) अर्थादेश—इन शब्दों का मौलिक अर्थ से भिन्न दूसरा अर्थ प्रचलित हो गया है—

शब्द	अंग्रेजी अर्थ	हिंदी अर्थ
कटपीस	कटा हुआ टुकड़ा	टुकड़ों के रूपमें बिकनेवाला कपड़ा
कांग्रेस	सभा, महासंघ	एक राजनीतिक दल
कामरेड	साथी, सहकर्मी	कम्युनिस्टों का संबोधन
टिन	एक धातु	पात्र
पैसेंजर	यात्री	हर स्टेशन पर रुकनेवाली गाड़ी
बटरिंग	मक्खन निकालना	चाटुकारिता
ब्लैक	काला	चोर बाजारी
रेल	लोहे की पटरी	गाड़ी (ट्रेन)
लैस	फीता	सुसज्जित
लीग	सभा, संघ	मुसलिम संस्था
सेपरेटा (सेपरेटर)	पृथक्कर्ता	मक्खनहीन दूध

७—मुहावरे और कहावतें

अ—मुहावरे

(१) आरम्भ

एक भाषा से दूसरी भाषा में मुहावरों का आदान-प्रदान अल्पावधि में नहीं होता। इसी प्रकार विदेशी शब्दों के आधार पर न तो शीघ्र नए मुहावरे बनाए जाते हैं और न विदेशी मुहावरों का भाषा में अनुवाद ही होता है। मुहावरों में हमारे सैकड़ों वर्षों के अनमोल तजुर्बों का निचोड़ होता है। भाषा में विदेशी शब्दों और मुहावरों की स्वीकृति उनकी उपयोगिता, लोकप्रियता

एवं अर्थ की व्यापकता पर निर्भर है। हिंदी मुहावरा-कोश से फारसी मास्तीन आवाज कलेजा और दिल जैसे शब्दों और उनसे बने या अनूदित मुहावरों को हटाना एक कठिन कार्य है। 'नक्कारखाने में तूती की आवाज' जैसे मुहावरे से न तो विदेशी मुहावरे के प्रभाव को ही हटाया जा सकता है और न विदेशी भाषा के नक्कारखाना तूती तथा आवाज जैसे शब्दों को ही। इसी प्रकार एक मुहावरा है 'लाट साहबी करना' इसमें एक शब्द अंग्रेजी का एक अरबी का और एक हिंदी का है। मुहावरे में तीनों का स्थान सुरक्षित है। किसी शब्द को हटाया बदला नहीं जा सकता। मुहावरे की लोकप्रियता और उसके अर्थ की व्यापकता पर चोट पहुँचाये बिना किसी विदेशी शब्द के पर्यायवाची को इस्तेमाल भी नहीं किया जा सकता।

फारसी और हिंदी का सम्पर्क लगभग आठ सौ वर्षों से ज्यादा का है जब कि अंग्रेजी और हिंदी का सम्पर्क लगभग डेढ़ सौ वर्षों का। फारसी मुहावरे और उनके प्रयोग हिंदी में दूध-पानी की तरह मिल गये हैं। मुहावरे की दृष्टि से अंग्रेजी भी फारसी की भांति एक धनी भाषा है। हिंदी का समस्त आधुनिक साहित्य अंग्रेजी के संपर्क में और उसके प्रभाव में निर्मित हुआ है। अंग्रेजी के अनेक शब्दों एवं अभिव्यक्तियों को हिंदी में लोकप्रियता भी प्राप्त हो गई है। फलस्वरूप कुछ अंग्रेजी शब्द हिंदी मुहावरों में भी आने लगे हैं और उनसे भी अधिक अंग्रेजी मुहावरों का हिंदी में अनुवाद प्रचलित हो गया है किन्तु फारसी की तुलना में यह संख्या बहुत कम है और यह अनुवाद फारसी की भांति हिंदी में पूर्णतः स्वाभाविक भी नहीं हो सका है। डॉ॰ बाहरी ने लिखा है कि 'यह ध्यान देने की बात है कि जहाँ हिंदी में स्वीकृत फारसी के मुहावरे पचा लिये गये हैं और स्वाभाविक हो गये हैं वहीं अंग्रेजी के अनुवाद अभी भी विदेशी अटपटे और बेमेल हैं।'[1]

हिंदी साहित्य में अंग्रेजी में सोचने और अंग्रेजी ढंग से लिखने का जो क्रम चल रहा है उससे अंग्रेजी मुहावरों और अभिव्यक्तियों के विदेशीपन की समस्या के शीघ्र ही हल होने की संभावना भी क्षीण पड़ती है। चूँकि वर्षों से हमारी आदत अंग्रेजी पढ़ने की रही है और हमने ज्ञान भी ज्यादातर अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त किया है, इसलिये जब हम हिंदी में कुछ लिखने बैठते हैं तो अनजाने ही हिंदी वाक्य या अभिव्यक्तियाँ अंग्रेजी के साँचे में ढलती रहती हैं और अंग्रेजी मुहावरे तथा शब्द आँखों के सामने नाचने लगते हैं। यद्यपि आज की भाषा में मुहावरों का प्रयोग दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है तब भी

१—वही पृ॰ २६४।

इस बात की सभावना है कि अग्रेजी मुहावरो के अनुवादो की सख्या हिंदी मे बढे और अग्रेजी शब्दो के आधार पर नए हिंदी मुहावरे भी बनाए जाएँ। अग्रेजी के माध्यम से लैटिन, फ्रेंच और ग्रीक जैसी यूरोपीय भाषाओं के मुहावरे भी हिंदी में आ गए हैं। 'हमें इस सम्मिश्रण से प्रसन्नता ही है, दुःख या क्रोध नही, क्योकि मनुष्य की वर्तमान मानसिक और बौद्धिक परिस्थितियो में राष्ट्र-भाषा बनने का दावा करने वाली कोई भी भाषा बहुत लम्बे समय तक बाह्य प्रभाव से अछूती रह ही नही सकती।'[१] हिंदी का अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क बढ़ने तथा हिंदी में विज्ञान की उच्च शिक्षा की व्यवस्था होने से अनेक नए मुहावरे भाषा मे बढ जाएँगे। 'भारत का नैपोलियन' और 'भारत का शेक्सपीयर' के साथ 'भारत का गागारिन', 'भारत के आर्मस्ट्राग' और 'भारत की तेरेश्कोवा' जैसे मुहावरे भी हिंदी में प्रचलित हो जाएँगे। बोलचाल की भाषा में भी विदेशी भाषाओ का रग दिखाई पडता है। 'लोफरिज्म करना' और 'पार्टीबदी (पार्टीबाजी) करना' बोलचाल के मुहावरे हैं। सिनेमा और राजनीति के प्रभाव से 'हीरो बनना' और 'लीडरी करना' भी सामान्य मुहावरे बन गए हैं।

(२) अग्रेजी मुहावरो का प्रभाव

विदेशी मुहावरो की सख्या और उनके प्रभाव के बारे में डॉ० गुप्त ने लिखा है कि 'फारसी के बाद यदि इतना अधिक प्रभाव किसी और विदेशी भाषा का हमारे ऊपर पडा है, तो वह अग्रेजी है।'[२] अग्रेजी का प्रभाव अभी शहरों, बाजारो एव शिक्षित लोगो तक सीमित है, फिर भी सामान्य जनता तक धीरे-धीरे पहुँच रहा है।

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे मुहावरे होते हैं जो अन्य भाषाओ के मुहावरो के समान अर्थ रखते हैं। ऐसे मुहावरों के लिए यह निर्णय करना कि कौन किससे प्रभावित है, एक कठिन कार्य है। 'दो भाषाओ में दो समानार्थक मुहावरो को देखकर हम पहले तो यही नही कह सकते कि उनमें से कोई भी एक दूसरे का अनुवाद है, फिर कौन किसका अनुवाद है, यह कहना तो और भी कठिन है।'[३] अग्रेजी का मुहावरा है 'एपल् आफ् एन आई' हिंदी में इसके समकक्ष मुहावरा है 'आख की पुतली', इसी प्रकार अग्रेजी का दूसरा मुहावरा

१—मुहावरा मीमासा (प्रस्तावना), पृ० ९, डॉ० ओमप्रकाश गुप्त।

२—वही, पृ० २२६।

३—वही, पृ० २२७।

है 'मेनी मैन मेनी हेड्स' और उसके समकक्ष संस्कृत का प्रचलित मुहावरा है 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना'—यहां किसी एक का अनुवाद और प्रभाव माना ही नहीं जा सकता। क्योंकि एक भाव के लिए समानार्थक अभिव्यक्तियाँ अनेक भाषाओं में एक साथ भी बनती हैं। अंग्रेज़ी के अन्य मुहावरे हैं—शाट टु बेट, पास ओवर, सपरार दी प्लेट टु ब्लो, कम्स बोल टु्म्पेट क्रोकोडाइल्स टीयर्स, ह्वाइट माइट और ओपेन सीक्रेट। इनका क्रमशः हिंदी प्रयोग इस प्रकार चलता है—पैरों तले घास न उगने देना, अपना ढोल बजाना, नक्रमु (घड़ियाली आँसू) गिराना सफ़ेद झूठ और खुला रहस्य (सत्य)। ये मुहावरे स्पष्ट ही अंग्रेज़ी के अनुवाद लगते हैं। कुछ मुहावरों में अंग्रेज़ी के शब्द भी प्रचलित हो गये हैं, यथा अप-टू-डेट होना, मूड ऑफ़ होना (-करना), टिप-टाप रहना, एर्जेट होना, आउट ऑफ़ डेट होना, रिकार्ड तोड़ना आदि। 'सम थिंग इज़ बेटर दैन नथिंग' भी अंग्रेज़ी का एक लोकप्रिय मुहावरा है, जिसे अंग्रेज़ी-दां हिंदी भाषा-भाषी हिंदी में भी प्रयोग करते हैं। अंग्रेज़ी मुहावरों का फ़ारसी की भाँति हिंदी में न तो किसी क्रम से आयात ही हुआ है और न व्यवस्थित रूप से अनुवाद ही। वास्तव में अंग्रेज़ी मुहावरों का स्फुट रूप में हिंदी मुहावरों पर प्रभाव पड़ा है अथवा अंग्रेज़ी शब्दों के आधार पर नए हिंदी मुहावरे बनाए गए हैं।

(क) कुछ अंग्रेज़ी मुहावरे और प्रचलित हिंदी अनुवाद—

१	अन्डर दी क्लाउड ऑफ़ नीथ	दुख के बादल घिरना
२	अण्डर वन्स नोज़	नाक के नीचे
३	अन हर्ड ऑफ़	अभूतपूर्व
४	अप्स एंड डाउन्स	ऊँच-नीच समझना—होना
५	आउण्डड वैनिटी	आहत गर्व
६	ऑन ए लार्ज स्केल	बड़े पैमाने पर
७	आउट ऑफ़ क्वेश्चन	प्रश्न न उठना
८	आउट ऑफ़ वेए	रास्ते से अलग
९	इन ब्लैक एंड ह्वाइट	स्याह-सफ़ेद करना
१०	इन दी टीथ ऑफ़ अपोज़ीशन	दुश्मन के घर में डेरा डालना
११	इन ब्राड डे लाइट	दिन दहाड़े दिन की रोशनी में
१२	इन दी निक ऑफ़ टाइम	ऐन मौके पर
१३	इन दी टि्विंकलिंग ऑफ़ एन आई	पलक गिरते ही ... मारती ही
१४	ए हेयर्स ब्रेड्थ एस्केप	बाल-बाल बचना
१५	ए राइट हैंड मैन	दाहिना हाथ होना
१६	ए रोप ऑफ़ सैंड	धूल की रस्सी बटना

१७	ए० बी० सी० ऑफ् ए थिंग	क ख जानना
१८	ए बुल इन चाइना शॉप	सजी दूकान में साड होना
१९	ए बर्ड्स आई व्यू	चिड़िया की नजर
२०	ए क्राइ इन वाइल्डरनेस	अरण्यरोदन करना, जंगल में रोना
२१	ए हार्ट टु हार्ट टॉक	दिल की सुनना, कहना
२२	ए क्रोकोडाइल्स टीयर	घडियाली आँसू गिराना
२३	ऐट दी एलेवेंथ आवर	अन्तिम घड़ी
२४	ओपेन सिक्रेट	खुला भेद, रहस्य
२५	ओपेन हार्ट	खुला दिल
२६	क्लोज सेफ	बाल-बाल बचना
२७	गोल्डेन ड्रीम	स्वर्णिम स्वप्न
२८	गोल्डेन लेटर्स	स्वर्णाक्षरों में
२९	गोल्डेन एज	स्वर्णयुग
३०	चिप्स ऑफ दी सेम ब्लाक	एक ही थैली के चट्टे-बट्टे
३१	टिट फॉर टैट	जैसे को तैसा
३२	टु प्लेय् ए डबल गेम	दोहरी चाल चलना
३३	टु पोक वन्स नोज	नाक-भौं सिकोड़ना
३४	टु प्लाउ दी सैंड	बालू में खेती करना
३५	टु सेव वन्स स्किन	सूरत बचाना
३६	टु एड फुएल टु फायर	आग में आहुति देना
३७	टु टेक टु वन्स हील	सर पर पैर रखकर भागना
३८	टु थ्रो मड	कीचड़ उछालना
३९	टु ज्वाइन हैन्ड्स विथ	हाथ बटाना
४०	टु लर्न बाइ हार्ट	दिल से याद करना
४१	टु टर्न ओवर ए न्यू लीफ्	नई पर्त बदलना
४२	टु ब्लो वन्स वोन ट्रम्पेट	अपना ढोल बजाना
४३	टु स्पर ए विलिंग हार्स	चलते घोड़े को एड़ मारना
४४	टु गो अवे विथ वन्स टेल विटविन ह्विज लेग्ज	दुम दबाकर भागना
४५	टु स्प्लिट हेयर्स	बाल की खाल निकालना
४६	टु स्टैंड लाइक ए पोर्ट	ठूंठ की तरह खड़ा होना
४७	टु फॉल् ऑन् वन्स फेस	मुँह के बल गिरना
४८	टु गो लाइक ए शॉट (ऐरो)	तीर की तरह जाना

८२	विथिन दी वाल्स	चहारदीवारी के अन्दर
८३	स्टार्म इन दी टी कप	चाय के प्याले में तूफान
८४	हरकुलियन टास्क	दुस्तर कार्य
८५	हाफ हार्टेड	आधे दिल से
८६	हार्ट एंड सोल	दिल-दिमाग लगाना
८७	ह्वाइट एलीफेंट	सफेद हाथी
८८	ह्वाइट लाइ	सफेद झूठ
८९	हिमालयन ब्लन्डर	भारी भूल
९०	हैंड टु माउथ	रोज कमाना रोज खाना (गुजरबसर)
९१	हैंड इन हैंड	हाथ में हाथ
९२	होल हार्टेड	पूरे दिल से
९३	ह्यू एंड क्राइ	चिल्ल-पों मचाना

(ख) हिंदी में प्रचलित अंग्रेजी मुहावरे—

१	आउट ऑफ़ डेट	पुराना
२	ईडियट दी ग्रेट	मूर्ख
३	सी ऑफ़	विदाई करना
४	स्लो बट श्योर	धीमा पर नियमित
५	टा टा	पुर्नमिलन का प्रतीक, विदाई
६	टिप टाप	दुरुस्त
७	सेंट-पर-सेंट	शतप्रतिशत
८	हिप-हिप-हुर्रा	हर्षध्वनि
९	वक-अप	शाबास
१०	फ़िफ्टी-फ़िफ्टी	आधे-आध

(ग) अंग्रेजी शब्दों से बने मुहावरे—

१	अन्डर ग्राउंड होना	फरार होना
२	अफलातूं होना	श्रेष्ठ बनना, गर्व करना
३	एजेंट होना	दलाली करना
४	कन्ट्रोल करना	नियन्त्रित करना
५	कमान पर जाना	लड़ाई पर जाना
६	एक इन्च भी	थोड़ा भी
७	जारशाही करना	अत्याचार करना
८	टिकट कटाना	जाना

आ—कहावतें

कहावतो (लोकोक्ति) एव मुहावरो में पहला अन्तर आकार का होता है। मुहावरे का आकार लोकोक्ति की अपेक्षा छोटा होता है। मुहावरा खडवाक्य होता है और कहावत एक प्रकार से पूर्णवाक्य। 'अगरेजी और हिंदी में प्राय सर्वत्र लोकोक्ति को वाक्य और मुहावरे को खड-वाक्य अथवा पद माना गया है।'[1] इसके अतिरिक्त लोकोक्तियाँ अनुभव के आधार पर—प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर—गढी जाती हैं। उनमें जीवन की एक सत्यकथा अथवा मार्मिक घटना अन्तर्भूत होती है। लोकोक्तियो में जीवन की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति होती है।[2] ह्वेयर देयर इज विल देयर इज वेय्—जहाँ चाह वहाँ राह—जैसी लोकोक्तियों का प्रयोग जीवन को एक दिशा देने के लिये किया जाता है। 'लोकोक्तियो में उद्देश्य और विधेय दोनो का पूर्ण विधान रहता है, उनका अर्थ समझने के लिए किसी अन्य साधन की आवश्यकता नही होती।'[3] मुहावरो का अर्थ (व्यग्यार्थ) वाक्य में प्रयोग से ही स्पष्ट होता है। मुहावरों का प्रयोजन शैली के चमत्कार या प्रभाव तक सीमित है। कहावतो (लोकोक्तियों) का उद्देश्य किसी मत या सिद्धात का खडन-मडन तथा उसकी स्थापना भी है। कहावतें इसीलिए अपने में पूर्ण एव स्वयसिद्ध होती हैं।

अग्रेजी मुहावरों की भाँति कहावतो ने भी हिंदी को प्रभावित किया है। कुछ उदाहरण—

१ इट् इज वर्क दैट मेक्स ए वर्क-मैन—काम को काम सिखाता है
२ ईवेन् डेथ कैन नॉट बी हैड फॉर दी आस्किंग—माँगे मुँह मौत भी नही मिलती
३ टु किल टू वर्ड्स इन वन स्टोन—एक पत्थर से दो चिडिया मारना
४ ब्यूटी इज टु सी नॉट टू टॅच्—सौंदर्य छूने के लिए नही देखने के लिए है
५ यूनियन इज स्ट्रेंथ—एकता में बल है
६ समथिंग इज वेटर दैन नथिंग—नही से थोडा अच्छा
७ हिट दी आयरन ह्वेन इट इज हॉट—गरम लोहे को ही पीटना चाहिए
८ ह्वेन देयर इज विल् देयर इज वेय्—जहाँ चाह वहा राह।

• •

१—वही, पृ० ३७०।
२—देखिए—फारसी कहावतों का प्रभाव, पृ० २१७।
३—मुहावरा मीमांसा, पृ० ३७१, डॉ० ओमप्रकाश गुप्त।

उपसंहार

यह एक संयोग की बात है कि हिंदी का प्रथम व्याकरण एक मुसलमान मिर्जा खां ने 'तुहफ़त्-उल्-हिंद' के नाम से लिखा जो हिंदी सीखने वाले मुसलमानों को दृष्टि में रखकर लिखा गया। उसी प्रकार एक यूरोपवासी ने हिंदुस्तानी का पहला व्याकरण लिखा जो यूरोपीय आगन्तुकों को दृष्टि में रखकर लिखा गया। 'औरंगज़ेब के शासन काल (१७ ४–१७६४ वि) में मिर्जा खां ने ब्रजभाषा का परिचयात्मक संक्षिप्त व्याकरण लिखा और प्रायः उसी समय हालैंड निवासी जोहन जोशुआ केटेलर ने हिंदुस्तानी का एक व्याकरण लिखा जिसका परिचय डॉ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ में 'हिंदुस्तानी का सबसे प्राचीन व्याकरण' शीर्षक एक लेख में दिया था।[1] इसके पश्चात् डॉ गिलक्राइस्ट एवं अन्य यूरोपीय विद्वानों ने फ़ोर्ट विलियम कालेज को दृष्टि में रखकर हिंदुस्तानी या खड़ी बोली का व्याकरण लिखा। 'विदेशियों द्वारा लिखित सभी व्याकरण-ग्रन्थों में कैलाग का व्याकरण सर्वोत्तम स्वीकार किया जाता है।'[2] विदेशियों द्वारा इस प्रकार का प्रयत्न वास्तव में हिंदी को विदेशियों की देन है। उनके इस सहयोग के अभाव में एक दिशा में हिंदी की प्रगति कुछ देर से होती।

फ़ारसी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं की भारत में उपस्थिति से यहाँ के साहित्य भाषा और संस्कृति में क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित हुए हैं। इन भाषाओं ने भारतीय आर्य-भाषा पर आधिपत्य जमाकर भारतीय विचारधारा और संस्कृति तथा भारतीय जीवन पर आधिपत्य जमाने का प्रयत्न किया है।[3] ऐसी अवस्था से मिलकर विदेशियों ने फ़ारसी और हिंदी तथा अंग्रेज़ी और हिंदी का निकट संपर्क कायम किया और ऐसी परिस्थिति पैदा की जिसमें दोनों विदेशी भाषाओं के अनेक शब्द हिंदी में आए।

हिंदी साहित्य खासकर खड़ी बोली साहित्य की रचना और उसकी उन्नति की दृष्टि से भी दोनों प्रकार के विदेशियों एवं विदेशी भाषाओं का प्रचुर

१—हिंदी शब्दानुशासन–प्रकाशकीय वक्तव्य पृ १ डॉ श्रीकृष्णलाल।

२—वही पृ २।

३—भारतीय-आर्यभाषा और हिंदी पृ० १४८ डॉ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या।

योगदान है। खुसरो को खडी बोली का आदि साहित्यकार माना जाता है, जिन्होंने उत्तर भारत में हिंदी की सेवा की। इसी प्रकार गेसूदराज दक्खिनी हिंदी के आदि रचयिता हैं, जिन्होंने खडी बोली की सबसे पहली रचना प्रस्तुत की। दक्खिनी के अन्य साहित्यकारों ने गद्य-पद्य का प्रचुर साहित्य दिया। इसी प्रकार अवधी और ब्रज भाषा में मुसलमानों ने ऊँचे दर्जे की रचनाएँ की हैं, जिनमें प्रमुख हैं कबीर, जायसी, कुतुबन, रहीम, रसखान, रसलीन इत्यादि। खाँ 'आरजू', 'नजीर' अकबराबादी, 'इंशा', 'गालिब', 'जफर', 'फिराक', 'लुधियानवी' आदि की रचनाएँ खडी बोली की रचनाएँ हैं। हिंदू-मुसलमान दो पृथक् सम्प्रदायों की निकटता और मेलजोल का इसमें सुंदर प्रयास परिलक्षित है। भारतेंदु की उक्ति है'—इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदू वारिए'। भक्तिकाल और रीतिकाल की साहित्यिक रचनाओं पर फारसी दर्शन, इस्लाम और ईरानी संस्कृति के परिवेश की छाप स्पष्ट है। रीतिकाल की नायिकाओं का चित्रण भारतीय रीति-परम्परा से भिन्न ईरानी ढंग का हो गया है। केशव, देव, बिहारी, चिंतामणि, पद्माकर, मतिराम, रसलीन, घनानंद, ठाकुर जैसे कवियों ने अत्यधिक मात्रा में फारसी प्रभावित विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति प्रदान की है।[१] आधुनिक युग में उर्दू के माध्यम से प्रसाद के 'आंसू' और निराला के 'परिमल' को भी फारसी ने प्रभावित किया है।[२] हिंदी में गजल और कव्वाली अत्यन्त लोकप्रिय छंद है। हिंदी चौपदे फारसी प्रभाव से लिखे गये है। दक्खिनी हिंदी में अरबी छंद इस्तेमाल किये गये हैं। नई कविता में रुबाई और कितअ काफी प्रचलित हो गये हैं।

हिंदी साहित्य पर अंग्रेजी का प्रभाव फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के बाद से शुरू होता है। तदनन्तर हिंदी पत्रकारिता में अंग्रेजी प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति एवं समाजवाद की नई अभिव्यक्ति अंग्रेजी साहित्य की देन है। अंग्रेजी के एलेजी-शोकगीत, ओड-सम्बोधनगीत, लिरिक-प्रगीत और सानेट-चतुर्दशपदी को हिंदी में बडे उत्साह के साथ अपनाया गया।[३] अंग्रेजी ने हिंदी कविता और गद्य को अनेक विषयों से परिचित कराया। अंग्रेजी रोमांटिक-काव्यपरम्परा का

१—परसियन इन्फ्लुएंस ऑन हिंदी, पृ० ८३, डॉ० बाहरी।

२—वही, पृ० ८४।

३—हिंदी काव्य पर आंग्ल-प्रभाव, पृ० ८१, डॉ० रवीन्द्र सहाय वर्मा।

हिंदी व्याकरण पर पूरा प्रभाव है। आधुनिक नाट्य-साहित्य भी अंग्रेजी के आलोक में लिखा गया है। डॉ० गिलक्राइस्ट गार्सां द तासी पिन्काट ग्रियर्सन केलाग जैसे अनेक यूरोपीय विद्वानों का हिंदी भाषा और साहित्य की अभिवृद्धि में महान् योगदान है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि फारसी और अंग्रेजी दोनों प्रभावों ने हिंदी भाषा और साहित्य को सम्पन्न बनाने में एक महान् योग दिया है।

• •

सहायक पुस्तकों की सूची

अंग्रेजी पुस्तकें

अ—१ इंगलिश ग्रामर—स्वीट ।

२ इंगलिश ग्रामर सिरीज, बुक ४—जे० सी० नेसफील्ड ।

३ एन आउट लाइन ऑफ् इंगलिश फोनेटिक्स—डैनियल जोन्स ।

४ एन इन्ट्रोडक्शन टु डिस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स—एच० ए० ग्लीसन ।

५ ट्रीटाइज ऑन् लैंग्वेज—वी० जोन्सन ।

६ एफिनिटी ऑफ् इंडियन लैंग्वेजेज—गवर्नमेंट ऑफ् इंडिया पब्लिकेशन ।

७ एलीमेंट्स ऑफ् साइंस ऑफ लैंग्वेज—आई० जे० यस० तारापोरवाला ।

८ ओरिजिन एंड डेवलॅपमेंट ऑफ् बेंगाली लैंग्वेज —डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी ।

९ डेवलॅपमेंट ऑफ् नान-रसियन लैंग्वेजेज इन दी यू० यस० यस० आर० —जे० डी० देशेरीव ।

१० दी फिलॉसफी ऑफ् ग्रामर—ओत्तो येस्पर्सन ।

११ दी प्राब्लम ऑफ् हिंदुस्तानी—डॉ० ताराचंद ।

१२ परसियन इंफ्लुएंस ऑन् हिंदी—अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ।

१३ परसियन इंफ्लुएंस ऑन् हिंदी—डॉ० हरदेव बाहरी ।

१४ मॉडर्न लिंग्विस्टिक्स—साइमन पॉटर ।

१५ मार्क्सिजम एंड प्राब्लम्स ऑफ् लिंग्विस्टिक्स—जे० वी० स्टालिन ।

१६ मैनकाइंड, नेशन एंड इंडिविडुअल—ओत्तो येस्पर्सन ।

१७ लैंग्वेज इट्स नेचर, डेवलॅपमेंट एंड ओरिजिन—ओत्तो येस्पर्सन ।

१८ लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ् परसिया—स० जी० ब्राउनी ।

१९ स्पेलिंग—जी० एच० वालिन्स ।

२० हायर परसियन ग्रामर—डी० सी० फ़िलॉट् ।

२१ हिंदी सिमेंटिक्स—डॉ० हरदेव वाहरी ।

२२ हिन्दुस्तानी फोनेटिक्स—डॉ० यस० जी० एम० क़ादरी ।

आ—१ इंफ्लुएंस ऑफ् इस्लाम ऑन् इंडियन कल्चर—डॉ० ताराचंद ।

२ इंडिया टु-डे एंड टुमारो—रजनी पामदत्त ।

३ एन एडवांस्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया—आर सी मजूमदार एच सी राय चौधरी कालीकिंकर दत्त।
४ दी कैम्ब्रिज शार्टर हिस्ट्री ऑफ इंडिया—जे एलेन एम ए।
५ दी कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया वाल्यूम ३ ४—र्ड ले फर्नाल सर वूल्जली हेग।
६ दी कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया वाल्यूम ६ स एच एच डाडवेल।
७ दी फर्स्ट इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस (१८५७—१८५९) —कार्ल मार्क्स एंड एफ० एंजेल्स।
८ दी डिस्कवरी ऑफ् इंडिया—जवाहर लाल नेहरू।
९ फॉल ऑफ् दी मुगल इम्पायर—जदुनाथ सरकार।

हिंदी पुस्तकें

घ— १ अच्छी हिंदी—रामचन्द्र वर्मा।
२ आजकल की हिंदी—डॉ बदरीनाथ कपूर।
३ आलोचना पत्रिका।
४ उर्दू-हिंदी शब्दकोश—मुहम्मद मुस्तफा खाँ 'मद्दाह'।
५ उर्दू साहित्य का इतिहास प्रथम भाग—डॉ रामबाबू सक्सेना।
६ उर्दू भाषा और साहित्य—रघुपत सहाय 'फिराक'।
७ कचहरी बाबू बालमुकुंद गुप्त—डॉ लक्ष्मण सिंह।
८ दक्खिनी हिंदी—डॉ बाबूराम सक्सेना।
९ दक्खिनी हिंदी काव्यधारा—म पं राहुल सांकृत्यायन।
१० प्राकृत पैंगलम—डॉ भोलाशंकर व्यास।
११ नागरी प्रचारिणी पत्रिका—मालवीय शती भाग २ १८ तथा अन्य।
१२ बृहद् हिंदी कोश—ज्ञानमंडल प्रकाशन।
१३ भाषा विज्ञान—डॉ भोलानाथ तिवारी।
१४ भाषा और समाज—डॉ रामविलास शर्मा।
१५ भाषा साहित्य और संस्कृति—डॉ रामविलास शर्मा।
१६ भारतीय आर्यभाषा—ब्लूम ब्लाख (अनु लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय)।
१७ भारतीय आर्यभाषा और हिंदी—डॉ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या।
१८ भारतीय साहित्य की रूपरेखा—डॉ भोलाशंकर व्यास।
१९ मुहावरा-मीमांसा—डॉ ओमप्रकाश गुप्त।
२० रंगारंग—रघुपतसहाय फिराक।
२१ शब्द-विचार—आचार्य रामचन्द्र वर्मा।
२२ संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन—डॉ भोलाशंकर व्यास।

२३ सामान्य भाषा-विज्ञान—डॉ० बाबूराम सक्सेना ।
२४ हिंदी भाषा का उद्गम और विकास—डॉ० उदयनारायण तिवारी ।
२५ हिंदी भाषा का इतिहास—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ।
२६ हिंदी वालो सावधान—रविशंकरशुक्ल ।
२७ हिंदी साहित्य का इतिहास—पं० रामचन्द्र शुक्ल ।
२८ हिंदी साहित्य का वृहत् इतिहास—प्रथम एवं षष्ठ भाग—ना० प्र० स० ।
२९ हिंदी विश्वकोश प्रथम भाग—ना० प्र० स० ।
३० हिंदी साहित्य कोश—ज्ञानमंडल प्रकाशन ।
३१ हिंदी की गद्य शैली का विकास—डॉ० जगन्नाथ शर्मा ।
३२ हिंदी काव्य पर आंग्ल प्रभाव—डॉ० रवीन्द्र सहाय वर्मा ।
३३ हिंदी शब्दानुशासन—पं० किशोरीदास वाजपेयी ।
३४ हिंदी व्याकरण—पं० कामता प्रसाद गुरु ।
३५ हिंदी शब्दसागर—ना० प्र० स० ।
३६ हिंदी में अंग्रेजी के आगतशब्दों का भाषा-तात्त्विक अध्ययन—डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया ।

आ— १ भारत संबंधी लेख—कार्लमार्क्स—पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
२ भारत में अंग्रेजी राज्य—सुन्दरलाल ।
३ मध्यकालीन भारत—लेनपूल ।
४ मध्ययुग का संक्षिप्त इतिहास—डॉ० ईश्वरी प्रसाद ।
५ मानव सभ्यता का विकास—डॉ० रामविलास शर्मा ।
६ मुग़ल साम्राज्य का उत्थान और पतन—डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी ।
७ संस्कृति के चार अध्याय—दिनकर ।
८ सन् ५७ की राज्यक्रांति—डॉ० रामविलास शर्मा ।
९ हिंदुस्तान की कहानी—जवाहरलाल नेहरू ।

उर्दू की पुस्तकें

१ अदब और उर्दू सहाफ़त—जमीरुद्दीन क़ुरैशी ।
२ जदीद उर्दू क़वायद—सैयद मुहम्मद अमीर ।
३ फारसी-उर्दू कवायद—सैयद इसहाक अली ।

अंग्रेजी, फ़ारसी, उर्दू और हिंदी की कुछ अन्य साहित्यक कृतियों का भी अध्ययन संदर्भ, उदाहरण एवं तुलना के लिए किया गया है, जिनमें से कुछ का उल्लेख यथास्थान हुआ है। कुछ दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्रों का भी उपयोग किया गया है। यहाँ उनका नामोल्लेख अपेक्षित नहीं है।